Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं।

जीवन बृतांत

श्री गुरु

नानक देव जी

लेखकः—

त्रिलोक सिंह 'ज्ञानी'

प्रकाशकः—

भाईजवाहरसिंह कृपालसिंह एण्डको:

पुस्तकां वाले, बाज़ार माई सेवां,

अमृतसर।

१९८१

मूल्य ४) रु०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय सूची

नाम कथा	पृष्ठ
श्री गुरु नानक देव जी की बंसावली	१६
गुरु नानक जैसे गुरु की आवश्यकता	१७
गुरु नानक देव का जन्म	१६
गुरु जी की बाल लीला	२०
गोपाल पांधे की सद-गति	२१
जनेऊ की वार्ता	२२
जनेऊ में दोष	२३
निर्दोष जनेऊ	२४
सांप की छाया	२४
खेत को हरा भरा किया	२५
खरा सौदा	२६
गीता जी का पाठ	२७
गुरु जी का सुलतान पुर में	२८
मोदी खाने की कार	२६
गुरू जी की सच्च खण्ड यात्रा	३१
सच्च खंड का हाल	३३
गुरु नानक देव जी का गुरु बनना	३३
गुरु ज़ी का विवाह	३४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी के दो बेटे	३५
गुरू जी को संसार यात्रा	३५
सच्ची निमाज का ढंग	३६
एमना बाद में प्रवेश	३७
भाई लालो और मलक भागो	३९
गुरु जी को भविष्य बाणी	४१
गुरु जी बाबर के कारागार में	४२
सज्जन ठग्ग को तारना	४४
हरिद्वार के यात्रियों को सत्य का उपदेश	४६
मथुरा के यात्रियों को सत्य का उपदेश	४७
नूर जहान का निस्तारा	४८
गुरु जो की सच्ची आरती का भेद	५०
रुहेल खण्ड के जालिम रुहेलों का उद्धार	५२
वापिस सुलतान पुर में	५४
पहली संसार यात्रा	५५
दूसरी संसार यात्रा	५५
कौडे राक्षस का उद्धार	५६
राजा शिवनाभ का उद्धार करना	५९
सुमेर पर्बत पर सिद्धों से सिद्ध गोष्ट	६१
गुरु जी का करामाती चोला लेकर ओड़ना	६४
गुरु जी के दर पर देवी का झाड़ू देना	६६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चोरों का उद्धार करना	६९
राये बुलार का उद्धार करना	६९
तीसरी बार संसार यात्रा	७२
चौथी बार संसार यात्रा	७४
फिर बाबा मक्के गया	७७
बगदाद के खलीफे का उद्धार करना	७९
वली कन्धारी का निस्तारा	८३
बेबे नानकी की दीदार	८६
हमजा गौंस का उद्धार करना	८८
अचल बटाले की कथा	९१
भाई लहणा जी	९४
संगतों को मिठाई खिलाई	९९
गुरु नानक देव जी का जोति जोत समाना	१००
इतिहास सुनने और पढ़ने का महातम	१०१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूमिका

धन्न पट्टी उह कलम धन्न भांडा धन्न मस ॥
धन्न लिखारी नानका जिन नाम लिखाया सच्च ॥

भाव—धन्न है वह पट्टी (तख्ती;धन्न है वह कलम,धन्न है वह दवात, धन्न है वह स्याही और धन्न है वह लिखने वाला जिसने कि भगवान का नाम लिखा है।

हां, वह नाम लिखने वाला कौन था जिसकी गुरुबानी में इतनी महमा ब्यान की गई ? वह थे जगत गुरु गूरू नानक देव जी ।

कहते है कि आजसे छे सात हजार वर्ष पहले श्री जगन्नाथ पुरी में त्रिकाल दर्शी महात्मा व्यास जी सुबा (अमृत बेले* सुन्न समाधि लवलीन थे कि उनकी सुरति दसम द्वार

---

*सिख धर्म में अमृत वेले सुबह दो तीन बजे रात्री से लेकर सूर्य उदय होने से कुछ देर पहले को कहा गया है। गुरू नानक मते में उस अमृत वेले की बहुत महिमा कही गई है। (अमृत वेले की महिमा वेदों शास्त्रों में भी बहुत लिखा है)गुरू घर में तीन प्रकार के मुख्य कर्म हैं-नाम, दान और इशनान। पर इशनान वही है जो अमृत वेले किया जाये। देखो अमृत वेले को महिमा भाई गुरदास जी की बानी पढ़ कर।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में पहुंच गई । जहां जाकर तीन काल और त्रिकाली ज्ञान प्राप्त होता है । वह सत्ययुग का समय था पर वह व्यास जी भविष्य काल कलयुग के समय में आ गए तब उन्हों ने घोर पाप उपद्रवों पाखंड और वेदों के विरुद्ध प्रचार होते देखा तो एक दम समा ध से मुक्त होकर कलयुग के भयानक पापों उपद्रवों की कहानी अपने चेले जैमनि ऋ षि को सुनाई तब जैमनि जी ने फिर प्रश्न किया कि हे भगवन तब ऐसे महां भयानक काल में जगत का कल्य ण कैसे होगा । तब व्यास जी ने कहा कि मैं फिर समाधि में जाकर देखता हूं। व्यास जी समाधि में गए और फारिग होकर निम्नलिखित श्लोक किया—

एवं वै धर्मस्या प्रस्चूरिय भविच्छति यदा कलौ ।
तदा वैलोकस्य मलेच्छ वनाश हेतवे पश्चमे त शुभे देशे
बेदी बशे च नानक: ।

भावार्थ—इसी प्रकार यदि घोर कलयुग में धर्म चूर चूर हो जायेगा तब इन लोगों [सारे संसार] का रक्षा करने और मलेछों को नाश करने के लिए पश्चम जैसे शुभ देश बेदियों की वंश में साखियात भगवान के अवतार जिसका नाम नानक होगा अवतार लेंगे ।

भगवान कृष्ण जी ने श्री गीता जी में भी कहा है कि—
यदा यदा हि गलानी भवति भारता ...

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाव--जब जब भी धर्म की गिलानो होती है और सब लोग पाप करने लगते हैं तो मैं (भगवान) अपने सरूप को धारण करके आकर उन पापों को नष्ट करता और लोगों को धर्म का मार्ग दिखाता हूं। इसी प्रकार धर्म रक्षक श्री गुरू गोबिंद सिंह जी ने भी कहा है कि जब कब संसार में लोग उपद्रव और पाप ग्रस्त होते हैं तो अकाल पुरख किसी शक्ति को भेजता है। जैसे कि अकाल पुरख के अटल नियम अनुसार अकाल पुरख किसी महान व्यक्ति को भेजता है।

सत्युग में श्री वासदेव जी को भेजा जो कि अठारह कला अवतार थे। जिन्हों ने लोगो को सोह का जाप जपाया।

त्रेता युग में श्री राम चन्द्र जी का अवतार हुआ जो कि चौदह कला थे। उन्हों ने राम नाम का जाप जपाया।

द्वापर युग में श्री कृष्ण जी थे जिन्होंने गोबिंद का जाप जपाया।

अब कलयुग आ गया इस युग में किसी महान व्यक्ति की आवश्यकता थी इस लिए भगवान प्रमात्मा ने अपनी प्रतख ज्योति को भेजा जैसे कि गुरबानी में कहा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरि जाप नारायण कला धार जग महि प्रवरियो ।
निरंकार आकार जोति जग मंडल करिओ ।

भाई गुरदास जी ने तो श्री गुरू नानक देव जी को भगवान का प्रत्यक्ष सरूप करके वर्णन किया है जैसे कि—

रोम रोम कोट ब्रह्मांड को बिथार जा को ॥
मानस औतार धार दरस दिखाये हैं ॥

श्री गुरू अरजन देव जी [पंचम गुरू] को सिखों ने पूछा कि वास देव जी अठारह कला अवतार थे, श्री रामचन्द्र जी चौदह कला और श्री कृष्ण जी सोलह कला अवतार थे, सो आप बताईए कि श्री गुरु नानक देव जी कितनी कला अवतार थे ? तब गुरु जी ने कहा कि—

सोलह कला सम्पूर्ण फलिओ ॥
अनत कला होए ठाकिर चड़ियो ॥

भाव-श्री गुरु नानक देव जी तो सोलह कला भी साथ लेकर उस से और अनगिणत कला (शक्तियां) लेकर आप भगवान संसार में आये थे।

श्री गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज अपनी बाणी में श्री नानक देव जी की महिमा इस प्रकार उच्चारण करते हैं:—
तिन बेदीयन की कुल बिखै प्रगटे नानक राये ॥
सभ सिखन को सुख दीयो जिह तिह भए सहाये ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिन इह कल मों धर्म चलाइयो ॥
सब साधन का राह बताइयो ॥
जो ताके मार्ग मों आये ॥
ते कबहुं नहीं पाप सताये ॥ ५ ॥
जे जे पंथ तवन के परे ॥
पाप ताप तन के पर हरे ॥
दुख भुख कबहुं न सताये ॥
जाल काल के बीच ना आये ॥ ६ ॥

सिख धर्म का यह सिद्धांत है और अटल विश्वास है कि गुरू नानक देव जी ही एक के बाद दूसरे गुरूओं के रूप को धारण करते गए, जैसे कि गुरबाणी में लिखा है कि-

जोनि ओहा जुगत साथे सहि ॥
काया फेर पलटीऐ ॥

भाव—गुरूओं की जोति और जुगति (मर्यादा) वही थी केवल काया [शरीर] ही तबदील होते थे ।

इसी बात को श्रीगुरू गोबिंदसिंह जी कथन करते हैं कि

नानक अंगद को बप धरा ॥
धर्म प्रचुर इह जग में करा ॥
अमर दास पुनि नाम कहायो ॥
जन दीपक ते दीप जगायो ॥७॥
जब बरदान समै* बहु आवा ॥

*इस वरदान की कथा दसम ग्रन्थ में इस प्रकार लिखी है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरि जाप नारायण कला धार जग महि प्रवरियो ।
निरंकार आकार जोति जग मंडल करिओ ।

भाई गुरदास जी ने तो श्री गुरू नानक देव जी को भगवान का प्रत्यक्ष सरूप करके वर्णन किया है जैसे कि—

रोम रोम कोट ब्रह्मांड को बिथार जा को ॥
मानस औतार धार दरस दिखाये हैं ॥

श्री गुरू अरजन देव जी [पंचम गुरू] को सिखों ने पूछा कि वास देव जी अठारह कला अवतार थे, श्री रामचन्द्र जी चौदह कला और श्री कृष्ण जी सोलह कला अवतार थे, सो आप बताईए कि श्री गुरु नानक देव जी कितनी कला अवतार थे ? तब गुरु जी ने कहा कि—

सोलह कला सम्पूर्ण फलिओ ॥
अनत कला होए ठाकिर चड़ियो ॥

भाव-श्री गुरु नानक देव जी तो सोलह कला भी साथ लेकर उस से और अनगिणत कला (शक्तियां) लेकर आप भगवान संसार में आये थे।

श्री गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज अपनी बाणी में श्री नानक देव जी की महिमा इस प्रकार उच्चारण करते हैं:—
तिन बेदीयन की कुल बिखै प्रगटे नानक राये ॥
सभ सिखन को सुख दीयो जिह तिह भए सहाये ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिन इह कल मों धर्म चलाइयो ।।
सब साधन का राह बताइयो ।।
जो ताके मार्ग मों आये ।।
ते कबहुं नहीं पाप सताये ।। ५ ।।
जे जे पंथ तवन के परे ।।
पाप ताप तन के पर हरे ।।
दुख भुख कबहुं न सताये ।।
जाल काल के बीच ना आये ।। ६ ।।

सिख धर्म का यह सिद्धांत है और अटल विश्वास है कि गुरू नानक देव जी ही एक के वाद दूसरे गुरूओं के रूप को धारण करते गए, जैसे कि गुरबाणी में लिखा है कि-

जोनि ओहा जुगत साथे सहि ।।
काया फेर पलटीऐ ।।

भाव—गुरूओं की जोति और जुगति (मर्यादा) वही थी केवल काया [शरीर] ही तबदील होते थे।

इसी बात को श्रीगुरू गोबिंदसिंह जी कथन करते हैं कि:

नानक अंगद को बप धरा ।।
धर्म प्रचुर इह जग में करा ।।
अमर दास पुनि नाम कहायो ।।
जन दीपक ते दीप जगायो ।।७।।
जब वरदान समै* बहु आवा ।।

---

*इस वरदान की कथा दसम ग्रन्थ में इस प्रकार लिखी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राम दास तब गुरू कहावा ॥
तिह वरदान पुरावन दीया ॥
अमर दास रार पुरि मग लीया ॥८॥

श्री नानक अंगद करि माना ॥
अमर दास अंगद पहिचाना ॥
अमर दास राम दास कहायो ॥
साधिन लखा मूड़ नह पायो ॥९॥
भिन्न भिन्न समहूं कर जाना ॥
एक रूप हूं पहिचाना ॥
जिन जाना तिन ही सिद्ध पाई ॥
बिन समझे सिद्ध हाथ न आई ॥१०॥

राम दास हरि सों मिल गये ।
पुरवा देत अरजनहि भए ॥
जब अरजन प्रभ लोक सिधारें ॥
हरि राय तिह थां बैठारे ॥
हरि कृष्ण तिन के सुत भावए ॥
तिन तें तेग बहादर भए ॥१२॥
तिलक जञ्जु राखा प्रभ ताका ॥
कीनो वडहु कलू महि साका ॥
साधन हेत इती जिन करी ॥
सीस दिया पर सी न उचरी ॥१३॥

[दसम ग्रंथ बचित्र नाटिक]

इस प्रकार श्री गुरू गोबिंदसिंह के महान वाकों अनुसार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरू नानकदेव जी ने ही जोत बाकी नौं देह सरूप गुरूओं और श्री गुरू ग्रंथ साहिब में प्रयोग की थी* ।

सो इस प्रकार इस भाग में श्री गुरू नानक देव जी का जीवन वर्णन किया है कि गुरू जी ने इस संसार में आ कर क्या क्या काम चमत्कार और उपकार के किए।

श्री गुरू नानक देव जी तो पूर्ण पुरख थे। साधू और पूर्ण ब्रह्मज्ञानी थे तथा ब्रह्म स्वरुप थे। इसलिये उनके गुणों को कौन वर्णन कर सकता है? सुखमनी गौड़ी 'गुरबानी में लिखाहै

साध की महिमा वेद न जानै ।।
जेता सुनै तेता वखियानै ।।
तथा--साध की महिमा साधु बन आई ।।
नानक साधु प्रभ भेद न भाई ।।
और-ब्रह्म ज्ञानी आप परमेसुर ।।
या-ब्रह्म ज्ञानी आप निरंकार ।।
ब्रह्म ज्ञानी का सगल आकार ।।
बलकि--ब्रह्म ज्ञानी सब स्रष्ट का करता ।।
ब्रह्म ज्ञानी सद जीवै नहीं मरता ।।

यह श्री गुरु नानक देव जी का ही काम था कि अपने जीवन में उस समय इतने लंबे सफर करना। इतनी दूर दूरके

---

*श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी सिखों के ग्यारवें गुरू हैं। जिसका विचार आगे जाकर किया जाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देशों में जा जाकर उन लोगों की भाषाओं में ही उनको उपदेश करने का प्रयत्न करना ।

गुरू के सम्बन्ध में गुरबाणी में सूरा शब्द आया है जिस का भाव है योद्धा, बहादुर तथा वार । सो श्री गुरू नानकदेव जी एक अद्वितीय योद्धे भी थे । आजकल के जो बनावटी गुरु बने फिरते हैं वह कहते हैं कि गुरू बहिस नहीं करता । हां, उनका कहना यथार्थ है जो उन लोगों में जब बहिस व चर्चा करने की शक्ति नहीं फिर न तो उन में विद्या है और न ही कोई आत्मक बोध है । फिर वह ऐसा न कहे तो क्या कहें । गुरु बहिस नहीं करता कह कर बेचारे आपना दामन तो छुड़वाये । परन्तु श्री गुरु नानक देव जी तो जहां भी गये तथा आपको ज्ञान चर्चा करने को जिसने भी वंगारा उसके साहमने शेर की तरह डट गये और उसके घुटने टिका दिये ।

गोरख नाथ आदि सिद्ध योगी, वली कंधारी, मक्का के काजी रुकन दीन, सांई बुडन शाह आदि की कथायें सुप्रसिद्ध हैं ।

आप ज्ञान की खड़ग लेकर श्रेणीयों के साथ महाजों पर ज्ञान की लड़ाई लड़ लड़ कर विजय प्राप्त करते रहे जैसे कि—

१. जालम अन्याएकारी और कसाईयों के साथ ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२. ऐश प्रस्त, लोलप जालम और तअसबी तथा जनूनी नवाबों के साथ।

३. पत्थर दिल, तअसबी, शरई और बेहद जुलम करने वाले बे इन्साफ काजीयो और मौलवीयों के साथ।

४. कट्टर कर्मचारीयों के साथ।

५. छूतछात मानने वाले और ज़ाति अभिमानियोंके साथ

६. बड़े बड़े करामाती फकीरों के साथ।

७. ऋद्धियों सिद्धियों आदि शक्ति वाले सिद्धों,योगियोंके साथ।

८. आम अज्ञानी, भर्मी; बहिमी जनता के साथ।

९. चोरों, डाकूओं और बड़े बड़े ठग्गों के साथ।

१०. बड़े बड़े पाखडीयों और बरदा फरोशों के साथ।

११. इसके इलावा जैनियों और बोद्धियों के साथ।

१२. नास्तक लोगों के साथ।

१३. बड़े बड़े विद्वानों और पंडितों के साथ।

१४. इसी प्रकार बहुत बड़े बड़े मुसलमान आलमोंके साथ।

१५. बाम मार्गी, जंगम तथा सेवड़ियों के साथ।

इसके इलावा और भी बहुत से महाजों पर गुरू जी ने बहिसें तथा ज्ञान चर्चायें करके विजय प्राप्त की और अड़े सो झड़े शरण पड़े सो तरे' वाली मसाल को सिद्ध किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सो हे प्रिय पाठको ऐसे ब्रह्म सरूप सतगुरू गुरू नानक देव जी का महान पवित्र इतिहास वर्णन किया गया है जिसके पढ़ने और सुनने से इस कलयुग के जीवों को सहिजे ही कल्याण प्राप्त होगा।

बोलो जगत गुरू गुरू नानक देव जी महाराज जी की जय।

वाहिगुरू जी का खालसा
वाहिगुरू जी की फतह ॥

गुरू पंथ का दासन दास—
ज्ञानी रत्न सिंह उर्फ भान सिंह
गांव माकोवाल [जिला अमृतसर]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृतांत
श्री गुरू नानक देव जी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरू नानक देव जी की बंसावली

जन्म स्थान—श्री ननकाना साहिब जिला शेखू पुरा (पाकिस्तान)

जन्म तिथि—कार्तिक शुदि पूर्णमाशी सम्वत १५२६

पिता—महता कालू (कल्याण राये)

माता—तृप्ता जी

विवाह—२४ जेठ; १५४५ बिक्रमी

धर्म पत्नी—माता सुलखनी जी

सन्तान—बाबा श्रीचन्द और बाबा लक्ष्मी दास जी

ज्योति जोत—अस्सू वदि १०, १५९६ विक्रमी को करतारपुर में रावी दरिया के किनारे।

आयु—६९ वर्ष; १० मास; १० दिन

राज—इब्राहीम बाबर

आप की गुरबानी श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी में बहुत सी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरू नानक जैसे गुरू की आवश्यकता

जबकि संसार में खास करके भारत में अज्ञान का अंधेरा छा रहा था और घोर जुल्म का राज था। भारत भर में मलेछों का जोर और जुल्म आखरी सीमा पर पहुंच गया था धर्म, समाज और न्याय का ढांचा छिन्न भिन्न हो रहा था। जिसका वर्णन सिख धर्म के महा विद्वान भाई गुरदास जी इस प्रकार करते हैं:-

कल आई कुत्ते मुही खाज होया मुरदार गुसाई।
रांजे पाप कमावदे उल्टी वाड़ खेत को खाई।
काजी होये रिशवती वढो लै के हक्क गवाई।
सेवक बैठन घरां विच, गुरु उठ घर तनाड़े जाई।
चेले साज वजांवदे नच्चन गुरू बहुबिध भाई।
स्त्री पुरुषे दाम हित भावे आये किथाउ जाई।
वरतिया पाप सभस जग माही॥

(वार भाई गुरदास)

इसी प्रकार श्री गुरू नानक देव जी अपने मुखारबिंद से भी फुरमाते हैं कि जब मैंने संसार की हालत को खुद अपनी आंखों से देखा। जैसे कि:-

'बाबा देखे ध्यान' धर जलती सब पृथवी दिस आई।'
राजे शीह मुकदम कुत्ते॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरू नानक देव जी की बंसावली

जन्म स्थान–श्री ननकाना साहिब जिला शेखू पुर
(पाकिस्तान)

जन्म तिथि—कार्तिक शुदि पूर्णमाशी सम्वत १५२६

पिता—महता कालू (कल्याण राये)

माता--तृप्ता जी

विवाह–२४ जेठ; १५४५ बिक्रमी

धर्म पत्नी–माता सुलखनी जी

सन्तान—बाबा श्रीचन्द और बाबा लक्ष्मी दास जी

ज्योति जोत–अस्सू वदि १०, १५९६ बिक्रमी को करतारपुर
में रावी दरिया के किनारे।

आयु—६९ वर्ष; १० मास; १० दिन

राज—इब्राहीम बाबर

आप की गुरबानी श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी में बहुत सी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरू नानक जैसे गुरू की आवश्यकता

जबकि संसार में खास करके भारत में अज्ञान का अंधेरा छा रहा था और घोर जुलम का राज था। भारत भर में मलेछों का जोर और जुलम आखरी सीमा पर पहुंच गया था धर्म, समाज और न्याय का ढांचा छिन्न भिन्न हो रहा था। जिसका वर्णन सिख धर्म के महा विद्वान भाई गुरदास जी इस प्रकार करते हैं:-

कल आई कुत्ते मुही खाज होया मुरदार गुसाई।
राजे पाप कमावदे उल्टी वाड़ खेत को खाई।
काजी होये रिशवती वढो लै के हक्क गवाई।
सेवक बैठन घरां विच, गुरु उठ घर तनाड़े जाई।
चेले साज वजांवदे नच्चन गुरू बहुबिध भाई।
स्त्री पुरुषे दाम हित भावे आये किथाउ जाई।
वरतिया पाप सभस जग माही॥

(वार भाई गुरदास)

इसी प्रकार श्री गुरू नानक देव जी अपने मुखारबिंद से भी फुरमाते हैं कि जब मैंने संसार की हालत को खुद अपनी आंखों से देखा। जैसे कि:-

'बाबा देखे ध्यान'धर जलती सब पृथवी दिस आई।'
राजे शीह मुकदम कुत्ते॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाये जग.वन बैठे सुते।
चाकर नहूंदा पाइन धाओ।
रत पित कुत्तिओ चट जाओ।
कल काती राजे कसाई।
धर्म पंख कर उडरिआ।
कूड अमावस सच्च चन्द्रमा।
दीसै नाही कहि चढ़िआ।

जबकि यवनों का जोर बढ़ता जा रहा था और हिंदु दिन ब दिन कमजोर होते जा रहे थे। मुसलमान अपनी राजसी शक्ति के साथ हिन्दुओंको मुसलमास बनाते जा रहे थे। सारो बात यह थो कि इस्लामी राजे हिन्दु धर्म की जड़ को अपनी राजसी शक्ति के साथ उखेड़ने और इस्लाम धर्म की जड़ को मजबूत करते जा रहे थे। यहां तक कि मुस्लमान हिन्दूओ को किसी प्रकार भी लालच, धमकी और सख्तो के साथ इसलाम में लाना अपना मुख्य कर्तव्य समझते थे। जैसे कि भाई गुरदास का कथन है कि:-

ठाकुर दुवारे ढाह के तह टउड़ी मसोत उसारा।

सो ऐसे महां भयानिक समय सिरजन हार ने अत दुखी भारत की पुकार सुनी। भाई गुरदास जी का कथन है कि:-

सुनी पुकार दातार प्रभ गुरू नानक जग महि पठाया ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जन्म

श्री गुरू नानक देव जी का जन्म संमत १५२६ बिक्रमी और सन १४६९ ई० कार्तिक की पूर्णिमा को माता त्रिपता और पिता कालू राय के घर में हुआ। उस नगर का नाम उस समय राए भोए की तलवंडी और उसके पश्चात श्रीगुरू नानक देव जी के जन्म होने से 'ननकाणा साहिब' नाम पड़ गया। श्री गुरू नानक देव जी महाराज के जन्म होने पर सारे नगर में खुशी के बाजे बजाए गए और आकाश से देवताओं ने फूलों की वर्षा की।

पिता कालू राय ने अपने पुरोहित पण्डित गोपाल दास को बुला कर उस समय की रीति अनुसार शास्त्रों की मरयादा से नानक नाम रखा गया। विद्वान पंडित ने कहा कि यह बालक कोई अवतारी जीव है। और इसको ईश्वर ने जगत कल्याण और हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिये भेजा है। पंडित जी ने सब लोगों को कहा कि यह वही नानक है जिसकी भविष्य बाणी महात्मा व्यास जी ने भविष्त पुराण में की थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरू जी को बाल लीला

श्री गुरू नानक देव जी के पिता कालू राय तलवंडी नगर के राजा राए बुलार के मुख्य पटवारी थे। उन दिनों में पटयारी का दर्जा एक उच्च अधिकारी का होता था और फिर पिता कालूराय राए बुलार के एक विशेष विश्वाश पात्र थे। घर में धन दौलत की बेपरवाही थी, जिस से आप का पालन पोषन बड़े प्यार से होने लगा। आपकी एक बड़ी बहिन जिस का नाम पहले नानकी और बाद में बेबे नानकी प्रसिध हुआ। वह अपने छोटे भाई को बड़ा खिलाती थी इन दोनों बहिन भाई का आपस में एक अद्वितीप्यार था। जब बहिन नानकी अपने वीर नानक को बाहर खिलाने के लिये ले जाती तो नानक के गिर्द गांव के सब बालक इकठे हो जाते और उन की मीठी मीठी बातें सुनते और आपकी मोहिनी सूरत को देख देख कर आनन्द प्राप्त करते। गुरू जी बालिकों में बैठ कर कितना कितना समय ध्यान में मगन रहते और वह गांव के बालक भ साथ ही मगन बैठे रहते जब तक आप समाधि से फारिग नहीं होत तब तक बालिक भी पास ही आप के दर्शन का आनन्द लेते रहते थे। आप अपने साथी बालिकों को सति करतार सति करतार का जाप जपाते रहते थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोपाल पांधे को सदगति

इसी प्रकार आपकी आयु जब पांच वर्ष की हुई तो पिता जी ने नानक को गोपाल दास पांधे के यहां पढ़ने डाल कर बहुत सी मिठाई बांटी और वह पांधा भी एक धनाढ्य घर के लड़के को पढ़ने के लिए आया देख कर बहुत हर्षित हुए। तीन चार दिन तक पांधा जी जो जो कुछ पढ़ाते गये आप पढ़ते गये। पांधा आपको पढ़ाई की योग्यता को देख कर बहुत प्रसन्न होने लगे कि उसको बहुत इनाम मिलेगा। पर एक दिन गुरू जी को पांधे ने कहा कि नानक ! ओ३म् कहो; तो गुरू जी ने कहा 'पांधा जी इस ओ३म् शब्द का अर्थ क्या है ?'

एक नन्हें से बालिक के मूंह से इतनी बड़ी बात सुन कर पांधा हैरान हो गया और कहने लगा कि मैं तो इस के अर्थ नहीं जानता, तुम ही बताओ। तब गुरू नानक देवजी ने केवल पांच वर्ष की आयु में एक ज्ञान और वैराग से भरा हुआ शब्द* सुना कर पांधे को चकित कर दिया। यहां तक

---

*जाल मोह घस मस कर मति कागद कर सार ॥
(देखो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का र.फा)
[सिरी राग म० १]
यह शब्द गुरू जी ने तब से पहिले उच्चारण किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि वह पांधा उस दिन से गुरू नानक देव जी का सच्चा सिक्ख बन गया।

उसके पश्चात आपको पिता जी ने काजी कुतबद्दीन के यहां फारसी पढ़ने को भेजा। इसी प्रकार जब काजी ने कहा 'हे नानक' कह अलफ।

गुरू जी ने कहा—इसके अर्थ तो बताओ।

काजी ने कहा—मैं तो इसके अर्थ नहीं जानता; तू जानता है तो बता दे।

तब गुरू जी ने उस काजी के कल्याण के लिये भी ज्ञान और वैराग में मिला हुआ फारसी भाषा में शब्द‡ उचारण किया जिसको सुनकर काजी चकित रह गया और बड़े प्रेम और श्रद्धा भाव से गुरू जी के चरणों में सजदा [प्रणाम] किया। उपरन्त गुरु नानक जी के पिता को कहा कि आप का बालक तो खुद (स्वंय) खुदा (भगवान) का स्वरूप है। यह तो कुल संसार को पढ़ा सकता है।

जनेऊ की वार्ता

श्री गुरू नानक देव जी को जब जनेऊ की रसम अदा

---

‡यक अरज गुफत पेश तो दर गोस कुन करतार॥
(राग तिलंग म० १)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करने के लिए सब ब्रादरी को इकठा किया गया। एक चौकी पर बैठा कर गोपाल नाम का पांधा जब आपके गले में जनेऊ डालने लगा तो आप ने कहा कि पांधा जी मैं यह जनेऊ नहीं पहनूंगा क्योंकि इसमें दोष हैं। मैं वह निर्दोष जनेऊ पहनूंगा। फिर आपने खुद भी तो जनेऊ नहीं पहना। वह पांधा तो पहले ही गुरु जी को भगवान का स्वरूप मानता था, पर और लोगों को गुरू जी की महानता दरसाने के लिये बोला—

इस जनेऊ में क्या क्या दोष हैं और जो जनेऊ आप पहनाना चाहते हैं, उसकी क्या सिफत (प्रशंसा) है? उपरंत देखो यह मैं ने तो जनेऊ पहन रखा है।

तब पांधे का यह वचन सुन कर गुरु जी ने यह शब्द उच्चारण किया।

जनेऊ में दोष

तगु कपाहु कतीऐ बाहमणु वटे आइ।
कुहि बकरा रिंनि खाइआ सभु को आखै पाइ॥
होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु॥
नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निर्दोष जनेऊ

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढो सतु बटु ॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥
ना एहु तुटै न मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥

फिर आप ने कहा, हे पांधा जी आप भी जनेऊ से रहित घुम रहे हो जैसे कि—

तगु न इन्द्री तगु न नारी ॥
भलके थुक पवै नित दाड़ो ॥
तगु न पैरी तगु न हथो ॥
तगु न जिहवा तगु न अखी ॥
वे तगा आपे वतै ॥
वटि धागे अवरा घतै ॥
लै भाड़ि करे वीआहु ॥
कढि कागलु दसे राहु ।
सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥
मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥

सर्प की छाया

इस प्रकार पांधा और ब्रादरी के लोगों को सच्चे जनेऊ का उपदेश करने के बाद आपकी महिमा सब नगरी में फैलने लगी पर आपके पिता जी पर इसका कोई विशेष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रभाव नहीं पड़ा। एक दिन आप भैंसे चराते चराते धूप लगने से एक वृक्ष की छाया में बैठ गये और वहीं कपड़ा बिछा कर सो गये। कुछ देर के बाद उस वृक्ष की छाया ढल गई और जैसे ही आपके मुख [चेहरे] पर धूप आती देख कर एक बहुत बड़े सफेद रंग के सांप ने अपनी फन फैला कर आपके मुख पर छाया कर दी। इस आश्चर्य कौतुक को उसी नगर के नवाब ने (जिसका नाम राय बुलार था) खुद अपनी अपनी आंखों से देखा, जब कि वह अपने कुछ साथियों के साथ किसी दूसरे गांव से आ रहा था। राय बुलार ने इस बात की चर्चा सारे नगर में फैला दी और आप भी गुरू जी पर श्रद्धा रखने लगा।

खेत को हरा भरा किया

एक बार गुरू जी अपनी गायें और भैंसे चराने के लिये ढाक की ओर ले जा रहे थे कि रास्ते में एक किसान का गेहूं का हरा भरा खेत आ गया। उस में सब गायें भैंसे हांक कर आज वृक्ष के नीचे कपड़ा डाल कर सो गये। वह गायें भैंसें सारे खेत को खूब पेट भर भर कर खा गई उसी खेत में बैठ रही थीं। जब किसान ने देखा तो वह बहुत क्रोधित होकर गुरू जी को पकड़ कर नगर के राजा राय बुलार के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पास आकर पुकारा और राय बुलार ने गुरू जी के पिता कल्याण राय को बुलाकर जब किसान का नुकसान भरने के लिये कहा। तब गुरू जी ने कहा कि नुकसान किस बात का भरें; यह किसान तो यों ही चिल्ला रहा है। पहले आप दरियाफत तो कर लें कि खेत उजड़ा भी है कि नहीं। राय बुलार ने किसान के साथ अपना एक आदमी खेत देखने भेजा। आदमी ने वापस आकर कहा कि खेत पहले से भी बढ़ कर हरा भरा खड़ा है। तब वह किसान तो शर्म का मारा वापस ही ना आया। पर राय के आदमी ने आकर बताया कि किसान ने झूठ बोला है। इस बात को आम लोगों ने तो नहीं समझा पर राय बुलार ने इस भेद को समझ लिया। बस उस दिन से राय बुलार को पक्की श्रद्धा गुरू जी के चरणों पार हो गई।

खरा सौदा

एक दिन गुरू जी के पिता ने अपने सपुत्र को उदास सा रहते देख कर कहा कि बेटा जाओ कोई व्यापार का ढंग सीखो बीस रुपये ले जाओ और साथ अपने साथी भाई बाला को लेकर कोई लाभदायक खरा सौदा करके आओ।

गुरू जी सत बचन कह कर भाई बाले को साथ लेकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दस बारह कोस एक जंगल में जा निकले। वहां आठ दस साधू कई दिन के भूखे तपस्या कर रहे थे। उनको देख कर गुरू जी ने भाई बाले को कहा, 'बाला जी ! जो पिता जी ने लाभदायक और खरा सौदा करने को कहा था सो इससे बढ़ कर और कोई खरा सौदा नहीं मिलेगा।' इन भूखे महां पुरुषों को इन बीस रुपयों का भोजन खिला दो। सो ऐसा ही किया गया। नजदीक के गांव से सामग्र लाकर उन कई दिन के भूखे साधूओं को भोजन खिला कर वापस आ गये।

इस बात का जब आपके पिता को पता लगा तो आप बहुत गुस्से में आ गये और गुरू जी को दो तीन चपत लगा दी। इस बात का पता जब राय बुलार को लगा तो उसने कल्याण राय को बुला कर कहा कि देखो कल्याण राय यह लो बीस रुपये और आज से लेकर नानक को कुछ नहीं कहना। यह नानक जो भी नुकसान करे वह मेरे से आ कर ले लिया करो। आज से ले कर यह नानक मेरा है। ऐसा कहते कहते वैराग के साथ राय बुलार का गला भर आया और आंखों से प्रेम के आंसू बहने लगा।

गीता जी का पाठ

एक बार गुरू जी हाथ में कोई पुस्तक सी लेकर बैठे देख

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहे थे कि पिता जी ने कहा, नानक क्या पढ़ रहा है ?

'पिता जी ! गीता पढ़ रहा हूं।' नानक ने कहा।

इतने में आपके पुरोहित पं० गोपाल जी भी आ निकले और कहने लगे, 'नानक जी हमें भी गीता का पाठ सुनाओ।' तब गुरू जी ने केवल आठ वर्ष की आयु में गीता का पाठ और अर्थ ऐसे ढग से सुनाए कि वे पुरोहित और पिता जी दोनों ही दंग (हैरान) रह गये।

गुरु जी सुलतान पुर में

कपूरथले के नजदीक बेई नदी के किनारे एक सुलतान पुर नाम का शहर था‡ जिसका नवाब एक मुसलमान लोधी था। वहां ही आपका बहनोई रहता था। आपकी बड़ी बहिन, जिसका नाम नानकी था वह वहां अपने पति जैराम के पास ही रहती थी। जैराम बहुत बड़े दियानतदार और शरीफ होने से उनका वहां के नवाब के साथ बहुत मेल जोल हो गया था।

इधर गुरू जी यहां तलवंडी में (जिसका नाम बाद में ननकाना साहिब हुआ) अपने माता पिता के पास बहुत उदास

‡यह शहर अब भी है। यहां पर गुरू जी की याद में बड़ा भारी गुरुद्वारा है। अमावस को बहुत भारी मेला लगता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहते थे जिससे जै राम खास सुलतान पुर में ही ले गये। गुरू जी का सुलतान पुर में जाने का यह भी कारण था कि बेबे नानकी का अपने भाई के साथ अटूट प्यार था, केवल प्यार नहीं था बल्कि वह अपने भाई को साक्षात भगवान का रूप मानती थी।

मोदीखाने की कार

सुलतान पुर में गुरू जी को जब कुछ देर रहते हुए हो गई तो जैराम जी ने आपको नवाब के यहां मोदी खाने की नौकरी दिला दी। मोदीखाने का काम बहुत जिम्मेदारी का काम था। जिसके लिये बहुत बड़ी जमानत देनी पड़ती थी, जोकि जैराम ने वह जमानत दे दी थी।

मोदीखाने के काम को गुरु जी ने अजब ढंग से चलाया आप जब किसी को आटा या गेहूं की सौ, दो सौ धारन तोल कर देनी होती तो एक, दो, तीन, चार आदि तोलते हुए बारह से आगे जब तेरह तक पहुंचते तो वहीं रुक जाते; धारन तो चाहे दो तीन सौ या पांच सौ तक तुल जाती परन्तु आप की जबान पर तेरा तेरा [भाव: हे भगवान मैं तेरा हूं तेरा हूं) रहता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुबह से शाम तक जिस प्रकार का कोई सौदा मांगता आप देते चले जाते। गेहूं, आटा, दाल, घी आदि जितना कोई मांगता दे देते और अपने पास उसका कोई हिसाब किताब नहीं रखते थे। आप का यश शोभा दूर दूर तक फैल गई। दुकान के आगे सुबह से शाम तक भिखारियों की भीड़ लगी रहती। इस प्रकार जहां तहां आप की चर्चा फैलने लगी। नाना प्रकार की बातें उड़ने लगी। दूती लोग तो यहां तक कहने लगे कि यह मोदीखाने को उजाड़ कर कहीं भाग जायेगा या दरिया में डूब जायेगा और सारी विपदा जैराम के गले में पड़ जायेगी। जै राम को लोगों की बातें सुन सुन कर बहुत चिन्ता होने लगी। उधर नवाब के पास भी किसी ने चुगली कर दी कि उसका मोदी खाना उजाड़ कर भागने ही वाला है। परन्तु इस में एक बेबे नानकी का ही निशाना अटल रहा।

आखीर मोदीखाने का हिसाब करने के लिये नवाब ने जैराम को बुलवा भेजा और हिसाब होने लगा। कहते हैं कि तीन दिन तक हिसाब होता रहा क्योंकि हिसाब बहुत बढ़ा हुआ था और तीन चार बार हिसाब किया तो भी गुरू जी का चार पांच सौ रुपया बड़ता ही रहा जिस से दूती लोग शरम सार होकर चले गये और गुरू जी की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महिमा बहुत बढ़ गई । आप पहिले से भो ज्यादा गरीबों को सौदा रसद वगैरा बांटने लगे।

गुरू जी की सच खण्ड यात्रा

श्री गुरू नानक देव जी हर रोज सुबह अमृत वेले[प्रातः काल] बेई नदी में स्नान करके ध्यान में मग्न होते थे। जब आप स्नान करने जाते तो आपके साथ एक सेवक होता था। एक दिन आप ने कपड़े उतार कर दास के पास रख कर बेई के गहरे प्रवाह में छलांग लगा दी। यहां पर पानी बहुत गहरा था। बस उसी गहरे पानी में अलोप हो गये। दास ने कुछ देर इन्तजार की। जब आप बाहिर न निकले तो दास ने गुरू जो को जल में डूब गया समझ कर जैराम को खबर दे दी। तब क्या था ? सारा शहर वहां पहुंच गया और बड़े बड़ टोभुओं द्वारा तलाश होने लगी। आखिर कार निराश होकर सब लोग वपस आ गये। जैराम जोर जोर से रोने लगा और दूती लोग कई प्रकार की बातें बनाने लगे; कि भई यह तो मोदीखाने में घाटा पड़ गया था जिससे शर्म के मारे आत्महत्या कर ली है। परन्तु बेबे नानकी का हृदय अडोल रहा और उसने अपने पति जै राम को कहा स्वामी जी चिन्ता न करो। मेरा भाई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कभी डूब नहीं सकता वह तो संसार सागर में करोड़ों जीवों को तारने वाले हैं। वह आप कहां डूब सकते हैं? परन्तु जै राम को धैर्य न आया। आखीर बेबे नानकी ने कहा कि हे पति देव! आप तीन दिन तलक मेरे भाई को इन्तजार करो जो तीसरे दिन सुबह ना आये तो समझना मेरा भाई डूब गया है।

बेबे नानकी जी के कहने पर विश्वास करके सब लोग तीन दिन तक चुप रहे। तीसरे दिन सुबह अमृत वेले सब नगर के लोग वेई नदी की तरफ चल पड़े जहां पर कि गुरू जी अलोप हुए थे। अभी थोड़ी ही दूर गये थे कि आगे से गुरू नानक जी स्वर्ण वस्त्र पहने हुए नगर की तरफ चले आ रहे हैं। बस फिर क्या था चारों तरफ जय जय कार होने लगी और सारे नगर में खुशी के बाजे बजने लगे। जै राम ने गरीबों को खुले दिल से दान पुन्न किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सच्च खण्ड का हाल

बेबे नानकी ने अपने भाई नानक देव से पूछा ! भाई जी, आप तीन दिन तक कहां लोप हुए रहे। गुरू जी ने कहा, बहिन जी ! मैं निरंकार के सच खण्ड देश में गया था। वह निरंकार का सच खण्ड देश कैसा है ? बेबे जी ने पूछा। गुरू जी ने कहा—

सच्च खंड वसै निरकार।
कर कर वेखै नदर निहाल।
ताकीआ गला कथीआ ना जाइ।
जे को कहै पिछै पछुताहि।

इसके बाद गुरू जी ने विसमाद भाव में आकर निरंकार के दर की महिमा; जपुजी साहिब में। 'सो दर शब्द दुवारा' देखो श्री जपुजी साहिब तथा रविदास की बानी में 'सो दर' के शब्द पढ़ कर जिससे गुरू जी ने निरंकार के दर की शोभा को आश्चर्य ढग से उच्चारण किया है।

गुरू नानक देव जी का गुरू

सर्व शास्त्रों का मत है कि परम ज्ञान की प्राप्ति के लिये किसी तत्व वेता गुरु को अवश्य धारण करना पड़ता है जो कि हर अवतार तथा महान पुरुष ने गुरु धारण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया था । परन्तु संसार में एक ही महान पुरुष हुए हैं, जिन्हों ने किसी गुरू को धारण नहीं किया, वे थे श्री गुरू नानक देव जी महाराज ।

आप तीन दिन तक सच खंड में निरंकार के पास रहे और निरंकार को ही अपना गुरु धारण किया और जगत के शीघ्र कल्याण के निमित यह नीचे लिखा मूल मंत्र लेकर आए थे ।

१ ओंकार सतिनाम करता पुरख निरभउ निरवैर
अकाल मूरत अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

गूरू नानक तथा सिक्ख धर्म का यह मूल मंत्र है और इसी नींव पर सिक्ख धर्म का महल उसारा गया था । गुरू नानकदेव जी के अकाल पुरुख गुरू होने के विचार आगे दिए जाएगे ।

गुरू जी का विवाह

इस समय में गुरू नानक देव जी का विवाह मूल चन्द खत्री बटाला निवासी* की सुपुत्री बीबी सुलखनी के साथ बड़ी धूमधाम से हुआ । विवाह को रसम भी गुरू जी ने

---

*आपका असली गांव पखोकी जिला गुरदास पुर था और वहां ही विवाह था । मूल चन्द की गोत चोणे थी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुरातन रीति को त्याग कर अपनी नई रसम के साथ किया था। आपकी बारात सुलतान पुर से ही चढ़ी थी और आप के माता पिता यहां ही आ गए थे। विवाह का संवत २४ ज्येष्ट १५४४ बि: था।

गुरू जी के दो बेटे

विवाह के सात वर्ष बाद आप के घर ६-१५५१ बि: को पहिला साहिबजादा प्रकट हुआ, जो बड़े होकर बाबाश्री चन्द जी महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए जिन्हों ने उदासीन संप्रदा की नींव डाली थी। तदोपरान्त १६ फालगुन १५५३ बि० को दूसरे साहिबजादे लखमी दास जी ने जन्म लिया, जिनका वंश बेदी नाम से अब तक प्रसिद्ध है।

गुरु जी की संसार यात्रा

संसार की यात्रा तो संसार के सभी महान पुरुष करते चले आए हैं परन्तु गुरू नानक देव जी की संसार यात्रा एक अलौकिक यात्रा थी। आप ने जब अन्तर ध्यान होकर देखा तो सारी पृथ्वी ही जलती दिखाई पड़ी। जैसे कि सिक्ख धर्म के महान पुरुष ने कहा है:—

'बाबा देखे ध्यान धर जलती सभ धरती दिस आई॥'

समझो कि गुरू नानक देव जी ने सारे जगत की कल्याण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के निमित्त कमर बांध ली। अपने बच्चों स्त्री के मोह को त्याग कर अपने एक साथी मर्दाना को लेकर जगत का उद्धार करने चल पड़े।

सच्ची नमाज़ का ढंग

आप घर से निकल कर शमशान में जाकर बैठ गये और वहां जाकर कहने लगे 'न कोई हिन्दू है न मुसलमान हैं।' यह बात नगर के काजी के पास पहुंची तो उसने गांव के बहुत से लोगों को साथ ले जाकर पूछा तुम यह कैसे कहते हो ? हम तो देखते हैं हिन्दू भी है मुससमान भी हैं। तब गुरू जी ने कहा कि यह केवल नाम के ही हिन्दू और मुसलमान हैं परन्तु इस में वह गुण नहीं जो कि एक सच्चे हिन्दू और मुसलमान में होने चाहिए। यह बात सुन कर काजी शर्म सार होकर चला गया।

इसके बाद काजी ने गुरू जी को कहा अगर आप हिन्दू और मुसलमान को एक ही समझते हो तो चलो आज हमारे साथ नमाज पढ़ो। गुरू जी काजी के साथ नमाज़ पढ़ने चल पड़े। इस बात की चर्चा सारे नगर में फैल गई कि गुरू जी मुसलमान बन गये हैं। जै राम को भी बहुत चिन्ता हो गई, पर बेबे नानकी ने कहा पति देव जी ! आप किसी बात

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को चिन्ता न करो। देखना मेरा भाई (नानक) काजी और नवाब को कैसे सीधा मार्ग दिखलाता है। ऐसा ही हुआ जब काजी और नवाब के साथ गुरू नानक देव जी नमाज पढ़ने के लिए मस्जिद में खड़े हुए तो काजी और नवाब नमाज पढ़ने गये पर गुरू जी यूं ही खड़े रहे। नमाज के पूर्ण होने के बाद काजी ने बड़े गुस्से में आकर गुरू जी को नवाब के सामने पूछा कि आप ने नमाज क्यों अदा नहीं की ? आप ने नमाज की बेइज्जती की, उस लिए सजा के पात्र हैं। तब गुरू जी ने उत्तर दिया कि हम नमाज किसके साथ पढ़ते, नवाब साहिब तो मन करके काबुल में जाकर घोड़े खरीद रहे थे और आप अपने घर में घोड़ी का वछेरा (जो आज ही वियाही है) की सम्भाल कर रहे थे। गुरू जी की यह बात सुन कर नवाब ने काजी के साथ सही बात समझ ली और गुरू जी को एक ऊचा फकीर समझ कर काजी और नवाब ने चरणों में प्रणाम किया।

ऐमना बाद में प्रवेश

जिस सांझी वालता और अमीरपन के विरुद्ध नफरत और गरीबों के साथ हमदर्दी की; लोगों ने आज समझा है। यह नियम तो गुरू नानक देव जी ने आज से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पौने पांच सौ साल पहले प्रचार किया था। गुरु जी अपने जीवन के उपदेश में अमीरों के विरुद्ध और गरीबों के साथ हमदर्दी का असली रुप में प्रचार करते रहे। बल्कि आप सदा ही अमीरों को आंख से अन्धा और कान मे बोला तथा पापी पुरुष कह कर पुकारते रहे जैसे कि आपकी महान पवित्र बाणी से सिद्ध होता है।

माया धारी अति अन्ना बोला।
शब्द न सुनही बहु रोल घचोला॥

श्री गुरु नानक देव जी ने जो एक ही समय में आठ श्रेणियों के साथ मुकाबला किया जिसका उदाहरण संसार भर में किसी भी इतिहास से नहीं मिल सकती। वह आठ महान यह थे-

(१) कसाई और अन्याई और लोभी राजाओं के साथ।
(२) जालम नवाबों के साथ।
[३] तपस्वी मौलवियों के साथ।
[४] जात अभिमानी ब्राह्मणों के साथ।
[५] पाखंडी साधुओं के साथ।
[६] चोरों और डाकुओं के साथ।
[७] कर्म कांडियों के साथ।
[८] बिगड़े हुए समाज के साथ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसी प्रकार और भी सिद्ध योगी आदि बहुत से लोगों के साथ गुरु जी को एक ही समय लड़ाई लड़नी पड़ी थी। हां, लड़ाई भी ज्ञान विचार और नियमों की।

आप ने जब बिगड़े हुए समाज के विरुद्ध आवाज उठाई तो वह बिगड़ा हुआ समाज एक मूठ होकर गुरू जी पर झपट पड़ा। गुरु जी के पीछे कुराहीआ कह कर कर ताली बजवाई, यहां तक कि गुरू जो जहां भी गए वहां ईटों और पत्थरों की बुछाड़ कराई परन्तु गुरु जी अपने नियमों पर दृढ़ रहे।

भाई लालो और मलक भागो

ऐमना बाद में दो पुरुष थे, एक बहुत बड़ा धनवान जागीरदार और दूसरा भाई लालो जो बहुत गरीब और तरखाना (बड़ई) का काम करके गुजर करता था।

गुरु जी भाई लालो के यहां रहने लगे, जिस को अभिमानीयों ने बहुत बुरा मनाया। उस समय के समाज में किसी ऊचे कुल के पुरुष का किसी शुद्र के घर में ठहरना और उस के घर में खाना खाना बहुत बुरा समझा जाता था। पर गुरु जी ने इस बात की कोई परवाह न की।

एक बार उसी नगर के बहुत बड़े धनवान जागीरदार मलिक भागो ने ब्रह्म भोज नाम का बड़ा भारी यज्ञ किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और नगर के सब साधुओं और फकीरों को निमंत्रण दिया साथ ही गुरू नानक देव जी को भी निमन्त्रण दिया गया।

इस ब्रह्म भोज (यज्ञ) में जबरदस्ती गरीब किसानों के घरों से गेहूं दाल चावल और घी वगैरा का संग्रह किया गया था इसी प्रकार और गरीब लोगों से भी नाना प्रकार की सामग्रा इकठो की गई थो। भाव वह था कि यज्ञ की सामग्रीव राशन सब गरीबकिसानों और गराबों सेजबरदस्ती इकठा किया गया था परन्तु नाम मलिक भागो का था, इस लिये गुरू जो ने यज्ञ में जाने से इन्कार कर दिया और सब साधू सन्त और फकीर आदि खूब पेट भर भर कर यज्ञ का भोजन खा आये थे।

इतिहास में लिखा है कि गुरू जी को जब मजबुर करके यज्ञ स्थान में ले गये और अभिमानी मलिक भागो ने गुरू जी को कहा कि आप ब्रह्म भोज में क्यों नहीं आये? जब कि सब मत्तों के साधु भोजन खा खा कर गये है। यज्ञ का पूरी हलवा छोड़ कर एक शुद्र के बहे सूखे टुकड़े चबा रहे हो तब गुरू जी ने मलिक भागो को कहा आप कुछ पूड़ी और हलवा ला दो मैं आपको इसका भाव बताऊं कि मैं क्यों नहीं आया? उधर गुरू जी ने भाई लालो के घर का सूखा टुकड़ा मंगवा लिया और एक मुठी में मलिक भागो का पूरी हलवा लेकर और दूसरी मूठी में लालो का सूखा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टुकड़ा पकड़ कर जोर से नचोड़ा तब हलवा और पुरियों से खून की धारा बहने लगी और भाई लालो के सूखे टुकड़ों से दूध की धारा बहने लगी। मलक भागो के साथ हजारों लोग इस कौतक को देख कर हैरान रह गये और मलिक भागो का हृदय भयभीत होकर कांपने लगा। तब गुरू जी ने कहा भाइयो यह है हक और धर्म की कमाई-दूध की धारें और यह है पाप की कमाई-खून की धारें। इस के बाद वह मलिक भागो गुरू जी के चरणों में लिपट गया और पहिले पापों का प्राश्चित करके आगे को धर्म की कमाई करने लगा।

गुरू जी की भविष्य बाणी

ऐमनाबाद के पठान लोग बहुत पापी और दुष्ट पुरुष थे। गरीब और कमजोर लोगों को लूट लूट कर ऐश करते थे। उनके पापों का बदला लेने को बाबर बादशाह काबुल पर चढ़ाई करके आ रहा था गुरू जी ने अन्तर ध्यान हो देख लिया कि कल को वहा पठानों को कतले आम करनी हैं। वह सारा हाल गुरू जी ने भाई लालो के प्रति पहले ही एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शब्द द्वारा कह दिया जैसे कि-

पाप की जंझ लै काबलो धाया जोरी मांगै दान वे लालो।
(देखो सारा शब्द राग तिलंग म: १)

गुरु ज़ी ने एक दिन पहले ही भाई लालो को शहर से बाहर कहीं दूर जाने को कह दिया।

गुरु जी बाबर को कारगार [जेल] में

यूं ही बाबर ने बलवान सेना के साथ एमनाबाद में आक्रमण किया कि वहां के ऐश प्रस्त पठान एक घड़ी भी सामने न ठहर सके बाबर ने नगर में कतलेआम शुरू करदी सब के सब साधू सन्त और फकीर पांव सिर पर रख भाग गए परन्तु गुरू जी वहां ही खड़े रहे यहां तक कि जालम घोड़े पर सवार होकर कतले आम कर रहा था बल्कि गुरू जो उस भयानक अत्याचार को देख कर अपने भगवान को पुकार कर ऊंची आवाज से कहा-

एती मार पई कुरलाणे तैं की दरद न आया।

भाव—हे भगवान ! तेरी जनता पर इतना भयानक अत्याचार हो रहा है कि चारों तरफ कुरलाट और हाहाकार मच रही है क्या आप को दर्द (तरस) नहीं आता है आखिर गुरू जी ने छलांग लगा कर बाबर के घोड़े को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाग पकड़ ली और बड़े जोरसे कहा—ओ बाबरा ! जाबरा ! ठहर जा बन्द कर अब इस अत्याचार को। उस वक्त बाबर बेहद गुस्से में था वह जुल्म करने से रुक गया। खून से टपकती तलवार मयान में डाल ली और गुरू जी को गिरफतार करके बाकी बंदियों (कैदियों) के साथ ही कारागार में डाल दिया।

कहते हैं कि सब बंदियों के साथ ही गुरू जी को भी गेहूं पीसने को दी गई तब गुरू जी ने अपने साथी मरदाने को रबाब बजाने के लिए कहा और आप ने बहुत मीठी आवाज में शब्द गाने शुरू किया बाकी के सब कैदी मुग्ध होकर शब्द सुनने लगे। इधर सब की सब चक्कियां अपने आप लाटू की तरह चलने लगी। इसी बात का जब बाबर को पता लगा तो वह भयभीत होकर कुछ भांग लेकर गुरू जी के चरणों में हाजिर हुआ तब गुरु जी ने कहा हम यह भांग नहीं पीते हम तो भगवान के नाम को

---

*उस समय के आम साधु फकीर भांग पीने के आदी होते थे कईयों का विचार है कि गुरु जी ने बाबर से सातमुठी भांग लेकर सात पीढ़ियों की बादशाही बखशी और सात सीस देकर वापिस ली परन्तु यह बात गलत है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भांग पीते हैं। जिसकी खुमारी कभी उतरता ही नहीं।

गांजा भाग शराब सब उतर जाये प्रभात।
नाम खुमारी नानका चड़ी रहे दिन रात॥

गुरू जी के यह ज्ञान से मिले हुए यह वचन सुन कर परम शांति को प्राप्त हुआ।

सज्जन ठग को तारना।

जिला मुलतान (पाकिस्तान) में एक हड़प्पा शहर में एक बड़ा भारी सज्जन ठग रहता था जो मुसाफिरों को फुसला कर घर ले जाता और वहां जाकर पहले तो मुसाफर की खूब सेवा करता। जब वह रात को सो जाता तो उस को जान से मार कर अन्दर एक कुएं में फैंक देता और उस के पास जो कुछ भी माल ताल होता वह हजम कर जाता। उसका हमेशा यह काम था। गुरु जी भी उस के पास जा निकले और वह गुरू जी को अपने घर ले गया। उसकी बड़ी सुन्दर शकल और चापलूसी की बातें सुन कर मरदानें ने कहा, महाराज जी! यह तो बहुत ही परोपकारी पुरुष मालूम होता है। गुरू जी ने कहा भाई मरदाना करतार के रंग देखते चलो। उस सज्जन ठग ने गुरु जी की बहुत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रेम से सेवा की और सौने के लिये बढ़िया पलंघ और बिसतर दिये। अब इस बात का इन्तजार करने लगा कि यह कब सोये और मैं इन को मार कर इन के कपड़े व माल वगैरा की सम्भाल करूं, परन्तु अन्तरयामी सतगुरु शब्द का कीतन करने रहे और मरदाना रबाब बजाता रहा। जब सज्जन ने देखा कि यह तो सोते ही नहीं चलो वैसे ही तलवार मार कर इन का काम तमाम कर डालूं इस नीयत से जब गुरु जी के नजदीक गया तब नीचे लिखा शब्द गुरु जी की रसना से मधुर स्वर से गाया हुआ सज्जन ठग के यूंहीं कान में पड़ा सुनते ही वह मुग्ध होकर गुरु जी के चर्णों में गिर पड़ा और अपने किये हुए पापों का क्षमा मांगने लगा। वह शब्द यह था:-

उजल कैहां चिलकना घोटम कालड़ो मस।
धोतिया जूठ न उतरै जे सौ धोवै तिस॥

[देखो सारा शब्द पढ़ कर राग सूही म० १]

उस सज्जन ठग को असली सज्जन बनाकर गुरमुख की पदवी देकर वहां से आगे चल पड़ बाद में सज्जन ने जो पाप का धन इकठा किया था सब गरीबों को बांट दिया और उस के बाद आने वाले यात्रियों की सच्चे दिलसे सेवा करने लगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरिद्वार के यात्रियों को सन्त उपदेश

गुरू जी वहां से पानीपत करनाल होते हुए दिल्ली जा पहुंचे वहां सिकन्द्र लोदी राज करता था उसको भी सतधर्म का आदेश करके हरिद्वार जा पहुंचे, सुबह के समय आधे लोग सूर्य की तरफ पानी फैंक रहे देख कर आप ने सूर्य की तरफ पीठ करके पश्चिम की तरफ पानी फैंकना शुरू कर दिया। आप का उपदेश करने का ढंग भी अलौकिक होता था समय के अनुसार आप ढंग बना लेते थे यात्रियों ने यह निराला कौतुक देख कर पूछा।

यात्री—आप यह क्या करते हो ?

गुरू जी—आप क्या करते हो ?

यात्री—हम तो सूरज लोक को पानी दे रहे हैं वहां हमारे पित्र रहते है यह पानी उनको पहुंच रहा है।

गुरू—हम पंजाब में एक ग्राम में खेती बोह आये है वह सूख रही है उसको पानी भेज रहा हूं।

यात्री-अरे ! तुम तो बहुत भोले पुरुष मालूम होते हो। तुम्हारा यह पानी यहां कहां से पहुंचा होगा यह देखो यहां ही वापिस गंगा जी में पड़ रहा हैं।

गुरू जी—मेरा पानी इस जमीन में दो सौ कोस तक नहीं पहुंच

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सकता परन्तु आपका पानी कई योजन कोष दूर जावे तो सूरज देशको पहुंच जाता होगा। गुरु जी के यह युक्ता प्रदान वचन सुनकर उन यात्रियों को सत धर्म का ज्ञान हो गया और वह सब के सब गुरु जी के चरणों पर गिर पड़े और गुरु जी से सतिनाम का उपदेश लेकर मुक्त के अधिकारी हुए।

मथुरा के यात्रियों का सत्य उपदेश

वहां से चलकर आप मथुरा पहुंच गये वहां के पण्डितों ने पूछा कि आप बताओ कि जो कलियुग है। उसका निवास स्थान कहां है ? तब गुरु जी ने एक शब्द उच्चारण करके बताया कि भाई 'जैसे आप कलियुग का कोई शरीर मानते हो यह तुम्हारा धर्म है देखो यह संसार में कहीं भी देखने में नहीं आता । हां वह

—देखो राग रामकली महला १

सोई चन्द चढ़े सितारे सोई दिन इक तपत रहे।
सा धरती सा पवन झुलारे युगजीव खेले थाव कैसे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो जीवों के मनों में खेल रहा है। देखो वही सत्युग वाले चांद सूर्य और हवा आदि हैं हां लोगों के विचार परिवर्तन हो गये हैं जो यह बात उलट हो रही है खरे को खोटा खोटे को खरा, चोर को ठग्ग और डाकूओं को चौधरा माना जाता है। काजी (अदालत करने वाले) मन के मैले रिश्वत लेकर सच्चे को झूठा और झूठे को सच्चा बना दिया जाता है इसी प्रकार और सब बात उलट पुलट हो रही बस इसी का नाम कल्युग है। गुरु जी के अनमोल वचन सुन कर पण्डितों में ज्ञान और शान्ति आ गई और वह गुरु जी के उपदेश धारण करके सन्त मार्ग पर चलने लगे।

नूरजहान का निस्तारा

वहां से आप गया आदि स्थानों से विचरते हुए बंगाल देश में जा पहुंचे वहां ढाका बंगाल में एक नूर जहान नामकी औरत राज करती थी जोकि बड़ी भारी जादूगर थी गुरु जी ने नगर के बाहर डेरा लगा दिया। इतने में मरदाने ने कहा कि गुरु जो मुझे आज्ञा दो जो इस नगर मेंसेकुछ मांगकरखा आऊं। गुरु जाने कहा भाई मरदाना जाओ तो सही पर बच कर रहना। यहां बड़ो बड़ीजादूगरनी रहती है। जब मर्दाना नगर में गया तो उस विचारे को जाते ही कुछ जादूगरनियों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने उसे मेंडा बनाकर घर के अन्दर बांध लिया और बेचारा वहां मैं मैं करने लगा। इधर गुरू जी को भी अन्तर आत्मा से सारा हाल मालूम हो गया तो भाई बाला को साथ लेकर वहां पहुंच गये। यहां मरदाना बकरा बना बैठा था। गुरू जी को देखकर मरदाना बकरे के रूप में मैं मैं करने लगा। तब गुरू जी ने कृपा दृष्टी से देखा ही था कि मरदाना अपनी असली सूरत में आ गया तब वह जादूगरनी बहुत क्रोध में आकर गुरू जी पर अपना जादू अजमाने लगी। जब गुरु जी के ऊपर कोई असर न हुआ तो शरमा कर बैठ गई। इतने में कुछ औरतें पानी के मटके सर पर उठाकर आ रही थीं। यूंही गुरु जी ने उन पर निगाह डाली तो एक स्त्री के सर पर मटका चिपट गया और उतारनेका उन जादूगरनियों ने बहुत यत्न किया वह मटका नहीं उतरा। तब यह खबर उनकी सरदारनी नूरजहां को पहुंची। वह गुस्से में आकर बहुत सी जादूगरनियों के साथ घटनास्थल में पहुंच गई। नूर जहां और सब जादूगरनियों ने घड़ा उतारने का यत्न किया। जब सभी यत्न निष्फल हो गये तो वह जादूगरनियां हार कर गुरू जी के चरणों पर गिर पड़ी और अपनी भूल पर बार बार क्षमा मांगने लगी तब गुरू जी ने उनसे यह जादू का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाटक वगैरह का काम न करने का प्रण लेकर उनको सत धर्म का ऊपदेश किया।

गुरू जी की सच्ची आरती का भेद

जगन्नाथ पुरी पूर्व में कलकत्ते के पास हिन्दु धर्म का एक बहुत बड़ा तीर्थ है। जब गुरु जी वहां पहुंचे तो वहां के पुजारी लोग भगवान की मूर्ती के आगे थाली में दिये और पुष्प आदि सामग्री रख कर खड़े हो कर आरती कर रहे थे गुरु जी बैठे रहे आरती में खड़े न हुए तो पुजारियों ने इसका कारण पूछा तो गुरू जी ने कहा कि भाई हमारे भगवान की आरती तो सदा रात दिन हो रही है देखो यह गगन (आसमान) बहुत बड़ा थाल हैं, उसमें चांद सूरज दीये हैं और सितारे आदि मोती जड़े हुए हैं यह पवन चंवर कर रही हैं तमाम बनस्पती फुलों की फूल जोती हैं, और आप इससे बढ़ कर क्या आरती कर सकते हो। इस प्रथा से गुरु जी ने जो शब्द उच्चारण किया वह पढ़कर देखो:

राग धनासरी म० १

गगन में थाल रवि चन्द दीपक बने
तारका मडल जनक मोती ॥

वह पुजारी गुरू जी की अमृत बाणी सुन कर कृतार्थ हो गये और गुरू जी से सतिनाम का मन्त्र लेकर जाप करने लगे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाखंडी योगियों को सतधर्म का उपदेश

गुरु जी जगत जीवों का कल्याण करते और भूले भटके लोगों को सत धर्म का उपदेश करते हुए बंगाल में चिटगांव के इलाके में जा निकले वहां एक पाखंडी योगी ने लोगों को यह भ्रम डाल रखा था कि वह तीन लोक की सोझी रखता है जब गुरू जी वहां गये तो वह योगी अपने साथियों के साथ भजन गा रहा था और बड़ी दूर से लोग आ आ कर भजन सुन रहे थे। उनके आगे एक मिटी का कूजा रखा था जिसमें लोग रुपये पैसे डालते जाते थे जिस में हजारों रुपये और सोने के भी डाल रहे थे। गुरू जी ने वह कूजा उठाकर उस योगी के पीछे की तरफ रख दिया,योगी ने जब देखा कि धन का भरा हुआ कूजा लोप है तो इधर उधर हाथ पांव मारने लगा सब लोगोंसे कूजा पूछने लगा तब गुरूजीने कहा तू तो कहता था मेरे को तीन लोक को खबर है अब तेरे को तेरी पीठ के पीछे कूजा पड़ा नहीं दिखाई पड़ता गुरु जी का इन बातों का प्रभाव इन योगियों पर ऐसा पड़ा कि वह सबके सब पाखंड की कला को छोड़कर गुरु जी के सिख बन गये और लोगों पर भी इस घटना का असर पड़ा और वह भी गुरु जी के अनुयाई हो गये उन योगियों के प्रति गुरू जी ने निम्नलिखित शब्द उच्चारण किया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुहेल खंड के जालिम रुहेलों का उधार

श्री गुरु नानक देव जी वहां से उड़ीसा प्रांत से बहुत से लोगों का कल्यान करते हुए रुहेल खण्ड में आ पहुंचे। यहां के मुसलमान रुहेले बहुत जालिम और परदा फरोश थे और बहुत से अत्याचारों के इलावा यह लोग गुलामों और बच्चों का व्यापार करते थे। कहींसे भी कोई बच्चा मिल जाता उसे पकड़ कर ले जाते और मण्डियों में बड़े बड़े धनवान लोगों के यहां गुलाम बनाने के लिए बेच देते थे।

कौतुकी गुरु जी इन जालम लोगों का सुधार करने के लिए मरदाना को दो दिनके लिये कहीं ठहराकर आप चौदह पन्द्रह वर्ष के सुन्दर बालक बन कर ऊंचा जगह पर बैठ गये वहां एक रुहेला आया और गुरुजी को गुलाम बेचने को गरज से पकड़कर घर ले गया। गुरु जी ने ऐसा मोहना रुप धारण कियाकि उस रुहेले की घरवाली ऐसी मोहित हो गई कि जैसे हरदम गुरु जी के स्वरुप को देखती रहे इसी तरह गली मुहल्ले और सारे नगरके ही नरनारी गुरुजी के मोहनी स्वरूप को देख देख कर मुग्ध होने लगे रुहेले के घर में कोई लड़का लड़की ना होने से उसकी घरवाली ने अपने पति को घर में अपना सुपुत्र बना कर रखने को कहा रुहेले ने न माना कहा कि इसके तो हमको हजारों रुपये मिलेंगे इसे किसी बहुत बड़े

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धनपती के यहां बेच देंगे और जो चाहा धन प्राप्त करेंगे।

गुरु जी के मोहन स्वरूप की चर्चा दूर दूर तक फैल गई और वह रुहेला अपने दलालों द्वारा अपने गुलाम का मोल बता रहा था वह अज्ञानी नहीं जानता था कि जिसको मैं गुलाम कह रहा हूं वह तो तीन लोक का मालिक है। इस असीमत संसार कीं सगली माया इनकी चर्ण सेवक हैयह तो आप नारायाण कलाधार जग महि प्रवरियो है।

एक दिन गुरू जी को उस रुहेले की घर वाली नें कुए से पानी भर लाने को कहा तब गुरु जी ने कहा पानी कहां से लायें। सब नगर के कुँए तो सूखे पड़े हैं यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गई। जब मालूम किया कि सब कुँए सूखे पड़े हैं। सुबह से शाम तक जब कहीं से पानी न मिला तो नगर के सब नर नारी मारे प्यास के तड़पने लगे, सब लोग एक जगह इकठे होकर मारे प्यास के चिंता में पड़े सोचने लगे, तब गुरु जी ने सब को ऊंचो कहा कि आप लोग अपने पापों पर पश्चाताप करो और सच्चे दिल से भगवान के आगे बेनती करो तो वह बहुत कृपालू हैं आप लोगों पर जरूर हो कृपा करेंगे सो ऐसा ही हुआ जब गुरु जी के कहे अनुसार उन्हों ने भगवान के आगे प्रार्थना की तो सब कुँओं में पानी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निकल आया तो सब लोग गुरु जी को पूर्ण पुरुष जान कर चर्णों में गिर पड़े और सच्चे मन से गुरु जी के कहने पर सब सतनाम का जाप करने लगे। गुरु जी के कहने पर सब प्रकार के पाप कर्म को छोड़ कर असली अर्थों में मनुष्य बन कर नेक चलन हो गये।

वापिस सुलतानपुर में

आपके विछोड़े में उनकी सुपत्नी, दोनों सुपुत्र और उनकी प्यारी बहिन बेबे नानका साथ ही उनके बहिनोई जै राम जी मछली की तरह तड़प रहे थे। उनकी आत्मा को शान्त करना अपना फर्ज समझते थे। इस लिये अब आप संसार की पहली यात्रा समाप्त करके मरदाना सहित वापिस सुलतानपुर पहुंच गये और अपने सुपुत्रों, धर्म पत्नी; बहिन और बहिनोई को दर्शन देकर निहाल किया।

दूसरी संसार यात्रा

श्री गुरू नानक देव जी अब १५६७ बि० को दूसरी संसार यात्रा को तैयार हुए। सब से पहले आप सुलतान पुर से अपने जन्म स्थान श्री ननकाना साहिब में पहुंच कर अपने माता पिता को मिले और उनकी आत्मा को,शांतिदेकरप्यारे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रायेबुलार को मिलकर करतारपुर का इन्तजाम अपने भगीरथ आदि शिष्यों को सौंप कर धर्मकोट, भठिंडा से होते हुए सरसा में जा पहुंचे। यहां पर बहुत से मुसलमान फकीरों ने कई प्रकार के चालीसे और जादू टूने से जन सधारन को अपने बस में कर रखा था। गुरु जी ने उन सब को ज्ञान का उददेश देकर फकीरों के मार्ग में चला कर (अजमेर) राजपुताने जा पहुंचा वह सूफा फकीरों और योगियों का बड़ा भारी गढ़ था इनके साथ ज्ञान गोष्टी करके सच का मार्ग दिखाया। इससे आगे कुआलू में जैनियों का बड़ा भारी मठ था और वहां बहुत से जैनी साधू रहते थे जिनके साथ गुरू जी की खूब ज्ञान चर्चा हुई आखीर में जैनी साधुओं ने गुरू जी के सिद्धान्त को मान लिया और गुरु जी से सतनाम का उपदेश लेकर परम शांति को प्राप्त हुए।

उप्रांत श्री गुरू नानक देव जो संसार के भूले भटके जीवों को सच का मार्ग दिखलाते हुए इन्दौर पहुंचे। वहां के जीवों को गुरु की भक्ति में लीन करते हुए नर्बदा, नासक, औरंगाबाद और पंचमड़ां में आकर निवास किया।

यहां इन्दौर में गुरु जी ने इमली की दातुन करते करते जमीन में गाड़ दी थी जो कि हरी भरी होकर बाद में बहुत बड़ा इमली का वृक्ष बन गया। आजकल यहां बहुत भारी इमली साहिब गुरुद्वारा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कौडे राक्षस का उध्दार करना

उस इलाके में एक बहुत भारी जंगल में गुरू जी भाई बाला और मरदाना के साथ जा रहे थे कि रास्ते में चलते चलते मरदाना भुख और थकावट से मजबूर होकर गुरू जी के साथ बहुत गुस्से हो गया, यहां तक कि गुरु जी का साथ छोड़ कर घर की ओर चल पड़ा। गुरू जी ने बहुत कहा कि भाई मरदाना यहां से घर तो बहुत दूर है हजारों कोष है, कहीं रास्ते में ही खवार होता फिरता रहेगा। तू ने अगर हमारा साथ छोड़ना ही है तो जब हम पंजाब जायेंगेतो साथ चले जाना और वहीं रह जाना पर मरदाना ने एक न मानी और अपने ही मुँह एक जंगल के रास्ते पर चल पड़ा, गुरु जी ने भाई बालेके साथ वहां के एक नजदीक गांव के बाहर जाकर बैठ गये जैसे कि यह कौतुक गुरु जी का अपना ही रचाया होता है।

इधर मरदाना चलता चलता ऐसे बियाबान जंगल में जा निकला यहां एक कौडा राक्षस रहता था जो भी मुसाफिर उसको मिलता वह उसको तेल के कड़ाहे में डाल कर भून कर बड़े मजे के साथ खा जाता था। वह कौडा राक्षस कई दिन का भूखा किसी मनुष्य की ताक में बैठा था कि मरदाना उसकी निगाह में पड़ गया। बस फिर क्या था वह मरदाने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को पकड़ कर ले गया, अपने स्थान में मुश्कें बांध कर रख दिया और आप तेल के कड़ाहे को गर्म करने लगा जिसमें मरदाने को पकौड़ोंकी तरां तलकर खाना था।उधर मरदाना को भी इस बात का पता हो गया कि यह तेल का कड़ाहा किस लिए तपाया जा रहा है वह मन ही मन पश्चाताप करने लगा और साथ ही साथ गुरू जी के चरणों का ध्यान करने लगा । उसका मन आशा और निराशा के दरम्यान डोले खा रहा था—कभी कहता था कि गुरू जी इस भयानक बिपता से मेरे को अवश्य छुड़ाईये और कभी मन में निराशा का अन्धेरा छा जाता था कि मैं तो गुरु जी के साथ बहुतबुरी तरह बिगड़ कर आया हूं वह मेरी सहायता कहां करेंगे पर फिर भी दूर से आशा का दीपक जलता दिखाई देता था कि गुरू जी अपने सेवकां के अवगुणों को नहीं चितराते ।

'अवगुण को न विचारे।'

(गुरू बाणी अनुवाद)

इतने में तेल का कड़ाहा तप कर किस भी पदार्थ के भुनने योग्य हो रहा था तो भी कौडे राक्षस ने उसमें बृक्षका पता डालकर तेल की परीक्षा की वह तेल में पड़ते ही थोड़ी सी शूं शूं करके भूनकर पहले लाल और फिर भस्म हो गया बस फिर क्या था वह राक्षस मरदाने को तरफ देख

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भयानक रुप से खिलखिला कर इस प्रकार हंसा कि मरदाना को ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे उसको भयानक मौत उसके शरीर को अपने मुँह में डालने के समय हंसती है। इधर तो यहां पर उधर घट-घट के अंतर की जानने वाले अन्तरयामी गुरु जी मरदानाको इस दशा को जानकर भाईबाला कोकहने लगे 'चलो भाई बाला अपने साथी की जान बच ते उसको तो एक राक्षस तेल में तलकर खाने वाला है तब भाई बाला ने कहा महाराज जी वह तो अपके साथ बहुत बुरा बोल बिगाड़ कर गया है अब उसे राक्षस के मूंह का ग्रास बनने दो तब गुरु जी ने कहा, नहीं भाई बाला हम ऐसा कैसे होने देंगे लोग क्या कहेंगे कि गुरु नानक के एक साथी को एक जंगली राक्षस भक्षण कर गया। चलो बहुत जल्दी चलें। बस इतना कहने से ही एक छिन मात्र में गुरु जी बाला समेत वहां पहुंच गये जहां वह कौडा राक्षस मरदाना को पकड़ कर आग रूप तेल में फैंकने को खड़ा हो रहा था। गुरु जी वहां अदृश्य रुप से कड़ाहे के पास खड़े हो गये और इतने में पुकार करते हुए मरदाना को कड़ाहे में ऐसे धर दिया जैसे मछली के मांस का टुकड़ा तेल में छोड़ दिया जाता है। उस समय कौडा को भूख तो उसकी आंखों को जला रही थी। वह समझ रहा था कि बस दो मिंट की तो बात है जो इसके भुन जाने पर फिर खूब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पेट भर कर खायेंगे। पर उसकी अश्चर्यता की कोई सीमा न रहा जबकि उसने कड़ाहे के तेल को बर्फ की तरह शीतल पाया और उसमें मरदाना को देखा कि वह शीतल तेल भी उस के शरीर को छूआ तक नहीं। इस अचम्भा कौतक को देख कर वह राक्षस कुछ भयभीत हो गया कि इतने में गुरू जी प्रगट हो गये और वह कौडा राक्षस मारे डर के गुरु जी के चर्णो में गिर पड़ा और अपने गुनाहों की बिनती करने लगा तब पतित पावन गुरु जी ने 'पिछले अवगुन बखश लै प्रभु आगे मार्ग पावे' के महा वाक्य अनुसार उनके जनम जन्मांत्रों के पापों को क्षमा कर सतनाम का उपदेश देकर अपना सिख बना लिया। गुरु जी की महान कृपा से जो मनुष्य पहले राक्षस वृती वाला था और मनुष्यों को तेल में भून २ कर खा जाता था। वह गुरुद्वारा[धर्मशाला] बना कर मनुष्य जाति की सेवा करने लग पड़ा।

राजा शिवनाभ का उधार करना

अब गुरु जी वहां से अपने भाई बाला और मरदाना को साथ लेकर दक्षिण हैदराबाद, गोलकंडा, मद्रास, पांडीचरी; रामेश्वर से होते हुए संगलादीप में जापहुंचे वहां का एकशिव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाम राजा था जो कि ईश्वर भक्ति वाला बहुत धर्मात्मा तो था पर उसको पाखण्डो साधुओं के कुकर्मों और भ्रष्टाचारों ने कुछ आकर्षक सा बना दिया था इस लिए वह जल्दी से किसी साधु पर विश्वास नहीं करता था। जब गुरु जी ने उसके बाग में डेरा लगा दिया तो उस राजाने बाकी साधुओं की तरह गुरू जी की परीक्षा करने के लिये बहुत सुन्दर और मन मोहनी स्त्रीयों को भेजा और साथ उनको हीरे जवाहरात बहुतधन भी गुरू जी को भेट करने के लिये दिया उन औरतों ने रात भर गुरू जी पर कई प्रकार से प्रभाव डालनेके लिये यत्न किये धनका लोभ भी दिखाया पर जबवह सब निष्फल हो गये तब उन्हों ने राजा शिव नाभ को सब हाल सुनाया कि वह तो कोई पूर्ण पुरुष मालूम पड़ता है। कहते हैं कि राजा ने तब भी पूरा विश्वास न किया यहां तक कि अपनी बहुत ही सुन्दर रानी को भेज कर गुरु जी की परीक्षा लेनी चाही। जब राजा की रानी गुरू जी पर काम चेष्टा का प्रभाव डालने का यत्न करने लगी तो गुरू जी ने नीचे लिखा शब्द बहुत ही मधुर स्वर से गाया—

गाछहु पुत्री राज कुमार।
नाम भनहु निस दियोत सवार।
मोहनी मोहि लिया मन मेरा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब शिव नाभ को मालूम हुआ कि यह तो कोई परम पुरुष है तब वह नांगे पांओं चलकर आया और गुरु जी के चरण स्पर्श किये गुरु जी ने राजा शिव नाभ को ज्ञान का अधिकारी जान कर ब्रह्म ज्ञान का उपदेश किया और वह गुरु जी का सच्चा शिष्य बन गया राजा ने अपने नगर मेंगुरू नानक जी के नाम पर बहुत बड़ी धर्मशाला बनवा दी यहां पे गरीबों अभ्यागतों और साधू सन्तों को प्रशाद और वस्त्र आदि का इन्तजाम कर दिया उस सारे सगला दीप देश में गुरू नानक जी ने सतनाम का जाप जपाया, अंत आगे चल पड़े ।

सुमेर पर्बत पर सिध्दों से सिध्द गोष्ट

संगलादीप से गुरू जी ने सुमेर पर्बत की तर्फ त्यारी की यहां पे गोरखनाथ जी की संप्रदा के बड़े २ शक्तिवान सिद्ध और योगी लोग रहते थे बड़े २ राजे महांराजे उन के चेले थे उन को अपनी मानसिक शक्तियों और ऋद्धि सिद्धियों पर बहुत सा गर्व था, इन सिद्धों में गुरु गोरख नाथ और उनके चौरासी चेले थे। जिन में राजा भर्थरी, गोपीचन्द, घूगूनाथ चरपट और पूर्ण आदि मुख चेले थे। कहते हैं गुरू गोरख एक बार समाधी में बैठा था कि उसको त्रिलोकी का ज्ञान प्राप्त हुआ उस ने सब सिद्धों से कहा किनानक तपा आ रहा है,वह बड़ो भारो शक्तिका मालक है अगर हम उसको किसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकार प्रभाव डाल कर, जीत कर योग मत्त में ले आयें तो हमारा यह योग मत्त सारे संसार में रोशन हो जायेगा। जैसे कि भाई गुरदास जी का फुरमान है कि:—

सिद्धां मने विचारिया किवें दर्शन लेवे इह बाला।
ऐसी योगी कली में हमरे पन्थ करे उजाला।

इस प्रकार सिद्धों और योगियों ने श्री गुरु नानक देव जी को किसी भी प्रकार जीतने का फैसला कर लिया, इतने में गुरु जी भी पहुंच गये। जब गुरु जी की सिद्धों से पहली भेंट हुई तो उन्होंने ने कहा नानक तपे अदेश। तब गुरु जी ने इसका जवाब इस प्रकार दिया—

आदेस तिसै आदेस आदि अनील
अनादि अनाहत जुग जुग एको वेस।

भाव—हे सिद्धों! मेरी उस भगवान को आदेश ने जो जगत रचना से पहले भी था, अब भी और आगे को भी होगा जो असीमत है बिना किसी आसरे है, फिर वह युग युगों में एक रस [सदा नवतन] रहता है। अब गोरखनाथ को एक और युक्ति सूझी कि गुरु जी को एक खपर देकर कहा—जाओ इस नज़दीक के तालाब से पानी ले आओ। गुरू जी जब मरदाने और बाले के साथ तालाब के पास गये तो वह तालाब कीमती हीरे जवाहरात से भरा दिखाई दिया। तब गुरू जी वापस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आ गये मरदाने ने कहा कि महाराज आप कहो तो मैं कुछ हीरे आदि जेब में डाल लूं, गुरु जी ने कहा हे मरदाना ! यह हीरे आदि नहीं, यह तो गोरख नाथ का कोई चलित्र है। इस वारता को भाई गुरदास जी ने बहुत सुन्दर ढंग से कथन किया है :-

सिद्धि मने विचारिया किवें दर्शन लेवे इह बाला ।
ऐसा योगी कला में हमरे पंथ करे उजाला ।
खपर दिता नाथ जो पाणी भर लेवन उठ चाला ।
बाबा आया पाणीये डिठे रतन जवाहर लाला ।
सतिगुर अगमअगाथ पुरुखकेहड़ा झले गुरकीझाला
फिर आया गुर नाथजी पाणो ठउरनहीं उसताला।
शबदजितो सिद्धमंडली कीतोसु अपना पन्थनिराला
कल्युग नानक नामु सुखाला ॥ ३१ ॥

जब सिद्धों को विश्वास हो गया गुरु नानक देव जी किसी प्रकार के लोभ में नहीं फस सकते तब सब सिद्धगुरुजी पर प्रभाव डालने के लिये अनेकप्रकार की शक्ति दिखाने लगे इसतरा जब गोरख नाथ के सहित सब सिद्ध हार गये तो अंत गुरु जी के साथ ज्ञान चर्चा करने को तैयार हो गये। सब सिद्धों ने मिलकर गुरु जी के सामने आत्मक ज्ञान सम्बन्धी वह प्रश्न किये कि जिस का जवाब किसी संसारी विद्वान से मिलना असम्भव था, परन्तु सिद्ध जो जो प्रश्न करते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरू जी उसका तत छिन जवाब दे देते, जवाब भी ऐसा देते कि सिद्धों को दूसरा बार बोलने का साहस ही ना पड़ता आखिर गुरु गोरख नाथ के समेत श्री गुरु नानक देव जी से हार कर गुरु जी के चरणों में नमस्कार करने लगे, अब गुरू जी सिद्ध मंडली पर विजय प्राप्त करके आगे को चले।

गुरु जी का करामाती चोला लेकर उड़ना

अरब देश में एक बहुत करामाती फकीर रहता था, उस के पास इक*चोला था वह जिसके गले में डाल देता उस का मन बदल जाता और वह मुसलमान बन जाता था। जब गुरु जी वहां गये तो उसने गुरु जी का नाम तो सुना हुआ था।

---

*श्री गुरु नानक देव जी के साथ सिद्धों की ज्ञान चर्चा हुई उसके उत्तर प्रश्नों को एक सिद्धगोष्ट बाणी है जोकि गुरु जी ने अपने मुखारबिंद सेउचारण की था, श्री गुरु ग्रंथसाहिब जीमें (रामकली राग में)मौजूद है जिसको पढ़ने औरविचारने से मनुष्य को प्रम ज्ञान की प्राप्ती होती है। इसमें आत्मज्ञान सबंधी बड़े २ गोझ सिद्धांतों पर रोशनी डाली गई है। हरेक पुरुष को वह सिद्ध गोष्ट बाणी किसी विद्वान या टीका की सहायता से पढ़नी चाहिये।

यहचोला अबतक डेरा बाबा नानक [रावी दरयाके किनारे] में रखा हुआहै, यहां पर हर वर्ष बहुतभारी मेला लगता है। लाखों लोग जमा होतेहै और वही चोले के सबकोदर्शनकराए जाते हैं। इस चोले पर सारा कुरान शरीफ लिखा हुआ है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसलिये वह चोला [जिसमें सारा कुरान शरीफ लिखा हुआ था।] गुरु जी के गले में डाल दिया और उस के प्रभाव को देखने लगा कि गुरुजी बस कहते ही हैं कि मेरे को मुसलमान बना लो, पर वह इस बात को नहीं जानता था कि यह वोह गुरु नानक जी हैं जिन की आज्ञा में सूरज चांद कुल्ल देवी देवते और कुल्ल पीर फकीर पैगम्बर और फरिश्ते जिसके हुकम के बीच चलते हैं, इस असमत संसार की सब माया जिसके अधीन है।

जब उस फकीर ने गुरु जी के गले में वह चोला डाला तो गुरु जी ने मरदाने को कहा मरदाने आंखें मीच, मरदाने ने आंखें मीची एक मिन्ट के बाद गुरु जी ने कहा मरदाने आंखें खोलो जब मरदाने ने आंखें खोली तो अपने आप को (गुरु जी के समेत डेरा बाबा नानक) पंजाब में करतार पुर के पास बैठे देखा। वह चोला गुरु जी ने इक स्थान बना कर रख दिया उधर उस फकीर ने जब देखा कि गुरु नानक देव जी बहुत बड़ा कीमती चोला लेकर गैब हो गये हैं। वहचोला अब उससे आयु प्रयंत बनाना असंभव था, उसने गुरु जी का पता करने का बहुत यत्न किया, गैबी आंखों से भी काम लिया, अपने वस में किये हुये भूतों और फरिश्तों को भी छोड़ा परन्तु गुरु जी का कुछ पता ना लगा इस तरह अन्त को हार कर निराश होकर बैठ गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरू नानकदेव जी के दर देवी का झाड़ू देना

एक बार भाई लहिना जी सुबह अमृत वेले उठ कर दरया पर स्नान करने चला तो एक बहुत ही खूबसूरत स्त्री को गुरू जी के दर पर झाड़ू करते देखा और उससे पूछा जा तू कौन है। इतनी रात पर यहां झाड़ू लगा रही है, तब उसने कहा तूं नहीं जानता और नहीं पहचानता जो कई बार मेरे दर्शन करने को जाता रहा है। मैं वही देवी हूं जिसका तूं बीस वर्ष तक भक्त रहा हैं। अब तूं मेरे को कैसे भूल गया, मैं ही यहां श्री गुरू नानक देव जी की सेवादारनी हूं और हर रोज यहां इस दर पर झाड़ू देती हूं। यह कौतक देख कर भाई लहिणा मस्ती में आकर गुरू जी के दर की धूड़ मस्तक पे लगाने लगा।

चोरों का उधार करना

गुरू जी कौडे राक्षस का ऊधार करके जब आगे चले तो रास्ते में चोरों ने घेर लिया। कहने लगे जो भी आपके पास माल है दे दो नहीं तो मार डालेंगे तब गुरु जी ने एक चिता की तर्फ इशारा करके कहा [जो कुछ दूरी पर जल रही थी] कि वहां से थोड़ा आग ला दो फिर माल देंगे। जब वे चिता के पास गये, देखा तो वहां भयानक झगड़ा हो रहा था एक तर्फ जमदूत थे। जमदूत कहने लगे कि यह बहुत पापी पुरुष

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं, इसको हमने नर्क कुण्ड में ले जाना है पर वह राम नाम कह रहे थे कि पाप तो यह बहुत ही भारी था परन्तु अब इस पर गुरु नानक की निगाह पड़ गई इस लिये इसके सब पाप नष्ट हो गये हैं और हम को दरगाह से हुकम हुआ है कि इसको स्वंग में पहुंचा दो। ऐसे कौतक को देख कर वह गुरु जी के चर्णो पर पड़ कर माफी मांगने लगे तब गुरू जी ने उनको सतिनाम का उपदेश देकर भवसागर से पार किया।

एक जात अभिमानी को उपदेश

श्री गुरु नानक देव जी जब कुरुक्षेत्र में पहुंचे तो यहां पर बहुत से पंडत लोग जाति अभिमानी और छूत छात को बहुत मानते थे परन्तु गुरू जी इस विचार के सख्त विरोधी थे। एक पंडत धोता टीका पहने गऊ के गोबर का लेपन देकर पाठ पूजा कर रहा था और फिर चौके में खाना पकाने लगा जब गुरू जी उसके नजदीक गये तो वह जोर से चिला उठा कि तुम कौन हो कहीं नीच जाति के न हो जो मेरा पकवान छू दोगे तब गुरू जी ने कहा तुम्हारे चौका में तो पहले ही—

कारी कढ किआ थ ये जो चारे बैठिया नाल ॥

इस प्रकार गुरू जी के मुखारबिंद से अमृत वचन उपदेश सुनकर उस पंडत को यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति हुई और वह सतिनाम श्री वाहिगुरु का जाप जपने लगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामराज व विदेशी राज की विरोधता

श्री गुरूनानक देवजी विदेशी राज के भी सखत विरोधी थे जब आप वहां से कुछ ही देर गये तो एक शहिर की मासूल चुन्गी आई वहां पे गुरू जी ने देखा कि एक गरीब ब्राह्मणगऊ लेकरकर चुँगीवाले केसाथकुछ तकरारकररहाथा क्योंकि उस गरीब ब्राह्मण के पासके पैसे नहीं थे परन्तु वह चुँगी वाला [जोकि वह भी ब्राह्मण ही था] मसूल दिये बगैर जाने नहीं देता था, बड़ी मुशकल से उस ब्राह्मण ने उसको कुछ कपड़ा या कोई वस्तु देकर ही पल्ला छुड़ाया। उस गऊ ने खड़े खड़े गोबर कर दिया था जो उस चुँगी वाले ब्राह्मण ने (जिसने धोती टिका जनेऊ पहन रखा था) उस गोबर का चौका लगा कर पूजा पाठ करना आरम्भ किया तब गुरू जी ने इस अयोग्य करम पर और उसको सूतिका मार्ग दिखलाने के लिए शबद उच्चारन किया—

गऊ ब्राह्मण को कर लावै गोबर तरण न जाई।
धोती टिका तै जप माली धान मलेछा खाई।
अन्तर पूजा पढ़हि कतेबा संजम तुरका भाई।

भाव-हे ब्राह्मण ! देख तूं कितनी अनुचित बात कररहा है गऊ और गरीब ब्राह्मण को तूं कर [मसूल]ला रहाहै उसी गऊ के गोबर को पवित्र मान कर उसका लेपन देकर और मुसलमानों से छुपकर पूजापाठ कर रहा है फिरतूं मलेछोंका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वैठ कर हुकम मान रहा है। मुसलमानों से छुपकर पूजा पाठ करते हो और बाहर से उनको खुश करने के लिये उनकी किताबें पढ़ते हो। इस प्रकार के पाखंड करके जीवन गुजारते हो फिर क्या यह धोखा और पाप तुम को संसार सागर से पार कर देगा? इस प्रकार उसको सर्व धर्म पर चलने का उपदेश देकर गुरु जी वहाँ से आगे को चले।

राये बुलार का उध्दार करना

गुरू जो के नगर ननकाना साहिब के राजा राए बुलार था जो मुसलमान परन्तु उसको श्री गुरु नानक देव जी के चरणों पर अटूट श्रद्धा थी, जब गुरूजी संसारकी दूसरी यात्रा को गये थे तो राये बुलार ने गुरु जी से वचन ले लिया था कि उसकी बहुत बृद्ध आयु हो गई है न जाने किस समयमौत का संदेश आ जाये। इस लिए आपने मेरे को अंत के समय अवश्य दर्शन देकर मेरी कल्याण करनी। जब राए बुलार पर वह समय आ गया जोकि सब पर आता और आकर ही रहता है। अब वह राए बुलार अपने प्यारे नानक को दम २ याद करने लगा। गुरू जी के पिता महता कालू जी को बुलवा कर भी गुरूजो का पता किया कुछ पता न चलने पर आंखों से प्रेम के आंसू बहने लगे और मन मंदिर में निराशा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का अन्धेरा छा गया परन्तु फिर उसी समय यह सोच कर आशा का दीया टिमटिमाने लगा कि गुरु जी ने तो मेरे को अन्त समय दर्शन देने का बचन किया हुआ है, ऐसा कभी नहीं हो सकता जो प्यारे गुरु नानक जी का वचन व्यर्थ जाये।

राये बुलार मृत सेज पर पड़ा आशा और निराशा की कशमकश में गुरु जी के ध्यान में दर्शन की तीव्र अभिलाषा में तड़प रहा था। पलंघ के चारों तरफ घर के सम्बन्धी, चार पांच शाही हकीम, गुरु जी के पिता और एक मुख मौलवी जी बैठ राये बुलार को धीर्ज दे रहे थे परन्तु गुरु वाक अनुसार कि—

वैसाख धीरन किओ वाढीया जिना प्रेम बिछोह।

भाव—उनके मन में धीरज कैसे आ सकती है जिनके मन में प्यारे के बिरह का विछोड़ा आग की तरह भड़क रहा हो।

अब मौलवी जी को हकीम ने राये बुलार के आखरी वक्त का इशारा किया क्योंकि हकीम ने नबज पर हाथ रखा हुआ था। अब मौलवी ने भी राए बुलार को अन्तम बार का कलमा पढ़ने को कहा परन्तु राए बुलार ने सिर फेरते हुए कहा मौलवी साहिब जो मेरा कलमा गुरु नानक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु नानक का दर्शन ही अल्ला पाक का दर्शन है। मेरा मक्का भी गुरु नानक है। राये बुलार का गुरु नानक देव जी पर इतना दृढ़ निश्चय देखकर मन में बहुत बुरा मनाया कि नबी पाक का कलमा छोड़ कर एक हिन्दु फकीर पर इतना पक्का यकीन क्यों किया जा रहा है। इतने में दरबान ने आकर खबर दी कि कल्याण राये का पुत्र नानक बाहर खड़ा आली जां का मिलने को ख्वाहश जाहर करता है। बस फिर क्या था जैसे कि जन्म जन्म के भिखारी को राज मिल गया, तपन थली में तड़पती मछली को सागर मिल गया। बहुत क्या कहना है—

साध के संग नहीं कछु घाल। दर्शन भेटत होत निहाल॥

वाली बात बन गई। राये बुलार की नबज तो बन्द हो चुकी थी जिसम की जान लबोंपे आ चुकी थी पर वह जीवन दाता के दर्शन होते ही तन मन निहाल हो गया। राये बुलार के शरीर में फिरसे जान आगई। गुरू जी के चर्ण छूनेको लपका ही था कि गुरू जी ने अपने प्यारे को शीघ्रता से गले के साथ लगा लिया। बस फिर क्या था राये बुलार ने प्रेम के आंसूओं से गुरू जी के चर्ण धो दिये। फिर गुरु जी ने राये बुलार का सिर अपने पाट पे रख ज्यों कृपा की दृष्टि उसके शरीर पर डाली त्यों ही उसको आत्मक ज्ञान की प्राप्ति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो गई जो पदवी लाखो वर्ष तप तापते वाले योगियों को प्राप्त ही हो सकती, वह पदवो राये बुलार को गुरु की कृपा से एक छिन भर में प्राप्त हो गई।

पूर्व कर्म अंकुर जब प्रगटे तब भेटियो
पुरग रमक बैरागी।

तीसरी बार संसार यात्रा

अब गुरु जी अपने प्यारे राये बुलार का उधार करके अपते माता पिता और दूसरे सम्बन्धीयों को मिल कर उत्तर देश की तर्फ जाने का विचार किया पर पहले कांगड़े की तर्फ जो ज्वाला मुखी का पहाड़ जहां पे गंधक जलने से आग की लाट निकल रही है और हर साल बड़ा भारी मेला लगता है गुरु जी वहां जा पहुंचे। जो लोग इस लाट को देवी की लाट जान कर पूजा करते थे। उनके भर्म को दूर किया। गुरू जी ने कहा कि भाईयो आप लोग इस लाट को देवी की लाट जान कर पूजा कर रहे हो,यह तुम्हारा भर्म है। ऐसे ऐसे तो हमारे ब्रह्मण्ड में अनगिनत पहाड़ हैं जिसमें गंधक जलने की बजह से कई प्रकार की लाटें जल रही है और कई जगह गर्म पानी के चशमे भी हैं। इस प्रकार उन लोगो के भर्म को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूर करके कश्मीर देश को चले गये। वहां एक ब्राह्मण दास नाम का बड़ा भारी दिग विजै पंडित था। जिसको अपनी विद्या पर बहुत अभिमान था। गुरु जी ने उसके मन से अंहकार की आग को शांत करके ज्ञान अमृत प्रदान किया उपरांत एक कमाल नाम के फकीर को सतनाम का उपदेश किया जिसको कि अपना शोभा का बहुत सा गर्व रहता था गुरु जी की कृपा से उसको असली फकीरी का ज्ञान हुआ।

बुढन शाह फकीर का निस्तारा

श्री आनन्दपुर साहिब के पूर्व की तर्फ ऊंची पहाड़ीयों पर एक बड़ा भारी करामाती बुढन शाह नाम का फकीर रहता था जिसके पास पचास साठ बकरीयां थीं जिनको एक शेर चरा कर लाता था और भी बहुत सी करामातें दिखाकर उसने लोगों को अपने वश में कर रखा था और वह अपनी करामातों के गर्व में ही उलझ रहा था। गुरू नानक देव जी सांई बुढन शाह के डेरे में बैठ गये, कुछ देर के बाद बुढन शाह ने गुरू जी को कहा हे साधू जनों हमारा शेर बकरीयें चरा कर आ ही रहा होगा। आप यहां से जरा दूर जाकर बैठ जाईये। वह जानवर है कहीं आप पर झपट ही न पड़े। गुरू जी ने कहा सांई जी खुदा के रंग देखो। जब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शेर आयेगा तो देखा जायेगा। इतने में शेर बकरियें चरा कर आया। वह शेर बुढन शाह के देखते देखते ही गुरु जी के चर्णो पर सिर रख कर और जमीन पे घुटने टेक कर बैठ गया। गुरु जी उसको पीठ पे हाथ फेरने लगे। इस कौतफ को देख कर सांई बुढन शाह समझ गया कि यह तो कोई कामिल फकीर है। बुढन शाह ने कुछ और ज्ञान चर्चा करने के बाद पूर्ण तौर पर समझ लिया कि यह तो खास खुदा का नूर है। मैं तो इसके सामने जैसे सूर्य के सामने दीया होता है। यह समझ कर साई बुढन शाह गुरू जी के चर्णो पर सिजदे करने लगा और गुरु जी ने उसको सतनाम का उपदेश देकर नदरी नदर निहाल कर दिया।

इसके बाद गुरु जी संसारी जीवों को तारते हुए नेपाल भुटान से होते हुए चीन देश में जा निकले। रास्ते में बहुत से अन्याय कारी राजों को दयावन और न्याय कारी बनाते हुए वापस करतार पुर आ गये।

गुरू जी की चौथी बार संसार यात्रा

गुरू जी जब घर पहुंचे तो आपके माता पिता परलोक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गमन कर गये । उनका क्रिया कर्म करके फिर संसार की चौथी यात्रा को त्यार हो गये । अब आपका विचार पछम की तरफ जाने का हुआ था क्योंकि इस तरफ का दौरा बड़ा जरूरी था। इधरका दौरा रावलपिंडी पेशावर, काबल,कंधार ईरान इराक और मक्का आदि का था। इस तर्फ के लोगों का सुभाव भारत के जैनी बोद्धी सिद्धों योगियों और पंडतों से विलक्षण था। इनके साथ करामात की जरूरत भी पड़नी थी क्योंकि यह लोग बड़े करूर और मुतअसब सुभाव के थे यह लोग इस्लाम के सिवा बाकी सब को काफर समझते थे और इस्लाम के विरोधी को जान से मार देने को अभाव [अपना धर्म] समझते थे। ऐसे मुतअसबी और जनुनी लोगों को सत धर्म का उपदेश करके असली अर्थों में मनुष्य बनाना यह एक गुरू नानक का ही काम था।

बाबा बुढा जी की कथा

श्री गुरू नानक देव जब चौथी संसार यात्रा की त्यारी कर रहे थे कि एक रामदास नाम के नगर के नजदीक एक भैसे चराता हुआ लड़का मिला जो कि एक जगह पर बैठा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बड़े प्रेम के साथ भगवान के गीत गा जा रहा था। गुरु जी को देख उस लड़के ने बड़े प्रेम से नमस्कार की। तब गुरू जी ने सत करतार कह उस से पूछा के हे लड़के तेरे मन में इतनी छोटी आयु में भगवान का इतना प्रेम कैसे उत्पन्न हुआ। तब उस लड़के ने कहा महाराज जी मैं एक बार घर में चूल्हे में आग जलाने लगा तो पहले छोटी छोटी लकड़ी को आग लगी बाद में बड़ी को लगी। उसी दिन से मेरे मन में वैराग पैदा हो गया। मैं ने समझा ऐसे ही हो सकता है कल भगवान मेरे जैसे छोटे बालकों को ही मौत की आग में जला दे। तब गुरू जी ने कहा तू तो एक छोटो सा बालक हो कर बूढों की सी बातें करता है बस गुरूजी के इस वाक से उस लड़के की आयु सत्तर पचतर वर्ष का प्रतीत होने लगी। जब उसके माता पिता को पता लगा तो वे बड़ी चिन्ता करने लगे, तब गुरू जी ने कहा भाई चिन्ता न करो इसकी आयु बहुत लंबी सौ वर्ष को होगी और यह पूरनब्रह्म ज्ञानी व तुम्हारे नाम को सब संसार में रोशन करेगा। सो गुरू जी के वचन की कृपा से ऐसा ही हुआ। यह सिखों में बाबा बुढाजी के नाम से प्रसिद्ध हुआ और गुरू नानकदेव जी के बाद छे गुरुओं को तिलक यही बाबा बुढाजी अपने हाथ से गुरयाई का तिलक देते रहे। यहां तक कि गुरू हरगोबिंद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साहिब जी का जन्म भी इसी बाबा बुढा जी के वरदान से हुआ था। बाबा बुढा जी के जीवन का सिख इतिहासके साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है।

फिर बाबा मक्के गया

अब श्री गुरु नानक देव जी १५७५ बि० को चौथी उदासो द्वारा मक्के की तरफ रवाना हुए। आपके साथ मरदाना और भाई बाला भी थे। आपका नियम था कि आप जिस देश को जाते उसी इलाके के लोगों की तरह लिबास [वेश] बना लेते। पूर्व देश की तरफ जाते समय तो आप ने उदासोन भेख बनाया था। अब पच्छिम और मक्के की तरफ जाते समय आप का वेश हाजी फकीरों वाला था जिस का कथन भाई गुरदास जी इस प्रकार करते हैं:—

फिर बाबा मक्के गया नील वस्त्र धारे बनवारी।
आसा हथ किताब कछ कूजा वांग मुस्सलाधारी।
बैठा जाये मसीत विच जिदे हाजी हज गुजारी।
जी बाबा सुता रात नूं वल म्हराबे पाये पसारी।
जीवन मारी लत दी किहड़ा सुता कुफर कुफारी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लतां वल खुआये दे क्योंकर पया होये बजगारी ।
टंगों पकड़ घसीटया फिरया मक्का कला दिखारी ।
होयें हैरान करेन जुहारी ।। ३२ ।।

श्री गुरू नानक देव जी शकरपुर, रोहतास कटास राज डेरा गाजी खाँ में भूले भटके लोगों की कल्याण करते हुए मक्के में पहुंच गये। इस प्रकार भाई गुरदास जी के कथन अनुसार जब मक्का के मुख मौलवी ने गुरू जी को मक्के की तरफ पांओं पसार कर सोये हुए देखा तो बहुत गुस्से में आकर कहा तू कौन काफर है, खुदा के घर की तर्फ पाओं पसार कर सौ रहा है। तब गुरु जी ने कहा—भाई खफा न हो। मैं तो थका पड़ा था इस लिये सौ गया। अब जिस तर्फ खुदा का घर नहीं उस तर्फ मेरे पाओं करदे। जीवन नाम के हाजी ने जब गुरु जी के पाओं को पकड़ कर दूसरी तरफ घसीट कर किया तो मक्का भी उधर ही घूम गया। इस प्रकार जिधर भी गुरू जी के पाओं किये मक्का उधरही घूम जाता रहा। यह सारी खबर जब वहां के सब से बड़े काजी रुकन दीन को मिली तो बड़े बड़े आलमों और बड़े करामाती फकीरों को लेकर गुरु जी के साथ बहस करने को आया। परन्तु आखिर में गुरू जी की ताब ना ला सका और हार कर गुरू जी के चरणों का दास बन गया। वहां

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पे गुरु जी के नाम पर एक स्थान भी बनाया गया जिस में† काजी रुकन दीन ने गुरू जी के पांव की खड़ांव मांग कर निशानी के तौर पर पूजा के लिये धर दी जो वहां पे आज तलक गुरू जी की खड़ांव की पूजा हो रही है।

बगदाद के खलीफे का उध्दार करना

मक्का के काजीयों, मौलवीयों; मजौरों और हाजीयों को सच्च का मार्ग दिखा कर गुरू साहिब मदीना से होते हुए मुसलमानों के केन्द्रीये शहर बगदाद में जा पहुंचे और शहर के बाहर एक तरफ बैठ कर इलाही मस्ती में आकर मधुर स्वर में नीचे लिखा शब्द गाना शुरू किया—

पाताला पाताल लख अगासा आगास।
ओड़क ओड़क भाल थके वेद कहन इक बात॥

जिसका भाव था कि—

---

†मक्का में जो काजी रुकनदीन के साथ गुरु जी की ज्ञान चर्चा हुई थी, यह बहुत मशहूर और विस्तार पूर्बक बहिस थी जिसका विस्तार श्री गुर प्रताप सूरज और भाई बाले वाली साखी में आता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ईश्वर की रचना में अनगिनत ही आकाश हैं। अनगिनत ही पाताल हैं। इस असीमत रचना के अन्त को अनगिनत विद्वान और सिद्ध योगी खोजते खोजते हार गये हैं। संसार भर की किताबें और वेदादि सब मिल कर एक ही बात कहते हैं कि वह बेअन्त है; वह बेअन्त है। जब इस बात की खबर वहां के खलीफा को पहुंची कि जो शहर से बाहर एक फकीर जो वह एक ताल राग गा रहा है इसलाम की शराह के विरुध है और दूसरा वह खुदा की खुदाई में बेगिनत तबक और आकाश पाताल बता रहा है, जो हमारे पैगम्बर ने तो केवल सात आकाश और सात ही पाताल, चौदह तबक ही कहे हैं।

उन दिनों में बगदाद का खलीफा बहुत ही तअसबी और अहंकारी और मूर्ख था। यह बात सुनते ही उसने हुक्म दिया कि ऐसे को संगसार कर दो जिस का भाव यह है कि जिस को संगसार का हुकम दिया जाये उस को सारे शहर का हर आदमी बड़े जोर से एक एक पत्थर मारता था इस प्रकार जब सारा शहर हाथ में एक एक पत्थर लेकर गुरू जी को मारने को गुरू जी के चारों तर्फ होकर ऊंचे हाथ उठाकर मारने लगे तो गुरू जी ने ऊंची आवाज से सतकर्तार कहा। बस गुरू जी के सतकरतार कहते ही उन हजारों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोगों के हाथों में पत्थर पकड़े हुये यहां के तहा खड़े रह गये यहां तक कि सब के सब बुत बने खड़े रह गये जैसे कि उनके होश हवास उड़ जाते हैं। इस बात का जब खलीफे को पता लगा तो वह बहुत भय भीत होकर नांगे पाओं चल कर गुरु जी के चरणों में हाजर हुआ और अपने गुनाहों की माफी मांगने लगा। तब गुरू जी ने अपने नियम अनुसार:—

'जो शर्ण आवे तिस कंठ लावै इह बृध सवामी संधा।'

उस खलीफे के गुनाहों को बखश कर आगे के लिये शुभ मार्ग पर आया जैसे कि गुरु वाक है—

'पिछले अवगुन बखश लै प्रभु आगे मारग पावै।'

उस खलीफे ने अब गुरु जी के आगे इस भावना से दो प्रश्न किये—

१. हे खुदा के प्रत्यक्ष नूर साईं जी! एक तो आप राग गाते हो, यह तो हमारे पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहिब ने मकरु [अयोग] करार दिया है।

२. दूसरा जो आप कहते हो कि खुदा की खुदाई ला महिदूदता है। लाखों ही आकाश पाताल है, यह भी हमारे पैगम्बर ने केवल सात आकाश और सात पाताल, चौदह तबक कहे है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी ने पहले प्रश्न किये और कहा कि खलीफा साहिब यह राग बुरी वस्तु नहीं बल्कि इसमें जो गंदे और मन को चंचल करने वाले गीत, गजलें गाई जाती हैं, वह बुरी हैं। राग तो रूह की खुराक है। मन को इकागर करने के लिये सब से बढ़कर पदार्थ है। इसके साथ मिलकर गाया हुआ बैराग ज्ञान और भगवान की सिफतों का गीत मन को अडोल शांत और शुद्ध करता है।

दूसरे प्रश्न बारे गुरू जी ने खलीफे को कहा कि तुम अपने किसी बहुत विश्वासपात्र को मेरे साथ दो और आप यहां ही खड़े रहो जो मैं उसको असली तौर पर लाखों करोड़ो बल्कि अरबों खरबों आकाश पाताल दिखला लाऊं। तब उस खलीफे ने अपने लड़के को गुरु जी के साथ भेज दिया और गुरू जी उस लड़के को लेकर देखते देखते ही गायब हो गये जिसका कथन भाई गुरदास जी ने ऐसे किया है—

नाल लीता बेटा पीर दा अखी मीट गहा हवाई।
लख अकाश पाताल लख, लख फुरक बिच सभ
दिखलाई। भर कच कौल प्रशाद दा धुरों पतालों
लई कड़ाही। जाहर कला न छपै छपाई। ३६।

इस अश्चर्य कौतक को देख कर वह बगदाद का मुख खलीफा गुरू जी का सच्चा श्रद्धालू बन गया और उस सारे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बगदाद शहर और अरब देश में गुरु जी की महिमा फैल गई । दूर दूर से अरबी लोग गुरु जी के दर्शनों को आने लगे । आज तलक वहां गुरु जी के हजारों अरबी सिख देखने में आते हैं । वहां पे गुरु जी का एक बड़ा सुन्दर स्थान भी बनाया गया, जो कि अब तलक भी मौजूद है । यहां अरब देश के बहुत से गुरु नानक जी के श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं ।

वली कन्धारी का निस्तारा

मुसलमानों के केन्द्रीय स्थान मक्का मदीना को फतेह करके और सारे अरब देश के लोगों पर अपना प्रभाव डाल कर वापस पंजाब को लौटे । रास्ते में एक हसन अबदाल* गांव के नजदीक डेरा लगा दिया । वहां पानी की बहुत दिक्कत थी या तो पानी गांव में मिल सकता था जो कि आधा मील दूर था या फिर जहां गुरु जी बैठे थे वहां नजदीक ही एक पहाड़ी थी जिसके ऊपर एक वली कंधारी

---

*अब इस स्थान को श्री पंजा साहिब कहा जाता है जो कि पाकिस्तान में किला कैमलपुर में वाक्या है जब पाकिस्तान नहीं बना था तो इस जगह चौबीस घंटे गुरू का लंगर चलता था । सैंकड़े लोग हर रोज दर्शन को आते और वैसाखी का बड़ा भारी मेला लगता था ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाम का बड़ा अहंकारी फकीर रहता था जिसके पास एक छोटा सा तालाब पानी का भरा रहता था। गुरू जी ने मरदाना को कहा मरदाना जाओ वहां से पानी पी आओ मरदाना गया तो उस फकीर ने कहा तुम कौन हो ? तब मरदाना ने कहा कि मैं अपने गुरू जी के साथ आया हूं जो कि बहुत शक्तियों का मालिक है। इस प्रकार और भी बहुत प्रकार से गुरु जी की शोभा की। जिसको सुनकर वह वली कंधारी चिड़चिड़ा गया और कहा तूं तो काफर है जो काफरों के पीर की शोभा कर रहा है। जाओ अगर तुम्हारा पीर इतना करामाती है तो वहां ही पानी मंगवा ले मरदाना ने सारी बात गुरू जी को कही। तब गुरु जी ने मरदाना को फिर भेजा। उस फकीर नें फिर वही बात कही। तब गुरु जी ने कहा मरदाना एक बार फिर जाकर देख। जब मरदाना गुरु जी का हुकम मान कर तीसरी बार फिर गया और वली कंधारी से बड़ी निमृता के साथ पानी मांगा पर उस पत्थर दिल तअसवी फकीर ने कहा मैं पानी तो दे देता पर तू ने काफरों के पीर की तारीफ की है। इस लिये मैंअब तेरे को पानी नहीं दे सकता। तू उसी अपने गुरु को कह कि वह अगर इतना बड़ा करामाती है तो यहां ही पानी खैंच ले तब मरदाना ने सब बात गुरु जी को सुनाई और एक प्यास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरा तीन बार पहाड़ो की चोटी पर चढ़ने करके बहुत व्याकुल सा होकर घबरा कर और निराश सा होकर गुरू जी को कहने लगा अब मैं तो मारे प्यास के जान से हाथ धो बैठूंगा। मरदाने की ऐसी दशा देख कर गुरु जी ने वहां से एक पत्थर उठाया। बस फिर क्या ? वहां से गंगा जी के नीर की तरह निर्मल और शीतल जल का चशमा जारी हो गया। वली कंधारी के तालाब का सारा पानी नीचे आ गया। तालाब का सब पानी सूख गया। वह वली कंधारी इस कौतक को देख कर बहुत गुस्से में भर गया और अपनी शक्ति के साथ हनुमान कराड़ा बन की पहाड़ी गुरु जी के ऊपर फैंक दी। जब वह पहाड़ी पत्थर की तरह मरदाने के सिर पर आती देखी तो भय के मारे थर थर कांपने लगा और गुरू जी को कहने लगा; महाराज अब क्या होगा। उस समय गुरू जी एक हाथ से दातुन कर रहे थे और दूसरा हाथ बड़े जोर से आ रही पहाड़ी के आगे कर दिया। गुरू जी का पंजा पहाड़ी के पत्थर के भीतर धंस गया और वह पहाड़ी गुरू जी के हाथ को छू कर वहां ही ठहर गई। बस फिर क्या था। गुरु जी को इस शक्ति का प्रभाव वली कंधारी के मन पर ऐसा छाया कि वह मारे डर के गुरु जी की शरण में आकर बारम्बार माफी मांगने लगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब गुरू जी ने वली कन्धारी के मन के अहंकार के रोग को दूर करके आत्मक शांती प्रदान की और उस सारे इलाके में गुरु जी की महिमा फैल गई। गुरु जी के पंजे का निशान एक पत्थर पर अब तक मौजूद है।

बेबे नानकी को दीदार

गुरु जी का अपनी बड़ी बहन नानकी के साथ प्रण (बहदा) था कि जब वह याद करेंगे उस समय गुरु जी कहीं भी हों बेबे जी के पास पहुंच जायेंगे। सो अब इधर तो बेबे नानकी ने किसी तिहार पर बहुत बहुत अच्छे अच्छे खाने पकाये थे। उन पकवानों को देख कर गुरु जी की याद आ गई कि मेरा भाई अब यहां होता तो मैं आज बड़े प्रेम से उन्हों को खाना खिलाती। बस इतना सोचते ही गुरु जी की याद में जुड़ गई और मन में प्रण कर लिया कि जब तलक गुरु जी ना आयेंगे तब तलक हम नहीं खायेंगे, यह प्रण करके गुरु जी के ध्यान में जुड़ गई। उधर अंतरयामी गुरु जी ने मरदाना और बाला को कहा भाई बेबेजी हाथ में पकवान लेकर याद कर रही है। चलो शीघ्रता से वह प्रेम का खाना खायें ताकि खाना ठंडा न हो जाये। मरदाना ने कहा महाराज वह तो यहां से हजारों कोस है। कैसे पहुंचेंगे? तब गुरु जी ने कहा मरदाना जरा सा समय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आंखें बन्द कर। मरदाने ने आंखें बन्द कर लीं। एक आधे मिन्ट बाद गुरु जी ने आंखें खोलने को कहा। जब मरदाने ने आंखें खोली तो क्या देखते हैं कि सुलतान पुर शहर में बेबे नानकी जी के घर के दरवाजे के आगे खड़े हैं। बस फिर क्या था बेबे जी और जैराम आदि नदरी नदर निहाल हो गये। बेबे जी बड़े प्रेम से अपने गुरु सरुप भाई को खाना खिलाया।

मूलें खत्री की कथा

गुरु जी का एक शिष्य मूला खत्री स्यालकोट शहर में रहता था। जब गुरू जी उसके पास पहुंचे तो उसकी स्त्री से खबर पाकर कि कहीं वह अपने साथ ही ना ले जाये,मूले को तो उपलों के ढेर में छुपा दिया और गुरू जी को कहा महाराज वह तो घर में नहीं हैं, कहीं बाहर गये हुए हैं। तब अंतरयामी गुरू की रसना से सुभावक ही वाक निकल गया चलो घर में नहीं होगा। ऐसा कह कर एक श्लोक सुना कर वहां से चल दिये—

नाल किराड़ा दोस्ती ऐवें करे गुवाओ
मर्ण न जाता मूलया बैठा मुख लुकाओ*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु नानक देव जी अभी थोड़ी ही दूर गये होंगे कि मूले को उपलों में से एक गहरी सांप ने काट दिया। जिस से उसके वहीं प्राण निकल गये। तब वह मूले की स्त्री भाग कर गुरू जी के चरणों में जा पड़ी और बहुत सी मिनतें करके वापस ले आई। तब गुरू जी ने मूले खत्री को मृतक देख कर कहा अब हम ना तो इसको जिवा हो सकते हैं और ना ही इसको कल्याण करेंगे जो करतार का हुकम ही ऐसा है। यह महां पुरुषों से छुप कर मरा है इस लिये यह खरगोश बन कर दक्खन देश में एक नादे शहर के जंगलों में छुपा रहेगा और जब हम दसवें जामें में आयेंगे तो इसका कल्याण करेंगे। इतना कह कर वहां से चल दिये†।

हमजा गौंस का उध्दार करना

सयालकोट शहर में एक खत्री के घर कोई लड़का बाला नहीं होता था। बहुत यत्न किये सब के सब व्यर्थ गये।

---

†यह श्लोक गुरु की जन्म साखी में है परन्तु श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में और प्रकार से है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वहां एक हमजा गौंस फकीर रहता था। इस के यहां गये। उसने कहा तुम्हारे मुकदर में हो औलाद नहीं। तब खत्री ने कहा साई जी जो मुकदर में होता तो आपके पास क्यों आते ? सो आप कोई रेख में मेख मारो। फकीर ने कहा चलो भाई मैं अपनी करामात से ऐसा रेख में मेख लगाता हूं कि तुम्हारे घर में दो लड़के पैदा होने पर उन में से एक मेरे को दे देना। खत्री ने स्वीकार कर लिया और फकीर की शक्ति से तब दो लडके हुए तो उसने एक लड़का मांगा। उस खत्री का एक मुसलमान फकीर को लड़का देने को जी न चाहा। तब वह फकीर बेहद क्रोध में आ गया। उसने अपने मुरीदों को कहा यह सब शहर झूठों का है। इसे गरक कर दूंगा। शहर के लोगों ने बहुत कहा कि फकीर को रहम चाहिये फिर अगर आपको क्रोध है तो एक पुरुष के गुनाह बदले सारे शहर को गरक न करें पर उसने किसी की एक न माना। एक गुम्बज में चालीसा काटने का मन्त्र फूकने बैठ गया और अपने मुरीदों को कहा कि मैं इतना सख्त चालीसा काटना है कि यह शहर खंडर बना दूंगा। तुम

---

†मुले की कल्याण की बाकी कथा श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन बृतान्त में आयेगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोगों से पहरा रखना कि मेरे को कोई भी बुलाये तो उसे वापस कर देना। क्यों कि मैंने चालीस दिन तलक सूर्य नहीं देखना। सूर्य देखने से मेरा चालीसा निष्फल हो जाता है।

जब फकीर को एक गुम्बज में सैंतीस दिन हो गये तो शहर में बड़ी बड़ी भयानक गूंजे पड़ने लगी और कुछ जलजले भी आने लगे। सारे शहर में हाहाकार मचने लगी तब वह जगत तारक और घट घट के अंतर की जानने वाले गुरू नानक देव जी जो उस वक्त सुलतान पुर में थे। एक छिन भर में वहां पहुंच गये। उस फकीर को मिलने के लिए बहुत यत्न किये पर उसके मुरीदों ने कहा कि हमारे पीर जी का सख्त हुकम है कि चालीस दिन तलक बिल्कुल नहीं बुलाना और न ही सूर्य देखना है। इतने में सारा शहर गुरू जी के पास आ गया। गुरू जी ने सब को धीरज दी और कहा कि करतार भली करेगा। तुम लोग सतनाम का जाप करो। इतना कह कर गुरू जी ने उस गुम्बज की तरफ निगाह की जिसके अन्दर वह अतताई फकीर बैठा था बस फिर क्या था सब लोगों के देखते देखते ही वह सारा गुम्बज उड़ कर नीचे गिर पड़ा और सूर्य की सीधी धूप हमजा गौंस फकीर के ऊपर पड़ी। उसको ऐसे प्रतीत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुआ कि उससे भी कोई बड़ा शक्ति वाला महान पुरुष आ गया है। एक दम उठ कर सब लोगों के सामने ही गुरू जी को सिजदा किया और अपने इस किये की माफी मांगने लगा। तब गुरू जी ने कहा ओ रब दे बन्दे तूं कितना जुल्म करने लगा था। एक के पाप को सब को भुगताने लगा था, फकीर ने कहा गुरु जी यह तो सारा शहर ही झूठों का है। यहां एक भी सच्चा आदमी नहीं। तब गुरु जी ने कहा देखो मैं दिखलाये देता हूं। तब गुरू जी ने मरदाना को एक कागज पे सच और झूठ लिख कर दिया और कहा जाओ बाजार से एक टके का झूठ और एक टके का सच ले आओ। जब मरदाना गया तो एक मूले नाम खत्री ने दोनों टके ले लिये और एक कागज पे सच और दूसरे पर झूठ लिख दिया और मरदाना ने गुरु जी को वह जाकर दे दिया तो गुरू जी ने वह कागज फकीर को दिखा कर कहा देखो, इस प्रकार के धर्मात्मा भी रहते हैं। इस प्रकार हमजा गौंस को आत्म शांती देकर सतनाम का उपदेश दे कर नदरी नदर निहाल किया।

अचल बटाले की कथा

श्री गुरू नानक देव जी जगत को तारते हुए फिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करतार पुर आ गये । बड़ी बड़ी दूर से संगतें आने जाने लगीं और गुरू जी ने यहां पे अपने हाथ से खेती का काम करके लंगर चलाया । इस प्रकार गुरू जी का यश सारी पृथ्वी पर फैल गया । यहां पे ही गुरू जी ने गुरू गद्दी का प्रारम्भ किया । गुरू जी ने जो भेख संसार यात्रा समय किया था, वह उतार दिया और संसारी कपड़े पहन कर जगत को उपदेश करना शुरू कर दिया ।

किसी ने गुरु जी को खबर दी कि ब्यास दरया की तर्फ अचल बटाले में एक भारी योगियों का स्थान है और वहां बड़ा भारी मेला लगता है । वहां योगियों ने बहुत जाल फैला रखा है । उनके पास ऋद्धि सिद्धियों और योग शक्तियां भी है जिस से वह योगी जन साधारण को भयभीत करते रहते है । गुरू जी उस पुरुष की यह बात सुन कर अपने कुछ साथियों को साथ लेकर अचल बटाले पहुंच गये । वहां के सिद्धों के साथ खूब चर्चा हुई । सिद्धो ने गुरु जी पर भय का प्रभाव डालने के लिये बहुत सा योग शक्तियों के चमत्कार दिखलाए । आग की वर्षा कराई, बादलों से पानी बरसाया । कई तो बृक्षों पर बैठ कर आकाश पर उड़ने लगे । एक भगर नाथ नाम के योगी ने आकाश के तारों को तोड़ना शुरु किया । सिद्ध के ऐसे ऐसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपद्रवों को देख देख कर मरदाना और गुरू जी के दूसरे साथी बहुत भयभीत हो गये । गुरु जी ने अपने पाओं की खड़ांव को हुकम दिया कि इन सिद्धो के दिमाग को जरा ठीक करदो । तब वह खड़ाव गुरू जी का हुकम पाते हो अनेकों रूप धारण करके आसमान को उड़ गई और एक एक सिद्ध के सिर पे इस तरह ठुकने लगा कि जब तलक वह गिर कर पृथ्वी पर नहीं पड़े उस समय तलक खड़ाव बराबर उनके सिरों पर ठुकता रहा । भाई गुरदास जी ने लिखा है कि—

सिद्ध तंत्र मंत्र कर झड़ पड़े शब्द गुरु के कला शपाई ।

तब वह सिद्ध बहुत शरम सार होकर गुरु जी के चर्णो पे गिर पड़े और गुरु जी ने उनको बताया कि देखो सिद्धो ! यह तुम्हारी ऋद्धीयों सिद्धायों का रास्ता ज्ञान मार्ग में प्रतिबंधक है और तुम लोग इसमें फंस कर अपना जीवन बरवाद कर रहे हो । लोभी पुरुष मान गर्व और पूजाप्रतिष्ठा से रहित होकर भगवान का स्मरण करता है । वही परम ज्ञान को प्राप्त होता है । ऋद्धीयां सिद्धायां द्वारा जो मान प्रतिष्ठा प्राप्त होती है वह सब माया का रस है । नाम रस कोई दूसरी वस्तु है । इस प्रकार सिद्धों में शब्द शांत बरता कर गुरू जी फिर करतार पुर में आ गये और नाम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिमरण के साथ लोगों को खेती बाड़ी का काम भी सिखलाने लगे।

भाई लहणा और गुरू अंगद मिलाप

जिला फिरोजपुर में एव न गे की सराए ग्राम का एक चौधरी लहणा रहता था जो कि देवी माता का बहुत बड़ा भगत गिना जाता था और हर बरस बहुत से लोगों को साथ लेकर पहाड़ों में चिन्तपुरनी देवी के दर्शनों को जाता था। एक बार गुरू नानक देव जी की महिमा सुन कर संगत समेत इसी रास्ते से गुजरा। गुरू जी के दर्शन करके नदरी नदर निहाल हो गया‡।

पूर्ण प्रेम और दृढ़ निश्चे के साथ गुरु जी की सेवा की। गुरु जी अत्यन्त प्रसन्न हुए। यहां तलक कि भाई लहणा को ही गुरू गद्दी के योग्य समझा। परन्तु गुरू जी के घर वाली माता चोणी ने अपने बड़े साहिबजादे श्री चन्द्र जी को गुरगद्दी देने पर जोर दिया। तब गुरू जी ने कहा; भागवाने इन में इतनी बड़ी जुम्मेवारी निभाने की समर्था नहीं। तब चोणी जी ने कहा, जो बड़े बेटे को नहीं

‡विस्थार पूर्वक गुरू अंगद देव जी का हाल उनके ही जीवन में आयेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो छोटे बेटे को गुर-गद्दी दे दो। गुरू जी ने कहा, वह भी योग्य नहीं तब गुरु जी ने चोणी जी;अपने सुपुत्रों और सब संगतों को गुर-गद्दी सम्बन्धी भाई लहणा की योग्यता और दोनों सुपुत्रों की अयोग्यता को प्रतक्ष करने के लिए परीक्षा करने लगे। जो कि इस प्रकार थी—

हुकम मन्निये होवै प्रवाण
ता खसमें का महल पायेसी।

(१) एक बार गुरू जी ने एक बर्तन किसी वहुत से गन्दे और गहरे पानी में फैंक दिया और अपने दोनों सुपुत्रों को वह बर्तन निकालने को कहा पर उन्होने जवाब दे दिया, कहा कि यहां गुरू घर में ऐसे ऐसे बर्तनों की क्या कमी है। जो निकालना ही है अब तो शाम का समय है अन्धेरा हो चुका है। कल को किसी नौकर या सेवक को कह कर निकलवा देंगे। उन से यह जवाब सुन कर गुरू जी ने भाई लहणा की तर्फ इशारा किया तो उन्होंने समेत कपड़ों के ही उस पानी में छलांग लगा दी और वह बर्तन लेकर साफ करके गुरू जी के चरणों पर रख दिया।

(२) एक बार सरद रुत का मौसम था। आधी रात का समय था और हवा चल रही थी। कुछ वर्षा भी पड़ रही थी। तब गुरू जी ने दोनों पुत्रों को कहा, उठो बेटा !

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिन हो गया है देखो धूप लग रही है, दरया पे जाओ जाकर कपड़े धो लाओ। पुत्रों ने यह बात सुनी तो बड़े गुस्से में आ गये और कहा पिता जी तुमतो अब सतरे बहतरे हो गये हो। देखो तो सही सरदी के मारे लेफ में पड़े पड़े हाथ सुन होते जा रहे है और तुम कहते हो दिन हो गया है, धूप लग रही है। तब गुरू जी ने भाई लहणा को कहा उठ पुरखा† तुम ही जाओ। बस फिर क्या था भाई लहणा हुकम सुनते ही उठ खड़े हुए। जब वस्त्र लेकर दरया पे गये तो आषाढ़ के दिनों की मधकाल की जैसी धूप लग गई। भाईलहणा वस्त्र धोकर उस धूप में सुखाने के लिए डालताही था कि वह एकदम ही सूख जाता था। सब बस्त्र धोकर सुखा कर और तह लगा कर एक घटे में ही गुरु जी के चरणों में हाजर कर दिये। तब गुरू जी के दोंनों सुपुत्र और माता चोणा जी अश्चर्य रह गये।

गुरू जी का भयानक रूप

एक दिन गुरुजी ने अपना बहुत ही भयानक रूप धारण कर लिया। सर पर बहुत बड़ी पगड़ी बांध ली, बहुत लम्बा चोला और सरको बहुतसे मैले और फटेपुराने कपड़ेबांधलिये

†गुरू जी भाई लहणा जी को पुरखा करके बुलाते थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हाथ में एक बड़ा डंडा मुकतहिर पकड़ लिया। दो कुत्तीयां गले में रस्सी बांध कर हाथ में पकड़ लीं और जंगल की तर्फ चल दिये। पहले तो सब संगतें गुरू जी के पीछे चलीं। जब गुरु जी ने बड़े बड़े जोर से और बहुत फुरती के साथ सब को एक एक मुकतहिर रसीद किया तो मारे डर के जिधर किसी का मूंह आया भागने लगे। जो फिर भी पीछे आये उनको भी ऐसे ही करे। तब लोगों ने कहा गुरू जी तो न जाने पगले हो गये हैं, इनसे तो अब अपनी जानें बचाओ भाव क्या सब लोग मारे भय के भाग गये। थोड़े से रह गये। उनको गुरू जी ने खुब पीटा पर वे नहीं गये। यह कहते जायें कि ऐ हमारे गुरू जी मार डालो पर हम जायेंगे नहीं। आप का दर छोड़ कर कहां जायेंगे। तब गुरु जी ने उनके सामने बहुत सी मोहरें फैंक दीं। उन में जो लोभी थे वह मोहरें लेकर चले गये। बाकी जो रह गये उनको एक जंगल में ले गये वहां पे एक मुरदा (लाश) पड़ी थी। गुरू जी ने उस पर कपड़ा डाल दिया और सब को सुनाकर कहा कि या तो यहां से भाग जाओ या फिर मुरदा खाओ! मुरदा खाये बगैर जो भी यहां खड़ा रहा उनको खूब पीटा जायेगा।

---

†गुरू जी की घर वाली की जात चोणे थी। पेकयों की गोत पर ही गुरु जी बुलाते थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी की यह बात सुन कर सब लोग भाग कर वहां से दूर जा खड़े हुए। गुरु जी के पास एक भाई लहणा ही खड़ा रह गया और हाथ जोड़ कर मुरदे के चौफेरे घूमने लगा। गुरु जी ने कहा घूमते क्यों हो खाओ इस मुरदे को। तब भाई लहणे ने कहा, हे मेरे सतगुरों मैं तों आपकी आज्ञा चाहता हूं कि मुरदे को पाओं की तर्फ से खाऊं कि सिर की तर्फ से। गुरू जो ने कहा, सिर की तर्फ से। कपड़ा उठा कर मुरदे को खाने को त्यार हुए तो मुरदे की जगह कड़ाह प्रशाद [हलवा] की कड़ाहो दृष्टि पड़ी।

इस कौतुक को देख कर वह दूर खड़े लोग नजदीक आ गये और आश्चर्य होकर गुरु जी के चर्णों पे गिर कर माफी मांगने लगे। तब गुरु जी ने भाई लहणा को कहा, जो यह कड़ाह प्रशाद सब को वरता दो। जब वह कड़ाह प्रशाद बरताने लगे तो वह खतम होने में ही न आये। यह बात सुन कर नजदोक गाओं के और डेरे की सिख संगतें सब आ गई। उन में भी बरताया गया तो भी खतम न हुआ। हजारों लोग पेट भर भर खाते रहे तो भी वह कड़ाहो खतम न हुई। तब गुरु जी ने कहा कि यह बाकी हलवा दरया में मछलियों को डाल दो। सो ऐसे ही किया गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संगतों को मिठाई खिलाई

एक बार करतारपुर में तीन चार दिन मुसलाधार वर्षा पड़ती रही । जिसमें लंगर की सब लकड़ी भीग गई । लंगर पकना असभव हो गया । हजारों सिख संगतें भुख से व्याकुल होने लगी । तब गुरु जी ने पुत्रों को कहा जो इस बबूल पर चढ़ कर इस को जोर से झूट दे तब इस से मिठाई गिरेगी तब सभ संगत पेट भर कर खायेगी । यह बात सुन कर वह हंस पड़े और कहने लगे कि पिता जी आपको बुढे वारे बुद्ध-क्षीण हो गई है । तब गुरु जी ने भाई लहणा को कहा पुरखा तुम ही यह काम करो भाई लहणा हुकम सुनते ह बाबुल पर चढ़ कर जैसे २ झूटने लगे त्यों त्यों वर्षा की तरह मिठाई गिरने लगी और संगतों ने पेट भर कर मिठाई खाई तो भी खतम ना हुई ।

भाई लहणे को गुरयाई देनी

जा सुद्धो सुता लहणा टिकिओन ।।

अब गुरु जी ने अपना जोतीजोत समावन का समय निकट जान कर एक बड़ा भारी यज्ञ किया । सैंकड़ें कोसों से संगतें आने लगी । बहुत भारी इकठ हुआ । तब गुरु जी ने सभ के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामने सब को सुना कर अपनो गुर गद्दी पर भाई लहणे को बेठा कर पांच पैसे एक नारियल और कुछ सामग्री भेट कर के भाई लहणा जो के चर्णो पर मस्तक टेक दिया। इस प्रकार अपनी जोत भाई लहणे में प्रवेश कर दी और उस दिन से भाई लहणे का नाम गुरू अगद देव जो रखा गया। समझो कि गुरु जी ने अपना दूसरा रुप बदल लिया। और उसके बाद सब संगतों को सुना कर गुरु नानक देव जी ने यह वचन किया—

बाबा मड़ी न गोर गुर अंगद के होये में।
उन सतसंग ओर गुरु नानक जी बसे* ॥

श्री गुरू नानक देव जी जोती जोत समावना

गुरू जी के जोती जोत समावन का समय नजदीक जान कर हिन्दू और मुसलमान आपस में झगड़ा करने लगे। हिन्दू कहते थे कि यह हमारा गुरु है। हमने अपने गुरु का संस्कार

*अगद का भाव जो अपने अंगों से उत्पन्न किया जाये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करना है और मुसलमान कहते थे कि यह तो हमारे पीर हैं हमने अपने पीर को दफनाना है। आपस में दोनों तरफ से लड़ने को त्यार हो गये। तब गुरु जी वहां पहुंच गये। सब को सुना कर कहा लड़ो मत ! आओ हम फैसला कर देते हैं। इतना कह कर गुरू जी एक चादर लेकर लंबे पड़ गये। कुछ देरी के बाद लोगों ने चादर उठाई तो खाली चादर ही रह गई। गुरू जी लोप हो गये थे। इस प्रकार गुरु जीका देहांत हुआ था। तब वह आधी हिन्दुओं ने ले कर बड़ी धूम धाम के साथ संस्कार कर दी और आधी मुस्लमानों ने अपने धार्मिक नियमों अनुसार दफना दी।

श्री गुरू नानक देव जी का इतिहास पढ़ने और सुननें का महात्म

जो भी प्राणी श्रद्धा के साथ गुरू जी के इस इतिहास को पढ़ेगा और सुनेगा वह परम गति को प्राप्त होगी और जो भी मन में इच्छा करेगा वह सम्पूर्ण होगी। जो कोई किसी को या संगतों को पढ़ कर सुनायेगा उसके सब प्रकार

---

*यह वाक गुरूबाणी का नहीं इतिहासिक वाक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के दुख दरद नष्ट होंगे और अंत को आत्म ज्ञान की प्राप्ति होगी ।

यह ऊपर लिखा वचन श्री गुरु अंगद देव जी ने उच्चारण किया तां ते गुरु का शब्द कभी भी अनयथा नहीं जा सकता क्योंकि गुरबाणी का वाक है :—

साधू बचन अटलाधा ॥

भाव पूरण पुरखो साधूओं का बचन अटल होता है ।

बोल श्री गुरू नानक देव जी महाराज की जय ॥

* *

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूमिका श्री गुरु अंगद देव जी

प्यार, भगती, दृढ़ विश्वास और सेवा परम पदवी तथा मोख की प्राप्ती के यह चारों मुख्य साधन गुरु घर में बरनन किए गए हैं। इन साधनों में से एक भी न होने से साधन लंगड़ा होकर रह जाते हैं।

परेम–

गुरबानी में प्रेम की महिमा बहुत ही विस्थार सहित बरनन की गई हैं प्रेम के बगैर सब साधन ऐसे फीके पड़ जाते है जैसे के नमक के बगैर दाल सबजी और पकोड़े वगैरा। कबी आप प्रेम सम्बन्धी गुरबानी में जो शब्द उचारण किये है। यह पढ़ कर देखो तो आप मसती में आ जाओगे। सिख गुरुओं ने बार बार इम मनुष्य को भगवान के साथ प्रेम करनें को कहा है। जैसे कि श्री गुरु नानक देव जी हरि के साथ प्रेम करने की युक्ति बताते हुए कहते हैं कि:–

रे मन ऐसी हरि सियों प्रीत कर जैसी मछली नीर ॥
(श्री राग म: १)

गुरबानी का यहां तक कहना है कि मनुष्य या जीव तथा मनुष्य का शरीर तो नष्ट हो कर जल कर माटी हो जाता है परन्तु उसका प्रेम नष्ट नहीं होता। जैसे कि एक मछली के प्रमाण दवारा कहते हैं कि :–

मीन पकड़ियो और फांकियो राध कीयो बानी ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खंड खंड करि भजन कीनो तऊ न बिसरियो पानी ॥

बलकि श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तो फैसले की बात कहते हैं कि–

जिन प्रेम कीयो तिन ही प्रभ पायो ॥

भक्ति [भगती]–

गुरु मत में दूसरा साधन भक्ति तथा नाम सिमरण है। आप कभी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ शुरु से अखीर तक करो तो मालूम होगा कि सिख गुरुओं ने भक्ति नाम पर कितना जोर दिया हैं। गुरु जी फरमाते हैं कि कलयुग में नाम भक्ति के बगैर सब कर्म धर्म निशफल है जैसे कि:–

नाम संग मुख प्रीति न लावै ॥
कोटि कर्म करतो नरक जावै ॥

फिर–कल में मुक्ति ते पावत ॥
गुरु यह भेद बतावै ॥

फिर–सतयुग सत तरेता जगी दुवापर पूजाचार ॥
तीनों युग तीनों दृढ़ कल केवल नाम अधार ॥

सेवा–

तीसरा मुख्य साधन गुरु घर में सेवा है। गुरबानी में तो सेवा का दर्जा बहुत ऊंचा वर्णन किया है। यहां तक कि श्री गुरु अरजन देव जी फरमाते हैं कि–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेवा करत होये निह कामी ॥
तिस को होत प्राप्त स्वामी ॥

भाव यह कि जो पुरुष निशकाम होकर सेवा करता है उस को भगवान के दर्शन की प्राप्ति हो जाती है। फिर कहा है।

विच दुनिया सेव कमाइये ॥
ता दरगह बैसन पाईये ॥

बलकि महां पुरुषों ने तो यहां तक कहा है कि सेवा और सिमर्ण इस जीव रूप पक्षी के दो पंख है। जिनके बल से यह उड़ कर मात लोक से सच खंड में पहुंच सकता है इन में से एक हो एक न हो तो यह जीव कभी भी उड़ नहीं सकता।

गुरु जी कहते हैं कि जिस माया के पीछे सारा संसार भागता फिरता हैं। वह माया सेवकों की दास हो कर रहती है जैसे कि :—

दृढ़ विश्वास—

सच्च खंड मार्ग तथा मुक्ति का यह चौथा साधन है दृढ़ विश्वास के बगैर प्रेम, भगती और सेवा में मजबूती नहीं आ सकती जैसे कोई सीमैंट की सड़क कितनी भी मजबूत बना लो पर उस ऊपर पानी डाल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर अगर कुछ दिन गोला न रखा जाये तो उस में पकियाई नहीं आ सकती। यही बात विश्वास के सम्बन्ध में है।

साधन तो गुरु घर में और भी बहुत हैं परन्तु यह प्रेम, भगती, सेवा और दृढ़ विश्वास मुख्य साधन है। सिख गुरुओं ने गुरबानी में हर इक कथन किये साधन को अपने असली जीवन में ला कर संसार को बताया था कि यही गुरु घर की विशेषता हैं। जैसे हम जिस गुरु तथा गुरु अंगद देव जी का जीवन वर्णन कर रहे हैं, सो इन्हों ने तो सेवा प्रेम भक्ति और दृढ़ विश्वास का ऐसा नियम कर दिया था, जिस को कोई भी महान आज तक नहीं तोड़ सका और न ही आगे को तोड़ सकेगा।

कहते हैं कि हर पुरुष चाहे वह बड़ा महान क्यों न हो पर उस के साहमने सब प्रकार के मित्रों, दोस्तों साकों और सम्बन्धीयों के पहले आपनो सन्तान ही होतो हैं वह अपनी जायदाद का सारा हक़ आपनी सन्तान को ही देकर खुश होता हैं परन्तु श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा और दृड़ प्रेम का इतना प्रभाव हुआ कि श्री गुरु नानक देव जी ने अपने दोनो बेटों को छोड़ कर श्री गुरु अंगद देव जी को गुरयाई दो थी।

सो हे प्रिय पाठको! अब श्री गुरु नानक देव जी की दूसरी जोति श्री गुरु अंगद देव जी के जीवन को पढ़ कर असीमत रस और आनंद प्राप्त करो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन
श्री गुरु अंगद देव जी महाराज जी

कलिजुग प्रमाणु नानक गुर अमर कहायो ॥

जिला फिरोजपुर में एक मतेकरा नाअ का मशहूर गांव है जिसमें एक तरेहन गोत और फेरु मल्ल नाम के खत्री रहते थे। उसी गांव में करयाने की दुकान करते और दरमयाने दरजे के धनवान थे। बहुत भले पुरुष होने से लोगों में बहुत सतकार था। फेरु मल देवी माता के अत्यन्त भगत थे। हर बरस चिन्त पुरनी देवी के पहाड़ पर दर्शन करने जाते और साथ बहुत सी गांव के इलाके की संगतों को ले जाते।

वैशाख सुदी १ सम्मत १५६१ बि० को उसके गृह में श्री मती सभराई के गर्भ से एक बालक ने जन्म लिया।

यह बालक बहुत ही सुन्दर और भोले सुभाव का था। जो भी उस के दर्शन करता, मोहित हो जाता। बड़े लाडों से बालक का पालन पोषण होने लगा। इसी समय फेरुमल पर एक बिपता आ पड़ी उस इलाका का जो मुसल-मान हाकिम था बहुत जालिम होने से बड़े बड़े धनाढ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दुओं से धन छीन रहा था। जिस से फेरुमल भय के कारण अपनी बहिन के यहां जिला अमृतसर में खंडूर* में आ गये और यहां ही कारोबार करने लगे।

नगर खंडूर में ही निवास कर लिया। अपने बालक का नाम लहिणा रखा गया। जब वह जवान हुए तो उन का विवाह कर दिया गया। उन की धर्म पत्नी का नाम श्री मती खीवी था। आप के ससुर का नाम देवी चन्द था। यहाँ श्री लहिणा जी के घर दातू और दासू दो सुपुत्र और बीबी अमरो और अनोखी दो लड़कीयें पैदा हुई। कुछ देर के बाद भाई फेरु मल काल वंश हो गये जिस से घर का सारा बोझ आप पर ही पड़ गया।

लहिणा जी का सुभाव भी पिता की तरह बहुत भला होने से लोग बहुत सत्कार और इज्जत करते थे। और आप को आम तौर पर चौधरी लहिणा जी करके पुकारते थे। यह चौधरी लहिणा जी अपने पिता की तरह देवी के ही पक्के भगत थे और हर बरस पिता की तरह बहुत सी संगतों को साथ लेकर चिन्तपुरनी और ज्वाला जी के दर्शन करने जाते। हर वर्ष देवी के दर्शन करते और देवी

---

*जिसका अब नाम श्री खडूर साहिब जी है, वह सिखों का बहुत बड़ा तीर्थ है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाम पर साल के साल हजारों रुपया खर्च कर देते हैं परन्तु मन को शांति नहीं आती थी। कई बार मन में विचार आता था कि—

'कोऊ संत मिले वड भागी'

भाव-कोई पूरन पुरख सन्त मिले जिस से मन को शान्ति प्राप्त होवे और जो कि मुक्ति का मार्ग बतावे तथा सति का प्रकाश करे। गुरबाणी में लिखा है कि—

'जैसी आसा तैसी मनसा'

जैसी मन में आशा रहती है मन की हालत वैसी ही बन जाती है। सो इसी तरह चौधरी लहिणा के मन में देवी का भगत हुए भी किसी पूरन संत के दर्शन करने की लगन बढ़ती चली गई।

चौधरी लहिणे के जीवन में पलटा

कहते है कि जिस पुरुष के जीवन में पलटा आना होता है उस के लिये भगवान की रजा भी ढो बन ही जाता हैं। जहां दीया नहीं, तेल नहीं और बत्ती भी नहीं वहां तो खाली आग से क्या बनेगा। परन्तु जहां सब समग्री त्यार हो। तेल से भरा हुआ दीया हो और उस में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बत्ती भी मौजूद हो वहां तो केवल आग लगा देने की ही आवश्यकता होती है। इस प्रकार चौधरी लहिणा जी के साथ हुई। जो इसके साथ ही श्री गुरु नानक देव जी का सिख भाई मोध रहता था। जो कि हर रोज अमृत समय (सुबह तीन बजे) उठ कर इश्नान पान करके गुरु जी की बानी पड़ता था। एक दिन इस चौधरी लहिणा ने भी बाणी को अमृत धुन सुन ली। बस फिर क्या था। गुरबाणी चिन्गारी चौधरी लहिणा के मन रूप दीये में जो जगियासा का तेल और प्रेम की बत्ती पड़ी हुई थी। उस को लग गई। मोह लग गई गुरबाणी की जोत तो प्रकाश हो गया मन मंदर में—

'मन मंदर में दीपक जगियो'

और कहा कि—

सतिगुरु शब्द उचारो दीपा ।।

बिनसियो अंधकार तिह मन ते रतन कोठरी खुली अनूपा ।।

गुरबानी का प्रभाव जो चौधरी लहिणे के मन पर पड़ा, उसको गुरबानी द्वारा समझीयेगा—

हरि प्रेम बाणी मन मारिया अणीयाले अणीया राम राजे ।।

जिस लागी पीर प्रेम की सो जाणै जरीया ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूर्य उदय होने के बाद चौधरी लहिणा भाई जोध के पास आ कर दोनों हाथ जोड़ कर पूछने लगा कि भाई जी जल्दी बताओ, शीघर ही बताओ यह जो आप पढ़ रहे थे यह किस महान पुरुख की बानी है ? इसने तो मेरा तन मन भेज दिया है आप कृपालता करके उस महान पुरुष के मुझे दर्शन कराओ । तब भाई जोध ने कहा चौधरी जी जिस महान पुरुष की यह बानी है क्या आप ने उस का नाम भी नहीं सुना वह तो ब्रम्ह सरूप जगत गुरु, गुरु नानक जी महाराज हैं । और वह आजकल श्री करतार पुर में निवास करते हैं ।

गुरु नानक दर्शन भाई लहिणे को

(चौधरी लहिणा से भाई लहिणा)

चौधरी लहिणा के भाग जाग पड़े थे कि देवी के दर्शनों का समय आ गया । चौधरी लहिणे ने हर वर्ष की तरह इलाका की बहुत सी संगत को साथ लिया और देवी के दर्शनों को चल पड़े । देवी के मार्ग से तीन चार कोस एक तरफ गुरु जी का करतार पुर था । चौधरी लहिणे ने सब संगत को कहा कि तुम सब संगत आओ देवी के दर्शन कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आओ मै तो गुरु नानक जी के दर्शन करूंगा और आप लोग जब देवी के दर्शन करके आओगे तो मैं यहां ही गुरु जी के डेरे में हीं हूंगा । यहाँ से ही मेरे को लेते जाना । सब मिल कर ही चलेंगे । इस प्रकार तो सब लोग देवी के दर्शन को चले गये और चौधरी लहणा गुरु नानक देव जो महाराज के दर्शनों को श्री करतार पुर की तरफ रवाना हो गए ।

भाई लहिणा जी से गुरु अंगद देव जी पहिली भेंट

चौधरी लहिणा जो चलते चलते श्री गुरु नानक देव जी के खेतों में पहुंच गये । देखा कि एक खेत में कुछ अदामी गन्दम के खेत में से सरसों निकाल रहे थे । एक वृक्ष के साथ बहुत मोल का अरबी नसल का घोड़ा बधा हुआ था । चौधरी लहिणा के मन में कुछ भरम सा हुआ कि न जाने यह घोड़ा गुरु नानक का ही हो । यह खेतों में सरसों निकालने वाले किसान घोड़े को यहां घुमाने के लिये लाए हो । और इतनी बड़ी कीमत का घोड़ा किस का हो सकता हैं ? पर वह न जान सका कि इन किसानों में से ही एक किसान गुरु नानक देव जी भी हैं । घोड़ा तो है परन्तु घोड़े

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का मालिक भी यहाँ ही है। अब तो चौधरी जी थोड़ा आगे बढ़ कर पूछने लगे मैं गुरु नानक देव जी जी के दर्शन को आया हूं। बस! पुरखा...जो तू गुरु नानक देव जो दर्शन को आया है ता समझ ले तेरे को दर्शन हो गये। तो अब भी भोले चौधरी जी ने न समझा कि यही गुरू नानक है। कैसे समझते। गुरु जी के वस्त्र तो पानी और मिट्टी के साथ भीग कर लथ पथ हुए थे। वह तो समझते थे कि गुरु नानक देव जी किसी बहुत बड़े सिंघासन पर विराजमान बहुत कीमती और सुन्दर वस्त्र पहने दर्शन देंगे। चौधरी जी को अभी से क्या मालूम था कि यह वह गुरु जो है जिनका वाक है कि:...

किरत करे कुछ हत्थों देय।
नानक राह पछाने सेय॥

गुरू जी के आशे को समझ कर बाकी के पांच छः सिख जो कि गुरु जी के साथ सरसों निकाल रहे थे, चुप रहे। गुरु जी ने फिर कहा पुरखा ले इस चादर पर बैठ जाओ। जब हम सरसों निकाल कर जायेंगे तो हमारे साथ चलना गुरु नानक के दर्शन करने।

..श्री गुरु नानक देव जी आम तौर पर भाई लहिने को पुरखा करके ही बुलाते थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी ने सरसों की पंडीकरीये बाँध कर सिखों के सिरों पर धर कर करतार पुर को रवाना कर दिया और आप घोड़े को खोल कर चौधरी लहिणे के पास जा कर उनको घोड़े के ऊपर चढ़ने को कहा। यह घोड़ा तो गुरु नानक देव जी का मालूम होता है। मैं इस पर कैसे चढ़ूं लहिणा जी ने कहा। गुरु नानक का नहीं भाई यह तो साध संगत का घोड़ा है। गुरु जी ने कहा। तब लहिणा जी यह समझ कर घोड़े पर चढ़ गए कि यह घोड़ा बाहर से बड़े बड़े लोगों के स्वागत के लिये रखा होगा और यह आदमी भी गुरु नानक का सिख सेवक या नौकर होगा।

लहिणा जी घोड़े पर सवार हो गए और गुरु जी घोड़े को आगे से लगाम पकड़ कर खेतों में से घुंमाते हुए करतार पुर डेरे पहुंच गये। रास्ते में गुरु जो के साथ लहिणा जी गुरु जी के बारे में बहुत सी बाते करता आया। गुरु जी ने लहिणे से पूछा कि आपका नाम क्या है। उत्तर आया कि लहिणा तू लहिणा तों मैंने देना, गुरु जी ने कहा तो भी वह इस रमज को न समझा।

करतार पुर में आ कर गुरु जी ने कहा पुरखा पहिले भोजन पा लो फिर गुरु के दर्शन करूंगा फिर भोजन पाऊंगा। गुरु जी के कोतक को देखने के लिये सैंकड़े

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिख संगते इकठो हो गई थी। पर गुरु जी के आशे विरुध किसी को बोलने का साहस न हुआ।

गुरु जी ने घोड़ा एक सिख को पकड़ा कर लहिणा जी को कहा आओ गुरु नानक के दर्शन करो। यह दरवाजा हैं इस से दाखिल हो कर। गुरु जी उस की दूसरी तरफ जाकर कपड़े बदल कर सिंघासन पर जा कर बैठ गये। जब चौधरी लहिणा जी ने गुरु जा के दर्शन किये तो पहचान कर और सब रहस समझ कर गुरु जी के चरणों पर गिर कर क्षमा माँगने लगे। तब गुरु जी ने महा कृपालता करते हुये चौधरी लहिणा को चरणामत पिला कर नदरी नदर निहाल कर दिया और उस दिन से चौधरी लहिणा जी का जीवन पलट गया वहां नाम में भी कुछ पलटा आ गया कि चौधरी लहिणा वे भाई लहिणा होय निबड़ा।

गुरु नानक देव जी से लहिणा जी की पहली भेंट

(गुरयाई मिलनी)

'जो सुधों सुता लहा टिकिआन'

बस ! भाई लहिणा जी अब गुरबाणी के वाक अनुसार कि 'तन मन धन सभ सौंप गुर कउ हुकम मंनीऐ पाईये' गुरु के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ही बन गये। गुरु के दर पर ही तन मन से सेवा करने लगे यहाँ तक कि सेवा और हुकम मानने का रिकार्ड कायम कर दिया। उधर देवी के दर्शनों को गई संगत जब लौट के आई तो उन को भी कह दिया कि भाई हम तो अब घर नहीं जायेंगे क्यों कि हम अब गुरु के हो गये है।

कहाँ तक कहा जाये भाई लहिणा जो गुरबाणी की निम्नलिखित अनुसार गुरु सेवा की कसौटी में पूरे उतर गये जैसे कि—

हसति जिओं सिर अंकुस हैं, अहिरन जिओं सिर देय ॥
मन तन आगे राख के, उभी सेब करेय ॥
इउं गुरमखि आप निवारोये, सब्र राज गृस्त का लेय ॥

तथा—

फरीदा आप सवारया लै मिले, मैं मिलिया सुख होय ॥
जे तूं मेरा होये रहे, सब जग तेरा होये ॥

सारांश कि भाई लहणा ज़ी प्रेम सेवा और भगती में उस तरह लिवलीन हो गऐ कि जैसे गुरु का सरूप ही बन गये। तब गुरु नानक देव जी ने भाई लहिणे की प्रेमा भगती और सेवा की गुरबाणी अनुसार आखरी सीमा पर पहुंच गये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जैसे कि—

परीक्षा और गुरयाई

गुरु मत में यहां पर सेवा की बहुत महानता है। वहाँ हुकम की भी महानता है। बलकि हुकम भाणा तथा रजा की महिमा सब प्रकार के करमों रधमों से उच्च कही गई है गुरबानी में कहा है कि—

हुकम मन्नीये होवै प्रवान ता खसमै का महिल पाएसी।

सेवा भी गुरु दर पे वही प्रवान होती है जो कि गुरु को रजा तथा हुकम अन्दर की जावे। जैसे कि—

सा सेवा कीती सफल है जित सतिगुरु का मंन मंने ॥
जा सतिगुर का मंन मंनिआ ता पाप कुसंमल भंने ॥

तांते भाई लहिणा जो हुकम का कार में से पूरे उतर श्री गुरु नानक देव जी भाई लहिणे जी को गुरयाई देने का फैसला तो कर चुके थे परन्तु आप आपनी धर्म सुपत्नी और दोनों बेटों के सामने साबत करना चाहते थे कि गुरगदी के हर प्रकार से भाई लहिणा ही योग्य है, वह नहीं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१. एक बार गुरु नानक देव जी ने एक गन्दे नाले में एक बरतन फैंक दिया। और दोनों पुत्रों को निकालने को कहा। उन्हों ने इन्कार कर दिया। जब भाई लहिने को तरफ इशारा किया तो उन्हों ने तत् क्षण समेत वस्त्रों के छलांग लगा कर बरतन निकाल कर गुरु जी के चरणों में ला रखा।

२. एक बार आधी रात का समय था। सरदी को ऋतु और हवा चल रही थी। गुरु जी ने दोनों बेटों को दरिया पर से कपड़े धो लाने को कहा उन्हों ने आगे ये कुछ बातें बताते हुए इन्कार कर दिया भाई लहिणा इशारा होते ही कपड़े ले कर दरिया पर चला गया गुरु जी का रजा से दरिया पर ज्येष्ठ के दिनों जैसी धूप लग गई। भाई लहिणा एक घटे में ही कपड़े धो तथा सुखा कर ले आये।

३. गुरु जी ने एक समय आधी रात बारश पड़ते समय बेटों को एक दीवार बनाने को कहा जो इन्कार होने पर भाई लहिणा जी ने हुकम पाते ही बना दी।

४. एक समय गुरु जी ने सब सिखों को जंगल में ले जा कर बहुत बड़े लठ से पीटना शुरु किया। सब के सब सर पर पाओं रख कर भाग गये परन्तु भाई लहिणा जी खड़े मार खाते रहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५. एक समय सब को [समेत बेटों के] कहा कि मुरदा खाओ। यह बात सुन कर सब के सब खिसक गये परन्तु भाई लहिणा जी हुकम पा कर खाने लगे तो वह हलवा की कड़ाही बन गई।

इस प्रकार और भी बहुत सी परीक्षाओं में जब भाई लहिणा जी पूरे उतरे तो आप को गुरु नानक देव जी ने अपने अंगों के साथ बगल में लेकर अपना सरूप बना कर श्री गुरु अंगद देव नाम रखा और अस्सू वदी ५ सम्मत १५९६ की प्रातः अपनी गुरु गदी पर बिराज मान कर दिया।

श्री गुरु अंगद देव जी के महान कर्म

फेर बसाया फेर आन सतिगुर खंडूर ॥
ज़िस सी हाथ न लभई तूं उह ठरूर ॥
निंदा तेरी जो करे सो वज चूर ॥

श्री गुरु अंगद देव जी ने श्री खंडूर साहिब आ कर पहला अतुट लंगर चलाया। जहाँ पर हर एक जाति का बिना किसी संकोच के एक पंकति में बैठ कर भोजन पा सकता था। असली रूप में जात पात तथा छूत छात के भेदों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को मिटा दिया।

२. जो दूर दूर से संगत आती थी उनको आतमिक ज्ञान तथा सत धर्म का उपदेश देना शुरु किया। भरम वहिम और पाखंड को नष्ट करना शुरु किया।

३. श्री गुरु नानक देव जी के पंजाबी बोली का शुद्ध में लिखने वाल चलाई हुई, गुरमुखी लिपी को प्रचलत किया।

४. श्री गुरु नानक देव जी का जीवन बड़ी खोज के साथ लिखवाया जिस का नाम भाई बाले को जन्म साखी पड़ा। आज कल यह 'भाई बाले की जन्म साखी' करके ही प्रसिद्ध है।†

५. एक बहुत भारी अखाड़ा बनाया जहां पे लोगों में उतशाह और शरीरक बल को कायम रखने के लिये कसरतें (व्याम) करना प्रारंभ कराये। जैसे कुश्तीयाँ कबडी,

---

†इस भाई बाले वाली जन्म साखी पर कई प्रकार के संदेह किये जाते है कि यह असली नहीं जो कि गुरु अंगद देव जी ने लिखवाई थी जो किसी हद तक यथार्थ ही है। इस सम्बन्धी सारी पड़चोल नानक प्रकाश तथा भाई साहिब भाई वीर सिह जी की नानक प्रकाश टिपनी पड़ो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दौड़ें सोंची, रस्सा आदि।

६ दूर दूर तक सिखी का प्रचार करने को प्रचारक भेजे लोगों से साहस पैदा करने का उपदेश किया।

शेर शाह सूरी का उपदेश

जब तक बाबर रहा तो राज्य का काम ठीक रहा उस के मरने के बाद उसका बेटा हिमायूं राज गद्दी पर बैठा। उसके राज का इन्तजाम ना चल सका शेरशाह सूरी ने उस को मार भगाया। तब वह सीधा १५६७ बि: को श्री खडूर साहिब पहुंचा क्यों कि उसने अपने बाप बाबर से गुरु नानक देव जी की महिमा सुनी हुई थी, इतफ़ाक से गुरु जी किसी और ध्यान में बैठे थे जो उस की तर्फ निगाह न की। हमायूं ने गुस्से में आकर तलवार निकालकर गुरुजी का गला काट देना चाहा। जब तलवार को हाथ में लेकर भुजा ऊंची करके तलवार का वार करने लगा तब वह भुजा वहीं की वहीं खड़ी रह गई। जैसे किसी ने पकड़ ली होती है। तब गुरु जी जाहिरा अजमत शक्ति देख कर चरणों से पड़ गया गुरु जी ने कहा भाई साजन! यह तलवार शेर शाह सूरी पर उलारनी थी यहां फकीर पर क्या उलारता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी का यह वचन सुन कर और भी शरमसार हुआ। तब गुरु जी ने गुरु दर पर गिरा जान कर उस को फिर से राज करने का वर दिया। ज़िस से हमायूँ ने शेर शाह सूरी को हार देकर गुरु जी के वर से राज प्राप्त कर लिया।

एक कनफटे तपे की मौत

खंडूर साहिब में एक मलूका जाट रहता था जो कि बहुत ही शराबी कबाबी था उस को मिरगी पड़ती थी। उस ने गुरु जी के दर पर आ कर मिरगी हटाने की बेनती की। गुरु जी ने कहा जो तू शराब छोड़ देगा तो मिरगी हट जायेगी। जो फिर पियेगा तो फिर हो जायेगी। उसने शराब छोड़ दी। मिरगी भी हट गई। परन्तु एक दिन फिर शराब को मन ललचा आया। शराब पीकर गुरु जी को भी अपने कोठे पर बैठ कर अयोग शब्द कहने लगा। तब गुरु जी ने उधर दृष्टि की तो उसी वक्त उसको मिरगी पड़ गई और वह कोठे की छत से गिर कर मर गया।

मलूके जाट की कथा

उन दिनों खंडूर साहिब में एक कान फटा योगी तपी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहता था जो कि गुरु जी को नित प्रति बड़ती हुई महिमा को देखकर ईर्षा की आग में जलता रहता था। लोगों में गुरु की निन्दा करता और गुरु जी को नुकसान पहुंचाने की ताक में रहता था। एक समय उस इलाका में वर्षा न हुई लोग बहुत तंग होने लगे। सब प्रकार की खेतीयाँ सूखने लगी। लोगों ने तपे को वर्षा के लिए कहा। उसने कहा अरे भात खानो। वर्षा कैसे पड़े तुम देखते नहीं हो कि तुम्हारे गांव में कितना उपद्रव हो रहा है। जो एक गृहस्थी आदमी लोगों से पूजा करा रहा हैं। आप लोग उसको गांव से निकाल दो फिर देखो कितने जोर से वर्षा पड़ती है।

किसी ने बीरबल से पूछा था कि सब से प्यारी कौन सी वस्तु हैं ? बीरबल ने फौरन जवाब दिया कि 'गरज'। बस ! वह गरज के मारे जाट गुरु जी के पास गये और पहले तो बेनती की कि आप यहां से चले जाओ तो वर्षा होगी तपे ने इस बात का जुम्मा लिया है। तब गुरु जी तपे की ईर्षा और जाटों की मूर्खता पर हंसे। फिर यह कह कर खडूर साहिब से चले गये की भाईया वर्षा तो भगवान के हुकम से होती है परन्तु आप के कहने पर चले जाते हैं। हमारे जाने से अगर आपका लाभ हो तो हम जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जब गुरुजी चले गये तो भी वर्षा न हुई। तब पाखंडी तपे ने लोगों से यज्ञ के बहाने से बहुत सा रुपया बटोरा जब फिर भी मींह न पड़ा तो लोग बहुत गुस्से में आ गये। उधर बहुत से सिख और* अमर दास जी ने लोगोंको कहा कि तुम जिस खेत में तपू को मारते पीटते ले जाओगे, उसी खेत में मींह पड़ेगा। सो जाटों ने ऐसा ही किया। जिस खेत में तपे को मारते पीटते ले जाये उसी में बड़े जोर से बारश पड़ जाए। आखिरु जाट उस तपे को अपने २ खेत की तरफ खेंचने लगे। इस प्रकार उसकी किसी ने टाँग तोड़ ली किसी ने भुजा तोड़ ली। सारांश कि जिस खेत में तपे की हडी भी चली जाए उसी में जोर शोर से बारश पढ़ने लग जाये। इस बात का जब गुरु अंगद देव जी को पता लगा तो वह अमर देव जी से बहुत नाराज हुए।

सब लोगों ने गुरु जी की मिनतें करके खंडूर साहिब ले आये।

सतीयों के रिवाज का खंडन

एक समय खडूर साहिब में कोई प्राणी कालवश हो गया उसकी स्त्री पतिव्रता धर्म वाली थी। कुछ लोगों ने मजबूर किया तब वह अपने पति के साथ सती होने को त्यार हो

*जो बाद में गुरु अमर देव जी बने।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गई । इस बात का गुरु जी को पता लगा तो आप को इस घृणत और अत्याचार कर्म पर बहुत दुख हुआ । एक सिख को भेजकर उस स्त्री को बुलाकर सत धर्म का उपदेश किया और कहा कि यह बहुत बुरा कर्म है । इसको आतम हत्या कहते है । आतम हत्या करने वाला सीधा नरक वास होता है । यह तो पखंडी लोगों ने भरम डाल रखा है । गुरु जी ने उस सति प्रथाये सर्व साँझा उपदेश उचारण किया क्योंकि

प्रथाये साखी महा पुरख बोलदे सांझी सगल जहाने ।।

गुरु उपदेश सतीयों के लिये–

सतीया इह न आखीयन जो मड़िया लग मरन्न ।
सतीयां सोई नानका जो सील सतोख रहन्न ।

भाव–वह सती नहीं कही जाती जो कि मर रहे पती के साथ जल जाती है । सती वह है जो कि पती के मरने के बाद सील और सन्तोख से रहती है । या फिर वह सती है–

भाल लैन सहु अपना ।

भाव—दूसरे प्रकार की सती वह है जो कि एक पती के मरने के बाद दूसरा सुयोग पती तालाश करके उसके साथ शादी कर ले ।

गुरु जी ने कहा कि जो इस प्रकार से मरे हुए पती के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साथ सती हो जाती है कि उसको आगे जाकर उसके पती का मिलाप होगा, यह बात भरम है सुनो—

प्रिया संग न पाईए, बहु जोन भवाईऐ ।

भाव-वह पती का संग नहीं पा सकती बलकि आतम हत्या के दोष करके नरकों में तथ बहुत जूनों में घूमती है।

इस प्रकार गुरु जी ने उसका उपदेश करके आतम शांति बख्शी और लोगों में से सती जैसी निंदनीय रसम को खतम किया ।

जोती जोत समावना

इसी प्रकार श्री गुरु अंगद देव जी ने अपने समय अनगिनत जीवों की कल्याण की और सचे धर्म का उपदेश किया। आप जी ने गुरबानी बहुत कम उचारण की थी। केवल गुरु नानक देव जी की बाणी का ही प्रचार करते रहे जब आप जी ने अपना अन्त समय आया देखा तो श्री गुरु नानक देव जी की तरह अपने साहिबजादों को गुरु गदी नहीं दी बलकि अमर दास भल्ले को दी। जिस ने मन मार कर सेवा की थी। जिस की कथा उनके जीवन में आयेगी। गुरु गदी का अधिकारी जान कर पांच पैसे एक नारियल तिलक चंदन गुर मर्यादा अनुसार गुरु गदी पर सुशोभत करके आप चेत्र सुदी सम्वत १६०९ बिक्रमी जोति जोत समा गये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंसावली

श्री गुरु अमर दास जी महाराज

जन्म स्थान	बासर के (जिला अमृतसर)
जन्म तिथि	वैशाख सुदी १४ सम्वत १५२६ बिक्रमी
पिता	भाई तेज भान जी
माता	लक्ष्मी जी
विवाह	१७ माघ सम्वत १५५३ बिक्रमी
महिला	श्री माता मनसा (राम कौर जी)
सन्तान	भाई मोहन जी [भाई मोहरी जी]
	बीबी भानी जी, बीबी दानी जी
गुरयाई मिलनी	चेत्र शुदि १ सम्वत १६०९ बिक्रमी
जोती जोत समावन स्थान	श्री गोइंदवाल साहिब जी
जोती जोति समावन तिथि	भादों शुदि १५ स. १६३१ बि.
आयु	१०५ वर्ष ४ माह १ दिन
राज्य	हमायू और अकबर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन श्री गुरु अमर दास जी

भल्ले अमर दास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बन आवे

जैसे कि पहले भी कहा गया है कि गुरु घर में सेवा का दरजा बहुत ऊंचा है—

सूबा करत होए निहकामी ।।
तिस कउ होत प्रापति स्वामी ।।

जैसे कि श्री गुरु अंगद देव जी ने सेवा प्रेम और हुकम मानने से गुरु गदी प्राप्त की थी। अब श्री गुरु अंगद देव जी भी सेवा का सरुप बन कर गदी प्राप्त कर रहे हैं।

श्री गुरु अमर दास जी का जन्म वैशाख सुदी १४ सं. १५२६ बि को तेज भान, माता लक्षमी के गृह में हुआ। भाई तेज भान बड़ शरीक भले पुरुष और धार्मिक रुचीओं वाले थे। जिसका प्रभाव गुरु अमर देव जी पर पड़ा। इस प्रकार माता लक्षमी भी धर्म भावों की थी तेज भान अपने ही गांव में ही दुकान का काम करते थे। गुरु अमर देव भी इसी काम में लग गये। घोड़े पर माल लाद कर नजदीक के गांवों में जाते थे। आपका विवाह भाई देवी चद की सुपुत्री बीबी मंसा देवी के साथ हो गया। (जो सहुरे घर का नाम राम कौर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करके प्रसिध्द था।) आपके मन में धार्मिक रुचीयों का प्रेम आखरी सीमा पर पहुंच गया। कहते हैं कि आप २१ बार नाँगे पाओं हरिद्वार यात्रा को गये थे। जो एक महोने भर में बड़ी मुशकल से गंगा जी का इशनान करके वापस आते थे। लेकिन फिर भी मन को शांति प्राप्त न हुई।

एक समय अमर दास जी हरिद्वार से आ रहे थे कि एक जगह विश्राम करने को बैठ गये। यहाँ पे और भी बहुत से लोग विश्राम कर रहे थे। अमर दास जी अपने गोड पर पाओं रख कर सोए पड़े थे कि आपके पाओं की तली में कदम का निशान देख कर एक पण्डित ने कहा आप को तो बहुत बड़ा बादशाह या सारे संसार के पूज्य महात्मा बनना चाहिये था क्योंकि जो निशान आपके पाओं में है यहो निशान भगवान कृष्ण जी के पाओं में था। यदि अब तक नहीं तो शीघर ही आप के सिर पर छत्र झूलेंगे और संसार भर की विभूति आप के कदमों में रुलेगी। यह बात सुन कर अमर दास जी ने खुश हो कर पण्डत जी का प्रेम के साथ प्रशाद (भोजन) खिलाना चाहा। तब पण्डत जी ने कहा कि आपका गुरु कौन है। अमर दास जी ने कहा कोई गुरु नहीं। बस मैं तो कभी निगुरे पुरुष के हाथ का नहीं खाता। तब उसी समय से अमर दास जी ने गुरु की तलाश करनी शुरु की।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु का मिलाप

इस पुरुष को क्या पता है कि संगत और किसकी बाणी से इसके जीवन में पलटा आ जाना होता है। फिर गुरु के शब्द में इतनी शक्ति है कि जो सुनने से लोहे लाल, कांच से हीरा, कौड़ी से करोड़, मूढ़ से पण्डत चोर से साध बन जाता है। जिसका प्रतक्ष सबूत अमर देव जी के जीवन पलटे से गुरु मिलता है।

श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री बीबी अमरो की शादी अमर देव जी के भतीजे के साथ हुई थी जिसके मन में (गुरु की सपुत्री होने कारण) गुरुबाणी का अथाह प्रेम था। एक दिन अमृत समय बीबी अमरो श्री जपुजी साहिब का पाठ कर रही थी कि अमर दास जी के कान में अमत बाणी की मधुर धुन पड़ गई और फिर [वही गुरु अंगद देव जी की तरह किया। गुरुबाणी का बाण तन मन में धस गया। सारी बाणी का पाठ बड़ी मस्ती और प्रेम के साथ सुनते रहे। जब बाणी की मस्ती के बाद बीबी जी ने अरदास की तो उसके बाद अमरदास जो ने अपनी नूखा (बीबी अमरो) से पूछा— हे बेटी ! यह किस पुरुष की बानी हैं जिस के सुनने से मेरा मन तन निहाल हो गया है। बीबी जी ने कहा—यह बाणी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जगत गुरु गुरु नानक देव जी की है जिनकी गद्दी पे अब उनके ही सरूप श्री गुरु अंगद देव जी है जो कि आप के कुड़म हैं। अब अमर दास जी ने कहा बेटी अब मुझे भी साथ ले जाकर ऐसे गुरु के दर्शन कराओ। बीबी जी ने सत वचन कह कर अमर दास जी को गुरु अंगद देव जी के दरबार में श्री खडूर साहिब ले गए। उस समय गुरु जी सिंगासन पर बैठे हजारों संगतों को उपदेश कर रहे थे। बस ! अमर देव जी गुरु जी के दर्शन करते ही चरणों पे गिर पड़े। जो प्रेम की मस्ती की आखरी सीमा पर सुरत पहुंच गई। जानो जैसे हृदय की सुद्ध बुद्ध विसर गई। कितनी देर तक बेसुद्ध होकर गुरु जी के चरणों पर ही पड़े रहे। तब गुरु जी ने अथाह प्रेम देख कर अमर दास को अपने गले के साथ लगा लिया। उसी दिन से अमर दास जी, गुरु के सिख बन कर गुरु जी के दर पर ही पड़े रहे, घर नहीं गये। लोक लाज की कोई प्रवाह न की। प्रेम और दृढ़ विश्वास से गुरु की सेवा में जुट गये।

सेवा की परीक्षा

गुरु पीरा की चाकरी महा करड़ी सुख सार ॥

अमर देव जी की गुरु अंगद देव जी शर्ण में १५९८ में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आये थे। उस समय आपकी आयु ६२ वर्ष की थी परन्तु भाव भगति और जती सती होने के कारण शरीरक शक्ति तथा सेहत अच्छी थी। गुरु वाक अनुसार कि—

गुरमुख बुढे कदे न थीयन जिना अतर सुरत ज्ञान ॥

अमर दास जी ने गुरु जी के अमृत समय के इशनान को सेवा संभाल लो। वह हर रोज दो बजे रात को उठकर दरिया ब्यास में पानी को गागर ला कर अपने हाथों से बड़े प्रेम सहित गुरु जी को इशनान कराते थे। चाहें कितनी भी सर्दी तथा बारिश पड़ती हो तो भी इस नियम को भंग नहीं होने देते थे। उस समय आपकी आयु ७० वर्ष की थो। एक वर्ष के बाद आप गुरु जी से सिर पर बांधने का परना लेकर सिर बांध लेते थे। संसारी लोग आप पर कई प्रकार को बातें तथा उलाम्भे देते थे कि देखो कुड़म के यहां टुकड़े तोड़ रहा है प्रन्तु आप किसो बात की प्रवाह हो नहीं करते थे।

एक दिन बहुत जोर की बारश पड़ रही थी और सब रास्ते पानी और कीचड़ से भर रहे थे। उधर गुरु जी के ईशनान का वक्त हो रहा था। अमर देम जी जब रास्ता में एक गाओं में एक जुलाहे के घर से गुजरने लगे तो उसकी ताना बुनने वाली खडी पानी से भर रही थी। अमर दास जी समेत गागर के उस में बड़े जोर से गिर पड़े।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जुलाहे ने अपनी पत्नी को कहा देखो तो कौन गिरा है। जुलाही ने कहा और कौन है, वही अमरू निथावां है। जिसका न कोई घर न घाट है। जो कुड़म के यहां टुकड़े तोड़ रहा है। यह बात सुनते ही अमर दास जी ने निमरता पूर्वक कह दिया ।

अरी कमली ? मैं निथावां नहीं हूं।
बस ! गुरु के वाक अनुसार कि–

साधु का बोलया सहिअ सुभा ॥
साधु का बोलया बृथा न जा ॥

वह जुलाही उसी समय कमली हो गई और कपड़े फाड़ने लगी। उधर अमर दास जी गुरु जी के चरणों पर हाजिर हुए तो गुरु जी ने इश्नान पान करके दीवान लगा कर अमर दास जी को सब के सामने बुलाकर कहा कि बताओ आप को रास्ते में किसीने कुछ कहा है ? अमरदास जी ने सारी बात कह दी कि एक जुलाही ने मुझे निथाहवां कहा है जब कि मैं उसकी खडी में गिर पड़ा था। तब श्री गुरु अगद देव जी ने बहुत प्रसन्न होकर निम्नलिखित वरदान दिये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तूं निथावियां का थान निमानियां का मान ।
निगतियां की गति निपतियां को पति ।
निधियां की धीर । निआसरयां का आसरा ।
तूं सब का स्वामी ॥

गुरु जी के मुखार बिंद से यह सब प्रकार के वर सुन कर सब संगत को गुरु जी के भाव मालूम हो गये कि यह अमर दास ज़ी गुरु बनेंगे ।

उधर जुलाही को लेकर उसका पति आ गया । बड़ी निमरता पूर्वक बेनती की और भूल बखशाई तब गुरु जी ने कृपा दृष्टि से उस जुलाही को ठीक और निरोग कर दिया ।

गुरयाई मिलनी

गुरु अन्गद देव जी के साहिबजादों ने बहुत यत्न किया कि गुर गदी उनको प्राप्त होये परन्तु सफलता न हुई गुरु जी ने अमर दास जी को पहली मर्यादा अनुसार पांच पैसे नारियल आदि समग्री लेकर चेत शुदि १ सम्वत १६०९ बि० को गुर गदी देकर आप जोती जोत समां गये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु अमर देव जी के उसारु काम

श्री गुरु अमर देव जी ने गुरु गद्दी पर बैठते ही कई काम उसारू शुरु कर दिये। सब से पहले आप जी ने गुरु अंगद देव जी के होते हुए ही गोइंद वाल नाम का नगर बसाया। जिस का वृतांत आगे जाकर आयेगा।

सब से पहिला गुरु जी ने गुरु के लंगर का काम किया गुरु के लंगर के चार नियम कायम किये।

१. गुरु के लंगर में बेहद दरजे की सफाई, रखने का हुकम किया। विशेष करके बर्तनों की सफाई, दाल सब्जीयों और हर प्रकार के अनाजों की सफाई रखनी। खास करके लांगरीयों के वस्त्रो की सफाई रखनी आदि।

२. चौबीस घन्टे लंगर जारी रहने का हुकम दिया। कोई पुरुष किसी समय भी आवे, उसको उसी घड़ी ताजा भोजन मिलता था।

३. हर इक जाति का जैसे कि चुहड़ा, चमार, भील आदि कोई भी हो, बिना संकोच के लंगर में एक ही संगत पंगत से बैठ कर भोजन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तूं निथावियां का थान निमानियां का मान ।
निगतियां की गति निपतियां को पति ।
निधियां की धीर । निआसरयां का आसरा ।
तूं सब का स्वामी ॥

गुरु जी के मुखार बिद से यह सब प्रकार के वर सुन कर सब संगत को गुरु जी के भाव मालूम हो गये कि यह अमर दास ज़ी गुरु बनेंगे ।

उधर जुलाही को लेकर उसका पति आ गया । बड़ी निमरता पूर्वक बेनती की और भूल बखशाई तब गुरु जी ने कृपा दृष्टि से उस जुलाही को ठीक और निरोग कर दिया ।

गुरयाई मिलनी

गुरु अन्गद देव जी के साहिबजादों ने बहुत यत्न किया कि गुर गदी उनको प्राप्त होये परन्तु सफलता न हुई गुरु जी ने अमर दास जी को पहली मर्यादा अनुसार पांच पैसे नारियल आदि समग्री लेकर चेत शुदि १ सम्वत १६०९ बि० को गुर गदी देकर आप जोती जोत समां गये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु अमर देव जी के उसारु काम

श्री गुरु अमर देव जी ने गुरु गद्दी पर बैठते ही कई काम उसारू शुरु कर दिये। सब से पहले आप जी ने गुरु अंगद देव जी के होते हुए हो गोइंद वाल नाम का नगर बसाया। जिस का वृतांत आगे जाकर आयेगा।

सब से पहिला गुरु जी ने गुरु के लंगर का काम किया गुरु के लंगर के चार नियम कायम किये।

१. गुरु के लंगर में बेहद दरजे की सफाई, रखने का हुकम किया। विशेष करके बर्तनों की सफाई, दाल सब्जीयों और हर प्रकार के अनाजों की सफाई रखनी। खास करके लांगरीयों के वस्त्रो की सफाई रखनी आदि।

२. चौबीस घन्टे लंगर जारी रहने का हुकम दिया। कोई पुरुष किसी समय भी आवे, उसको उसी घड़ी ताजा भोजन मिलता था।

३. हर इक जाति का जैसे कि चुहड़ा, चमार, भील आदि कोई भी हो, बिना संकोच के लंगर में एक ही संगत पंगत से बैठ कर भोजन खाने का हुकम दिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४, लंगर के सम्बन्ध में राजा, रंक बराबर का नियम कायम किया। आप का हुकम था कि कोई भी हो, राजा हो या रंक पहिले वह लंगर से प्रशाद छके फिर मेरे दर्शन करे यहां तक कि एक समय अकबर बादशाह दिल्ली से चल कर गुरु जी के दर्शन को आया। उसके आने की खबर ले कर उसके अहिलकार आये। परन्तु गुरु जी ने हुकम दिया कि क्या है जो अकबर है तो ? पहिले गुरु के लंगर से प्रशाद छके फिर मेरे दर्शन करे। सो ऐसा ही हुआ। अकबर ने पहिले लंगर में सब प्रकार के निर्धन से निर्धन लोगों के बराबर बैठ कर प्रशाद छका और फिर गुरु जी के दर्शन किये।

माई दास ब्राहमण का अहंकार तोड़ना

एक माई दास ब्राह्मण छूतछात को बहुत मानता था। उसने इसलिए गुरु के लगर का भोजन न पाया कि यहां सब प्रकार के शूद्र और चमार आदि इकठे बैठ कर भोजन पाते हैं। तब गुरु जी ने उसको कच्चा सामान दिलवा दिया। जब वह पण्डित भोजन बनाने के लिए चूल्हा बनाने लगा तो वहां से हडी निकली। फिर दूसरी जगह चूल्हा बनाने क लिए खोदी तो वहां से भी हडीयां निकलीं सारांश कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जहा से भी जमीन खोदे, वहाँ से हडीयां निकलें। अन्त में गुरु की शक्ति को जान कर कें लंगर से ही भोजन पाया।

श्री गोइंदवाल साहिब

ब्यास नदी के किनारे एक गोदे खत्री का नाम था। जिसको कहते हैं कि भूत प्रेत नहीं बसने देते थे। गुरु अंगद देव जी के चरणों पें बेनतो की तो गुरु अगद देव जी ने गुरु अमर देव जी को भेजा। उन्हों ने गुरु शब्द द्वारा कहा और भूत प्रेतों को वहां से भगा दिया। भाई गोदे के नाम पर गोइंदवाल साहिब नगर बसा दिया।

सन्न साहिब की कथा

श्री गुरु अमर दास जी को गुरु अंगद देव जी ने खंडूर साहिब से गोइंदवाल साहिब भेज दिया ताकि यहां पर उन्हों के पुत्र दातू और दासू ईर्षा न करें। सो गुरु अमर दास जी ने गोइंदवाल साहिब को ही सिखो प्रचार केन्द्र बना लिया परन्तु गुरु जी की महिमा बढ़ती हुई देखकर दातू ने गोइंदवाल साहिब जाकर गुरु जी की पीठ में उस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समय जोर से लात मारी जब कि आप सिंघासन पर बैठे संगतों को उपदेश कर रहे थे और कहा कि इस गदी पर हमारा हक है गुरु जी ने दातू के पाओं पकड़ पर घुटने दबाने शुरु कर दिये और कहा कि आप गुरु अंश हो। मेरा शरीर बहुत सख्त हैं आप के नर्म पाओं को चोट तो नहीं लगी। गुरु जी की इस प्रकार की नर्मी तथा शांति को देख कर दातू जी बहुत शर्मिंदा हुये। सब संगतों के मन में भी बहुत रोस हुआ। गुरु जी ने सब को रोक दिया कि कोई कुछ न कहे सब के सब अपनी अपनी जगह पर बैठे।

संसार में गुरु जी की यह दूसरी मिसाल थी। पहिले सतयुग के समय जो भृगू ने भगवान विष्णू जी के पेट में लात मारी थी उन्हों ने भी ऐसा हो किया था। इस घटना का गुरु जी के मन पर बहुत प्रभाव पड़ा कि देखो यह माया ही सब उपद्रवों का मूल है। दूसरा आप ने यह सोच कर कि गुरु अंश को दुखी नहीं करना चाहते। उसी रात को चुपके से बिना किसी सिख सेवक को खबर दिये चल पड़े। चलते चलते अपने जन्म स्थान बासर के गाँव पहुंच गये। वहां एक कोठे में प्रवेश होकर अन्दर से साकल लगा लिया परन्तु पहिले दरवाजे पर लिख दिया कि जो भी दरवाजा खोलेगा उसको गुरु की मार पड़ेगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इधर जब संगतों को पता लगा कि गुरु जी कहीं चले गये बहुत तलाश करने पर भी पता न चला। तब गुरु जी एक घोड़ी जिस पर गुरु जी सवार होकर इधर उधर घूमते जाते थे, उसको छोड़ दिया और सब सिख बाबा बुढा जी आदि बहुत से सिख घोड़ी के पीछे पीछे चल पड़े। घोड़ी चलती चलती बासरके गाम आकर उसी कोठे के दरवाजे पर खड़ी हो गई जिस के अन्दर गुरु जी बैठे सिमरण कर रहे थे। जब बाबा बुढा जी ने दरवाजे के ऊपर लिखा हुआ पड़ा तो वह डर गये। किसी की समझ में बात न आई। आखिर बाबा बुढा को एक युक्ति सूझी। उन्हों ने कोठे के पीछे की तरफ से †सन्न (फोड़)लगा ली। तब गुरु जी बाबा बुढा जी की इस युक्ति पर बहुत प्रसन्न हुए और उसी वक्त वरदान दिया कि जो कोई इस सन्नसे गुजरेगा उसकी चौरासी काटी जाएगी। सो गुरुजी संगतों के समेत फिर गोइंदवाल साहिब आ गये। फिर से बड़ी भारो रौनकेंहोने लगो।

---

†यहाँ सन्न साहिब गुरुद्वारा है। साल के साल बड़ा भारो मेला लगता है। दूर दूर से संगतें आ आ कर अब तक इस सन्न के आर पार गुजर कर चौरासी को काटती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन दिनों में गुरु जी की बहुत भारी महिमा देख कर गोंदे मरवाहे के बेटे जलने लगे और उन्होंने गुरु जी पर दिल्ली दरबार में दाहवा किया था। जो कि बुरी तरह हार गये। जिसका वर्णन गुरुबाणी में भी आता है।

श्री बाउली साहिब का आरम्भ

श्री गुरु अमर दास जी की महान कृपालता से गोइंदवाल साहिब सिखी का बड़ा भारी केन्द्र बन गया था जिस कारण अब वहां पर गुरु जी ने बड़ा भारी तीर्थ (बाउली साहिब के नाम पर) की रचना आरम्भ कर दी। १६१६ बि· को पहिला बुनियादी पत्थर रखा गया। दूर दूर से सिख संगत आ आ कर जमा होने लगी। जिससे बहुत भारी भीड़ होने से मकानों की किल्लत हो गई। तब गुरु जी ने भाई सावन मल को कुछ सिखों के आगू बना कर सकेत मंडी की तरफ भेजा। सावन मल को गुरु जी ने एक रुमाल दिया और कहा कि यह रुमाल तुम्हें किसी भारी बिपता समय काम देगा।

सकेत मण्डी में पहुंचने समय उस दिन इकादस का व्रत होने से राजा के सखत होने से सब लोगों ने व्रत रखा हुआ था परन्तु सिखों ने व्रत न रखा। इस बात की जब राजा को खबर हुई तो उसने सब सिखों को जेल में डाल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया। प्रन्तु अकाल पुरख का भाणा राजा के व्रत खुलने समय जब राजा के बेटे ने बहुत सा फलों का आहार खा लिया जिससे हैजा होकर मर गया। ज्योतिषियों से इस दुखित घटना का कारण पूछा। उन्हों ने कहा जो तूने गुरु के सिखों को बिना कारण जेल में डाल दिया है। वह ही इसका कारण है। तब राजा ने बड़े सत्कार सहित सिखों को जेल से निकाल कर महिलों में लाकर क्षमा मांगी। भूल बख्शवा कर अपना बेटा जिन्दा करने की बेनती की। तब भाई सावन मल ने गुरु जी का रुमाल मृत लड़के के नाक पर रखा, वह सतनाम का जाप करता हुआ उठ कर बैठ गया। इसके बदले राजा बहुत प्रसन्न होकर कहने लगा कि जो चाहो मांगो। सिखों ने कहा गोइंदवाल साहिब जी हमारे गुरु जी बड़ा भारी तीर्थ की रचना कर रहे है वहां बहुत सी सन्गतों का इकठ होने से मकानों की किलत है सो वहां बहुत सी लकड़ियाँ पहुंचा दो। तब उस राजा ने पहाड़ों से बे हिसाब लकड़ियां कटवा कर ब्यास दरया में बहा कर श्री गोइन्दवाल साहिब में पहुंचा दी और खुद भी गुरु जी के दर्शनों के लिए आया। बहुत सा धन भेंट करके गुरु का सिख बन गया।

इधर बाउली साहिब छः साल में मुकम्मल हुई। क्योंकि जब बाउली साहिब का पाड़ पान की बराबर गया तो नीचे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से एक बड़ा भारी † पत्थर आ गया जो बड़ी मुश्कल टूटा था। उसको तोड़ते चार साल लग गये। बाउली साहिब जी की गुरु जी ने चौरासी पौड़ियें बनवाई और वर्दान दिया कि जो कोई श्रद्धा भाव के साथ निम्नलिखित नियम अनुसार इश्नान करेगा उसकी चौरासी काटी जायेगी। वह जन्म मरन से रहित होकर मुक्ति पदार्थ माहि समा जायेगा।

युक्ति इस प्रकार है—

पहली पाउड़ी पर पहले बाउली साहिब के इश्नान करके श्री जपुजी साहिब का पाठ करो। फिर बाउली साहिब में इश्नान करो। इसी प्रकार चौरासी पाउड़ियों

---

†सिख इतहासों में न जाने किस तरह यह साखी प्रचल्लत हो गई है कि अकबर बादशाह ने चितौड़गढ़ के किले पर दस बारह बार धावा किया परन्तु विजय प्राप्त न हो सकी तब अकबर खुद चल कर गुरु जी के पास आया। किले पर विजय प्राप्त करने का वर माँगा तो गुरु जी ने कहा जब हमारी बाउली का कड़ टूटेगा उस दिन किला फतह होगा। सो ऐसा ही हुआ। यह बात यवनों ने किसी राज़सी चाल कारण विख्यात करदी प्रतीत होती है। वास्तव में चितौड़गढ़ का किला तो बाउली साहिब का कड़ टूटने से तीन वर्ष बाद में हुआ था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर चौरासीवार जपुजी साहिब का पाठ करो और चौरासी बार ही इशनान करो। बस उसकी चौरासी काटी जाएगी।

अकबर बादशाह की सियासत चाल

कहते है कि अकबर बादशाह बहुत सियासतदान था। वह भारत के सब प्रकार के फिरकों को खुश रखना चाहता था। उसके जीवन में ऐसी ऐसी बहुत बातें मिलती है। इसी नियम अधीन वह गुरु अमर दास जी के दरबार में आया था, और गुरु जी के लंगर में गरीब लोगों की पंगत में बैठ कर भोजन पाया प्रन्तु जब गुरु जी के दर्शन किये तो नूरी चेहरे का प्रभाव देखकर सच्ची श्रद्धा सहित गुरु के चरणों पर नमस्कार की। गुरुजी के लंगर के लिये जगीर देने के लिये गुरु जी के आगे निवेदन की प्रन्तु गुरु जी ने एक न मानी। गुरु जो ने अकबर को कहा कि इस प्रकार शाही जगीर से लंगर चलने से गुरु की सिख संगतों का सेवा करने का हक्क छिनता है। प्रन्तु वह भी बड़ा नीतिवान था। एक ढंग निकाल ही लिया कि गुरु जी की बेटी बीबी भानी के नाम पर जगीर लिख कर कहा, 'गुरु जी जैसे आपकी बेटी वैसे हमारी बेटी, मैंने तो अपनो बेटी को जगीर दी है गुरु जी अकबर की इस युक्ति को देखकर थोड़ा सा हंस कर मौन हो गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुर सिखी के परचार उद्यम

अब गुरु जी ने भारत के बहुत से भागों में सिखी प्रचार के लिए दौरा किया।

सबसे पहले गुरु जी कुरुक्षेत्र गये। आप का विचार बहुत करके तीर्थों पर जाने का था, क्यों कि वहां लोग पुरुषों पें इकठे होते रहते है जिस से उन का सहिजे ही प्रचार हो जाता हैं। दूसरा वहाँ पाखंडी लोग बहुत रहते हैं जो कि आते जाते यात्रुओं को कई प्रकार की पाखण्ड रचना करके लुटते रहते है...।

कई लोगों का विचार है कि गुरु साहिब तीर्थ यात्रा के विचार से गंगा जी तथा हरिद्वार आदि गये थे। यह उन का कहना व्यर्थ है क्यों कि गुरु जी का कथन है कि:—

तीर्थ उदम सतिगुरु किया ॥
सब लोक उधरन अरथा ॥
(राग तुखारी महला ३)

वास्तव में गुरु जी तीर्थों पर विश्वास नहीं रखते थे। जैसे कि गुरबानी में तीर्थों के सम्बन्ध में साफ लिखा है—

[बाकी १४५ सफे पर देखो]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन लोगों को सुधारने और आप लोगों को सत धर्म का प्रकाश करने के लिये तीरथों पर गये थे।

उन दिनों में यवनों का राज्य था। इस लिये हिन्दुओं पर कई प्रकार के कर लगा रखे थे तीर्थ पर जाने वालों से भो महसूल लिया जाता था कुरुक्षेत्र के समीप गुरु जी को जजियां वालों ने रोक लिया पर गुरु जो ने जजियां देने से इन्कार कर दिया और कहा कि धर्म पर जजीयाँ लगाना खुद पर जजीयां लगाने के बराबर है अन्त वह जजीये वाले गुरु जी के प्रताप के आगे झुक्क गये और उन्हों ने कहा 'जितने गुरु जो के साथ वाले है उन से जजीया नहीं लिया जायेगा। बस फिर क्या था किसी ने भी जजीया न दिया। जिस को पूछे वह ही कहे कि मैं तो गुरु जी के साथ हूं। इस प्रकार गुरु जी गंगा जमना,
(१४८ सफे दी बाकी)

तीर्थ नावन जाओ तीर्थ नाम हैं॥
तीर्थ शबदि विचार अन्तर ज्ञान है॥

गुरु जी की मति को अन्तर गति तीर्थ नहाने का उपदेश–

सुनिया मन्निया मन कीता भाओ॥
अन्तर गति तीर्थ मल नहाओ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरिद्वार आदि स्थानों पर सिखी का प्रचार करके और कई इलाकों में सिखी प्रचार के लिये मुखी सिखों की गदीयां उपस्थित कर आये। जिन के निम्नलिखित नाम हैं–

भाई लालो, भाई गंगू शाह, भाई माई दास, भाई केदारी, भाई अला यार, भाई महेसा, भाई राजा राम, भाई बुआ, भाई सावन मल्ल, भाई मानक चन्द, भाई हन्दाल, भाई मुरारी, भाई सज्जन मल्ल, खेड़ा आदि उपरन्त वापिस खडूर साहिब आ गये।

...एक बात याद रहे कि गुरु घर में एक ही गुरु होता था। जिनको सिखी का प्रचार करने के लिये मंजीए दे कर थाप आते थे, उनको भाई की पदवी दी जाती थी जो कि गुरु घर में सब से ऊंची पदवी मानी जाती थी। गुरु कहलाने का किसी को हक्क नहीं होता था, परन्तु इन में से कई माया के प्रभाव करके गुरु जी की आज्ञा का उलंघन करके गुरु बन बैठते थे। गुरु घर में उसको बेमुख्य कहा जाता था। गुरु सम्बन्धी सम्पूर्ण विचार हमने गुर ग्रंथ साहिब जी के प्रकाश पें इस पुस्तक के अन्त में लिख दो है। पाठक इसे पढ़कर इस का लाभ प्राप्त करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समाज का सुधार

अब गुरु जी ने भारत के बिगड़े हुए मानव समाज की ओर विशेष ध्यान दिया क्यों कि उन दिनों ब्राह्मण लोगों तथा और कई प्रकार के धार्मिक लोगों ने तथा पाखंडी साधुओ ने भारत के मानव समाज में कई प्रकार के भरम वहम तथा भुलेखे डाल रहे थे, जिन के उल्ट गुरु जी ने बड़े जोर से अवाज बुलंद की पहले गुरुओ (गुरु नानक देव, और गुरु अंगद देव) ने भी समाज से इस प्रकार के भरमों, वहमों को दूर किया था। अब गुरु अमर दास जी ने तो बड़ी सख्ती तथा जोर शोर से इन के विरुद्ध प्रचार शुरु किया, किन्तु जो सती होने के घृणत रवाज था कि जो स्त्री अपने मरे हुए पति के साथ सती ना होनी चाहे उसको जबरदस्ती रस्सी से बांध कर जलती चिखा में फैंक दिया जाता था। इस के लिये तो गुरु जी ने अकबर बादशाह को कहलवा कर शाही हुकम जारी करवा दिये ऐसे ही पड़दे तथा घुंघट के रवाज को भी बंद किया। कोई भी भाई बहन तथा स्त्री घुंघट निकाल कर दरबार नहीं आ सकती थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाई मोहराँ को माया से निर्लेपता का उपदेश

गुरु जी का यश हजारों कोसों में फैल गया। बड़े २ धनाढ लोग लाखों रुपए तक भेंट कर जाने लगे। माया का तो एक हजार से वर्षा होने लग पड़ी। इतनी बेगिणत माया आती देख कर गुरु जी के बड़े बेटे भाई मौहरी जी का कुछ मन माया के प्रभाव में आ गया। उन्हों ने गुरु जी को सुलझाओ दिया कि पिता जो ऐसे समय सदा तो रहते नहीं। इस लिए कुछ रुपया जमा कर रखना चाहिए ताँ कि कभी समय पर काम आ सके आपको जितना रुपया आता है, उतना ही खर्च कर देते है।

तब गुरु ज़ी ने कहा अच्छा बेटा गुरु घर में जितनी माया आवे उस को सभाल तुम ही करो।

एक दिन इतनी माया आ गई कि भाई मौहरी जी सुबह से शाम तक गिनते रहे तो भी खतम न हुई। मोहरी के हाथ काले स्याह हो गये।

तब गुरु जी ने मोहरी को बुलवा भेजा। जब भाई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोहरी जी गुरु जी के पास आये तो काले स्याह हाथ देख कर गुरु जी ने कहा, 'बेटा यह हाथ इतने काले कैसे हो गये ?

'पिता जी रुपये गिणता रहा हूं। इस से काले हो गये है मोहरी ने कहा।

गुरु ने कहा, बेटा जिस माया से हाथ काले हो जाते है उस से मन कैसे काला नहीं होगा।

बस ! भाई मोहरी जी गुरु जी की रमज समझ गये और उस दिन से माया से निर्लेप रह कर गुजारने लगे।

हिन्दुओं की विरोधता

जब गुरु जी ने गलत रसमों रिवाजों के उलट लोगों में प्रचार किया तो बहुत से ब्राहमणों ने दिल्ली दरबार में अकबर के यहाँ गुरु जी के खिलाफ दाहवा कर दिया कि गुरु जी हमारे धर्म की विरोधता करते है। अकबर बादशाह ने गुरु जी को इसका जवाब देने को बुलवा भेजा। तो गुरु जी आप तो न गये, भाई जेठा जी को भेजा (जो बाद में गुरु रामदास कहलाये)उन्हो ने अकबर को ऐस तरीके से समझाया कि बादशाह की तसल्ली हो गई कि गुरु जी धर्म

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की विरोधता नहीं करते बलकि पाखंड तथा गलत रसमों रिवाजों की विरोधता करते है।

तईए ताप और काल को रोकने की कथा

श्री गोइंदवाल साहिब में एक बुड़ी माई का एक ही बेटा जो तेइए ताप से मर गया। उस समय आधी रात थी। उस माई को हृदय वेदक चीखें गुरु जी के कानों में पड़ी तो उन्होंने एक सिख को पता करने के लिये भेजा उस सिख ने पता करके कहा कि हे सतगुरु जा इस माई का एक ही बेटा था जो तेइये ताप से मर गया हैं। वे बेचारी मृतक पुत्र के पास बैठ कर रो रही है।

तब गुरु जी ने ने बूढ़ी के घर जा कर उस के लड़के को जिन्दा कर दिया और साथ ही उस समय सुभावक वचन कर दिया कि जब तक हम इस नगरी में रहेंगे किसी भी माँ का बेटा उसके सामने नहीं मरेगा। सो ऐसा ही हुआ। उस के बाद गुरु जी चार वर्ष तक श्री गोइदवाल साहिब में रहे तब तक किसी भी मां के साहमने उसका पुत्र नहीं मरा, बलकि इतहास में यहां तक लिखा हैं कि चार वर्ष तक श्री गोइंदवाल में काल आया ही नहीं। चार वर्ष तक किसी की मौत नहीं हुई। उस दिन से यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बात प्रसिद्ध हो गई कि गुरु अमर दास जी ने चार वर्ष काल भगवान को नगरी से नहीं आने दिया था।

दूसरा गुरु जी ने तईए ताप को पकड़ कर एक बालक का रूप बना कर पिंजरे में बन्द करके डयोड़ो के दरवाजे में लटका दिया हुआ था।

एक बार भाई लालो जी गुरु दर्शन को आये (जो कि गुरु के बहुत प्रेमी और मुखी सिख थे) उन्हों ने गुरु जी से निवेदन की कि यह बालक इन्हें दे दिया जाये। गुरु जी ने कहा भाई लालो यह बालक नहीं, यह तो बहुत बुरी आफत है। परन्तु भाई लालो फिर भी नो समझा और बालक मांगने की जिद की।

तब गुरु जी ने बालक दे दिया। भाई लालो बड़े प्यार से उस बालक (जो कि वास्तव में तईया ताप था) को अपने गाम को ले चले। अब ग्राम के समीप आए तो बालक ने कहा कि मुझे भूख लगी है, आप मुझे थोड़ी देर के लिये छोड़ दे तो मैं अपना पेट भर लूँ।

भाई लालो ने कहा बेटा यहाँ पर कहां भोजन है। घर चल कर तुम को स्वादिष्ट से स्वादिष्ट भोज़न खिलायेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परन्तु बालक ने जिद करते हुए कहा कि मेरा भोजन तो यहां ही है।

तब भाई लालो ने उसे छोड़ दिया और आप देखने लगे कि वह कहां से भोजन करता है।

वहा एक विचारा धोबो कपड़े धो रहा था। वह बालक उसके शरीर में प्रवेश कर गया। प्रवेश होते ही वह धोबी बड़े जोर से ताप के मारे निढाल हो कर कांपने लगा दस मिट में उस का सब खून निचोड़ लिया जितना पेट भर के पीया जा सकता था। बाकी एक प्याला भर कर भाई लालो के पास ले आया।

यह कौतक देख कर भाई लालो ने कहा, अरे! तूं तो ठीक ही बहुत बड़ी आफत है। गुरु जी ने ठीक ही कहा था। पर मैं न समझ सका चल तेरे को वहां ही छोड़ आऊं।

तब वह बहुत मिन्नतें करने लगा कि मुझे वहां न छोड़ो और जो तुम चाहो मुझ से ले लो।

भाई जो करुणा रस के पुरुष थे। इस लिये कहा कि बताओ क्या प्रण कहते हो तब तेईए ताप ने कहा कि जिस को मैं चढ़ जाऊंगा उसको जो कोई यह सारी साखी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुनावेगा, मैं उस को उसी समय छोड़ दूंगा। सो यह बचन लेकर भाई ने उस को छोड़ दिया।

उस दिन से साखी भाई लालो जी की साखी से प्रसिद्ध है और जिसको भी तेईया ताप होता हो उस को यह भाई लालो की साखी सुना दी जाती है तो ताप उसी दिन उतर जाता हैं।

दो तेईए चढ़ने से तीसरी बार चढ़ने से पहले सुच्चे मूंह सवेर के समय सुनानी चाहिये।

गुरु जी का जोति जोत समाना

श्री गुरु अमर दास जी महाराज जगत का कल्याण और समाज का सुधार करते हुए तथा गुरु नानक की सिखी का प्रचार करते हुए एक सों पांच वर्ष की आयु भोग कर अपने दामाद भाई जेठा जी को गुरु गदी देकर उन्हों को गुरु राम दास बनाकर आप भाद्रव शुदि १५ संमत बिक्रमी १६३१ को:—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिओं जल मैं जल आइ खटाना ॥
तिओं जोत संग जोत समाना ॥

गुरबानी के इस वाक अनुसार पंच भौतक शरीर को त्याग कर स्वैरूप में लीन हो गये।

बोल श्री गुरू अमर दास जी महाराज की जय ॥

***

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृतांत
श्री गुरु रामदास जी
महाराज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंसावली गुरु राम दास जी महाराज

जन्म स्थान	लाहौर [पाकिस्तान]
जन्म तिथि	कार्तिक वदि २ बिक्रमी १५९१
पिता	भाई हरिदास जी
माता	दया कौर जी
विवाह	बिक्रमी संमत १६१२
महल	माता भानी जी
सन्तान	बाबा श्री चन्द जी
	बाबा महांदेव जी
	गुरु अरजन देव जी
गुर गद्दी	भाद्रव सुदि १३ बिक्रमी १६३१
जोति जोत स्थान	श्री गोइंदवाल साहिब
जोति जोत तिथि	भाद्र शुदि ३ बिक्रमी १६३८
आयु	८४ वर्ष १० मास १३ दिन
राज्य	शहनशाह अकबर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन श्री गुरु राम दास जी

धन्न धन्न राम दास गुरु जिन सिमरिया तिनै सवारिया ॥

सिख धर्म के चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी महाराज थे जिनका जन्म लाहौर में पिता हरिदास माता दया कौर के घर कातिक शुदि २, १५९१ बिक्रमी २४ सितम्बर को हुआ था। आप के माता पिता बहुत निर्धन थे वह अपने इकलौते बेटे को पाल तो रहे थे, पर वैसे नहीं जैसे अमीरों के बच्चे पाले जाते है।

कहते है कि मनुष्य पर जब मुसीबत आती हैं तो एक बार ही आ जाती है। चारों ओर से एक समय ही हमला कर देती हैं यही बात श्री गुरु राम दास जी के साथ हुई आप जब सात साल के ही थे कि माता पिता का साया सिर से उठ गया। तब आपका कोई आसरा न रहा। आप का नाम माता पिता ने जेठा रखा हुआ था। अब जेठा जी अपने नानके घर बासरके आ गये, परन्तु यहां पर उलटा ननहाल से सहारा लेने की बजाय उनको सहारा देना पड़ा, क्योंकि वह भी बहुत गरीब थे। अब जेठा जी नूं घुंगनियां (उबले हुए नमक, वालों चनों को पंजाब में घुंगनियाँ कहते है) लेकर नजदीक के ग्रामों में बेचकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपना और अपने ननहाल वालों का जीवन निर्बाह करते रहे।

भाई जेठा जी की किस्मत जाग उठी

पूर्व कर्म अंकुर जब प्रगटे ॥
तब भेटियो पुरख रसक बैरागी ॥

भाई जेठा जी ने गुरु अमर दास जी की महिमा सुनी तो हृदय में दर्शन करने की अभिलाषा हुई। वह घुंगनियों की छाबड़ी लेकर घुंगनियां बेचते और वही पर रहते थे। दूसरे तीसरे दिन घर वापस जाते और कुछ पास पैसा टका होता और घर दे आते थे।

एक दिन गुरु अमर दास जी के महल माता राम कौर ने अपने पती को कहा कि हमारी पुत्री बीबी मानी तो वर योग्य हो गई है इस के लिये कोई वर ढूंढना चाहिये।

गुरु जी ने कहा कि बाबा वुढा ज़ैसे बजुरगों के होते हुए हमें क्या चिन्ता है ? बाबा जी पास ही बैठे हुए थे, उन्हों ने कहा, जैसा आप हुकम करो, मैं देखता हूं, परन्तु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आप बता दीजिए कि वर कितना बड़ा, किस प्रकार का होना चाहिये ऐन उसी समय भाई जेठा घुँगनियाँ बेचता हुआ वहा से आ निकला, जो बहुत ही सुन्दर अठारह वर्ष का चान्द की तरह चमकता हुआ चेहरा माता कौर के मन को बहुत भाया उनको देखते ही माता जी ने भाई जेठे की ओर हाथ करके सुभावक ही मुंह से यह शब्द निकाल दिया कि इस लड़के जैसा और इतनी ही आयु का होना चाहिये ।

बस, यह बात सुनते ही गुरु अमर दास जी ने कहा कि ऐसा और इतनी आयु का लड़का तो यही हो सकता है । इस लिये लड़का तो मिल गया अब विवाह का प्रबंध करो ।

बस, किस में ताकत थी इनकार करने की । गुरु मर्यादा अनुसार बीबी भानी जी का विवाह २२ फाल्गुन १६१२ को भाई जेठा जी के साथ कर दिया गया ।

भाई जेठा जी सेवा में पूरे निकले

भाई जेठा जी जगत गुरु अमर दास जी के दामाद बन कर भी उसी प्रकार मन के गरीब तथा निर्भिमान रहे । घुंगनियों का काम त्याग कर गुरु जी की सेवा में जुट गये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बीबी भानी जी भी बड़े प्रेम से दिन रात सेवा करने लगे। भाई जेठा जी अपने ननहाल वालों को भी यहां ही गुरु दरबार में ले आये। भाई जेठा जी और बीबी जी ने जितनी भी सेवा कर सकते थे बिना किसी प्रकार के सकोच के की। भाई जेठा जी तो सुबह से सायं तक गारे और ईटों की टोकरियां उठाते रहते थे।

एक बार लाहौर के कुछ आदमी जो कि जेठा जी के निकट वर्ती थे। उधर आ निकले। जेठा जी को सीस पर टोकरियां उठाते देख कर बहुत बुरा मनाया और गुरु जी को कहा कि यह बात ठीक नहीं जो हमारे सोढी कुल के खत्री ससुराल में रह कर मजदूरों की प्रकार टोकरी उठाये।

तब गुरु जी ने भाई जेठा जी को बुला कर कहा कि बेटा तू यह सेवा को छोड़ दे, क्योंकि तेरे यह बरादरी के सोढी भाई नाराज होते हैं।

यह बात सुन कर भाई जेठा जी की आंखों में आंसू टपक पड़े और रो रो कर कहने लगे, हे मेरे सतगुरु जी यह सेवा तो मेरा जीवन है। गुरु की सेवा के बिन तो मैं जिंदा नहीं रह सकता। यह संसारी लोग सेवा के रस को क्या जान सकते हैं। यह सेवा छुड़ा कर कहीं मुझको

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संसार भर का राज्य भी दे तो भी मैं स्वीकार नहीं करूंगा।

भाई जेठा जी की यह बात सुन कर वह सोढी बहुत परेशान हो कर चले गये और भाई जेठा जी उसी प्रकार सेवा में जुटे रहे।

सेवक को सेवा बन आई ॥
हुकम बूझ परम गति पाई ॥

गुरु जी की दूसरी बेटी बीबी अमरो का विवाह भाई रामे जी के साथ हुआ था। वह दोनों भी बहुत मन लगा कर सेवा करते थे। परन्तु भाई जेठा जी और बीबी भानी जी की सेवा बहुत ऊंचे दरजे की थी। वह प्रेम, सेवा और भक्ति की अन्तिम सीमा पर पहुंच गये थे। इस लिए उन्हों की सेवा गुरु जी के मन को बहुत अच्छी लगती थी।

एक समय गुरु जी ने अपने दोनों दामादों की परीक्षा करनी चाही। भाई जेठा जी और भाई रामे जी दोनों को एक २ थड़ा बनाने को कहा। जब दोनों के थड़े बन गये तो गुरु जी ने कहा ठीक नहीं बने, गिरा दो। उन्हों ने थड़े गिरा दिये। इसी प्रकार कई बार बनवाये और कई बार गिराए। अन्त में भाई रामा जी तो छोड़ कर चले गये। जाते समय यह कह गये कि हम तो ठीक नहीं बना सकते, जो बना सकता है उस से बनवा लीजिये। परन्तु भाई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जेठा जी बराबर हुकम मानते रहे। हर बार गुरु जी के थड़ा गिरवांने पर निमरता सहित हाथ जोड़ कर कहते कि गुरुजी हम सदा भूलनहार, आप बख्शनहार हो लो गिराकर फिर बना देता हूं। इस प्रकार भाई जेठा जी सेवा करने और आज्ञा का पालन करने में पूरे उतरे।

बीबी भानी जी का वरदान माँगना

एक बार सवेरे अमृत समय गुरु जी इश्नान कर रहे थे। जिस चौकी पर बैठकर गुरु जी इश्नान करते थे उसका एक पावा टूट गया। बीबी जी ने पाये के नोचे अपना हाथ रख कर चौकी को उल्टने से बचा लिया ताकि गुरु जी के वृद्ध शरीर को चोट न लगा पाये। उस चौकी के उखड़े हुए कील बीबी जी के हाथ में घुस कर दूसरी ओर निकल आये। रक्त की धारा छूट पड़ी तब गुरु जी ने यह कौतक और सिदक देख कर कहा कि बेटी वरदान मंगोहम तेरे सिदक पर बहुत प्रसन्न हुए। बीबी भानी ज़ी ने कहा कि गुरु गदी घर में रहे।

तब गुरु जी ने थोड़ा सा संकोच कर के कहा गुरु गदी तब गुरु जी ने कहा चलो बेटी ऐसा ही होगा। परन्तु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह गद्दी† रक्त से प्राप्त है, इस लिए रक्त बहुत बहाना पड़ेगा ।

भाई जेठा जी के होते हुए गुरु अमर दास जी २० वर्ष जीवत रहे । इसी मन्दिर के अन्दर भाई जेठा जी के घर तीन बेटे पैदा हुए । बाबा पृथ्वी चन्द बाबा महां देव और गुरु अरजन देव जी ।

श्री अमृतसर जी की कथा

अमृतसर सिफती दा घर ॥

श्री अमृतसर जी की कथा तो बहुत ही अश्चर्य प्रकार की सुनाई जाती है । इस प्रकार विद्वानों से सुनी जाती रही है कि गुरबानी के महान वाक अनुसार कि—

वैर विरोध धुरों ही किया ॥

भाव-वैर, विरोध, ईर्षा आदि शुरु से ही चले आये हैं । इसी प्रकार भाई जेठा जी की महिमा तथा गुरु जी का

---

†गुरु जी का यह वरदान और रक्त बहाने का वचन भी सत्य ही हुआ । श्री गुरु अरजन देव जी और गुरु तेग बहादर जी । इनके उपरान्त गुरु गोबिन्द सिंह जी और उनके चारों बेटे, माता जी और लाखों सिखोंने अपना रक्त बहाया ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सतकार बढ़ता हुआ देखकर नजदीक के लोग इर्षा करने लगे। गुरु जी के बेटे भाई मौहरी भी अनुभव करने लगे कि कहीं पिता जी भाई जेठा जी को गुरु गदी न दे दें। इस बात को गुरु जी भी समझ गये। उन्हों ने भाई जेठा जी को जहां बीबी भानी जी को अकबर बादशाह जगीर दे गया था वहाँ एक नया नगर बसाने के लिये भेज दिया। भाई जेठा जी गुरु की आज्ञा से यहा पहुंच गये। यहां पर आज कल श्री अमृतसर है।

इस इलाके में सूचनाएं पहुंच गई कि गुरु साहिब एक नया नगर बसाने लगे है तो कई प्रकार के लोग यहां पर रहने की इच्छा से आ गये। पहले संतोख सर तलाब खुदवाने लगे और नगर का नकशा खींच कर बाजार बनने आरम्भ हो गये। भाई जेठा जी के साथ बाबा बुढा जी आदि मुख्य सिख थे।

इस नगर का सब से पहला नाम गुरु का चक्क पड़ गया और यह सात आठ मशहूर ग्रामों के भीतर में था, जैसे कि सुलतान विंढ, गुमटाला, तुंग, गलवाली आदि।

इसी प्रकार नगर में रौनक बढ़ती गई और नाम गुरु रामदास पुरा पड़ गया। गुरबाणी में भी राम दास नाम आता है। बाद में सरोवर और सरोवर के भीतर सोने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का हरि मन्दिर बन गया तो इसका नाम श्री यमृतसर पढ़ गया।

भाई जेठा जी ने अमृतसर की महानता बढ़ाने के लिये दूर दूर से कई प्रकार के कारीगर तथा व्यापारी लोगों को ला ला कर बसा दिया। गुरु जी इस नगर की एक आदर्शक तथा व्यापार का केन्दरी शहर बनाना चाहते थे बड़े २ मुख्य और समझदार सिख (भाई सा'हली, भाई भान चन्द को लाहौर, कसूर, स्यालकोट आदि शहरों के भेज कर बड़े २ कारीगर मंगवा कर उनको शहर में बसाने की सुविधायें दी।

बस फिर क्या था एक और नाम सिमर्ण का अतुट प्रवाह चलाया, दूसरी ओर कई प्रकारकी दस्तकारीयां तथा व्यापार की उन्नती की ओर ध्यान दिया। समझो कि गुरु राम दास जी महाराज की कृपा से शहर रुहानियत तथा आर्थिक रूप से समुचे भारत का केन्द्र बन गया।

श्री अमृतसर जी प्रारम्भिक पत्थर १६६३ बिक्रमी को रखा गया था।

गुरु गदी की प्राप्ति

गुरु अमर दास जी महाराज ने भाई जेठा जी को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हर प्रकार से गुरु गदी के योग समझ कर सब संगतों के साहमने पांच पैसे और नारियल आदि सामग्री भेट करके १६३१ बि: भाद्रव शुदि १३ को गुरु गदी पर बिठा दिया और आप १६३१ भाद्रव शुदि १५ को जोति जोत समा गये ।

सिक्खी का प्रचार

भाई जेठा जी को गुरु अमर दास जी ने अब गुरु राम दास नाम रख कर जगत गुरु बना दिया । गुरु राम दास जी ने गुरु बनने पर सब से पहिला काम यह किया जो पहले गुरुओं ने सिखी प्रचार के लिये कोई माया जमां नहीं की थी परन्तु अब जब कि श्री अमृतसर जैसा महान नगर और हरि मन्दिर साहिब की उसारी का महान काम सामने था । इस लिये भोजन के लिये मसंद† मुकरर किये, जो एक तो सिख धर्म का प्रचार करे दूसरी सिखों से कार भेंट लेकर इकत्र करके अमृतसर भेजे ।

---

†यह मसंद लोग पहले तो बड़े विश्वास पात्र थे, बाद में गुरु गोबिन्द सिह जी के समय तक माया मोह में फस कर कई प्रकार के उपद्रव करने लगे थे जिस पर दसम गुरु जी ने इनको सख्त सजा दी—यह उस दसम भाग में पढ़ो ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इनको गुरु जी ने हुकम नामे देकर बाहर दूर २ प्रांतों में कार भेट और सिखी प्रचार के लिये भेज दिया। यह मसंद जितनी भी कार भेट लाते सब की संभाल बाबा पृथी चन्द जी के पास होती थी खजाने और ठुकार सारा लेन देन भी गुरु जी के इसी बड़े साहिबजादे के हाथ में था।

अमृतसर सरोवर की कथा

जैसा पहले भी कहा गया है कि गुरु राम दास जी ने १६२६ बिक्रमी को इस महान पवित्र नगर का आरम्भ किया था। पहले संतोखसर सरोवर बनाया उस समय इस नगर का नाम गुरु का चक्क पड़ा। १६३१ बि: को गुरु गदी मिलने पर गुरु जी पक्को तरह यहाँ आ गये, बड़े जोर शोर और यत्नों से शहर की उन्नती करनी शुरु की। उन दिनों में एक बे मिसाल आश्चर्य कौतक हुआ जो इस प्रकार था—

पटी नगर में एक बहुत धनि पति दुनी चन्द नाम का क्षत्री रहता था। उसकी सात बेटीयां थी। एक दिन उसने क्रमवार अपनी पुत्रीयों से पूछा कि तुम सब किस का दिया खाती हो। उन में से छे ने कहा कि पिता जी आप का दिया परन्तु सब से छोटी बेटी रजनी ने कहा, मैं तो ईश्वर का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया खाती हूं, और आप भी तो उसी का दिया खाते है। पिता जी मैं और आप ही नहीं बल्कि सारा संसार ही भगवान का दिया खाता है।

यह बात चाहे सौ प्रतिशत सत्य थी, परन्तु इसका असर दुनी चन्द के मन पर उलटा ही हुआ। वह प्रशंसा का भूखा था। उसने अपनी उस बेटी का विवाह एक पिंगले के साथ कर दिया और कहा लो बेटी मैं अब देखूंगा कि तुझे भगवान कैसे खाने को देता है।

भगवान के रंग नियारे है। कोई नहीं बता सकता कि कब, किस के साथ क्या होने वाला है। गुरु जी महाराज का फुरमान है—

हरण भरन ज़ाका नेत्र फोर ॥
तिस का मंत्र न जाने होर ॥

रजनी देवी पतिव्रता धर्म में पूरी थी, इसलिये उसने अपने पिंगले पति को एक टोकरे में कपड़ा बिछाकर और उसमें बिठा कर सिर पर उठा लिया और ग्राम २ में घूमना शुरु कर दिया। जिस ग्राम में जाती, पिंगले को बाहर ही वृक्ष के नीचे रख कर आप ग्राम में कुछ रोटी टुकड़ा माग लाती। पहले अपने पति को खिलाती और फिर आप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खाती थी। इतफाक से एक दिन चलती चलती गुरु के चक्क आ गई। एक ओर एक छोटा सा टोबा था। उसके तट पर कुछ बेरियों के वृक्ष थे। उनकी छाया में अपने पति का टोकरा रखकर आप समीप के ग्राम में भिक्षा मांगने के लिए चली गई।

इधर उस पिंगले ने देखा कि उस टोबे में कौए नहाते है, और सफेद हो जाते है। उस आश्चर्य लीला को देख कर पिगले के मन में आई कि मैं इस में इशनान करके देखूं। यह तो कोई शक्तिशाली जगह प्रतीत होती हैं यह काले रंग के कौए सफेद होते जा रहे है। क्या मैं भी इसमें इशनान करके पिंगले पन से रहत हो जाऊंगा ? सो उस ने ऐसा ही बिचार और इधर उधर सरक कर टोकरा उल्टा दिया और पेट के बल रींक कर उस टोबे में जा घुसा।

बस फिर क्या था इशनान करते ही उसका शरीर ठीक हो गया और वह अपने सुन्दर शरीर को देख देख कर खुश हो रहा और था। वह बड़ी चाह से अपनी धर्म पत्नी की प्रतीक्षा करने लगा।

जब रजनी मदूकड़ी लेकर आई तो अपने पति का टोकरा खाली देखा और उसके पास एक बहुत ही सुन्दर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नौजवान को बैठा देखा। उसको देखते ही रजनी के मन पैं संसा हो गया कि इस आदमी ने मेरे पिंगले पति को मार डाला है और मुझको फंसाने के लिये बैठा हुआ है।

'तू कौन है और मेरा पिंगला पति कहाँ है?' देवी ने बड़े करोध से कहा।

हे देवी! हे सतवंती। हे मेरी जान से अधिक प्यारी धर्म पत्नी जी मैं ही तेरा पति हूं'। उस सुन्दर नौजवान ने बड़ी मीठी जबान से रजनी से कहा और टौबे में स्नान करने और पिंगले से उसका रूप पलटने का वृतांत सुना दिया परन्तु रजनी को विश्वास न आया तो यह मामला गुरु रामदास जी के पास पहुंच गया। अन्तर्यामी गुरु जी ने कहा कि हे देवी यह तेरा पति ही है†।

इस सारी बात की चर्चा सब इलाके में फैल गई। रजनी के पिता दुनीचंद को सारी बात का पता चल गया तो वह बहुत शर्मसार हुआ ओर बेटी रजनीको दामाद सहित घर चलने को कहा, परन्तु रजनी ने उत्तर दिया कि पिता

---

†इतहासों में पिंगला और कुषटी भी लिखा हुआ है जो ठीक ही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी मेरा घर तो अब गुरु रामदास जी का दर हो गया है। मैं इस नष्ट होने वाले संसार और झूठे घर नहीं जाऊंगी। इस प्रकार बेटी के शब्द सुनकर वह दुनी चन्द भी गुरु का सिख बन गया।

श्री गुरु रामदास जी चाहे सब कुछ जानते थे पर फिर भी इस जाहरी कौतक द्वारा सब लोगों को इस जगह को महानता दर्श कर यहां पर एक महान तीर्थ और सरोवर की रचना करना चाहते थे।

जिस प्रकार इस टौबे में इश्नान करके एक कुष्टी सुन्दर सरूप नौजवान हो गया था। इसी तरह गुरु रामदास जी ने इस टौबे को अमृत सरोवर में बदल दिया और जो उसके तट पर बेरी थी जिसके नीचे रजनी अपने पिंगले पति को रख कर गई थी उसका नाम दुख भंजनी बेरी रख दिया जो के अमृत सरोवर के तट पर अब दर्शन दे रही है।

गुरु जी का लाहौर जाना

एक दिन गुरु जी की बरादरी के सोढी लाहौर से चल कर आये गुरु जी के चर्णों में विनय की कि महाराज आप जी ने हमारी सोढी वंश का नाम सारे जगत में रौशन कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया है। सो आप अपने जन्म स्थान लाहौर चलो और वहा कोई अपनी यादगार बनाओ। आप की यादगार (चने मंडी में) कायम है। गुरु उनकी प्रार्थना मानकर लाहौर गये और वहां एक बहुत बड़ी धर्मशाला बनवाकर वापस आ गये।

श्री गुरु रामदास जी के नित्य कर्म

श्री गुरु रामदास जी ने पहले गुरुओं को तरह ही लंगर का बहुत बढ़िया प्रबन्ध चलाया था। किसी भी जाति का पुरुष बिना किसी संकोच के लंगर से प्रसाद छक्क सकता था। इसके इलावा लंगर चौबोस घंटे चलते रहने का आदेश और लंगर की सच्चो पवित्रता का खास ध्यान रखते थे।

दूसरा गुरु जी ने इलाके में ढंढोरा दे रखा था कि कोई भी दुखी पुरुष गुरु के दरबार में अपना दुख बता सकता है। गुरु नानक देव जी की कृपा से उसका दुख दूर किया जायेगा और ऐसा ही होता था। जो किसी का रुपये के बगैर कोई काम अटक जाता तो रुपये दे कर कारोबार चलवाये जाते। पहले गुरुओं की तरह गुरु जी की महिमा सारे जगत में बढ़ गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाहौर के गुरु सरापियों का तारना

इतहास में लिखा है कि एक बार गुरु नानक देव जी महाराज लाहौर गये तो वहां कुछ हिन्दुओं ने शराब के नशे में गुरु जा का त्रिसकार किया तो गुरु जी के मुख से सुभाविक शब्द निकल गया कि ओ कुष्टियो गुरु मारियो ।

बस गुरु के शब्द से उनको कष्ट उठ पड़ा, जो उन्हों ने गुरु अंगद देव जी और गुरु अमरदास जो से बख्शवाने का यत्न करते रहे । आखिर गुरु रामदास जो के चर्णों में उन के बेटे आये बहुत विनय करो तो गुरु जी ने उनको बख्श दिया । जो पहले सरूप में सराप दिये थे वह निवारन कर दिये ।

गुरबानी में जो इस प्रकार लिखा है—
गुरि बाबे फिटके से फिटे गुर कंगद कीते कूड़ियारे ।।
गुरि तीजो पौड़ी वीचारिया किआ हथ एनाँ विचारे ।।
गुर चौथी पीड़ी टिकिया तिन निंदक दुसटि सभितारे ।।

गुरु रामदास जी के मुखी सिख

कहते हैं कि गुरुओं और महान पुरुषों में यह एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विशेष बात होती हैं कि अपनी छोह से लोहे से लाल, पशु से मानुष्य और राक्षस से देवता बना देते है। गुरु अरजन देव जी का वाक्य हैं कि :–

साधु के संग नहीं कछु घाल ॥
दरस भेटत होत निहाल ॥

एक महा पुरुष ने कितना सुन्दर लिखा है कि :—

पारस और सन्त में बड़ो अन्तरो जान ॥
वोह लोहियों कंचन करे वोह करे आप समान ॥

सो सिख गुरुओं में यह विशेष बात थी कि उन्हों ने बहुत से सिख गुरु का रूप ही बन गये थे, जिन्हों में से पहले गुरुओं के सिखों का वर्णन तो हो चुका है।

अब गुरु रामदास जी के जो मुखी सिख थे, उनके नाम वर्णन किये जाते है—

भाई गुरदास, भाई सोमन शाह, भाई भिखारी, भाई हिंदाल, भाई तारु, भाई बारू, भाई आदम, भाई गुरमुख इत्यादि।

पूर्ण गुरसिखों के कर्तव्य के

श्री गुरु रामदास जी महाराज ने अपनी गुरबानी में पूर्ण गुरसिख के इस प्रकार कथन किये है:–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुर सतिगुर का जो सिक्ख अखावै ।।
सो भलके उठि हरि नामु धयावै ।।
उदम कर भलके परभाती इस्नान करै अमृतसर नावै ।।
उपदेस गुरु हरि हरि जपु जापै ।।
समि किल बिख पाप दोख लहि जावै ।।
फिर चढ़ै दिवसु गुरबानी गावै ।।
बहिदिया उठदिया हरि नामु धियावै ।।
जो सासि गिरासि धियाए मेरा हरि हरि,
सो गुर सिक्ख गुरु मन भावै ।।
जिसनो दयालु होवै मेरा सुआमी
तिस गुरसिक्ख उपदेसु सुणावै ।।
जन नानक धूड़ मंगै तिसु गुरसिखि की,
जो आप जपै अवरहु नामु जपावै ।।

[महला ४ गउड़ी राग)

श्री गुरु राम दास जी की उच्चारण की हुई बाणियां तो बहुत हैं, परन्तु गउड़ी वार तो एक कमाल को बाणी है जिसमें हर ओर रौशनी डाली गई है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु रामदास जी की महिमा

श्री गुरु राम दास जी की महिमा शब्द, कलम तथा जबान से करनी तो असम्भव है। जिस किसी पुरुष ने गुरु जी की महान तथा आश्चर्य महमा को अनुभव करना हो वह श्री अमृतसर पहुंच कर अमृत सरोवर के भीतर जो सुनैहरी [गोलडन टैम्पल] हरि मन्दिर साहिब के दर्शन कर ले और वह दर्शन करते ही ऐसा अनुभव करेगा, जिसे कि उसने ईश्वर के बैकुण्ठ के दर्शन कर लिये है जो इस से भी ऊपर जाना चाहे तो वह हरि मन्दिर के भीतर बैठकर थोड़े समय के लिए गुरबानी का कीर्तन सर्वण करे, तो उस को ऐसे प्रतीत होगा जैसे वह सहज योग के राज सिंहासन पर ब्रम्हा नन्द बिराजमान रसमान रहा हो।

राज लीना तेरे नाम बनाई ॥
योग बनिया तेरा कीर्तन गाई ॥

महां पुरुषों का कहना है कि यह अमृत सरोवर में जो हरिमन्दिर है, वह तो भव सागर से पार उतारा करक श्री सच्च खंड में पहुंचाने वाला जहाज तैर रहा है।

जो श्री अकाल तख्त के साहमने दो निशान साहिब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

झूल रहे है, वह सतिगुरु रामदास जी की दो भुजाएं जो कि सारे संसार को पुकार२ कर कह रही है कि आओ आओ किसी ने भव सागर से पार होना है।

इसी लिए पंजाब की जनता मिलकर बड़े प्रेम से यह कहती है कि—

साडे गुरां ने जहाज बनाया,
आओ किसे पार लंघना ॥

बोलो गुरु रामदास जी महाराज की जय ॥

श्री गुरु रामदास जी का जोति जोत समाना तथ परलोक सिधारना

श्री गुरु राम दास जी महाराज संसार को तारने के लिये एक बेमिसाल जहाज त्यार कर गए। जिसका वृतांत श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन में आये। इस हरिमन्दिर की नींव श्री गुरु रामदास जी ने रखी तथा श्री गुरु अरजन देव जी ने इसको सम्पूर्ण किया। इस पर श्री गुरु अर्जुन देव जी ने यह वाक्य भी कहा है कि :—

राम दास सरोवर नहाते ॥
सभ उतरे पाप कमाते ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार गुरु राम दास जी ने देखा कि उनका जोति जोत समाने का समय निकट आ गया तो आपने पहले सबसे बड़े पृथ्वी चन्द को जो कि गुरु गदी के योग्य न था बुलाया तथा कहा बेटा तुम यह जिम्मेदारी नहीं सम्भाल सकते। दूसरा बेटा महां देव तो सन्त सुभाव था, इसलिए वह भी गुरु गदी के योग्य न था। और कोई सेवक भी वह काम नहीं सम्भाल सकता था, क्योंकि बीबी भानी जी ने यह वरदान गुरु अमर दास जी से मांग लिया था।

जान न देसा सोढीओ होरत अजर न जरिया जाई ॥

इसलिये गुरु राम दास जी ने हर प्रकार से अपने छोटे बेटे अरजन देव जी को ही उचित समझा, क्योंकि वह हर परीक्षा में पास हुए ते जिसका वृतांत गुरु अरजन देव जीके जीवन चरित्र में किया जायेगा।

श्री गुरु राम दास जी महाराज ने सब संगतों के साहमने दीवान में पहले गुरुओं की मर्यादा अनुसार श्री गुरु अरजन देव जी को भाद्रव शुदि २, बिक्रमी १६३८ को गुरु गदी देकर आप जोति जोति समा गए तथा प्रलोक सिधार गए।

बोलो श्री रामदास जी महाराज की जय ॥
धन्य गुरु राम दास ! धन्य गुरु राम दास !!

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृतांत

श्री गुरु अर्जन देव जी महाराज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंसावली श्री गुरु अरजन देव जी

जन्म स्थान	श्री गोइंदवाल साहिब जी
जन्म तिथि	वैशाख वदि १७ बिक्रमी १६२०
पिता	गुरु राम दास जी
माता	भानी जो
विवाह	१६३२ बिक्रमी
महल	माता गंगा जी
सन्तान	गुरु हर गोबिंद साहिब जी
गुरु गदी	भाद्रव शुदि २ बिक्रमी १६३८
जोति जोत स्थान	डेरा साहिब लाहौर (पाकिस्तान)
जोति जोत तिथि	ज्येष्ठ शुदि ४ बिक्रमी १६६३
आयु	४३ वर्ष १ मास १२ दिन
राज्य	जहांगीर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृतांँत गुरु अरजन देव जी

गुरु अरजन सिर छत्र आप परमेसर दीओ ॥

इस संसार में बड़े २ योधा तथा सूरबीर हुए और होते रहेंगे। जिनकी तलवार तथा मनुष्य की धाक सारे संसार में प्रसिद्ध होती रही परन्तु उन से भी बड़ कर उन महां पुरुषों की महिमाँ की विशेषता थी जो कि शांत मई ढंग से सत्य ग्रह से संसार में जीत प्राप्त करते रहे।

उन में से महात्मा बुद्ध हजरत ईसा तथा महात्मा गांधी के नाम बहुत प्रसिद्ध है। परन्तु हम यहां उस महां पुरुष का जीवन वर्णन करने लगे जिस का उदाहरण संसार भर में कहीं भी नहीं मिल सकता।

किसी भी महां पुरुष को किसी जालम के साथ शाँत मई ढग का युद्ध उस समय करना पड़ता है, जब कि उसके पास विरोधी के मुकाबले पर युद्ध का समान तथा शक्ति न हो परन्तु जिस महां पुरुष का हम वर्णन कर रहे हैं, उन्हे शांत मई का जो उदाहरण दिया है वह इस संसार में इस लिये बहुत थी कि उस पास अत्यन्त शक्ति था तो भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसने शाँत मई का ढंग अपनाकर यवन राज्य को जड़ तक हिला दी थी। यह शांत मई का बहुत बड़ा उदाहरण था जो कि आप गुरु अर्जन देव जी के जीवन में पढ़ सकेंगे।

गुरु अर्जन देव जी का जन्म

गुरु अर्जन देव जी महाराज जी का जन्म श्री गोइंदवाल साहिब में वैशाख शु: १७,१६२० बि: को पिता श्री गुरु राम दास जी तथा बीबा भानी जी के गृह में हुआ था।

उस समय श्री गुरु राम दास जी भाई जेठे के रूप में ही थे। गुरु गदी पर नहीं बैठे थे। गुरु अरजन देव जी का पालन बड़े लाड़ प्यार से होता रहा। आप की बाल अवस्था के सुभाव को जो भी देखता था, उसको यह अनुभव होता कि महां आत्मा का ससार में अवतार हुआ है।

गुरु अमर दास जी का वरदान

श्री गुर अरजन देव जी की आयु जब दो अढ़ाई वर्ष होगी आप गुरु गदी पर जा बैठ गये। उस समय गुरु अमरदास जो कहीं बाहर थे बीबी भानी जी में शीघ्र ही उन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को गदी से उतारा था उसी समय गुरु जी बांहर से आ गये और बाल क्रीड़ा को देख कर गुरु जी ने बाल अरजन को गोद में लेकर कहा—बेटा इतनी जल्दो न करो, यह गुरु गदी तुम्हारी ही अमानत है. परन्तु कुछ समय के पश्चात ही मिल सकेगी।

इसी प्रकार जब गुरु अरजन देव जी तीन चार वर्ष के थे कि अपने नाना जी गुरु अमर दास जी की गोद में बैठ गये तथा तोतली तोतली बातें सुनाने लगे। तब गुरु अमर दास जोके मुखारबिंद से सुभावक ही यह वाक्य निकल गया।

दोहिता बाणी का बोहिता ॥

इसलिए गुरु जी का यह वाक्य सत्य हुआ था, क्यों कि सब गुरुओं से गुरु अरजन देव जी ने अधिक बाणीयाँ उचारण की थी तथा श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को रचना भी आपने ही की थी। जिसका वर्णन आगे चल कर आयेगा।

श्री गुरु अरजन देव जी के विवाह

श्री गुरु अरजन देव जी बहुत शीघर ही उच्च विद्या प्राप्त करके जब विवाह के योग्य हुए तो आप का पहला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विवाह मोड़ गांव में भाई चन्द दास क्षत्रिय की पुत्री बीबी देवा के साथ हुआ परन्तु वह निर सन्तान ही रह कर कुछ वर्षो के पश्चात इस संसार में चली गई तथा प्रलोक गमन कर गई। तब आपका दूसरा विवाह कलौर कसबे के निकट भऊ गाँव में कई कृष्ण चन्द की पुत्री गंगा जी के साथ हुआ। यहां पर गुरु जी की याद में एक अंगोछा एक चोला तथा एक पजामा पड़ा हुआ है। वहां आप को याद में एक बहुत बड़ा गुरद्वारा है जो लोग दर्शन करने के लिये जाते है उन को वस्त्रों के दर्शन भी करवाये जाते है।

गुरु अर्जन देव जी की अत्यन्त शक्ति

कहते है कि जब गुरु जी की बरात भऊ नगर में पहुंची सो उस गांव के लोगो को शरारत सूझी। उन्हों ने एक बहुत बड़ी बबुर (जिसकी जड़ पाताल तक थी) के वृक्ष को ऊपर से काट कर एक किले की शकल बना ली तथा बारात को गांव के बाहर ही रोक कर कहा कि हमारे यहां की मरयादा हैं कि दामाद घोड़े पर स्वार होकर नेजे से इस किले को उखाड़ कर ही गाँव में प्रवेश हो सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनका विचार यह था कि किला न उखड़ने पर वह दामाद तथा बारात की हंसी उड़ायें, परन्तु अन्तरयामी गुरु जी सब कुछ जानते थे। वह सर्व शक्तिशाली थे। उन्होंने स्वीकार कर लिया। परन्तु बारातियों को कुछ विचार सी पढ़ गई। उन्हों ने आपिस में कहा यदि किला न उखाड़ा तो यह लोग हमारी हंसी उड़ायेंगे। यह जानते थे कि गुरु राम दास के साहिबजादे न तो घोड़ सवार हैं और न ही नेजा चलाना जानते है।

गुरु अरजन देव जी को एक बड़ा निर्बल सा घोड़ा तथा मामूली सा नेजा दिया गया। गुरु जी उसी घोड़े पर सवार होकर एक हाथ में लगाम और दूसरे हाथ में नेजा पकड़ कर कुछ दूर से घोड़े को भगा कर लोगों के देखते ही देखते नेजे से किले को जड़ से उखाड़ कर तथा नेजे के ऊपर ही उठा कर सब को दिखला तथा ऊंचे स्वर में कहा—लो जड़ से ही उखाड़ दिया है।

गुरु जी की इस शक्ति को देख कर गांव तथा बारात के लोग बहुत अचम्भत रह गये।

गाँव के लोग गुरु जी के मुख से निकले वाक्य सुन कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुत भय भीत हो गये तथा हाथ बांधकर निमरता सहित निवेदन करने लगे। तब गुरु जी कुछ दयाल हुए तथा उस शराप को कुछ घटा दिया।

पृथी चंद का विरोध

जैसा कि पहले भी कहा गया है कि गुरबानी के वाक्यों के अनुसार वैर विरोध की आग से सारा जगत ही जला रहा है जैसे कि :—

दावा अगन बहुत तृण जालै ॥
कोई हरिया बूट रहियो री ॥

तथा:—

वैर विरोध धुरी ही किया ॥

गुरु जी फरमाते है कि :—

बिन वैर विरोधहि कुई नाही ॥
मोहि दिखालहु हउ तिसहि सलाही ॥

गुरु जी कहते है कि भाईयो—वैर विरोध तथा ईर्षा द्वैष से रहित कोई भी मनुष्य नहीं, यदि कोई है तो मुझे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बताओ मैं उस महां पुरुष की सिफतें ज्ञान करूं ।

संसार भर के महां पुरुषों का सिद्धांत है कि वैर विरोध तथा ईर्षा आदि का मूल केवल माया ही है । जैसे कि—

माए बाप पूत हित भराता ॥
उन घर २ ने लियो दुआ ॥
किस ही बाध घाट किसही पैं,
सगरे लर लर मूआ ॥

गुरु जी का वाक्य हैं कि महां पुरुष के बगैर इस सर्प रूप माया के प्रभाव से कोई नहीं बच सकता । जैसे कि :—

सपनी ते ऊपर नहीं बनीया ॥
जिन ब्रम्हा बिसन महा देओ छलीया ॥

भक्त कबीर जी ने इस माया के नाक और कान काट कर कहा था कि—

नाको काटी कानो काटी
काट कूट के डारी ॥
कहित कबीर संतन की वैरन,
तीन लोक की पियारी ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सो जिस माया का सब पर असर होता है, इस प्रकार उस का असर पृथी चन्द के मन पर भी पड़ गया। कारण यह था कि गुरु घर का माया सम्बन्धी सारा काम इसी के हाथ में था। बाहर से गुरु सिक्खों को अ र से भेट की हुई अत्यन्त माया लाखों रुपके सोने चांदी के जेवरात, यहां तक हीरे वस्त्र आदि इसके जुम्मे थे। यदि कमी थी वह यह थी कि गुरु राम दास जो इसके साथ प्यार नहीं करते थे। उस का प्यार तो केवल गुरु अरजन देव जो के साथ था।

श्री गुरु रामदास जी का शरीर बहुत वृद्ध हो रहा था। दूसरा गुरु जी अपने सब से छोटे बेटे के साथ बहुत प्यार करते थे। जिस से पृथी चंद को हर समय यह खटका लगा रहता था कि कहीं पिता जी इनको हो गुरु गदी न दे दें। इस लिये वह हर समय गुरु अर्जन देव जी को कुछ दिनों के लिये बाहर भेजने की ताक में था। आखिर में वह समय भी आ हो गया।

*
* *

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु अरजन देव जी की परेम बाणी

श्री गुरु रामदास जी महाराज के ताया बेटे भाई संहारी का लाहौर में विवाह था। वह गुरु जी को ले जाने के लिए आए। गुरु जी ने संगतों के प्रेम को छोड़कर जाना ठीक न समझा अपने बड़े बेटे पृथी चंद को जाने के लिए कहा परन्तु उन्हों ने जवाब दे दिया तथा कहा कि संगतों के आने जाने का लेन देन और संगतों के लंगर आदि का इतना बड़ा काम छोड़ कर विवाह पर जाना मेरे लिए उचित नहीं है। यदि आप भेजना ही चाहते हैं तो अर्जन देव जी को भेज दीजिए।

पृथी चंद को इस बात की शंका थी कि यदि मैं विवाह पर चला गया तो पिता जी मेरे छोटे भाई अर्ज़न को गुरु गदी दे कर जोति जोत न समा जायें। यह समझते थे कि गुरु गदी उसको मिलती है जिसका हक्क हो। भाव जो बड़ा भाई हो। परन्तु वह नहीं जानता था कि यह पदवी उसको मिलती है जो इसके योग्य है।

जब पृथिये ने इनकार कर दिया तो गुरु जो ने छोटे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बेटे श्री गुरु अर्जन देव जी को ओर इशारा किया और साथ ही गुरु जी ने सब के साहमने कहा—जब तक हम न बुलायें तब तक लाहौर से वापिस ना आउना । यह बात सुन कर पृथियां बहुत खुश हुआ कि चलो एक तो सिर से बला टल गई । दूसरा पिता जी को बुलवाने का मैं अवकाश ही नहीं दूंगा और गुरु गदी मैं ही प्राप्त कर लूंगा । वह विचारा अकाल पुरुष की महिमा को क्या जान सकता था ।

श्री गुरु अरजन देव जी संहारी के विवाह पर लहौर चले गए परन्तु हृदय गुरु राम दास जी के चर्णों में ही रह गया । क्यों कि श्री अरजन देव जी हृदय रूप मछली गुरु दर्शन रूप जल से बिछड़ना नहीं चाहती थी । परन्तु आज्ञा का पालन करना भी अत्यन्त आवश्यक था ।

संहारी जी का विवाह हुए को तीन चार मास हो चुके थे, परन्तु अभी तक गुरु जी की ओर से न कोई पत्र आया तथा न ही कोई बुलावां आया । जो श्री अरजन जी गुरु पिता से एक पल के लिये भी पिछड़ना नहीं चाहते थे, उन को चार महीने का विछोड़ा तो चार युगों के समान प्रतीत होने लगा । तब श्री गुरु अरजन देव जी ने निम्नलिखित गुरबानी के रुप में पहला पत्र गुरु जी को लिखा—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१ ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरा मन लोचै गुरु दर्शन ताईं ॥
बिप करे चात्रिक की निआईं ॥
त्रिखा न उतरै सांति न आवै ॥
बिन दरसन सन्त पिआरे जीओ ॥१॥
हउ घोली हउ घोल घुमाई ॥
गुर दरसन सन्त पिआरे जिओ ॥१॥रहाउ॥

[राग माझ महला ५]

भावार्थ :–

मेरा मन तड़प रहा है, और हर समय गुरु के दर्शनों को लोचता तथा पपीहे की तरह वृलाप कर रहा है दर्शन की इच्छा रूप प्यास नहीं बुझती तथा न ही मन को शांति मिलती है बगैर उस गुरु रूप प्यारे सन्त के ।

मैं तो अपने गुरु जी के दर्शन से कुरबान जाता हूं। फिर से बारंबार कुरबान जाता हू। अपने गुरु सन्त प्यारे पर से ।

यह पत्रिका एक सिक्ख के हाथ भेजी थी, परन्तु वह पत्रिका पृथी चंद के हाथ आ गई। उसने वह पत्र गुरु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी को न दिया और उस सिक्ख को कहा कि मैं यह पत्र स्वयं गुरु जी को दूंगा तुम निसचिन्त रहो।

पत्र भेजे को दस बारह दिन व्यतीत हो गये, परन्तु गुरु जी की ओर से कोई पत्र न आया। तब श्री अरजन देव जी ने दूसरा पत्र लिखा, जो इस प्रकार है—

तेरा मुख सुहावा जीओ सहिण धुणि बाणी ॥
चिर होआ देखे सारग पाणी ॥
धन्न सो देस जहाँ तूं वसिआ ॥
मेरे सजन मीत मुरारे जीओ ॥
हउ घोली जिउ घोल घुमाई ॥
गुर सजन मीत मुरारे जीऊ ॥२॥१॥रहाउ॥

(राग माझ महला ५)

भावार्थ—

हे मेरे सतिगुरु जी आप के शोभायमान मुख्य से ज्ञानमृत रूप बाणी निकलती रहती थी। मेरे चात्रिक [पपीहे]को दर्शन रूप बूंदे प्राप्त हुए बहुत समय हो गया है।

वह देश धन्य है, जहां आप रह रहे हैं। हे मेरे साजन हे मेरे सच्चे मित्र! हे मेरे ईश्वर जी॥ मैं आप पर बलहार जाऊं॥ १ ॥ रहाउ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह पत्र भी पृथिये के हाथ लगा तथा जब उसने पड़ा कि यह पत्र तो गुरु के दर्शन करने के लिए बहुत बिहबलता से भरा हुआ है। उस ने सोचा यदि यह प्रेम पत्र गुरु जी के हाथ लग जाता तो वह अवश्य उसको बुला लेते।

यह विचार कर उसने वह पत्र भी छुपा लिया और मन ही मन में कहने लगा कि यदि मैं ऐसे सब पत्र तथा संदेश छुपा दिया करूं तो पिता जी को तो अरजन का ध्यान (ख्याल) ही नहीं है।

उधर श्री अरजन देव जी की बिहबलता बढ़ती गई। कुछ समय के पश्चात तीसरा पत्र लिख कर भेजा तथा जिस सिक्ख के हाथ पत्र भेजा उससे ताकीद की कि यह पत्र गुरु जी के सिवा किसी को न देना। भाई साहिब पृथी चन्द को बिलकुल पता न चलना चाहिए।

यह पत्र इस प्रकार था—

इक घड़ी न मिलते तो कलियुग होता॥
हुण कदि मिलीऐ प्रिय तुध भगवंता॥
मोहि रैणि न बिहावै नींद न आवै॥
बिन देखे गुर दरबारे जीऊ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हउ घोलि जीउ घोल घुमाई ॥
तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥ ३ ॥ १ ॥ रहाऊ ॥
(राग माझ महला ५)

भावार्थ—

हे मेरे सतिगुरु जी ! मैं जब एक घड़ी भर आप को नहीं मिलता था तो मेरे लिए कलयुग आ जाता था। हे मेरे प्यारे सतिगुरु कब मिलोगे। आप के दर्शन के बगैर न तो रात काटती है और न ही नींद आती है। हे मेरे सतिगुरु जी ! बगैर आप के गुर दरबार के कैसे दर्शन करु। हे मेरे सतिगुरु जी मैं आप पर कुरबान।

अब की बार सिक्ख ने यह पत्र सीधा गुरु राम दास जी को दिया। जब गुरु जी ने अर्जन देव का यह प्रेम पत्र पढ़ा तो उनके आंसू बह निकले और साथ ही साथ अपने बेटे श्री अर्जन देव की गुरबानी की महानता देख कर बहुत प्रसन्न हुए पत्र पर तीन का अंक देख कर सिख से पूछा कि दूसरे दो पत्र कहां है। सिख ने उतर दिया कि मैं वह पत्र तो पृथी चन्द को दे गया था।

तब गुरु जी ने पृथी चंद जी को बुला कर पूछा तो साफ मुकर गया। इस पर गुरु जी ने अपने एक सेवक को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहा कि जाओ घर से पृथिये की कोट की जेब में दोनों पत्र पड़े है उनको ले आओ। सिक्ख घर जाकर पत्र ले आया।

तब पृथिया कुझ शर्मसार हो गया, परन्तु उस ने फिर कहा, पिता जी यह तो मैंने बाणी उचारण की है।

इतना सुन कर शीघर ही एक सिख को लाहौर भेज कर श्री अर्ज़न देव जी को बुलवा लिया। पृथिये को भी बुला लिया और कहा के इस बाणी के तीन पद्य हैं, जो इस की चौथी पउड़ी उचारण करेगा उसी की वह पहली तीनों पउड़ियाँ समझी जायेंगी।

पृथिया कहाँ उचार सकता था। इस लिए श्री अर्जन देव जी ने चौथी पऊड़ी उचारण की जो इस प्रकार है—

भागु होआ गुर सन्त मिलाइआ ॥
प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥

सेव करी पल चसा न विछुड़ा ॥
जन नानक दास तुमारे जोउ ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हउ घोली जीउ घोलि घुमाई ॥
जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥१॥रहाउ॥
(राग माझ महला ५)

श्री गुरु राम दास जी श्री अर्जन देव की चौथी पउड़ी सुन कर बहुत प्रसन्न हुए तथा अर्जन देव को गले से लगा लिया और कहा 'बस' ! बेटा यह गुरु की पदवी के तुम ही योग्य हो ।

यह कौतक देख कर पृथिया बहुत दुखी तथा आग बगोला हो गया ।

श्री गुरु अरजन देव जी को गुरु गदी की प्राप्ति

पृथिये को जब निश्चय हो गया कि गुरु गदी उसके छोटे भाई श्री अर्जन देव को ही मिलेगी तो उसने अपने पिता गुरु राम दास जी के साथ बहुत झगड़ा करना शुरु कर दिया ।

तब गुरु जी ने पृथिये को उपदेश दिया तथा उस का मन शांत करने के लिए निम्नलिखत शबद उचारण किया :—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूत काहे झगरत हो संग बाप ॥
जिन के जनीपे तुम वडोरे ॥
तिन सिउ झगरत पाप ॥

परन्तु पृथिए का मन शांत न हुआ । हर रोज झगड़ा करना शुरु कर दिया ।

तब गुरु जी ने कहा बेटा ! यह गुरु गदी हक्क पर नहीं मिलती । योग्यता के अनुसार मिलती है ।

पृथिया चिलाता ही रहा, परन्तु गुरु रामदास जी ने सब सगतों के साहमने बहुत बड़े दीवान में पूरब नियम अनुसार भाद्रव शुदि २ १६३८ बिक्रमी को गुरु गदो श्री अर्जन देव को दे दो और आप श्रो गोइदवाल में जोति जोत समा गए ।

बस उसी दिन से गुरु घर में जहाँ दिन ब दिन महिमा बड़नी शुरु हो गई वहां पृथिये ने बे हद विरोधता करनी शुरु कर दी । जिस का वरनण आगे चल कर आएगा ।

* * *

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु अरजन देव जी के कर्तव्य

[गुरु जी गोइंदवाल साहिब से श्री अमृतसर आ गये और पृथी चंद की विरोधता ।]

श्री गुरु अर्जन देव जी का गुर गदी पर बैठने के उत्सव पर इतना भारी इकठ हुआ कि गुरु दरबार में इतना भारी इकठ पहले कभी नहीं हुआ था। जिस को देख कर पृथोए के मन में ईर्षा की आग और भी भड़क उठी। और अपने भाई अर्जन देव जी की सख्त विरोधता कर की।

श्री गुरु अर्जन देव जी अब गोइन्दवाल साहिब से श्री अमृतसर साहिब आ गए, परन्तु पृथी चन्द ने इतने जोर से विरोधता शुरु की कि गुरु जी को सख्त तंग होना पड़ा। गुरु राम दास जी के समय सब गोलकों का प्रबंध पृथिए के हाथ में था।

जो रुपया संगतों की कार भेंट का था वह भी संभाल लिया और पैसे के जोर से सभ मसंद भी अपनी ओर कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिये गुरु अरजन देव जी के पास एक पैसा भी न था। पृथिया जो भेंट आती थी स्वयं संभाल लेता और संगतों को भोजन पाने के लिये गुरु जी के पास भेज देता। इस के उपरन्त मसन्दों को दूर निकट भेज कर अपने आप को गुरु प्रसिद्ध करवा दिया था।

इधर श्री गुरु अरजन देव जी की माली हालत और संगत की हालत बहुत खराब हो गई। पहले जहां खीर, कड़ाह प्रसाद बनता था, वहां चनों की दाल और चनों की रोटियां भी बड़ी मुश्किल से बनने लगी।

एक बार गुरु जी के मामू के बेटे भाई गुरदास जी जो कि सिक्ख धर्म के बहुत बड़े विद्वान थे। संस्कृत के बहुत बड़े पण्डित तथा कवि भी थे तथों महाँ पुरुष थे। गुरु जी के दर्शनों को आए तो उन्हों को भी चने की दाल और चने की ही रोटियां खाने को दी गई, तब उन्हों ने गुरु जी से इसका कारण पूछा तो गुरु जी ने कहा मामू भाई साहिब जो कुछ संगतों से आता है वही गुरु के लंगर में बन सकता है। संगत, तो सब पृथिये ने अपनी ओर खैंच ली है तथा संगतों पर मसंदों के द्वारा अपने आप को गुरु प्रसिद्ध करवा लिया हैं।

भाई गुरदास ने गुरु जी से यह बात सुनते ही बाबा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुढा जी आदि मुख्य सिक्खों को बुला कर पृथिये की कुटल नीति को समाप्त करने का विचार किया। अमृतसर के चारों ओर बुद्धिमान सिक्खों को भेज कर संगतों में पृथिये की चालों का पोल खोला तथा गुरु अर्जन देव जी का गुर गदी पर बैठने का उपदेश संगतों में प्रसिद्ध कर दिया।

इस प्रकार एक दो मास में ही सब सिक्ख संगतों को गुरु अर्जन देव जी के चर्णों पर झुका दिया। फिर उसी प्रकार गुरु के लंगर में—

यित्त रसोई जैरीयो घिओ मैदा खांड ।।

भाव—गुरु के लंगर में जिस प्रकार पहले खीर पूड़े तथा हलवा (कड़ाह प्रसाद) बनता था, फिर से बनने लगा।

जद पृथिये की इस कुटल नीति को भाई गुरदास जी और बाबा बुढा जी आदि महान सिखों ने फेल कर दी तो वह बहुत क्रोध में आ कर गुरु जी को हानि पहुचाने के लिये उपाए करने लगा।

श्री हरिमन्दिर साहिब

श्री गुरु अरजन देव जी महाराज ने एक यह सकीम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोची थी, जो यह थी कि जब तक संसार जीवत हैं, तब तक सिखों के प्रयोग में आती रहे। या जिसको सिखों का केन्द्रीय स्थान कहा जा सके। इसके लिए इसी गुरु राम दास की नगरी को ही चुना। सरोवर को सम्पूर्ण करके फिर उसके इर्द गिर्द प्रकरमा तथा बुंगे मकान आदि बनवाए।

अब श्री गुरु अर्जन देव जी के मन में आया कि इस अमृत सरोवर के भीतर एक सच्च खण्ड तथा बैकुण्ठ की प्रकार का हरि मन्दिर बनाना चाहिए।

उसी समय हरि मन्दिर साहिब की नींव रखने के लिए एक बहुत महां पुरुष मीयां मीर मुस्लमान फकीर को लाहौर से बुलवा लिया† क्यों कि गुरु जी के मन में जात पात और मजहब का कोई विचार नहीं था।

---

†यह मीयांमीर फकीर मुस्लमानों में बहुत प्रसिद्ध है। श्री गुरु अर्जन देव जी के साथ इसकी बहुत मित्रता थी। इसका मकबरा [समाधि] लाहौर के पूर्व की ओर बना हुआ है। सिख इतहास के साथ इसका घनिष्ट सम्बन्ध हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु अर्जन देव जी का श्री हरिमन्दिर सम्बन्धी वाक्य

गुरु जी ने अमृत सरोवर के भीतर बैकुण्ठ धाम के नकशे पर हरिमन्दिर साहिब जी की नींव रखते समय बड़ा भारी सिक्ख संगतों का इकठ किया बहुत भारी यज्ञ भी किया तथा अकाल पुरुख के आगे अरदास करके साईं मीयां मीर के हाथों से पहली ईंट रखाई गई। (कारीगर। ने वह ईंट उठा कर दूसरे तरीके से रखते हुए कहा कि महाराज यह ईंट ठीक नहीं रखी, टेढ़ी है। तब उसी समय गुरु जी के मूंह से सुबाविक ही यह वाक्य निकल गया।

यह इट एक तो अकाल पुरुख के आगे अरदास कर के भगवान की आज्ञा से रखी गई थी। दूसरा सांइ मीयां मीर जैसे महान व्यक्ति के हाथ से रखवाई गई थी सो इस ईंट के उठाने से ईश्वर तथा ईश्वर के प्यारे का अपमान हुआ है। इस लिए यह हरिमन्दिर साहिब एक बार अवश्य गिर कर दूसरी बार बनेगा।

गुरु जी का यह वाक्य सुन कर सब संगतों के मन कांप गए क्योंकि गुरु जी का वाक्य व्यर्थ तो जाना न था। तब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस कारीगर को सब लोग बुरा भला कहने लगे।

तब गुरु जी ने कहा, 'भाईयो इस विचारे का क्या दोष है। ईश्वर की ऐसी ही आज्ञा थी।' कि महाराज अब श्री हरिमन्दिर साहिब की रक्षा का कोई उच्चारण करो ताकि सिक्खों के मन को शान्ति प्राप्ति हो सके।

जब गुरु जी ने यह सिक्खों की यह दशा देखी तो कि जब यवनों के राज्य का अन्त समय आयेगा, तब वह इस को गिराने का महान पाप करेंगे और बमृत सरोवर मिटी से भर देंगे। इसके पश्चात जो मैं अपना ही रूप खालसा पन्थ हूंगा इन यवनों के घरों से धन निकाल कर इस हरिमन्दिर को बनाऊंगा। इस के पश्चात इसकी शोभा युगों युगों तक अटल रहेगी।

हरिमन्दिर साहिब की महिमा

श्री गुरु अर्जन देव जी ने हरिमन्दिर साहिब की रचना करके इस नगर का नाम अमृतसर रख दिया।

भाव—अमृत का सरोवर सिख इतहास में गुरु का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चक्क राम पुरा तथा सुधासर आदि कई नाम है। परन्तु इन सब से अधिक प्रसिद्ध नाम श्री अमृतसर साहिब जी हुआ था।

श्री गुरु अर्जन देव जी श्री हरिमन्दिर साहिब जी और श्री अमृतसर की महमा में इस प्रकार शब्द उचारण किये–

(१) राम दास सरोवर नहाते ॥
सभ उतरे पाप कमाते ॥

(२) बधहु पुरख बिधाते तहाँ सू सोहिआ ॥
वसदी सघन अपार अनीप रामदास सर ॥
हरि हां कसमल जाए नहाए रामदास सर ॥

तरन तारन नगर का आरम्भ

अब श्री गुरु अरजन देव जी ने मझा प्राँत में विक्रमी

---

*पंजाब देश में कई प्राँत है जैसे कि माझा, मालवा दुआबा, दढ़प, दुवाध, रियाड़की आदि। माझा का भाव है सैंटर जो आम करके जिला अमृतसर और जिला लाहौर को कहते है। यहाँ के लोग बड़े योधा होते है। बाहर के यतनों से जो आक्रमण होते रहे उन सब की मुठ भेड़ माझे के नौजवानों के साथ होती थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को एक बहुत सुन्दर नगर बसाने का संकल्प किया।

श्री अमृतसर से बारह मील दूर एक बहुत बड़ा तालाब खोदा गया। उन के तट पर बहुत सुन्दर मन्दिर बना कर उसका नाम तरन तारन रखा।

भाव—संसार सागर से पार करने तथा तारने वाला। साथ ही बहुत सुन्दर नगर बसा दिया। और गुरु जी ने इस तीर्थ को वरदान भी दिया कि यहाँ पर जो श्रद्धा प्रेम के साथ कष्ट रोग वाला पुरुष एक वर्ष भर निवास करेगा उस का कष्ट रोग दूर हो जायेगा।

सो अब तक ऐसा ही होता है, बहुत से कुष्टि यहां पर आते हैं तथा निरोग होकर जाते है।

अमीना बेग की बात

श्री गुरु अर्जन देव जी ने तरन तारन का सरोवर बनाने के लिए भठा बनवाया था। उसकी ईटे मुस्लमान [जो उस समय हाकम था, और नूर दीन का बेटा था जिस का नाम अमीन बेग था] जबरदस्ती उठा कर ले गया तथा अपनी बहुत बड़ी हवेली बनवा ली।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिक्खों ने गुरु जी को कहा। तब गुरु जी ने सहज सुभाव ही कह दिया कि यह सब ईंटे एक दिन वापस इसी सरोवर पर ही लगेगी।

गुरु जी का यह वाक्य सत्य हुआ। जब पंजाब में सिक्ख राज्य कायम हुआ तो १८३२ बिक्रमी को यह हवेली गिरा कर सब ईंटे सरोवर में लगाई गई।

श्री गुरु अरजन देव जी का दौरा

श्री तरन तारन सरोवर के तट पर अति सुन्दर हरिमन्दिर और बहुत जन संख्या वाला कसबा बसा कर वहां अमावस के दिन एक बहुत भारी इकठ करने की रीति चलाई†।

सिक्ख संगतों को उपदेश करने दर्शन देने तथा किसी और स्थान पर गुरुद्वारा बनाने के लिये आप चल पड़े, आप जी ने करतार पुर साहिब (जिला जालंधर) में

---

†तरन तारन में उसी दिन से अमावस के रोज अब तक मेला लगता है। श्री अमृतसर को छोड़ कर पंजाब में वह तीर्थ दूसरे स्थान पर है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाहौर डब्बी बाजार में बाउली साहिब, यहां पर एक बहुत बड़े मुस्लमान फकीर से गोष्टि की थी। फिर छेहरटा साहिब, श्री अमृतसर में रामसर आदि गुरु स्थान बनवाए।

इसके पश्चात संसार के कलयुगी जीवों का कल्याण करने के लिए आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज की रचना का विचार हुआ।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की रचना

संसार में हर धर्म तथा मत का कोई ग्रन्थ अवश्य होता है जिस के उन सिद्धाँतों, विचारों तथा उसकी साहित्य महानता का ज्ञान होता हैं, हर धर्म का आपना ग्रन्थ उसकी नींव समझी जाती है। इसके बगैर किसी भी धर्मकी महानता ब्यान नहीं की जा सकती और न ही वह संसार में बहुत समय तक कायम रह सकता है क्यों कि उस का आपना धार्मिक ग्रन्थ न होने से किसी दूसरे के धार्मिक ग्रन्थों की सहायता लेनी पड़ती है। जिस से उस का प्रभाव पड़ कर उसी में जजब हो जाता है इस लिये इस बात को विचार कर श्री गुरु अर्जन देव जी ने सिक्ख धर्म तथा गुरु नानक मत का एक बहुत बड़े धार्मिक ग्रन्म की रचना आरम्भ की।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह काम बहुत ही कठिन था क्यों कि पहले गुरुओं की बाणी को इकत्र करना, जिस को सैंचियां कहते है।

गुरु नानक देव जी की बाणी तो बहुत दूर दूर प्रांतों में पड़ी थी, जैसे कि संगला द्वीप, बंगाल, असाम अरब तथा मक्का आदि में बहुत से शब्द पड़े थे।

भाई मोहन से सैंचियाँ प्राप्त करना

सब से पहले गुरु जी को पता लगा कि पहले गुरुओं की सैंचियां भाई मोहन जी के पास पड़ी है, जो किसी से बात तक नहीं करता। सारा दिन चौबारे में समाधि लगाए रहते है।

गुरु जी ने सैंचियाँ लाने के लिये पहले भाई गुरदास जी को फिर बाबा बुढा जी को भेजा, परन्तु सफलता न हुई।

तब गुरु अर्जन देव जी ने गुरबाणी के सतिकार को मुख्य रखते हुए स्वयं नंगे पाव चल कर मोहन जी के घर गये तथा उस के चौबारे के नीचे खड़े होकर मोहन की महमा का जो शब्द उचारण किया वह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में श्री गउड़ी राग के नाम से प्रसिध है।

श्री गुरु अर्जन देव जी की इतनी बड़ी निमरता देख

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर भाई मोहन जी ने वह सैंचियां गुरु जी को दे कर कहा कि आप इस निमरता के कारण ही गुरु गद्दी ले गए हैं और अब उसी प्रका यह शैंचियाँ ले जा रहे है।

इस प्रकार शैंचियां ले कर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की रचना की त्यारी की।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की लिखत के लिये किसी महान विद्वान की आवश्यकता थी इस लिये इस महान कार्य के लिये भाई गुरदास जी को नियत किया गया।

* * *

..जो लोग कहते हैं कि गुरु जी ने मोहन की खुशामद क्यों की ? तो इसका यह उत्तर है कि भाई मोहन जी एक तो गुरु अंश थे, दूसरा वे बहुत बड़े महात्मा पुरुष थे तीसरा लोगों का कल्याण करने के लिए उन से बाणा लेकर इकत्र करनी थी, चौथा गुरु जी ने यह शब्द उचारण किया यदि वह पढ़ कर देखो तो उनका भाव ईश्वर की महमा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब तथा भक्त जन की बाणी

श्री गुरु अर्जन देव जी ने बड़ी सुन्दर तरतीब के साथ क्रमवार पहले गुरु नानक देव जी की बाणी फिर दूसरे गुरु इसी प्रकार तीसरे तथा चौथे गुरु उसके उपरन्त अपनी बाणी लिखवाई गई। इसके पश्चात भक्तों की लिखवाई गई।†

श्री गुरु अर्जन देव जी ने गुरु ग्रन्थ साहिब में किसी भी भक्त की बाणी उचारण करने का एक मात्र यही नियम बनाया था कि उसी भक्त की बाणी का उचारण तथा

---

† श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सम्बन्ध में सारे विचार का विस्थार इसी पुस्तक के आखिर में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के रचना वृतांत में किया गया है। पाठक जब वहां से गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का तरतीब तथा सम्पूर्ण विचार पढ़ कर देखो, क्यों कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु गोबिंद सिंह जी ने युगों युग अटल गुरु स्थापत कर दिया। इस लिए खालसा पंथ तथा नानक देव जी के नाम लेवा सर्व सिक्खों के गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी ही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु ग्रन्थ जी में लिखाई, जो पूर्ण ब्रम्ह ज्ञानी हो ।

इस नियम के अनुसार श्री भक्त कबीर जी, श्री नाम देव जी, श्री रविदास जी, श्री रामानन्द जी, श्री फरीद जी, श्री सूरदास जी, श्री जय देव जी तथा धन्ना भक्त जी आदि सब भक्त गुरु जी की कसौटी पर पूरे उतरे थे । इस लिए उनकी बाणी गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखवा दी गई जो कि इन सब भक्तों की बाणी गुरु घर में प्रमाणिक समझी जाती हैं ''।

इतिहास में इन कबीर आदि भक्तों की बाणी के सम्बन्ध में विद्वानों की यह राय है ।

१) जिन भक्तों की बाणी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में मौजूद नहीं थे, गुरु जी की आत्मिक शक्ति से उन भगतों की रूहों को स्वर्ग से बुलवा लिया था तथा वह बाणी उचारण करते गए आप लिखते गये ।

२ विद्वानों का विचार है कि जो प्राणी ब्रम्ह में जल को भान्ति मिल गया वह अलग नहीं हो सकता । इस लिए स्वयं गुरु अर्जन देव जी ने भगतों के आशे के अनुसार

[२१२ सफे पर देखो]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाहौर के जीवत भक्तों की कथा

इतहास में लिखा है कि लाहौर से काहने छजू वजीद तथा पीलो भक्तों ने जब सुना ता उन्हों ने भो आकर गुरु जी को अपनी बाणी गुरु ग्रथ साहिब में लिखने को कहा ।

तब गुरु जी ने कहा, तुम उच्चारण करो जो गुरु मत अनुसार ठीक उतरी तो हम लिख देंगे ।

तब उन्होंने बाणी उचारण की जो इस प्रकार है—

काहना भक्त उवाच—

कागद सधी पूतरी तऊ न तृया निहार ॥

(२११ सफे का शेष)

तथा उनकी उचित पुस्तकों से लेकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिख दो थी । इस राये के साथ पुरातन विचारों के पण्डित तारा सिंह जी निरोतम, निर्लेप महात्मा खास सहमत हैं। उन्होंने यह विचार अपनी भक्त बाणी स्टीक में लिखे है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसे यार ले जायेगी जिओं बलोच की धाड़ ।।

भाव—जो कभी कागज पर स्त्री का चित्र हो तो उसे मत देखो, वह तुम्हें †बलोच की प्रकार मार कर बिल्कुल ही नष्ट कर देगी।

गुरु जी ने कहा यह बाणी हमारे गुरु मति सिधांत के अनुसार नहीं क्योंकि इसमें स्त्री की विरोधता की गई है। हमारे आदि गुरु नानक देव जी ने तो कहा है कि—

भन्ड जंमीए ....
सो किउ मन्दा आखीए ।
जित जमहि राजान ।।

[आसा की वार महला १]

वह तो चुप होकर बैठ गया तथा दूसरा छजू भक्त आकर बोला—

छजू जो सुख चुबारे ।।
ना ओह बलख ना बुखारे ।।

---

†एक बहादुर तथा लुटेरी श्रेणी का नाम है जो कि शकार पुर बुंदो कोटा आदि के प्रांतों के रहने वाले हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाहौर के जीवत भक्तों की कथा

इतहास में लिखा है कि लाहौर से काहने छजू वजोद तथा पीलो भक्तों ने जब सुना ता उन्हों ने भो आकर गुरु जी को अपनी बाणी गुरु ग्रथ साहिब में लिखने को कहा ।

तब गुरु जी ने कहा, तुम उच्चारण करो जो गुरु मत अनुसार ठीक उतरी तो हम लिख देंगे ।

तब उन्होंने बाणी उचारण की जो इस प्रकार है—

काहना भक्त उवाच—

कागद सधी पूतरी तऊ न तृया निहार ॥

(२११ सफे का शेष)

तथा उनकी उचित पुस्तकों से लेकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में लिख दो थी। इस राये के साथ पुरातन विचारों के पण्डित तारा सिंह जी निरोतम, निर्लेप महात्मा खास सहमत हैं। उन्होंने यह विचार अपनी भक्त बाणी स्टीक में लिखे है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ऐसे यार ले जायेगी जिओं बलोच की धाड़ ॥

भाव—जो कभी कागज पर स्त्री का चित्र हो तो उसे मत देखो, वह तुम्हें †बलोच की प्रकार मार कर बिल्कुल ही नष्ट कर देगी।

गुरु जी ने कहा यह बाणी हमारे गुरु मति सिधांत के अनुसार नहीं क्योंकि इसमें स्त्री की विरोधता की गई है। हमारे आदि गुरु नानक देव जी ने तो कहा है कि—

भन्ड जंमीए ....
सो किउ मन्दा आखीए ।
जित जमहि राजान ॥

[आसा की वार महला १]

वह तो चुप होकर बैठ गया तथा दूसरा छजू भक्त आकर बोला—

छजू जो सुख चुबारे ॥
ना ओह बलख ना बुखारे ॥

---

†एक बहादुर तथा लुटेरी श्रेणी का नाम है जो कि शकार पुर बुंदो कोटा आदि के प्रांतों के रहने वाले हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी ने कहा इस में भी कुछ हउमैं की बू आती है। यह फिर वजीदा भक्त बोला–

इकना दे घर पुत पुतां घर पोते ॥
इकना दे घर धी धीयां घर दोहते ॥
इक ले बिगाने पालन सोई जान मर ॥
वजीदा कौन आखे साहिब नूं एओं नहीं एओं कर ॥

गुरु जी कहा, फकीर साई वजीद जी तुम्हारे यह भी शब्द गुरु मत अनुसार नहीं, क्यों कि इस में प्रमात्मा पर नुकता चीनी की गई है।

तब चौथा पीलो भगत बोला–

मैं ओही रे मैं ओही रे ॥
जिन सगल सृष्टि मोही रे ॥
सब पुजो देवी देवा रे ॥
जाका अलख न भेवा रे ॥

इस बाणी को गुरु जी खुश्क विद्धांत कह कर ठुकरा दिया था।

इस प्रकार पूर्ण भगत न होने के कारण जब गुरु जी ने उन की बाणी प्रकाशत न की तो उन भक्तों ने गुरु जी को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक प्रकार का श्राप दे दिया, कि आपने दुश्मनों के हाथ से मारे जाएंगे।

उनकी यह बात सुनकर गुरु जी ने कहा कि भाई यह कौन सी बड़ी बात है यह तो ईश्वर की इच्छा से होनी ही है, परन्तु याद रखो, आप लोग भी लाहौर नहीं पहुच सकोगे···।

बाकी जो उन भक्तों ने गुरु जी को श्राप दिया था वह ईश्वर की इच्छा से भक्तों के मूंह से वही बात निकली जो कि गुरु जी के साथ ईश्वर की आज्ञा से होनी ही थी परन्तु भक्तों को ऐसा न कहना चाहिये था।

उन चारों भक्तों की गुरु वाक्य मृत्यु [मौत]

अब उन भक्तों को गुरु जी के वचन से बहुत भै

···सिख गुरु कभी किसी को श्राप नहीं देते थे परन्तु भक्तों को यह वचन इस लिए कहा कि जो गुरु जी ऐसा न करते तो सिक्खों का श्रद्धा विश्वास के कमजोर होने का अत्यन्त भै था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो गया वह जानते थे कि गुरु जी का वचन कभी झूठा नहीं होगा। आपिस में पश्चाताप करने लगे कि हमें गुरु जी को ऐसा बाक्य नही कहना चाहिए था।

इस पर भाई नन्द लाल जी ने कहा कि—

अकनूं इलाज नेसत ॥
अज तोरेज कमाँ गुजशत ॥

भाव—अखीर कोई इलाज नहीं हो सकता। जब कि तीर कमान से निकल जाता है।

वह चारों भक्त एक रथ में बैठ गये तथा रथवान को कहा कि हम तो समाधि लगा कर स्वासों को दसवें दुवार में चढ़ा कर बैठ जाते हैं। इस पर मृत्यु का बश नहीं चलता, परन्तु तुम ने रथ को लाहौर जा कर हा ठहराना।

उनका विचार था कि हम जब दसवें दुवार में प्राणों को ले जाऐंगे तो काल हमारा क्या करेगा। वहां पर तो काल को जाने की ईश्वर की ओर से आज्ञा ही नहीं। परन्तु उन का विचार व्यर्थ था। वह नहीं जानते थे कि गुरु अरजन देव जी ही तो स्वयं भगवान हैं। जिस भगवान की ओर से काल को दसम दुवार में जाने को आज्ञा नहीं, अब उसी भगवान ने वहां जाने की आज्ञा दे दी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुआ क्या ? कि रथवान रथ को दौढ़ाता जा रहा था, चारों भक्त रथ में दसम दवार की सुन्न समाधि लगाए बैठे थे। घोड़े वायु के समान जा रहे थे। जब बागबान पुरे के निकट आ गए जहां से लाहौर के ऊंचे २ मिनार दिखाई देने लगते हैं तब रथवान ने घोड़े की वागें खैंच ली तथा रथ को खड़ा कर दिया कि अब तो लाहौर आ ही गया है।

इधर भक्तों की समाधीयां भी खुल गई और साहमने लाहौर के मिनार दिखाई देने लगे। वह चारों भक्त अति प्रसन्न हुए और खिल खिला कर हसने लगे परन्तु वह नहीं जानते थे कि गुरु जी के मुख से जो शब्द निकल जाते हैं उन को कोई मिटा नहीं सकता।

अब थोड़ा विश्राम करने के पश्चात रथवान रथ को धीरे धीरे चलाने लगा। इतने में एक जोर का तूफान आया कि रथ को उड़ा कर भूमि पर उलटा करके इतने जोर से फैंका कि सबसे पहले चारों भक्तों के सिर भूमि पर टकरा कर ऐसे फटे कि जैसे दहीं की मटकी फटती है। साथ ही उनके प्राण निकल गए तथा यमलोक प्रवेश कर गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश

श्री गुरु अरजन देव जी ने गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ को सम्पूर्ण करके इसका पहला नाम पोथी साहिब रखा, साथ गुरबाणी द्वारा इस ब्रम्ह रूप पोथी के सनमान में एक वाक्य कहा, जो इस प्रकार है—

पोथी परमेशर का थान ॥

इस ब्रम्ह ग्राणी वाणी बीड़ का पहला प्रकाश १६६१ बि: को श्री हरिमन्दिर साहिब में किया गया। उस दिन बड़ा भारी यग किया और खुशी मनाई गई बहुत सा दान पुन्न किया गया था।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पहला ग्रंथी बाबा बुढा जी को स्थापत किया गया। सब संगतों को बाबा बुढा जी ने आदि से अन्त तक पाठ सुनाया। पाठ का भोग पड़ने पर बहुत भारी उत्सव किया गया।

कहते हैं कि बाबा बुढा जी को पाठ के भोग को पूजा भेंट एक हाथी शिगार कर दिया गया था।

* * *

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पृथिये की यवन राजा के पास पहली शिकायत

जब गुरु जी की महान पवित्र बाणी की बीड़ को सम्पूर्ण किया गया तो उन दिनों दिली से जहांगीर बादशाह लाहौर जाता हुआ बटाले में कुछ समय के लिए ठहर गया।

पृथिये ने कुछ काजी लोगों को साथ ले कर बादशाह के पास गुरु जी की शिकायत को कि मेरे भाई अरजन [गुरु अर्जन देव जी ने एक ग्रंथ बनाया है, जिस में पेगम्बरों की शान के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा है।

इस पर बादशाह ने पता किया, तो गुरु जी ने भाई गुरदास को भेजा। भाई गुरदास जी ने जहांगीर को ऐसे प्रभावशाली ढंग से समझाया कि उस की तसल्ली हो गई, परन्तु कुछ असर मन पर जरूर रह गया।

पृथिये की विरोधता बढ़ गई

इधर तो श्री गुरु अर्जनदेव जीकी महमा जैसे २ बढ़ती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चली गई, इधर तैसे तैसे पृथिये के मन में गुरु जी के लिये क्रोध, ईर्षा और विरोध बढ़ता गया यहां तक कि वह गुरु जी को मरवाने के लिये यत्न करने लगा।

पृथिये के पास धन अधिक होने के कारण, उसने कर्मचारियों से मित्रता पैदा कर ली थी। वह उनके द्वारा बादशाह को भी गुरु जी के खिलाफ भड़काने के लिये यतन करता रहता था।

उधर बादशाह को भी गुरु जी के दिन ब दिन बढ़ रहे प्रताप से भय होने लगा। वह किसी ऐसे मौके की तलाश में रहता था कि गुरु जी का प्रताप नष्ट किया जाए।

इस काम के लिये पृथिये ने बहुत से गुरु घर के विरोधी अपने साथ मिला लिए थे।

चन्दू की विरोधता का कारण

दिल्ली के शाही दरबार में एक चंदू खत्री रहता था जो कि बादशाह का मन्त्री होने के कारण अपने पास बहुत से कर्मचारी रखता था। वह बड़ा अहंकारी भी था। उसकी एक नौजवान लड़की थी जिसकी सगाई के लिए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसने पुरोहित को भेजा और कहा कि लड़की का रिश्ता उसी से करना है जो कि मेरे ही अनुकूल हो।

वह पुरोहित बहुत बुद्धिमान और चालाक था जो तालाश करता २ श्री अमृतसर में आ निकला। यहां गुरु अर्जन देव जी के दरबार के दर्शन किये। गुरु जी का प्रताप देखकर आश्चर्य रह गया। पूछने से पता चला कि गुरु जी का एक बेटा कुंवारा है। जब लड़के का चेहरा देखा तो वह अपना काम निपुण पुरोहित समझ गया कि इससे अच्छा लड़का नहीं मिल सकता।

तब उसने गुरु जी से बात चीत करके रिश्ता पक्का कर लिया। शगन को रीति करके वापिस लौट कर चन्दू को सारी वार्ता कह सुनाई।

जब चन्दू ने सुना तो वह अहंकारी कहने लगा, अब तो जो तुम ने कर दिया है वह ठीक है परन्तु चौबारे की ईट नाली को लगा आये हो।

बस! यह बात जैसे चन्दू के मुंह से निकली तैसे ही इस बात का पता लाहौर के सिखों को लग गया। वे भला अपने गुरु का अपमान कब सहार सकते थे। सब ने इकत्र होकर इस का रिश्ता न लेने का गुरुमता करके गुरु जी के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पास अमृतसर संदेश भेज दिया।

तब गुरु जी ने सिख संगतों का गुरुमता सिर माथे पर मान कर चंदू की लड़की का रिश्ता तथा शगन वापिस कर दिया गया।

उसी दिन से यह दुष्ट चन्दू गुरु का जानी दुश्मन बन तथा अत्याचार करने लगा।

सुलही की मृत्यु

पृथिए ने अपनी बुद्धि, यतन और धन शक्ति से श्री गुरु अर्जन देव जी को मारने या हानि पहुंचाने में लगा दी।

अकबर बादशाह तो बड़ा नीतिवान और पीरों फकीरों से बना कर रखता था। गुरु घर के साथ भी उसकी वही श्रर्दा थी। उसके जीवत पर तो पृथिए की कोई दाल न गल सकती थी। प्रन्तु उस के मरने के पश्चात उस का बेटा जहांगीर गदी पर बैठा तो वह एक मतसबी प्रकृति का आदमी था और दूसरा कुछ राज्य में ऐसे हालात बन गये थे कि वह गुरु के साथ कुछ विरोध रखने लग पड़ा। शेष कोई कसर थी तो वह पृथिए ने पूरी कर दो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक बार पृथिया गुरु जी को बंधी बनाने के लिए एक पठान सुलही खां को ले आया। एक तो गुरु जी को गिरफ्तार करने दूसरा उसके साथ अपनी मित्रता पक्की करने के लिये अपने नगर 'डेरा कोठा साहिब' में ले गया ताकि उसको सेवा तथा खुशामद करके गुरु जी की अवश्य गिरफ्तारी की जावे, परन्तु श्री गुरु तेग बहादुर जी के वाक्य के अनुसार कि—

नर चाहत कुछ और औरे की औरे भई ॥
चितवत रहयो ठगौर नानक फासी गल परी ॥

जब पृथिया सुलही खान को बाहर शिकार खेलने को ले गया। रास्ते में उसका घोड़ा ऐसा डरा तथा उछला कि निकट के एक भठा में सुलही खां को लेकर गिर पड़ा और जल कर राख हो गया।

सुलबी खाँ की मृत्यु

इस प्रकार जब सुलही खां का नष्ट हो गया तो पृथिये ने बहुत कुटिल चालों के यत्नों से सुलही खाँ के भतीजे सुलबी खाँ को गुरु अर्जन देव जी की गिरफ्तारी के लिये ला कर अपने हृदय की ईर्षा रूप आग को शांत करने का व्यर्थ यत्न किया तो उस को जैसे कि उस को मृत्यु ही पंजाब में लेकर आई हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुलबी खां अपने साथ कुछ सिपाही लेकर आ रहा था। जब वह ब्यास नदी पार करने लगा तो वहाँ एक सयद से भेंट हो गई, जिस के साथ आठ दस जवान थे। उसने सुलबी खाँ को पहचान कर कहा, 'खान साहिब आप के चाचा सुलही खां ने मेरे और मेरे साथियों को कई मास की वेतन नहीं दी, इसके बदले आप वेतन दे दीजिए।'

इतनी बात सुन कर सुलबी खाँ ने सयद को बुरा भला कहा, जिस पर उन दोनों में युद्ध हुआ और उस युद्ध में सुलबी खां मारा गया तथा उस के साथी भाग गये। इस से पृथी चन्द की सब आशाओं पर पानी फिर गया।

श्री गुरु अर्जन देव जी के जोति जोत समाने का कारण

श्री गुरु अरजन देव जी को चन्दू स्वाही और समय के यवन बादशाह जहांगीर की आज्ञा से बहुत दुख दे दे कर शहीद किया गया था। जिस का सबर तथा शांति के साथ गुरु जी ने मुकाबला करते हुए शहीदी प्राप्त की। इस का उदाहरण संसार के इतहास में नहीं मिल सकता। इस से पहले कि गुरु जी की शहीदी का वर्णन किया जाए, पहले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शहीदी के कारण पर विचार करना जरूरी है।

यह कितने खेद की बात है कि हम तीन सदियों तक श्री गुरु अरजन देवजी की शहीदीका कारण केवल चन्दूको ही समझते रहे। परन्तु असल बात यह थी कि जहाँगीर बादशाह ने गुरु जी को मारने के लिए चन्दू को एक मात्र बहाना बनाया था।

गुरु जी को शहीद करने का मुख्य कारण जहांगीर था। इसके पश्चात दूसरे नम्बर पर चन्दू और पृथिया था, जो हर समय गुरु जी के विरुद्ध थे।

जहांगीर ने अपनी 'ताजक जहांगीर' नामक पुस्तक में स्वयं अपनी कलम से लिखा है कि मैं (गुरु अर्जन देव की धार्मिक दुकान को नित्य प्रति बढ़ती देख देख कर गुरु अरजन देव को मार देने की चिन्ता में रहता था।

इतहास में लिखा है कि अकबर जहांगीर से नाराज होकर राज सिंघासन अपने दूसरे बेटे खुसरो को देना चाहता था परन्तु ईश्वर को यह स्वीकार न था, क्योंकि कुछ समय के पश्चात अकबर मर गया था।

राज सिंघासन पर जहांगीर बैठा तथा खुसरो ने कुछ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्मचारियों से मिल कर बगावत कर दी, जो सफल न हुई। इस लिये वह भाग कर पंजाब की ओर आ गया।

दूसरी ओर जहांगीर भी उस के पीछे पीछे आ रहा था। वह खुसरो को काबुल पहुंचने से पहले ही पकड़ कर मार देना चाहता था। इतफाक से खुसरो गुरु अरजन देव जी के दरबार में उपस्थित हो गया। गुरु जी ने उस की रुपये तथा छुपने में सहायता की। गुरु जी ने इस पर गुरबाणी के कुछ वाक्य उच्चारण किये—

१] जो शर्ण आवै तिस कंठु लावै ॥
इह बिरध सुआमी सदा ॥

२] भै काहू को देत नहि ॥
नहि भै मानत आन ॥

भाव—न तो किसी को भै देना और न ही किसी का भै मानना।

गुरु जी जानते थे कि इसके पीछे पीछे जहांगीर जैसा जालिम बादशाह इसको पकड़ने के लिए बहुत भारी सेना लेकर आ रहा है, परन्तु यदि गुरु जी खुसरो को पनाह न देते तो गुरु जी के ऊपर लिखे सिद्धांतों की विरोधता होती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थी। इस लिये गुरु जी ने खुसरो के मांगने पर उस को खर्च के लिये पांच सौ रुपया भी दिया।

जहाँगीर के पहुंचने से पहले ही खुसरो आगे जा चुका था, परन्तु जहांगीर ने उसका पीछा कर के जेहलम दरया के निकट पकड़ लिया और लाहौर ला कर कतल कर दिया।

अब पृथिये, चन्दू और गुरु जी के दूसरे विरोधीयों को जहांगीर को भड़काने का मौका मिल गया। उन्हों ने कहा कि गुरु जी ने खुसरो को पनाह तथा पांच हजार रुपया और भागने में सहायता की है। यदि आप पीछे पीछे न आते तो गुरु जी ने खुसरो को आप से मुकाबला करने के लिए फिर त्यार कर देना था।

उन्हों ने इस से भी अधिक बाते कहीं। जहांगीर तो पहले ही गुरु जी को शहीद करने के लिए ऐसे मौंके की तालाश में रहता था। अब उस को वह समय मिल गया। उसने गुरु जी पर राज्य के बागी को पनाह देने का निश्चय करके गुरु जो को लाहौर बुलाने के लिये एक व्यक्ति के हाथ अमृतसर में संदेश भेज दिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु अर्जन देव का शहीदी के लिये लाहौर जाना

[सिक्ख धर्म में पहली शहीदी]

जहांगीर बहुत ही चालाक और मक्कार बादशाह था। उसने जब गुरु जी के सम्बन्ध में कोई सगीन जुर्म न पाया, तो आप तो दिल्ली चला गया और चन्दू को आज्ञा दी कि गुरु अरजन को दुख दे दे कर शहीद किया जाये।

तब चन्दू ने गुरु जी को लाहौर बुलाने के लिए शाही आज्ञा पत्र देकर कुछ आदमी अमृतसर भेज दिये†।

जब उस आदमो ने अमृतसर में आकर गुरु जी को लाहौर आने के लिए शाही हुकम सुनाया तो अन्तर्यामी सतिगुरु सब कुछ समझ गये।

---

†उस समय पृथिया मर चुका था, परन्तु उस का बेटा मेहरबान जो कि अपने पिता की तरह ही गुरु घर के बहुत विरुद्ध रहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसी समय एक बहुत बड़ा आम दीवान किया और बाबा बुढा जी भाई गुरदास जो आदि मुखी सिक्खों को गुरु घर की संभाल कराई तथा साथ यह भी समझा दिया कि हम लाहौर जाकर वापिस नहीं आयेंगे, क्योंकि ईश्वर की ऐसी ही आज्ञा है । बस ! अब सन्गतों का अन्तिम दर्शन है ।

गुरु जी के यह वचन सुन कर सारे दीवान में सनाटा छा गया । सारी संगत माई भाई छमा छम रोने लगे । साहिबजादे हरगोबिंद जी की आंखों से भी परेम के आंसू टपक पड़े । आप की धर्म सुपतनी (श्री माता गंगा जी) के नेत्र भी भाद्रव के बादल की तरह बरसने लगे ।

अन्त में गुरु जी ने सब को धैर्य, शान्ति तथा ज्ञान का उपदेश दिया और आप पांच सिक्खों को अपने साथ लेकर लाहौर के लिए चल पड़े ।

श्री गुरु अर्जन देव जी, भाई जेठा जी, भाई पिरागा भाई बिधिया, भाई पैड़ा और भाई लंगाह को साथ लेकर जब लाहौरपहुंचे तो बादशाह तो यहांसे चला गया हुआ था ।

गुरु जी एक रात भाई सुधु नामक सिक्ख के घर रहे । लाहौर की संगत को अन्तिम दर्शन दे कर दूसरे दिन अपने आप को हाकमों के सपुर्द कर दिया ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी पर अत्यन्त जुल्म

क्योंकि सारी साजश तो पहले से ही बनी हुई थी, केवल रीति मात्र गुरु जी को लाहौर के मुख्य काजी के पेश किया गया, उस ने गुरु जी को दो लाख रुपया दण्ड और जो गुरु ग्रन्थ साहिब में मुस्लमानों के सम्बन्ध में शब्द हैं वह निकाल दिये जाने की आज्ञा सुनाई* । नहीं

---

*श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में किसी खास विरोधता के भाव से तो विरोधता नहीं की गई, परन्तु पाखंड की निखेधी और असलीयत को प्रकट करने के लिए किसी मत को जो विरोधता हो तो वह ठीक है ।

इसी प्रकार और मतों की प्रकार मुस्लमान मत के सम्बन्ध में भी सिक्ख गुरुओं ने बहुत से शब्द उच्चारण किये हैं ।

जैसे कि –

मुस्लमान कहावन मुश्कल ॥
होये त मुस्लमान कहावै ॥
फिर कहा "मिटी मुस्लमान की"

आदि बहुत से शब्द हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो इस्लाम कबूल कर लो तो यह दण्ड माफ कर दिया जायेगा । यदि नहीं तो बुरा तरह दुख दे दे कर मार दिया जायेगा ।

गुरु जी ने सब बातों को समझ लिया हुआ था। उन्होंने दलेरी के साथ सब बातों से इन्कार कर दिया ।

तब दुष्ट चन्दू ने गुरु जी को कहा कि आप अब भी मेरी लड़की का रिश्ता स्वीकार कर लो तो मैं आपको छुड़ा सकता हूं। नहीं तो बहुत दुख देकर मार दूंगा ।

तब गुरु जी ने कहा कि वह सिक्ख संगतों का फैसला है जो मैं कभी नहीं बदल सकता। दूसरा तू मेरे को कैसे मार सकता है । मैं तो अमर जोति हूं। हाँ तू मेरे शरीर को कष्ट देकर दोषी अवश्य बन सकता है, सो बन ला ।

श्री गुरु अर्जन देव जी के कष्ट, शान्ति तथा धैर्य की अडोलता

गुरु जी का पहिला कष्ट—

दुष्ट चन्दू की आज्ञा से सबसे पहले पानी की देग गर्म करके उसमें गुरु अर्जन देव को बैठा दिया और दो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पहर तक इसी प्रकार गुरु जी उस देग में उबलते रहे गुरु जी का शरीर कचालू की तरह गल गया।

थोड़े २ समय के पश्चात काजी भी आता रहा और गुरु जी को ईन मनाने के लिये प्रेरणा करता रहा परन्तु सब व्यर्थ ही रहा।

गुरु जी का दूसरा कष्ट—

अब दुष्ट पुरुष ने गुरु जी को दूसरा कष्ट देना शुरु किया कि एक चूल्हे पर लोह गर्म करके उस पर गुरु जी को बैठने के लिये कहा गया। गुरु जी उस आग की तरह लाल लोह पर पद्मासन लगा कर बैठ गये परन्तु जालिम का मन अब भी भरा। उसने बालू (रेत) गर्म करके गुरु जी के शरीर पर डालनी आरम्भ कर दी जिस से गुरु जी के शरीर को अत्यन्त कष्ट पहुंचे।

कितना भयानक कष्ट था—ज्येष्ठ की गर्मी, सूर्य की तपश, इसके उपरन्त अग्नि की भान्ति लोह तथा रेत। ऐसा जान पड़ता था कि चारों ओर गर्मी ने अवतार ले लिया है। यदि कोई वस्तु शांत थी तो वह था गुरु अरजन देव जी महाराज का केवल हृदय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साईं मीयाँ मीर और गुरु जी का मिलाप

इधर तो यह काम हो रहा था, उधर साँई मीयां मीर जी समाधि में इस्थित सारे संसार को दृष्टि गोचर कर रहे थे, जैसे ही उस ने समाधि में अपने एक मित्र गुरु अरजन देव जी को यह दिशा देखी तो एक दम भागता हुआ गुरु जी के पास आ गया* तथा निवेदन की कि हे मेरे मित्र ! मुझ को आज्ञा दो जो मैं दिल्ली तथा लाहौर की ईण्ट से ईण्ट खड़का (नष्ट) दूं । मुझ को अल्ला ने इतनी शक्ति दी है कि मैं इस अत्याचारी राज्य को जड़ से ही उखेड़ सकता हूं ।

---

*कई लोगों का कहना है कि गुरु जी के इरद गिरद तो सखत पहरा लगा हुआ था, फिर मीयाँ मीर भीतर कैसे चला गया । उसका उत्तर यह है कि साईं मीयां मीर को कौन रोकने वाला था । उसका मुस्लमान जनता पर इतना प्रभाव था कि यदि वह इशारा कर देता तो लाहौर शहर के हाकमों के होश एक दम ठिकाने कर देता ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मीयां मीर की यह बात यह बात सुन कर गुरु जी ने कहा, 'साईं जी। जरा आकाश की ओर देखिये।'

जब मीयां मीर ने अकाश की ओर देखा तो आश्चर्य रह गया, क्योंकि आकाश ब्रम्हा, विष्णु, शिव जी तथा इन्द्र देवता तेतीस कोड़ देवताओं को साथ लिए, हाथ बांध कर गुरु जी से आज्ञा मांग रहे हैं कि गुरु जी आप जरा सा इशारा करके देखो फिर हम क्या कर के दिखलाते हैं। कहो तो इस ब्रम्हांड को ही नष्ट कर दें। परन्तु गुरु जी ऐसा करने की आज्ञा नहीं दे रहे थे।

इस विसमाद दृश्य को देखकर मीयां मीर के मन का जो बड़ा अहंकार था, खतम हो गया। मन में समझ पड़ी कि यह तो स्वयं अल्ला का रूप है। यह तो जो चाहे कर सकते हैं।

तब मीयां मीर गुरु जी की महिमा जानकर उनके चर्णों में गिर कर कहने लगा, 'मैं नहीं जानता था कि आप स्वयं अल्ला का स्वरूप हैं'।

गुरु जी ने कहा, हे साईं जी! हम तो जगत को बता रहे हैं कि शान्ति क्या होती है। ब्रम्हज्ञानी किस को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहते हैं। और सबर की सीमां कहां है†।

महात्मा बुद्ध, हजरत ईसा, महात्मा गांधी जी आदि महाँ पुरुषों ने जो शांति का उपदेश दिया था। उन के जीवनों का मुकाबला गुरु अरजन देव जी के जीवन से कर के जरा देखो। तब आप को मालूम होगा कि गुरु जी की महानता क्या है।

इस प्रकार साईं मीयाँ गुरु जी से परम शान्ति और परम ज्ञान का उपदेश प्राप्त कर के चला गया।

गुरु जी का तीसरा कष्ट—

जब इतने कठिन दुखों से भी गुरु जी पर्वत के प्रकार अडोल रहे तो दुष्ट चन्दू ने एक और अनर्थ करना चाहा। उसने ताजी मरी हुई गाये का चाम ला कर गुरु जी के साहमने रख दिया और कहा कि गुरु अरजन देव जी या तो हमारी सब ईनों को स्वीकार कर लो, नहीं तो हम आप को इस गाये के चमड़े में मढ़वा देंगे।

---

†असल शान्ति या सबर उसको कहते हैं जो अत्यन्त शक्तियों के होते हुए भी शक्ति का प्रयोग न करे। इस प्रकार का उदाहरण आपको केवल सिक्ख इतहास में ही मिल सकेगी और कहीं भी नहीं मिल सकता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब गुरु जी ने समझा कि यह दुराचारी पुरुष धर्म को भ्रष्ट करने पर तुल गया है। यह तो अब जुल्म को सीमा को पार करने पर तुल गया है। न जाने इस के इस भ्यानक जुल्म को देख कर भगवान को क्रोध आ जाये और भगवान जी क्रोध में आ कर जगत की परलो ही न करदे। इस लिए गुरु जी यह विचार कर जगत के लाभ के लिये थोड़ा सा ओर कहा, हमारा मन इश्नान करने को चाहता है।'

गुरु जी के मुख से यह बात सुन कर दुष्टों ने समझा कि गुरु जी अब बोल पड़े हैं, अब अवश्य ईन मानेंगे उसी समय गुरु जी को इन पाँचों सिक्खों के साथ भेज कर तथा कुछ पुलीस वालों को भेज दिया। इस प्रकार गुरु जी रावी नदी पर पहुंच गये।

श्री गुरु अर्जन देव जी का परलोक गमन और अन्तिम शिक्षा

श्री गुरु अर्जन देव जी का शरीर इस प्रकार घावों से भर चुका था कि अब उस में जीवात्मा का रहना असम्भव था गुरु जी ने धीरे धीरे नदी में इश्नान किया। फिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसन बिछा कर बैठ गये तथा श्री जपुजी साहिब का पाठ किया।

पाठ की समाप्ति के पश्चात उन पाँचों सिक्खों को पन्थ के नाम संदेश तथा उपदेश दिया।

"हे गुर सिखो! हे गुरु नानक के प्यारियो! सुनो यह अन्तिम उपदेश जो कि मेरे साहिबजादे हरगोबिन्द को तथा सब सिक्ख संगतों को सुना देना और अब इस पर अमल करना।

याद रखना कि कोई भी धर्म तथा कौम या मजहबी शक्ति के बगैर कायम नहीं रह सकती और न ही उन्नति कर सकती है। इस लिये सिक्ख तथा गुरु नानक देव जी का मन अब उस दर्जे पर पहुंच गया हैं, जहां पर इसके भी शक्ति की आवश्यकता हो गई है।

इस लिए अब सिक्ख धर्म में से दो नियम बदल देने यह कि सेहली टोपी को त्याग कर इसके स्थान पर दसतार और तलवार पहननी। गुरु गदी के स्थान पर अकाल तखत की रचना करनी। सिक्ख सेनाएं त्यार कर इस जालम तथा सामराज के साथ युद्ध करना। यदि ऐसा नहीं करोगे तो यह धर्म नहीं बचेगा। जो भी इस गदी पर बैठेगा, उसको मेरी तरह शहीद कर दिया जायेगा। अब शान्ति तथा सबर की सीमा मैंने समाप्त कर दी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार गुरु जी ने अपने प्यारे सिक्खों को अंतिम उपदेश तथा शिक्षा देकर ज्येष्ठ शुदि ४, १६६३ बिक्रमी को जोति जोत समा गये।

श्री गुरु अर्जन देव जी के जीवन पर एक दृष्टि

श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु नानक देव जी के ही पांचवें रूप कैसे थे ?

इस का उदाहरण इस संसार में तो मिल नहीं सकता और ना ही इन्द्रपुरी ब्रम्हपुरी, शिवपुरी तथा विष्णु पुरी में ये मिल सकता है। वह अपना उदाहरण आप ही थे।

जो शान्ति और सबर का उदाहरण आप ने कायम किया है, उसका उदाहरण संसार भर में कहीं नहीं मिल सकता। आप का रब्बी नूर से भरा चेहरा, लम्बा दाहड़ा कोमल वचन दुनियां भर में प्रसिध है।

एक बाबा श्री चन्द्र जी श्री गुरु नानक देव जी के बड़े बेटे) जो कि उदासीन मत के संचालक थे, आप को मिलने के लिये आ गये। गुरु जी का लम्बा दाहड़ा देख कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगे, आप ने इतनी लम्बी दाहड़ी क्यों बढ़ा रखी है।

आप जैसे बजुरगों तथा महां पुरुषों के पांव साफ करने के लिए। गुरु जी ने उत्तर दिया।

जिस प्रकार गुरु जी आप शांत स्वरूप, परोपकारी थे उसी प्रकार आप के सिक्ख थे। जिन्हों के शुभ नाम इस प्रकार थे—

भाई मंझ जी, भाई बहलो जी, भाई कल्याणा जी, भाई हेमा जी, भाई बुधू जी, भाई संमन जी, भाई मूसन जी आदि मुख्य सिक्ख थे।†

गुरु जी के हृदयमें गुर सिक्खों की सेवा करने का अथाह प्रेम था। कहते हैं जब सब सिक्ख संगत रात के समय

---

†जैसे कि सिक्ख गुरुओं के जीवन एक अदभुत जीवन थे। ऐसे ही उनके सिक्खों के जीवन भी बेमिसाल थे। आप श्री गुरु नानक देव जो से लेकर श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के सिक्खों के जीवन पढ़ना चाहते हो तो इस पते से मंगवाएं—

भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह पुस्तकों वाले
बाजार माई सेवां, अमृतसर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सो जाती तो आप उठ कर संगतों के जोड़े झाड़ते, लंगर के बर्तन साफ करते तथा प्रकर्मा में झाड़ू देते रहते थे, क्यों कि दिन के समय आप को कौन ऐसा काम करने देता।

एक बार आधी रात्रि के समय काबुल से कुछ संगत गुरु जी के दर्शन करने के लिए आ गई। उस समय आप हाथ में झाड़ू लिये लंगर की सफाई कर रहे थे। संगत ने समझा कि कोई गुरु का प्रेमी सिक्ख है जो इस समय भी सेवा कर रहा है। उन्हों ने उस (गुरु जी) से कहा कि हम लोग काबुल से आये हैं और रात्रि को विश्राम करने के लिए कोई स्थान चाहते है, क्योंकि गुरु जी के दर्शन तो प्रातः काल को हो ही सकते है।

धन्य भाग है जो संगत के दर्शन हुए।

गुर सिखा की मोहि धूड़ देह॥
हम पापी भी गति पाहि॥

यह पंक्ति पढ़ते हुए गुरु जी ने उनको पहले अपने हाथों से भोजन खिलाया, फिर उन के जूठे बर्तन साफ किये और विश्राम करने के लिए चारपाईयों का प्रबन्ध किया। इस प्रकार सेवा करने के पश्चात आप ईश्वर की भक्ति में लग गये और संगत सो गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रात: काल जब संगत ने स्नान आदि करके गुरु जी के दर्शन किये तो अश्चर्य चकित रह गये तथा गुरु जी के चर्णों पर गिर कर क्षमा मांगने लगे कि हम पापियों की सेवा करते रहे।

गुरु जी नें कहा, 'ऐसा मत कहो, गुर सिक्खो ! गुर सिक्ख का एक ही स्वरूप होते है और वही पंक्ति उच्चारण की:—

गुर सिक्खा की मोह धूड़ देह ॥
हम पापी भी गति पाहि ॥

धन्य श्री गुरु अर्जन देव जी महाराज ॥
धन्य श्री गुरु अर्जन देव जी महाराज ॥
धन्य श्री गुरु अर्जन देव जी महाराज ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्प्रदाई टीका

श्री जपुजी साहिब

: टीकाकार :

[श्री मान सन्त ज्ञानी कृपाल सिंह जी]

चेला श्री मान १०८ ब्रम्ह ज्ञानी सन्त अमीर सिंह जी

डेरा गली सतो वाली, श्री अमृतसर जी

इस में श्री जपुजी साहिब जी की उथानका, व्याख्या प्रमाण, महातम तथा कथाएं बड़े अच्छे ढंग से दी गई हैं, तुक तुक के संप्रदाई अर्थ, भाव अर्थ दिये गए हैं, कागज डमई, सुन्दर छपाई तथा बढ़िया जिल्द।

मूल्य ५) रुपये।

प्रकाशक :—

भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एण्ड को:

बाजार माई सेवां, अमृतसर।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृतांत
श्री गुरु हरगोबिंद जी महाराज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंसावली श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी

जन्म स्थान	बडाली सहिब [अमृतसर]
जन्म तिथि	आषाढ़ वदि १. १६५२ बिक्रमी
पिता	श्री गुरु अर्जन देव जी
माता	गंगा जी
विवाह	२२ माघ १६७३ बिक्रमी
महल	माता दामोद्री जी, माता नानकी जी माता महां देवो जी
सन्तान	श्री गुरु तेग बहादुर जी, बीबी वीरां बाबा गुरदिता जी, बाबा सूर्य मल्ल जी बाबा अणी राए जी, बाबा अटल राये जी
गुरु गदी	ज्येष्ठ वदि ८, १६६३ बिक्रमी
जोति जोत स्थान	श्री करतार पुर (जालन्धर)
जोति जोत तिथि	चेत्र शुदि ५, १७०१ बिक्रमी
आयु	४८ वर्ष, ९ मास, २ दिन
राज्य	जहांगीर तथा शाह जहान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृतांत श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी

भाई गुरदास जी ने श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी के विश्य में लिखा है कि :–

पंज पियाले पंज पीर छटम पीर बैठा गुर भारी ॥
अर्जन काया पलट के मूर्त हरगोबिंद सवारी ॥

जैसे कि पहले भी कहा गया है कि इस संसार में कोई धर्म कोई कौम और कोई भी जाति कायम नहीं रह सकती तथा न ही उन्नति कर सकती है जब तक कि उनके पास राज्य शक्ति न हो।

इस बात को सिद्ध करने के लिये संसार के इतहास से हजारों उदाहरण मिल सकते हैं। इस संसार में न तो कोई इनसाफ न सच्चाई है, यदि कुछ हैं तो वह शक्ति ही है।

पंजाबी की एक कहावत है कि–

जिस दी लाठी उस दी भैंस ॥

अंग्रेजी में भी एक प्रसिद्ध कहावत है कि–

माईट इज राईट। *Might is right.*

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाव–(ताकत) शक्ति ही सब कुछ है।

इसके सम्बन्ध में निम्नलिखित कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

[१] एक समय यहूदी अरब देश में राज करते थे। सब जातियां उनके अधीन थीं। यहूदियों ने अत्यन्त तरक्की की थी संसार भर में उनका बोल बाला था, परन्तु जैसे ही उनकी राज्य की शक्ति नष्ट हुई तथा राज्य मुस्लमानों और इसाईयों के हाथ आया, तो वह यहूदी कौम जो कि सब दुनियां से सुन्दर विद्वान, धनवान तथा उन्नति तथा हुनर में माहर थी।

वह दिन ब दिन नीचे को जाने लगे, यहां तक कि यहूदी अढ़ाई हजार वर्ष मुसलमानों और ईसाईयों से बुरी प्रकार मार खाते रहे तथा बेइज़त होते रहे।

मुस्लमानों और ईसाइ लुटेरों का जब भी जी चाहता था, वह यहूदियों को मार पीट कर, उन का धन माल लूट लेते, इन को सुन्दर लड़कियों तथा स्त्रियों को छीन कर ले जाते, बेचारे यहूदी चिल्लाते ही रह जाते। संसार में उन की पुकार सुनने वाला कोई न था, यहा तक कि ईश्वर भी उनकी फरयाद नहीं सुनता था।

समय के चक्कर से जब उनके पास राजसी शक्ति आ गई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो अब कोई उन की ओर आंख उठा कर भी नहीं देख सकता। अरब जैसा विशाल देश भी उन से भय खाता है।

[२] इस प्रकार मुस्लमानों, ईसाईयों, पारसियों तथा यूनानियों की कथाएं हैं।

(३) हमारे भारत में आरिया कौम का राज्य था, जिन्हों नेमध्य मंगोलिया से आकर यहां के वासियों पर विजय प्राप्त करके सारे भारत में राज्य स्थापित कर लिया उन्हों ने बहुत उन्नती की। वेदों शास्त्रों जैसी महान रचनाएं की परन्तु जब इसी भारत में बुद्ध धर्म पैदा होकर सारे भारत में छा गया, यहा तक कि निकटवर्ती देशों (चीन जापान, भूटान, नेपाल, तिबत आदि] में भी इसका यश फैल गया।

भारत में उनको गिणतो बीस करोड़ के निकट हो गई उनके तेज तथा प्रताप के साहमने आरिया कौम की शक्ति मात पड़ गई।

सारांश कि बोद्धियों की उन्नति तथा तेज प्रताप उतने समय तक रहा, जब तक उन के पास राजसी शक्ति रही। यूंहो राजसी शक्ति नष्ट हुई, भारत से उन का खातमा होना शुरु हो गया, यहां तक कि उनके अकाश से बातें करने वाले मन्दिर पृथ्वी में धंस गये और बीस करोड़ के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुछ कु अधिक सैंकड़े रह गये ।

(४) हमारे भारत में हिन्दू कौम का बोल बाला रहा तब तक कि जब उनके पास राजसी शक्ति रही । जब उन से राजसी शक्ति छिन गई तथा यवनों के हाथ में आ गई तो सारे भारत में यवनों का तेज प्रताप छा गया, हिन्दू जाति दिन ब दिन अधोगति को जानी शुरु हो गई। लाखों नहीं बल्कि क्रोड़ों की गिनती में हिन्दू मुस्लमान बन गये । यदि कहीं सिक्ख तथा गुरु यवनों से मुकाबला न करते तो यह हिन्दू जाति मुसलमान बन जाती तथा सारे के सारा भारत ही मुसलमान बन जाता ।

बस ! यही नियम अब सिक्ख धर्म पर लागू होने लगा इस लिए सिक्ख धर्म को बचाने के लिए किसी महान परोपकारी तथा शूरवीर योधे की आवश्यकता थी इस लिए ईश्वर ने सिक्ख धर्म को तथा भारत के हिन्दुओं की रक्षा करने के लिये श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को भेजा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी महाराज का जन्म

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का जन्म आषाढ़ वदि १, १६५२ बिक्रमी को बडाली ग्राम में पिता श्री गुरु अरजन देव जी के ग्रहि विखे हुआ।

आपके जन्म की कथा इस प्रकार इतहास में आती है कि गुरु अरजन देव जी के घर बहुत समय कोई बालक न हुआ तो उनके बड़े भाई की पृथिये का स्त्री करमों ने कई प्रकार की बातें करनी शुरु कर दीं, जैसे कि—

अरजन देव जी के घर कोई औलाद नहीं है तथा यह बेऔलाद ही मर जायेंगे और इसके मरने के पश्चात हम ही इस गदी के मालिक बनेंगे आदि।

ऐसी बातों का असर माता गंगा जी के मन में बहुत बुरा पड़ता था। उन्हों ने अपने पति गुरु अरजन देव जी के आगे निवेदन की कि महाराज कोई उपाय कीजिए।

तब गुरु जी ने कहा कि बाबा बुड्ढा जी श्री गुरु नानक देव जी के पूर्ण सिक्ख है, यदि वह वरदान दें तो बालक का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जन्म हो सकता है ।†

यह बात सुन माता गंगा जी कई प्रकार के भोजन बना कर तथा बहुत से सिक्खों को साथ लेकर और स्वयं एक रथ में बैठकर बाबा बुढा जी के पास वरदान लेने को गई।

बाबा जी उन दिनों झबाल ग्राम के निकट बाबा बुढा की बीड़ में रहते थे।

बाबा जी ने दूर से धूड़ उड़ती देखी तो सुभाविक ही मूंह से यह वाक्य निकल गया कि—

'यह रामदास* पुरे को भाजड़ कैसे पड़ गई।'

---

†श्री गुरु अर्जन देव जी तो स्वयं ही ईश्वर का रूप थे, परन्तु वह संसार को बतलाना चाहते थे कि गुरुओं में ही नहीं बल्कि सिक्खों में भी वरदान देने की शक्ति मौजूद है। दूसरा आप गुरु सिक्खों की बढ़ाई कर बहुत प्रसन्न होते थे। विशेष करके आप बाबा बुड्ढा जो की महिमा को संसार में ऊंचा करना चाहते थे।

*श्री अमृतसर जी का उन दिनों में रामदासपुर नाम था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बस फिर क्या था—

साधू का बोलिया सहिज सुभाये ।।
साधू का बोलिया बृथा न जाये ।।

जब इस बात का पता गुरु जी को लगा तो उन्हों ने कहा यह बाबा जी पूर्ण पुरुष हैं । उनका वाक्य कभी वृथा नहीं जायेगा तथा गंगा जी को कहा कि तुम्हें इस तरह नहीं जाना था । जब सन्तों महाँ पुरुषों को मिलने जाओ तो बड़ी नम्रता के साथ जाना चाहिये । वहां अपना शान नहीं दिखानी योग्य होती है । माता गंगा जी ने फिर कहा कि अब क्या करना उचित है ।

गुरु जी ने कहा, 'अब तुम अपने हाथ से चने तथा गेहू को चक्की से पीस कर उसकी रोटी भी अपने हाथ से बना कर लस्सी लेकर तथा नगे पांव बाबा जी के पास जाओ। तब वह अवश्य ही वरदान देंगे ।

माता गंगा जी ने ऐसा ही किया तथा बाबा जी ने रोटी खाते हुए एक प्याज को तोड़ा और कहा कि माता जी जैसे मैंने यह प्याज तोड़ा हैं, ऐसे ही तुम्हारा पुत्र तुर्कों के सिर फोड़ेगा तथा तुर्कों को नष्ट करेगा ।

बस ! इस प्रकार बाबा बुड्ढा जी के वरदान से श्री गुरु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरगोबिंद जी का जन्म हुआ।

पृथिये के गुरु हरगोबिंद साहिब जी को बालक अवस्था में मारने के असफल यत्न

(१) ग्रन्थों में लिखा है कि काग क्या नहीं खाता और दुष्ट क्या नहीं करता। इस लिए इस नियम के अनुसार पृथिये ने बाल गुरु को मारने का पहला कुकर्म यह किया कि जहां पर गुरु जी खेलते थे, वहां पर एक सपेरे को धन का लोभ देकर एक बहुत जहरीला सांप छोड़ दिया।

बाल गुरु ने उस सांप को पकड़ कर मुंह में डाल कर चबाना शुरु कर दिया। जैसे ही सेवक ने देखा कि गुरु जी सांप की सिरी चबा रहे थे।

तब सेवक ने भाग कर बाल गुरु जी के हाथ से सॉप को छुड़ा कर दूर फैंका और गुरु अरजन देव जी तथा माता गंगा को पता लगा और भी सिक्ख संगत इकठी हुई तथा सब को मालूम हो गया कि यह पृथिये को शरारत है।

[२] एक बार पृथिये ने बाल गुरु खिलावे को जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि एक ब्राह्मण था, पांच सौ रुपया देकर दहीं में विष मिला कर खिलाने को कहा, परन्तु उसका भी सब को पहले ही पता चल गया था।

जब ब्राह्मण बाल गुरु को गोद में लेकर दहीं खिलाने लगा तो गुरु जी ने चिल्लाना शुरु कर दिया। गुरु अर्जन देव जी ने ब्राहमण से दहीं छीन कर एक कुत्ते को डॉल दी जो कि खाते सार ही मर गया।

(३) इस प्रकार पृथिये ने गुरु हरगोबिन्द साहिब को मारने के लिए और भी बहुत यत्न किये, परन्तु वह सब ही असफल रहे।

कहते है कि पृथिये की स्त्री करमों ने अपने पति से कहा कि तुम्हारे भाई का बेटा तो मर न सका। आप के सब यतन निःसफल गये हैं।

पृथिये ने यह बात सुन कर हरगोबिंद को श्राप दे दिया कि* यह तो शीतला (चीचक) का खाजा है।

उसी दिन से बाल गुरु को शीतला निकल आई,

---

*पृथिया था तो बहुंत बुरी प्रकृति का, परन्तु गुरु अंश होने के कारण कुछ कुछ श्राप देने की शक्ति हो सकती थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परन्तु श्री गुरु अरजन देव जी ने इस विषय में एक शब्द उच्चारण किया जिस से शीतला जाती रही और साथ ही गुरुजी ने यह आज्ञा दी कि यदि किसी को शीतला निकले तो यह शब्द सुनाने से शीतला का जोर नहीं चल सकेगा।

(४ जब बाल गुरु शीतला से बच निकले तो पृथिये ने बुखार का श्राप दे दिया। उस के सम्बन्ध में भी गुरु अर्जन देव जी ने एक शब्द उच्चारण किया, जिस से बुखार का कोई असर न पड़ा।

पृथिये की मौत

अंत पृथिया बाल गुरु को मारता स्वयं मर गया। एक दिन वह गुरु अर्जन देव जी की शिकायत लगाने लाहौर बादशाह के पास जाते हुए अपने एक प्रेमी के यहां ठहरा। उस प्रेमी ने उसको बहुत सेवा की। जब वह रात्रि को सोने लगा तो उस के पेट में बहुत दर्द हुई जिस से उस की मृत्यु हो गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी को गुरु गदी तथा मीरी पीरी की प्राप्ति

श्री गुरु अरजन देव जी जब लाहौर में रावी नदी के तट पर जोति जोत समा गये थे वह अमृतसर से जाते समय बाबा बुड्ढा जी तथा भाई गुरदास आदि सिक्खों को बाल गुरु हरगोबिंद की सम्भाल के लिए भी कह गए थे। साथ ही गुरु गदी भी दे गए थे। उस समय बाल गुरु की आयु केवल बारह वर्ष की थी। परन्तु गुरु गदी की रसम अभी नहीं की थी।

गुरु अरजन देव जी के शहीद होने के कुछ समय पश्चात पहले गुरुओं के नियमानुसार गुरु गदी की रीति बाबा बुड्ढा जी ने करनी थी।

जब गुरु हरगोबिंद जी को गदी पर सुशोभित कर के तथा टीका आदि लगा कर सेहली टोपी देने लगे तो गुरु जी ने कहा कि बाबा जी, क्या आप पिता जी का वचन भूल गए। जो इसके स्थान पर अब तलवारें पहननी है।

यह बात सुन कर बाबा बुढा जी ने गुरु जी के गले में जब तलवार पहनाई तो वह बजाए बायें हाथ के दायें हाथ में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पड़ गई तथा बाबा जी उसको उतार कर दूसरी ओर करने लगे तो गुरु जी ने कहा, 'बाबा जी ! अब यह रहने दीजिये तथा एक और दूसरी ओर पहना दीजिये एक मीरी की और एक पीरी की हो गई।

इस प्रकार दो तलवारें पहनकर गुरु हरगोबिंद साहिब जी मीरी पीरी के मालिक कहलाये।

श्री गुरु अरजन देव की आज्ञा के अनुसार यह सब कारवाई की गई थी।

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी के आज्ञा पत्र [हुकमनामा]

{माला के साथ तलवार}

श्री गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी ने गुरु गदी पर बैठते ही मीरी पीरी की दो तलवारें पहनकर गुरु के सब सिक्खों को आज्ञा पत्र भेज दिये कि सब सिक्ख बढ़िया २ शस्त्र ले कर श्री अमृतसर पहुंचें।

बस ! गुरु जी का आज्ञा पत्र देखते ही सब सिक्ख शस्त्र

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेकर श्री अमृतसर पहुंचने लगे। बहुत सी भीड़ लग गई, जिस ने सेना का रुप धारण कर लिया।

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी तथा सिक्ख गुरुओं का ही यह काम था कि उस समय सिक्ख सेनाए त्यार कर ली, जब कि दिल्ली के तख्त पर शक्तिशाली, मतसबी तथा जालिम बादशाह जहांगीर बैठा हुआ था। जिस ने श्री गुरु अर्जन देव जी को शहीद करवा दिया था तथा गुरु घर के साथ सखत ईर्षा करता था।†

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने सब से पहले धर्म

---

†जो लोग आज कल शान्ति २ का आदर्श पुकारते हैं, यदि उन का वाह उस समय के यवन राज के साथ पड़ता तो मालूम होता। गुरुमति में शान्ति आदर्श नहीं, परन्तु एक तरीका है कि किसी जालिम का टाकरा करने का यह तरीका फेल हो जाए तो फिर गुरुमति के अनुसार दूसरा ढंग तलवार का है। महात्मा बुद्ध हजरत ईसा और महात्मा गांधी जी की जो शान्ति को अन्तिम आदर्श मानने का सिद्धांत हैं। इनका उस समय के जालिम यवन राज्य के साहमने कुछ भी भाव नहीं रह जाता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर मिटने वाले सिक्खों की एक बहुत ही शक्तिशाली सेना त्यार कर ली जिस की संख्या पांच हजार की थी।

गुरु जी के विवाह

कुछ समय के पश्चात गुरु हरगोबिन्द साहिब जी के तींन विवाह हुए जो इस प्रकार थे :—

(१) पहला विवाह भाई नारायण दास डल्ला के निवासी की पुत्री दामोदरी जी के साथ हुआ, जिस के गर्भ से बा. गुरदित्ता जी, अणी राये जी और बीबी वीरो का जन्म हुआ।

[२] दूसरा विवाह बावे बकाले, भाई हरी चन्द की बेटी श्री नानकी जी के साथ हुआ, जिसके गर्भ से अटल राय जी और श्री गुरू तेग बहादुर जी पैदा हुए।

(३) तीसरा विवाह मण्डियाली के भाई दया राम जी की बेटी श्री महाँदेवी जी के साथ हुआ. जिस के गर्भ से सूर्य मल्ल जी पैदा हुए।

इस प्रकार गुरु जी के विवाह और बेटों का विस्थार नहीं किया गया, क्योंकि गुरु जी की जीवन कथा में यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हालात तो आ ही जायेंगे । शेष जो पाठक विस्थार पूर्वक पढ़ना चाहे तो वह मेरी लिखी हुंई पुस्तक 'सिक्ख जीवनीयां' पढ़ कर देखें ।

यवन राज्य के साथ विरोधता का आरम्भ

जब यवन राज्य के साथ लोहा लेने के लिए श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने एक शक्ति शाली सिक्ख सेना तैयार कर ली तो गुरु घर के विरोधीयों ने पृथिये का बेटा मेहरबान दीवान चन्दू और भी बहुत से काजीयों) पहले तो लाहौर के सूबे को गुरु जी के विरुद्ध भै करा दिया कि गुरु जी ने बादशाह के साथ युध करने के लिए बहुत सी सेना त्यार कर ली है। इसके पश्चात दिल्ली के बादशाह (जहांगीर) को भी भड़काना शुरु कर दिया ।

इधर गुरु जी भी सब कुछ जानते थे, इस लिए उन्हों ने भी गुर सिक्खों को हर समय मरने मारने के लिये त्यार बर त्यार कर रखा था ।

गुरु जी के विरोधियों ने जहाँगीर को यहाँ तक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निश्चय करा दिया था कि यदि गुरु हरगोबिंद जी को अभी से ही काबू न किया गया तो वह शाही सेना के साथ टक्कर लेनेके योग्य हो जायेंगे। इस लिये उनको और अवकाश देना भारी भूल तथा शाही सेना के लिये अत्यन्त हानी कारक साबत हो सकती है।

इस प्रकार बादशाह के साथ मिलकर गुरु जी को शहीद करने या पकड़ कर आयु प्रयंत कारागर में डालने के षडयंत्र किये जा रहे थे परन्तु गुरु जी जो—

घट घट के अन्तर की जानत ॥
भले बुरे की पोर पछानत ॥

वह हर हालत और मुशकिल का मुकाबला करने के लिये हर समय त्यार रहते थे।

गुरु जी का दिल्ली जाना

लाहौर के सूबे के दवारा जहांगीर के पास गुरु जी के सम्बन्ध में सारी रिपोर्ट पहुंचाई गई। शेष जो कमी थी वह दीवान चन्दू ने पूरी कर दी जो कि जहांगीर का एक मन्त्री था। उसने बादशाह को यहाँ तक कह दिया कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु हरगोबिंद जी अपने पिता श्री गुरु अर्जन देव जी का बदला आप से लेने का प्रण कर चुके हैं। गुरु जी ने इस बात की सौगन्ध सब के साहमने खाई है।

इन सब बातो का जहांगीर के मन पर ऐसा प्रभाव हुआ कि उस ने गुरु जी को बुलवाने के लिए गुंच खां और वजीर खां को अमृतसर भेज दिया और ताकीद कर दी कि जैसे भी हो सके गुरु जी को लेकर ही आना।

वजीर खां जहाँगीर का खास सलाहकार मन्त्री था। वह इस पर बहुत विश्वास करता था, परन्तु यह वजीर खां गुरु घर पर भी बहुत श्रद्धा रखता था और बहुत भला पुरुष तथा ईश्वर को मानने वाला आदमी था। इसने अमृतसर आकर जब गुरु जी के तेज प्रताप को देखा तो हैरान रह गया। गुरु जी के दर्शन कर के इस के मन को शान्ति सी प्राप्त हो गई। उस के पश्चात इसने वह वही शाही प्रवाना सुनाया जो कि सब सिक्ख संगतों के एक बहुत बड़े दीवान में भी सुनाया गया था।

वजीर खां ने बहुत निमृता से निवेदन की। जिस पर अंतर्यामी गुरुजी अमृतसर में जो मुखी सिक्ख थे उनको हर प्रकार की नीति निपुन्य बातें समझा कर तथा अपने साथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पचास साठ योधे सिक्ख लेकर वजीर खां के साथ दिल्ली पहुंच गए। उस समय गुरु जी की आयु २१ वर्ष की थी।

जहांगीर ने कई प्रकार से गुरु जी पर प्रभाव डालना चाहा परन्तु सफलता ना हो सकी।

जहाँगीर ने श्री गुरु अर्जन देव जी को निर्दोष शहीद किया था, अन्दर ही अन्दर उसकी आतमा उसको धिक्कार दे रही थी। इस लिए वह अपनी गल्ती को फिर नहीं दुहराना चाहता था, परन्तु वह गुरु जी को छोड़ना भी नहीं चाहता था। गुरु जी को हानि पहुंचाने या किसी प्रकार फांसने के ढंग ढूंड रहा था। वह गुरु जी को आगरे में भी आपके साथ ले गया, परन्तु सफलता न हुई।

एक सिक्ख की श्रध्दा का प्रभाव

आगरा नगर में श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी और जहांगीर बादशाह के खेमे साथ साथ लगे हुए थे। एक बहुत निर्धन सिक्ख ने जहांगीर बादशाह के पहरेदारों से पूछा कि सच्चे पातशाह का कौन सा डेरा है। उन्होंने समझा कि जहांगीर को ही पूछता होगा, इसलिये उन्होंने जहांगीर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किया तथा सिक्ख सीधा बादशाह के पास चला गया और उसके चरणों पर टका (दो पैसे) रख कर (भेंट करके) मस्तक झुका दिया।

जहांगीर ने एक निर्धन आदमी के मन में राज्य की भक्ति समझकर कहा, 'मांगो क्या माँगना चाहते हो।'

सिक्ख ने कहा सच्चे पातशाह जी, मुझ को नाम दान दीजिए और कुछ नहीं चाहता।'

जहांगीर समझ गया कि यह भूल कर मेरे पास आ गया है। यह तो श्री हरगोबिंद साहिब के पास जाना चाहता था। तब बादशाह ने कहा, नाम दान देने वाला तो कोई दूसरा है।'

यह सुन कर सिक्ख सब बात समझ कर मन में बहुत पशेमान हुआ कि मेरा सिर एक झूठे बादशाह के आगे क्यों झुक गया ? उसी समय सिक्ख ने कहा, 'वह मेरा टका दे दो, मैं ने तो अपने गुरु जी के चरणों में भेंट करना है।

बादशाह ने कहा, 'यह तो तेरा ताँबे का टका है, तू ले सोने का टका' [पाऊंड] ले जा, 'गुरु को भेंट करने के लिये।'
तब सिक्ख ने कहा, हे बादशाह! आप के लाखों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोने के टके इस टके से तांबे के मुकाबला नहीं कर सकते, क्यों कि आपके सोने के टके लोगों से कर के रुपमें लोगों को दुख पहुंचा २ कर लिये गये हैं, परन्तु यह टका हक्क की कमाई का हैं। यह बात कह कर सिक्ख टका ले कर चला गया और जाकर गुरु जी की भेंट कर दिया।

उधर बादशाह सिक्खों की इतनी दृढ़ श्रद्धा को देख कर हैरान रह गया और गुरु जी के आश्चर्य की महानता से भय महसूस करने लगा।

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी को जहाँगीर ने गवालियर के किले में कैद करना

बादशाह के मन के झुकाओ को जान कर कई गुरु द्रोहियों ने जलती आग में तेल डाल दिया।

दीवान चन्दू ने कहा, हे बादशाह सलामत! इसका अभी से ही कोई प्रबन्ध न किया गया तो यह पंजाब में शक्ति पकड़ कर राज्य के लिए भारी खतरे का कारण बन जायेंगे और भी बहुत सी बातें कह कर बादशाह को गुरु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी के विरुध्द कर दिया। जिस पर जहांगीर ने पंजाब के सिक्खों और दूसरे लोगों के जजबे तथा गुरु जी की शक्ति का अनुमान लगाने के लिये गवालियर के किले में बन्द कर के भजवा दिया।†

जहांगीर बादशाह बड़े सख्त सुभाव और विशेष कर के अपने विरोधियों के लिए तो बहुत ही बुरा वर्तांव करने वाला मनुष्य था। उस ने गवालियर के किले में बावन (५२ राजे कैद कर रखे थे। जिस में अधिकतर राजपूत और मरहटे ही थे। यहाँ ही गुरु जी को बारह वर्ष के लिये नजरबन्दी की आज्ञा सुना कर भेज दिया।

उधर दुष्ट चन्दू को इशारा कर दिया कि वह किसी तरह साजश करके गुरु जी को यहां किले में ही मरवा डाले परन्तु वह सिरे न चढ़ सकी, क्योंकि चन्दू ने वहां के हरिदास नाम

---

†कई इतहासकारों ने लिखा है कि बादशाह बिमार पड़ गया था तथा कुछ ज्योतिषियों ने कहा कि यदि गुरु हरि-गोबिंद साहिब जी गवालियर के किले में बेठ कर चालीसे काटें तो आप निरोग हो सकते हैं जिस पर गुरु जी को इस के लिये निवेदन की गई, परन्तु यह बात ठीक नहीं मालूम देती, वास्तव में गुरु जी को कारगार में ही भेजा था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के दरोगे को कहा था. परन्तु उस के मन पर गुरु जी की महान शखसियत का प्रभाव पड़ चुका था।

जब से गुरु जी किले में गये, तब से वह नरक रूप कारागार गुरु जी के प्रवेश करने से एक स्वर्ग का नमूना बन गया था और सब राजे गुरु जी के श्रध्दालु बन गये थे।

पंजाब में भड़काहट

बादशाह जहांगीर बहुत मक्कार आदमी था उसका विचार था कि श्री गुरु अर्जन देव जी की तरह ही किसी तरह गुरु हरगोबिंद साहिब जी महाराज को भी शहीद कर दिया जाए या किले में ही किसी साजश द्वारा या यदि पंजाब में कोई ऐसी विशेष बात न हुई तो इस को इस के पिता की प्रकार ही शहीद करवा देंगे, परन्तु जहांगीर की यह तजवीज सिरे न चढ़ सकी, क्यों कि पंजाब में बहुत भयानक ऐजीटशन शुरु हो गई। सिक्खों पें ही नहीं बल्कि बहुत मुसलमानों और हिन्दुओं में भी बहुत शोक मनाया गया। मीयाँ मीर जैसे कई फकीरों ने भी जहाँगीर को गुरु जी को अजाद करने पर जोर दिया। अन्त जहांगीर को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुत जल्दी बाबा बुड्ढा जी तथा भाई गुरदास जी को गुरु जी से मिलने की आज्ञा दे दी, जो कि पहले गुरु जी को मिलने की किसी को आज्ञा न थी।

थोड़े ही समय के पश्चात जहाँगीर ने गुरु जी को आजाद करने का हुक्म जारी करना पड़ा।

जब गुरु जी को रिहा करने का शाही हुकम पहुंचा तो वहां जो ५२ राजे कैद थे, वह फूट फूट कर रोने लगे कि हे सतिगुरु! हमारा क्या हाल होगा। आप कृपा कर के हमारी रिहाई का कोई उपाय करो।

जब गुरु जी ने उनकी यह दिशा देखी तो रिहा होने से इनकार कर दिया और कहा कि जब तक इन सब राजाओं को रिहा नहीं किया जायेगा, मैं भी नहीं जाऊंगा।

तब जहांगीर ने कहा, 'जितने राजे आप के चोले की कलियाँ पकड़ कर बाहर आ सकें आ जायें।

तब गुरु जी ने बावन कलियों वाला एक चोला सिलवा कर गले में डाल लिया और एक एक कली पकड़ कर सब राजे बाहर आ गये तथा हरगोविंद साहिब जी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करते हुए अपने घरों तथा परिवारों में चले गये ।*

यह घटना १६७४ बिक्रमी की है ।

बोल दाता बन्दी छोड़ की जय ।

चन्दू की भयानक रूप में मौत

कहते हैं कि सियास्त में सब कुछ योग्य होता है गुरु जी जब ५२ राजाओं को भी साथ ही बाहर ले आये तो यह जहांगीर के लिये एक नया सिर दर्दी का कारण बन

---

*जिस दिन गुरु हरिगोविंद साहिब जी ने इन ५२ राजाओं को छुड़वाया, उस दिन से गुरु जी का नाम 'दाता बन्धी छोड़' पड़ गया, जो कि गवालियर के लिये में एक बहुत बड़े तखते पर यही शब्द लिखा हुआ है। जो सिक्ख संगत तथा कोई और यात्रु जाते हैं तो वह उस तख्ते के दर्शन कर के बहुत ही प्रसन्न होते हैं ।

लेखक ने भी उस शुभ स्थान के दर्शन किये है, जो कि गवालियर के किले में अब तक श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी का यश गा रहा है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गया कि कहीं गुरु जी उन राजाओं को साथ लेकर बगावत का उपद्रव ही न खड़ा कर दें। इस लिए उसने अपने मनको एक दम बदल लिया और गुरु जी के साथ बहुत ही श्रध्दा भाव का बर्ताव करने लगा, बल्कि गुरु जी को एक हजार सैनिक तथा सात तोपें रखने का अधिकार देना चाहा। परन्तु गुरु जी ने कहा हम किसी का दिया हुआ अधिकार नहीं लेले। हमें तो जो ईश्वर को आज्ञा हागो उसी के अनुसार चलेंगे।

यह बात सुन कर जहांगोर बहुत भयभीत हो गया, यहां तक कि उसने गुरु गुरु अर्जन देव जी को शहीदी से भी अपने आपको निर्दोष साबत करके चन्दू को गुरु जी के सुपुर्द कर दिया। गुरु जी सब जानते थे परन्तु चन्दू को भी तो उसके कुकर्म का दण्ड देना था। वहां चन्दू को लेकर श्री अमृतसर में आ गये।

उस दिन गुरु जी के स्वागत में भारी उत्साह किया गया। दीप माला और आतशबाजी चलाई गई।

कुछ समय के पश्चात दुष्ट चन्दू का फैसला करना था। सब संगत से राय ली गई कि इसे क्या दड दिया जाये। संगतों में चन्दू के लिये असह शोक था। चन्दू को देखते ही सब का क्रोध भड़क उठा, परन्तु गुरु जी का विचार हुआ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि इसको क्षमा कर दिया जाये। परन्तु संगतों के बेहद जोश के साहमने कुछ न हो सका।*

दुष्ट चन्दू को मारते पीटते सीधा लाहौर ले आये और वहाँ गली गली बाजारों में नाक में नकेल डाल कर फिरते रहे। जब इस दुष्ट पुरुष को उस स्थान पर लेकर पहुंचे जहां गुरदिता मल भड़पूंजा था। जिस से जबरदस्ती इस ने गुरु अर्जन देव जी के शरीर पर गर्म रेत डलवाई थी। उस इस दुष्ट को देखते ही इतने जोर से कड़छा मारा कि उसका सिर फट गया और वहां पर ही उसकी मृत्यु हो गई।

* *
*

---

*इतिहास में लिखा है कि जब दुष्ट चन्दू को दिल्ली से अमृतसर पैदल लाते समय भाई गुरदास जी तथा बाबा बुढा जी आदि गुर सिक्खों ने सारे मार्ग में गुरु जीके निकट ही नहीं आने दिया तथा दूर दूर ही रखते रहे कि कहीं गुरु जी दयालता में आकर उस को छोड़ देने की आज्ञा ही न दे दें। भाव यह होता है कि महां पुरुषों के हृदय में किसी के लिये वैर विरोध की भावना नहीं होती।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माता कौलाँ का प्रसंग

गुरु हरिगोबिंद साहिब जी दुष्ट चन्दू का नाश करके श्री ननकाने साहिब आ कर गुरु नानक देव जी के स्थानों की देख भाल और मुरम्त करवाई। वापिस आकर कुछ देर लाहौर में ठहरे।

जब वह लाहौर ठहरे हुए थे कि वहां एक आश्चर्य जनक घटना हुई। एक क़ाबुल के सिक्ख ने एक बहुमूल्य दरयाई घोड़ा सुनहरी काठी समेत, जिसका कई हजार रुपया मोल था, गुरु जी के लिए ला रहा था कि रास्ते में लाहौर के सूबे ने अपने सैनिक भेज कर वह घोड़ा छीन लिया।

तब उस सिक्ख ने के हमारा लाहौर में गुरु दरबार में उपस्थित होकर गुरु जी के हज़ूर में निवेदन की कि गुरु जी मैं उसी घोड़े पर स्वारी करते हुए आप को देखना चाहता हूं, जो कि उस सूबेके पास है, जिसने मुझसे छीना है।

इतना सुन कर गुरु जी ने उस सिक्ख को कहा, जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।

उधर वह घोड़ा सख्त बिमार हो गया, बहुत यतन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करने से भी कोई लाभ न हुआ अन्त में सूबे ने वह घोड़ा शाही क़ाजी को दे दिया और कहा कि शायद मुकदर से यह घोड़ा बच जाये।

जब काजी घोड़ा लेकर अपने घर की ओर जा रहा था कि रास्ते में गुरुजी का डेरा था। गुरुजी ने एक सिक्ख को भेज कर उस काजी को बुलाया तथा घोड़े का मूल्य पूछा। काजी ने पांच हजार रुपया माँगा।

गुरु जी ने कहा, तुम पांच दिन के पश्चात आ कर रुपये ले जाना।

काजी गुरु जी को काठी समेत घोड़ा दे कर चला गया गुरु जी की कृपा से दो तीन दिन में उसी प्रकार बलवान हो गया और गुरु जी ने उस सिक्ख को घोड़े पर सवार हो कर दर्शन दे कर उस के मन को शांत किया।

गुरु जी ने घोड़े के रुपये देने नहीं थे, क्योंकि सिक्ख की इच्छा थी कि मोल न दिया जाये। काजी फेरे मारता तलख हो गया, एक दिन सूबा ही आ गया। बाबा बुढा जी के साथ काजी का झगड़ा हो गया।

काजी ने कहा, "मैं तो गुरु जी से दामाद बन कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुपये वसूल करूंगा।

यह बात सुनते ही बाबी जी के मंह से भी वाक्य निकल गया, तू क्या गुरु जी तेरे दामाद बनेंगे।'

काजी तो झगड़ता हुआ चला गया और गुरु जी ने कहा, 'बाबा जी आप का यह वाक्य तो सत्य हो कर रहेगा।'

बस फिर क्या कहते हैं कि गुरु जी मोहीनी रूप धारन करके काजी की लड़की कौलां को ले आये और अमृतसर को चल पड़े। पीछे से काजी को गुरु जी के जाने का तो लग गया परन्तु यह पता न लगा कि उस की लड़की भी गुरु जी के साथ चली गई है। काजी एक तेज घोड़े पर सवार होकर भागता हुंआ छहरटे साहिब के निकट गुरु जी को मिल गया तथा बहुत क्रोधित होकर बातें करने लगा।

गुरु जी ने कहा, 'चलो अमृतसर चल कर रुपये गिन कर ले लो।'

वह रुपये की बात सुन कर कुछ नर्म हुआ। जब वह काजी अमृतसर पहुचा तो सारा भेद मालूम हो गया कि गुरु जी घोड़े के साथ लड़की को भी ले आये हैं तो काजी ने लाहौर पहुंच कर सूबे को बहुत बहकाया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कौलाँ की यादगार

इतहास में लिखा है कि जब माता कौलां जी अमृतसर में पहुचे तो उसको अलहदा मकान दिया गया। उन को नौकरानी रख दी गई। कौलाँ का पिता जब घोड़े के रुपये लेने के लिये आया तो उस को कौलां जी के मकान पर खाना खाने भेजा गया नौकरानी ने खाना काजी के आगे रखा तथा खाना शुरु किया। तब कौलां उस के साहमने सुन्दर २ वस्त्र पहन कर घूमने लगी। काजी ने समझा कि किसी बहुत बड़े तुरक की स्त्री है जो इतने सुन्दर वस्त्र पहन कर घूम रही हैं। जब काजी भोजन कर चुका तथा एक ग्राही ही थाल में रह गई तो कौलां दो रोटियां लेकर और काजी को कहने लगी, अबा जान (पिता जी) और रोटी चाहिये।

बस, जैसे ही काजी ने नजर भर कर देखा तो आश्चर्य रह गया। मुंह की ग्राही मुंह पें ही रह गई।

वह उसी समय लाहौर वापिस चला गया और जाते ही सूबे के पैरों पर पगड़ी रख दी तथा चिला चिला कर पुकार करने लगा, हे माई बाप अन्धेर है अन्धेर। जनाब गुरु हरिगोबिंद साहिब मेरी लड़की को उठा कर ले गये हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दया कीजिए 'माई बाप ।'

यदि वहां गुरु जी का श्रद्धालु वजीर खाँ न होता तो सूबे ने उस समय गुरु जी पर हमला कर देना था ।† उसने शीघ्रता से कदम उठाने से रोक दिया तथा ठण्डे हृदय से विचार करने के लिए कहा ।

उसके पश्चात इधर कौलां जी ने इशारे से गुरु जी से एक बार खाहश जाहर की कि मेरी इस संसार में कोई याद गार नहीं है। मरने के पश्चात मेरा कौन नाम लेगा ।

तब गुरु जी ने उस के मन की बात समझ कर उसे एक तो ब्रम्ह ज्ञान का प्रकाश करके शांत, सबर का दान दिया । दूसरा उसके जीवित ही उस की याद में एक तालाब बनवा दिया । जिसका नाम कौलसर रखा गया, जो अब तक

---

†यह तो श्री हरगोबिंद साहिब जी की निरभता थी, क्योंकि गुरु जी चाहते थे कि किसी प्रकार से शाही सेना के साथ टक्कर ली जाए । आप समय को व्यर्थ नहीं गंवाना चाहते थे, क्योंकि गुरु जी ने अपनी ओर से जंग की सारी तयारी कर रखी थी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाबा साहिब के साथ शोभायमान हो रहा है।*

बोल श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी की जय

हाँ! गुरु जी ने कौलाँ को कहा कि यह तेरी यादगार प्रलय काल तक कायम रहेगी। उसके पश्चात माता कौलाँ जी १६८५ बिक्रमी को श्री करतार पुर में प्रलोक गमन कर गये और गुरु जी ने अमृतसर में १६६५ बिक्रमी को विवेकसर तालाब की रचना की थी। गुरु ज़ी ने गुर सिक्खी के प्रचार के लिए बहुत से काम किये।

---

*कई इतहासकारों का कहना है कि यह काजी की लड़की गुरु जी की बाणी सुन कर और तेज प्रताप देख कर सिक्ख बनी थी, जिसको काजी कुफुर फतवा लगा कर मरवा देने का विचार कर ही रहा था। काजी ने अपनी पत्नी से बात की उसकी पत्नी ने अपनी लड़की की जान बचाने की गरज से कौलां को बता दिया और गुरु जी के साथ ही जाने का समय तथा राए दी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माता भाग भरो का प्रसंग
[काशमीर की यात्रा]

कहते हैं कि काशमीर में भाग भरी नाम की बूढ़ी माई जो अपने हाथ से कात बुन्न कर खादी का एक चोला लेकर अमृतसर में आकर गुरु जी की भेंट करती थी। अब बुढ़ापे कारण न आ सकी। तो मन में ही गुरु जी की अराधना करने लगी, हे सतिगुरु जी! अब मैं बुढ़ापे के कारण आप की सेवा में उपस्थित नहीं हो सकती, सो आप स्वयं आकर अपनी यह भेंट स्वीकार कीजिए।

तब गुरु जी ने उसके मन की इच्छा जान कर उस के पास काशमीर में ही पहुंच कर तथा चोला पहन कर उस माई को ज्ञानामृत प्रदान किया।

वहां से लौटते समय गुरु जी, बारामूले, गुजरांवाला, वजीराबाद, निडाली आदि नगरों की संगत को तारते हुए अमृतसर वापिस पहुंच गये।

***

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री नानकमते की यात्रा

गुरु जी को सूचना मिली कि जो नानक मते गुरद्वारे में गुरु नानक देव जी की यादगार का पीपल है। उस को कुछ कान फटे योगियों ने जला दिया है और वहा के महन्त माल मस्त को मार पीट कर भगा दिया है।

गुरु ज़ी ने सुनते ही बीस योधे सिक्खों को ले कर योगियों को सुधाई के लिए चल पड़े, परन्तु वह योगी गुरु जी के आने की खबर सुन कर भाग गये।

गुरु जी ने वहां पीपल को हरा भरा करके गुरदवारे की मुरम्त आदि करवा के उसी महन्त को स्थापन करके वापिस लौट आए।

रास्ते में डेहरादून, चीना गढ़ आदि नगरों का दौरा करते हुए दिल्ली तथा मालवे प्रांत में गये। फिर श्री कोरत पुर में बहुत बड़ा स्थान बनवाया। मालवे देश में सिंधू बराड़ खानदान के लोग बहुत कमजोर थे। उन को वरदान दिया कि वह सब सरदार होंगे।

इस के पश्चात आपने भाई रूप नगर, भाई बागड़िया नगर आदि वसाया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाई गुरदास जी की परीक्षा

वैसे तो अपने २ स्थान पर सभी विकार तथा जबगुन मनुष्य की तबाही और प्रमार्थ के मार्ग में प्रतिबधिक है परन्तु जो अहंकार तथा हऊमैं विकार है, शास्त्रों तथा गुरुबाणी में इसको बहुत बड़ा मानसिक रोग वर्णन किया गया हैं ।

गुरु जी का फुरमान है कि :–

"हउमैं दीरघ रोग है ॥"

भक्त कबीर जी भी गुरबाणी द्वारा कथन करते हैं कि:–

कबीरा माया तजी तो क्या भया ॥
जो मान न तजिया जाये ॥
मान मुनी मुनिवर गले ॥
मान सभै को खाये ॥

यहां महां पुरुषों का विचार है कि जब काम, क्रोध, लोभ मोह तथा सभी विकार इस का पीछा छोड़ जाते है तो यह हउमै तब भी सूक्षम रूप में मनुष्य के हृदय में रहती है ।

भाई गुरदास जी गुरु घर में बहुत बड़े विद्वान तथा कवि और महां पुरुष थे, परन्तु इन के मन में थोड़ी सी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हउमैं का संचार हो गया जो कि ज्ञान मार्ग में बहुत बड़ी रुकावट थी। भाई गुरदास जी ने बहुत सी बाणियाँ लिखी हैं।

सिक्खों ने कहा भाई जी इतनी बड़ी बात गुरु जी के साहमने नहीं करनी योग्य है जब तूफान आता है तो बड़े २ वृक्षों की जड़ें उखड़ जाती है। भाई जी ने कहा कि—

"झखड़ वाओ न डोलही पर्बत मेरान ॥"

भाव:—झखड़ों तूफानों से बड़े २ वृक्षों की ही जड़ें उखड़ती है। पर्बत तो नहीं डोलते।

यह बात गुरु हरगोबिंद साहिब जी के पास भी पहुंच गई। तब गुरु जी ने भाई जी के मन में से यह सूक्षम हउमैं का रोग नष्ट करने के लिए एक कौतक रचाया कि भाई जी को बहुत सा धन देकर साथ में दो सिख और कर दिये और कहा, 'जाओ काबुल से बढ़िया श्रेणी के घोड़े खरीद कर ले आओ।'

कहते हैं कि जब भाई गुरदास जी काबुल जा कर एक स्थान पर तम्बू लगाकर बैठ गये। धन की थैलियां भी तम्बू में रख ली और घोड़ों के व्यापारी से तीन चार घोड़ों का मूल्य पक्का कर लिया तथा तम्बू के भीतर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रुपये लेने गये तो वहाँ क्या देखते है रुपयों के स्थान पर ठीकरीयां पड़ी हुई हैं। भाई जी ने सोचा कि यदि घोड़ों के पठानों को रुपये न दिये तो वह लड़ाई झगड़ा करेंगे। अब तो उनको हरजाना देने के लिये भी रुपया नहीं है। गुरु जी ने यह क्या किया ? यह पठान लोग तो बहुत जालिम तथा निरदई होते हैं। न जाने जान से ही मार डालें।

इस प्रकार भयभीत होकर भाई गुरदास जी तम्बू के पीछे से निकल कर भाग गये और मन्जिल तह करते हुए काशी तथा बनारस पहुंच गये।

उधर जब उन व्यापारियों तथा सिक्खों ने देखा कि अधिक समय हो गया है, परन्तु भाई जी बाहर नहीं आये। तब उन्हों ने अन्दर जाकर देखा तो रुपयों की थैलियाँ वैसे ही पड़ी है। परन्तु भाई गुरदास जी कहीं दिखाई न दिये। सिखों ने घोड़े के ब्यापारियों को रुपया गिन कर दे दिया और घोड़े लेकर अमृतसर पहुंच कर गुरु जी को सब समाचार बता दिया कि जिस तरह भाई जी भाग गये थे। सिखों ने कहा, 'गुरु जी ! यह पता नहीं चला कि भाई जी कहां आलोप हो गये।'

गुरु जी ने उत्तर दिया, 'वह जो कहते थे कि—

जे गुरु सॉग वरतदा सिख सिदक न हारे ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सो भाई जो सिदक हार कर भाग गये हैं।"

गुरु जी की यह बात सुन कर सिक्खों ने समझ लिया कि यह सब गुरु जी का ही कौतक था।

एक वर्ष तक भाई गुरदास जो कांशी में रहे परन्तु गुरु जी का प्रेम विछोड़ा न सहन हो सका। वहाँ से बहुत प्रेम भरे पत्र भेजते रहे। तब गुरु जी ने दो सिखों को भेज कर भाई जी को बुला लिया और कहा, "भाई जी अब क्या विचार हैं।"

तब भाई जी की हउमैं का नाश हो गया और यह पंक्तियाँ उच्चारण की कि:—

जे गुर सांग वरतदा कौन सिख विचारा॥

इस प्रकार भाई गुरदास जो के मन की सूक्षम हउमैं भी नष्ट हो गई।†

---

†श्री सतिकार योग्य भाई गुरदास जी का दर्जा सिख धर्म में बहुत ऊँचा माना गया है। आप की रचित दो पुस्तकें गुरु घर में प्रमाणवीक मानो गई है। भाई गुरदास जी की वारें और कवित सवंये, की दो पुस्तकें हैं जो कि गुरु अरजन देव जी ने वरदान दिया था कि जो भाई गुरदास जी की बाणी पढ़ेगा उसकी सिक्खी कायम रहेगी। दूसरा यह बाणी गुरओं की बाणी की चाबी है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उदासीन मत की बुनियाद

उदासीन मत जो कि गुरु नानक मत का ही एक अंग या भाग हैं) की नींव तो श्री चन्द जी (गुरु नानक देव जी के बड़े लड़के का नाम) ने रखी थी, परन्तु पक्की तरह यह मत श्री गुरुदिता जी नें चलाया है।

कहते है कि एक बार गुरु हरगोबिंद साहिब जी श्री चन्द जी को मिलने गये तो श्री चन्द जी आपको मिल कर अति प्रसन्न हुए और पूछा कि आप के कितने बेटे हैं।

गुरु जी ने कहा, "पांच।"

श्री चन्द ने फिर कहा, "कोई सन्तों के लिये भी है कि सब अपने लिये है।"

गुरु जी ने उसी समय अपना बेटा गुरदिता जी को जो पास ही खड़े थे, बाबा ज़ी की भेंट कर दिया।

तब सिरी चन्द जी ने गुरदिता जी को सेहली टोपी देकर अपनी उदासीन मत की गदी पर विराजमान करते हुए कहा, "लो जो कुछ मेरे पिता जी के पास था, वह तो तुम लोग पहले ही ले चुके हो। अब जो कुछ मेरे पास है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह तुम ले लो ।*

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी का पहला युध्द

अब वह समय आ गया था कि जब किसी धर्म को अपनी रक्षा के लिये तलवार उठानी पड़ती है या अपनी रक्षा आप करनो पड़ती हैं। गुरु जी इस बात को अच्छी प्रकार जान गये थे कि इस यवन राज के साथ टक्कर लिये बगैर गुरु नानक धर्म नहीं बच सकेगा। गुरु जो ने हिन्दू और मुसलमानों में भी यह बात प्रभावित कर दी थी कि मौजूदा राज इनसाफ का वैरी राज है। इस लिए गुरु जी की सेना में बहुत से मुसलमान भी भरती हो गये थे। जैसे कि अताउला खां, पैंदे खाँ और अमीर खाँ आदि सेनाके मुखी थे।

युद्ध का कारण तो पहले से ही मौजूद था परन्तु

---

*उदासीन मत सिख धर्म की एक शाखा है जो इस के साधूओं ने सिख धर्म का प्रचार सारे भारत में फैलाया था अब कुछ मत भेद होने से यह लोग कुछ भेद की बातें करने लग पड़े है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब शुरु हुई कि जहाँगीर बादशाह समझ गया थ. जी के हाथ में सारा पंजाब है। पंजाब जैसे बहादुरों लोहा लेना कोई मामूली बात न थी। इस लिये वह गुरुजी के साथ किसी प्रकार सुलह करके समय टालना चाहता था। इसी विचार से वह पंजाब आया था। कशमीर जाने का बहाना करके वापिस गुरु जी के साथ अमृतसर में आ कर बात करनी थी, परन्तु ऐसा न हो सका, क्योंकि जहांगीर को मृत्यु हो गई थी।

उसके पश्चात उसका बेटा शाह जहान गदो पर बैठा जो कि अपने बाप से भी कुछ अधिक मतसबी था। शखसी बादशाह या हकूमत पें यही होता है कि एक के मरने के पश्चात दूसरे को बारी आती है। वह अपने सुभाव के अनुसार अपनी पालसी बदल लेता है। सो ऐसा ही हुआ। इसने अपनी पालिसी बदल ली।

शाह जहान को ताजपोशी

शाह जहान की ताज पोशी का उत्सव हुआ तो भारत के सब राजाओं महाराजाओं को निमन्त्रण दिए गए। गुरु जी को भी एक विशेष आदमी के हाथ संदेश भेजा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह तम

ताज पोशी के पश्चात बादशाह ने गुरु जी का तेज प्रताप देख कर कुछ देर अपने पास रहने की निवेदन की जो गुरु जी ने स्वीकार कर ली।

शाह जहान के मन पर प्रभाव

गुरु जी को एक दिन बादशाह शिकार खेलने के लिये अपने साथ जंगल में ले गया। उस जगल में एक बहुत भयानक सिंहनी ने बादशाह पर सीधा हमला कर दिया। बादशाह के किसी भी निकटवर्ती को साहस न हुआ कि बादशाह को सिंहनी से छुड़वाये।

गुरु जी के एक सिख ने शीघ्रता से उस शेरनी पर कम्बल फैंक कर बाद में केवल लाठी से पीट २ कर मार डाला। उसी समय बादशाह से उस सिख को बहुत सा पुरस्कार दिया।

कुछ समय पश्चात कर्मचारियों ने बादशाह को भड़काया कि गुरु जी के पास ऐसे योधे हैं। यदि आपने इन को काबू न किया तो फिर जब बहुत ताकत पकड़ गया तो सम्भालना मुशकिल हो जायेगा।

बादशाह एक तो नौजवान था दूसरा राज्य गदी का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तीसरा भैंहकाने वालों ने ऐसे ढंग से भैंहकाया कि बादशाह के मन में गुरु जी को कैद करने की इच्छा हुई।

बाज़ की बात

जो होना है होकर ही रहता है और होनहार की घटना कारण भी बन जाता है। इस तरह यवनों के साथ गुरु जी के युद्ध होने ही थे, जिस का कारण एक बाज हुआ।

एक समय की वार्ता है कुछ अमीर लोग शिकार खेल रहे थे कि उनका एक बाज सिखों के पास उढ़ कर आ गया। सिखों ने उसे पकड़ लिया। उधर अमीरों ने आ कर शाही रोअब डाल कर बाज लेना चाहा, परन्तु सिखों देने से इन्कार कर दिया। अमीर लोगों ने लाहौर के सूबेके पास पुकार की, तो सूबे ने अपने एक सिपाह सिलार मुखसल खाँ को कमान में पांच हजार सेवक गुरु जो को गिरफ्तार करने के लिये भेज दिये। सेनापति को आज्ञा दी थो कि जैसे भी हो गुरु जी को गिरफ्तार करके मेरे पास ले आओ।

उधर तो शाही फौज अमृतसर के निकट आ गई। इधर गुरु जी ने वीरों के विवाह का प्रारम्भ कर रखा था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी का विचार था, युद्ध होकर रहेगा, परन्तु इतनी शीघ्रता से शाही फौज के आ जाने का अंदेशा न था। इस लिए आप युध के लिए त्यार न थे। दूसरे दिन जनेत आनी थी किन्तु एक दिन पहले ही युद्ध.. हो गया।

शाही सेना के साथ सिखों का बहुत घमसान का युध हुआ यहां तक कि शाही सेना शहर में घुस गई तथा गलियों बजारो में खुलम खुलो लड़ाई होने लगी। युध्द होते होते सगराना साहिब तक फैल गया।

उधर गुरु जी ने वीरो तथा महलों के साथ एक सौ योधे सिख भेज कर झबाल ग्राम में भेज दिया। युध्द जीतने के पश्चात वहाँ ही वीरो जी का विवाह हुआ। वहाँ बीबी की याद में एक गुरुद्वारा भी है।

इधर दो दिन तक बड़ी भयानक लड़ाई हुई। गुरु के सिख खूब जानें तोड़ कर लड़े और गुरु जी ने तुरक सेना के सेनापति को ललकार कर कहा, "दूसरे के बेटों को क्यों मरवा रहे हो, आओ ज़रा मेरे साहमने अपनी बहादुरी दिखाओ।"

...यहा पर आज कल गुरुद्वारा पिपली साहिब तथा खालसा कालेज है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी की यह बात सुन कर मुखलस खां क्रोधित होकर गुरु जी के साहमने आ गया। गुरु जी ने एक ही वार में उसके टुकड़े २ कर दिये।

शेष सेना ने जब देखा उनका सरदार मारा गया है, तो वह सिर पर पैर रख कर भाग गई।

इस प्रकार गुरु जी ने यह पहली जीत प्राप्त की और बहुत सा युद्ध का सामान भी सिखों के हाथ लगा।* इस जंग में गुरु सिखों के हौसले बढ़ गये। और तुरकों को मालूम हो गया कि सिखों के साथ लोहा लेना कितना कठिन है।

मैकालिफ साहिब एक अंग्रेज ने लिखा है कि यह युद्ध अमृतसर से लेकर आठ कोस लाहौर की ओर तक फैला हुआ था।

❋

---

*कहते हैं कि इस लड़ाई में एक मौहरी नाम के मिस्त्री ने लकड़ी तोफें बनाकर चलाई थीं। जो कि बाद में गुरु जी के वाक्य से वह बेरी की तोफें थी। जो अब तक बेरी रूप गुरुद्वारा लोहगढ़ में मौजूद है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी के साथ तुरकों का दूसरा युध्द

लाहौर के सूबे ने यह युद्ध दिल्ली के बादशाह शाह जहान की आज्ञा के बगैर ही किया था। जब शाह जहान को पता लगा तो उसने लाहौर के सूबे को ताड़ना की ओर आगे के लिये गुरु जी के साथ किसी प्रकार की लड़ाई झगड़ा करने से रोक दिया, परन्तु यह जो नफरत की आग सुलग चुकी थी, वह कब बुझती है। दो वर्ष तो अमन से व्यतीत हो गए। उसके पश्चात एक भगवान दास के साथ गुरुजी का कुछ झगड़ा हो गया। बात इस तरह हुई कि श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने दरया व्यास के किनारे श्री गोबिंद पुरा नगर बसाना चाहा। जिस पर उसने रोका तथा कहा, 'यह मेरी जमीन है।'

गुरु जी ने उत्तर दिया, 'जमीन तो ईश्वर की है।'

इस पर उस मूर्ख ने गुरु जी के साथ गुरु नानक देव जी की शान के विरुध बकवास की। जिस से सिखों को क्रोध आ गया तथा उसे मार कर दरया में फैंक दिया।

इसके पश्चात जब उसके लड़कें रतन चन्द को पता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगा तो वह चन्दू के लड़के कर्म चन्द को साथ लेकर जालंधर* के सूबे अबदूल खां के पास जा के पुकार की तथा नम्रता से कहा, "यदि आप गुरु जी पर आक्रमण करें तो हम आप की सहायता करेंगे।'

यह सूबा बहुत मन चला और दलेर था। हर समय किसी भी मुहिम तथा लड़ाईके लिए त्यार रहता था फिर यह दोनों बहुत धनवान थे।† वह सूबे को भहका कर ले आये। यह

---

*इस स्थान पर रुहेला नाम का गांव था जो कि चन्दूने वसाया था गुरु जी ने इसका नामों निशान मिटा कर उसके स्थान पर श्री हर गोबिन्द पुरा नगर बसाया वहां की कुछ जमीन भगवान दास की थी। जो इस दूसरे युद्ध का कारण बनी थी।

†यह दोनों रतन चन्द (भगवान दास का बेटा) और कर्म चन्द (चन्दू का बेटा) बहुत धनवान थे। इन दोनों के पिताओं को गुरु जी ने मारा था। इस लिए यह दोनों मिलकर उस का बदला लेना चाहते थे। इस लिए जालंधर के सूबे को गुरु जी पर चढ़ा लाए। वह आप तो डूबे साथ में दूसरों को भी ले डूबे। यह कहावत प्रसिध्द हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूबा १६८७ बिक्रमी, १७ अस्सू को अपनी सारी की सारी सेनाऐं लेकर टूट पड़ा क्योंकि इसने सुन रखा था कि गुरु जी की सेनाऐं बहुत बहादुर हैं तथा उन्हों ने लाहौर के सूबे पर विजय प्राप्त की थी ।

सूबे ने अपने दोनों बेटों (नबी बखश और रहीम बखश) को भी साथ ले लिया । और साथ ही अकबर खाँ बैराम खां, शेर अहमद और इमाम बखश जैसे योधे सिपाहसिलार (सेनापति) भी ले आया ।

इधर तो सूबे अबदुल खां ने युध्द रूप जूए के दाव पर सब कुछ लगा दिया उधर गुरु जो को भी सूचना मिल गई । सो गुरु जी ने अपनी सेना को कमान भाई बिधी चन्द के हाथ में दे दी और साथ में भाई कल्याणा, भाई जट्टू, भाई पिरागा, भाई तोता, भाई मथरा आदि महान योधों को भेजा । जो सिख सेना को लेकर मुगल सेना की परीक्षा करने लगे ।

सूर्य उदय होते ही दोनों सेनाओं में भ्यानक युध्द होने लगा । सारा दिन घोर युध्द होता रहा । मुगल सेना के एक योधे बैराम खां ने भाई मथरा को ललकारा और कहा, 'आओ जरा अपनी बहादुरी के कर्तव्य मेरे साथ अजमाओ । मैंने सुन रखा है कि तुम बहुत बहादर हो ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस तरह दोनों योधे आपस में दो घण्टे तक लड़ते रहे। अन्त में बैराम खां भाई मथरा जी के हाथ से मारा गया। इस से मुगल सेना को पहले दिन ही अपनी हार के लक्षण दिखाई देने लगे।

सायं काल होते ही जंग बन्द हो गई तथा दोनों सेनाएं अपने २ स्थानों की ओर विश्राम करने के लिये चली गई और दूसरे दिन के लिये विचारने लगी।

दूसरे दिन प्रात:काल ही युध्द का बिगुल बज गया। मुगल सेना बैहराम खॉ का बदला लेना चाहती थी, इस लिये हमले पर हमला किये जा रहा थो। रतन चंद भी अपने पिता का बदला लेने के लिये मैदाने जग में कूद पड़ा था, प्रन्तु उसको भाई बिधी चंद ने जीवित ही पकड़ लिया और गुरु जी के पास ले आया। तब वह कायरों को तरह गुरु जी से माफी मांगने लगा।

गुरु जी ने कहा, 'इसे अब छोड़ दो। इसे मैदाने जंग में हो मारेंगे, क्योंकि यह माफी माँग रहा है। जो दुशमन माफी मॉग ले उसे मारना उचित नहीं।'

जब उसको छोड़ दिया तो उसने सूबे से जाकर कहा, 'हजूर! मुझको कुछ सिख पकड़ कर गुरु जी के पास ले गये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थे, प्रन्तु मैं ने वहाँ एक सिख से तलवार छीन कर उस को मार कर भाग आया हूं। मैंने अपनी आंखों से देखा है कि गुरु जी के पास न तो जंग का सामान है और न ही राशन हैं। उस के सिख आपिस में भुख के कारण तकरार कर रहे थे कि हम भुखे पेट नहीं लड़ेंगे।'

उसका यह झूठ सुन कर मुगल सेना से सूबे ने ज़बरदसती हमला करा दिया। बहुत ही घमसान का युध्द हुआ, जिस में भाई शकतू जी ने सूबे के एक पुत्र रहीम बखश को बुरी भांति मार दिया। और भी बहुत से मुगल सेना के योधे मारे गये, जिस पर सूबा बहुत रोया।

इधर गुरु जी के पांच योधे शहीद हो गये। परसू, शकतू गजन आदि। और भी बहुत से सिख शहीद हो गये। इस प्रकार तीन दिन घमसान का जंग होता रहा, अन्त गुरु जी आप अपने दरयाई घोड़े पर स्वार होकर संनध बनध मैंदाने जंग में आ निकले।

उधर सूबा अबदुल खाँ भी मैदान में आकर गरज रहा था। गुरु जी एक ऊची जगह खड़े होकर जंग की हालत देख रहे थे कि रतन चंद, कर्म चन्द तथा सूबे का लड़का नबो बखश आदि बहुत से योधों को साथ लेकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी पर टूट पड़े। पर गुरु जी ने उन पर ऐसी गजब की तलवार चलाई कि उन्हें सदा की नींद सुला दिया। यह दृश्य जब सूबे ने देखा तो वह बड़े क्रोध से गुरु जी की ओर बढ़ा अन्त गुरु जी ने सूबे को ललकार कर कहा, "लो सम्भालो अपने आपको।"

इतना कहते ही गुरु जी ने तलवार का भरपूर वार किया कि उसका सिर धड़ से अलग हो गया।

बस! फिर क्या था, मुगल सेना ने जब सूबे की लाश तड़पती देखी तो वह भै भीत होकर जंग का सामान मैदान में छोड़कर केवल अपनी जानें बचाकर भाग गई।

उसके पश्चात गुरु जी ने इलाके के लोगों को बुलवा कर तुरकों की सब लाशें एक स्थान पर इकत्र करके दफना दी और सिखों की लाशों का संसकार किया गया। इस जंग की जीत की खुशी में दमदमा साहिब बनवाया

गुरु जी का तीसरा युध्द

इस युद्ध की मुगलों को जो जबरदस्त हार हुई उस से मुगल सेना की कमर टूट गई और लाहौर के सूबे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने शीघ्र ही एक सन्देश दिल्ली के बादशाह को भेजा तथा गुरु जी के साथ बकायदा जंग करने की मनजूरी ले ली।

इधर गुरु जी भी जान गये थे कि अब मुगल हकूमत के साथ फैसला कुन जंग लड़नी पड़ेगी। इस लिये आप श्री हरिगोबिंद पुरे से मालवा में जो पहले मराज नगर बसा गये थे, वहाँ चले गये। और शाही फौजों की प्रतीक्षा करने लगे। और युद्ध की त्यारी करने लगे।

उधर लाहौर से दो महान योधों की कमान में (कमर बेग तथा लला बेग) पचास हजार सेना ने चढ़ाई कर दी। १६८८ बिक्रमी, ३ माघ को शाही सेना दरया सतलुज को पार करके गुरुजी के गाओंसे केवल पांच मील दूर रह गई। गुरु जी युद्ध के लिये पहले से ही त्यार बैठे थे।

गुरु जी ने एक नीति का यह काम किया कि उस इलाके में केवल एक ही पानी की (निथाने की ढाब) थी, और कहीं भी पानी न था। गुरु जी ने उस ढाब पर कबजा कर लिया। शाही सेना के लिये अपनी सिख सेना के चार गरुप बना दिये। जिनके सेनापति महान योधे भाई बिधी चन्द, भाई जेठा, भाई जती मल, राये जोध आदि को बना तथा जंग के सारे भेद बता दिये। इस उपरान्त एक हजार सेनिकों को बन्दूकें देकर शाही सेना के रास्ते में छुपा दिया और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहा कि जब शाही सेना यहाँ से गुजरे तो यकलखत हमला कर देना और दुशमन के सम्भलने से पहले ही दूसरा हमला कर देना।

इस लिये जब शाही सेना आई तो सिखों ने उन पर गुरु जी के बताये हुए ढंग से हमला कर दिया। ऐसा करने से शाही सेना के दो अढ़ाई हजार आदमी मर गये।

इसके पश्चात दोनों फौजों में भयानक लड़ाई होनें लगी। छिन में लाशों के ढेर लग गये तथा रक्त की नदियां बहने लगी।

यह जंग तोन दिन तक होता रहा चाहे उस समय शर्द ऋतु थी, परन्तु शाही सेनाके पास पानी खतम हो गया जिसके कारण वह बहुत व्याकुल हो गई। उधर सिखों की तलवार दम नहीं देती थी।

अन्त में जब शाही सेना के सेनापति नें देखा कि सिक्ख फौजों का मुकाबला करना असम्भव हो गया हैं। इस लिये पहले गुरु को किसी तरह पकड़ लेना या मार देना चाहिये। वह यह सोच कर घोड़ा भगा कर गुरु जी के पास जाकर तथा ललकार कर बोला, "ऐ हिन्दुओं के पीर! तू नहीं जानता कि तेरा मुकाबला उस शाही सेना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से पड़ा है, जिस का सेनापति मैं [लला बेग] हूं। तू नाहक दूसरों के बेटों को क्यों मरवा रहे हो। आओ हिम्मत हैं तो मेरे साथ दो दो हाथ करके देख लो। अभी जंग का फैसला हो जायेगा।"

बस फिर क्या था, गुरु जी तो स्वयं यही चाहते थे। कि लला बेग से मुकाबला हो जाये तो उसको मार कर जंग निर्णय किया जावे।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी और शाही सेना के सेनापति लला बेग का जब आपिस में तलवार का मुकाबला हुआ तो दोनों सेनाएं जंग बन्द करके यह अद्वितिय युद्ध देखने लगी क्योंकि युद्ध का निर्णय इसी मुकाबले पर निर्भर था। दोनों योधे तीन चार घण्टे लड़ते रहे। अन्त गुरु जी ने लला बेग का सिर कद्दू की तरह काट दिया।

यह दृश्य देखते ही शाही सेना भाग गई और युद्ध का सामान रणभूमि में ही छोड़ गई।

इस जंग में तीस हजार मुगल सेना मारी गई और दो हजार सिक्ख शहीद हुए। जिन में—भाई भोमा, भाई जेठा तथा भाई कटारा आदि भी थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाई बिधी चन्द के घोड़े लाकर देने की कथा

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी जब मालवे प्रान्त में ही थे कि काबुल की संगत गुरु जी के दर्शनों के लिये आई। उन में भाई तारा मल्ल और भाई बखत चन्द जो बहुत धनवान भी थे। जिन्हों ने अपने दसवन्ध में से दो घोड़े (जो बहुत ही बहु-मूल्य थे) गुरु जी के लिये ला रहे थे। रास्ते में लाहौर के सूबे ने छीन लिये।

जब सिक्ख अमृतसर पहुंचे तो उन्हों ने गुरु जी के आगे निवेदन की और कहा, "हे सच्चे पातशाह! हम आप के लिये दो घोड़े ला रहे थे कि रास्ते में लाहौर के सूबे ने हमें मार पीट कर घोड़े छीन लिये है।

तब गुरु जो ने भाई बिधी चन्द ज़ी को इस कार्य पर लगा दिया तथा भाई बिधी चन्द ने घसियारे का रूप धारण करके एक घोड़ा तो गुरु जी को ला कर दिया।

इस प्रकार भाई बिधी चन्द जी ने बहादुरी तथा महान चतुराई की मिसाल कायम कर दी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाई बिधी चन्द जी का दुशाले ले कर आना

इसी प्रकार भाई बिधी चन्द ने बड़ी बहादुरी से दो बहुत ही कीमती दुशाले लाहौर के शाही महलों से निकाल कर गुरु जी की भेंट किये थे।

यह दुशाले भी सूबे के फौजियों ने सिखों से छीन कर सूबे को दे दिये थे और सूबे ने अपने महलों में पहुंचा दिये।

बिधी चन्द जी बुरका पहन कर सीधे ही बेगमों के महलों में पहुंच गये और दुशालों के साथ बेगमों के बहुत भूषण भी उतार लाये थे।

पैंदे खाँ की नमक हरामी

पैंदे खां किसी निर्धन पठान का लड़का था, जो कि बाल-अवस्था में गुरु जी के दरबार में आ गया था। और गुरु जी ने उसको बड़े प्रेम से पाल पोश कर जवान किया और फिर सिख फौज का एक अफसर बना दिया।

पैंदे खा बहुत शक्तिशाली और दलेर था, परन्तु इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के मन में कुछ अहंकार हो गया कि मेरे जैसा योधा गुरु जी के पास और कोई नहीं है।

कहते हैं कि—

'हंकारया सो मारया ॥'

गुरु जी ने इस को एक बहुत कीमती पोशाक, एक बहु-मूल्य घोड़ा, एक सुन्दर बाज दे रखा था, और कहा था कि यह किसी और को नहीं देने। परन्तु पैंदे खाँ ने यह सब वस्तुएं अपने दामाद उसमान खां को दे दी थी। और साथ ही उसमान खां ने अपने ससुर (पैंदे खाँ) को गुरु जी के विरुध भैहका दिया।

एक बार बाबा गुरदिता जो शिकार खेलने गये तो उसमान खॉ ने बाबा जी का बाज उड़ता हुआ पकड़ लिया। इसकी शिकायत गुरु जी के पास पहुंची। तब गुरु जी ने पैंदे खॉ को बुला कर पूछा तो उस ने उलटी सीधी बातें की और यह भी कहा कि यदि मैं आप के साथ न होता तो आप मुगलों से कभी युध्द नहीं जीत सकते थे। यदि आप ने मेरे साथ बुरा वर्ताव किया तो मैं यहां से जाकर मुगल सेना में भरती हो जाऊंगा और आप के सब भेद उन्हें बता दूंगा।

पैंदे खां की यह बात सुन कर गुरु जी के मन में बीर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रस जाग उठा और उन्हों ने उसी समय पैंदे खां को दरबार से निकाल दिया और कहा, 'यदि तूं किसी पठान का बेटा हैं तो शाही सेना को अभी चढ़ा कर ले आ । और साथ तुम भी आ जाना ताकि तेरा अहंकार अच्छी प्रकार खत्म किया जाये और साथ ही तेरी आशा भी पूरी हो जायेगो ।

बस, फिर क्या था, पैंदे खां बे-इजत होकर सीधा लाहौर चला गया और पटका उतार कर पुकार की कि मुझ को गुरु जी ने मार पीट कर तथा मेरा घर बार सब कुछ छीन लिया है। मेरा दोष केवल यह था कि वह हजरत मुहम्द साहिब की शान में गुसताखी में बहुत बुरे शब्द कहे थे, जो मैं सहन न कर सका । बस यही बात है ।

इस प्रकार और बहुत सी झूठी बातें बता कर उसने सूबे को भैहकाया और अपनी मूर्खता न बताई ।

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी का चौथा युध्द पैंदे खाँ के साथ

लाहौर के सूबे के चाहे दाँत खटे हो चुके थे। वह अमली तौर चाली-पचास हजार सेनिक मरवा कर फैसला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था कि गुरु जी के साथ जंग करके विजय प्राप्त करनी मेरे बस का रोग नहीं ।

सूबा पैंदे खां की बातों में इस लिये आ गया कि उस को गुरु जी के सब भेद तथा दाव मालूम थे। पैंदे खां ने सूबे को कहा कि आप केवल मेरे साथ दस बारह हजार सेना भेज दो तो मैं गुरु जी को पकड़ लाऊंगा। मेरे हमला करने से सिख मेरे साथ मिल जायेंगे।

सूबे ने पैंदे खां को बारह हजार सैनिक और साथ चार प्रसिद्ध सेनापति (जाफर बेग, काले खां, उसमान खां, वसीया खां आदि) देकर गुरु जी को पकड़ने के लिये भेज दिया ।

इधर गुरु जी को भी सूहिये ने सूचना दी। गुरु जी और सिख सेना को नमक हराम पठान पैंदे खां पर बहुत क्रोध था। इस लिये बड़ी बे-सबरी से उसकी प्रतीक्षा करने लगे। और कोसने लगे।

आषाढ़ वदि ७ १६९१ बिक्रमी प्रातःकाल सूर्य उदय होते ही पैंदे खां ने अपनी ओर से अचानक हमला कर दिया। परन्तु सिख तो पहले त्यार होकर मुगल सेना के रास्ते में बैठे हुए थे। जैसे ही मुगल सेना ने प्रवेश किया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिखों ने तोफें दाग दी, जिस से मुगल सेना के चार पांच सौ आदमी रणभूमि की भेंट हो गये। इस के पश्चात जम कर युध्द होने लगा तथा तलवारें चलने लगी।

इधर गुरु जी के महान योधें श्री गुरु तेग बहादुर जी टिक्का ग़ुरदिता जी भाई बिधी चन्द, भाई चूहड़ जी और भाई कुजाली आदि सिख सेना को बड़ी तरतीब के साथ लड़ा रहे थे ।

जिस समय यह घमसान का युद्ध हो रहा था, उस समय बाबा गुरदिता जी के बेटे धीर मल्ल नें एक कासद (दूत) के हाथ काले खा तथा पैंदे खाँ को पत्रका लिखी कि मैं कुछ योधों को लेकर तुम्हारे साथ मिल रहा हूं। जिस से मुगल सेना के हौसले बढ़ गये, परन्तु गुरु जी ने उसकी इस साजिश को मिटी में मिला दिया।

लड़ते लड़ते मुगल फौज के सभी योधे तथा सेनापति मारे गये तो सेना के पाओं उखड़ने लगे। तब पैंदे खाँ ने गुरु जी के साहमने आकर ललकारा और कहा, 'आओ जरा मेरे हाथ देख लो।'

फिर क्या था, जान बूझ कर पैंदे खां ने अपनी मृत्यु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को आप निमन्त्रन दिया। इस में किसी दूसरे व्यक्ति का क्या दोश था।

गुरु जी ने कहा, "आ पैंदे खां पहला वार तू कर ले, कहीं तेरे दिल की आशा दिल में ही न रह जाये।"

तब पैंदे खाँ ने बड़े जोश में आकर वार किया, परन्तु गुरु जी नें रोक लिया। फिर उसने दूसरा वार किया प्रन्तु वह भी खाली गया। अन्त तीसरा वार किया, परन्तु वह भी गुरु जी नें रोक लिया।

गुरु जी नें कहा, "पैंदे खाँ अब अन्तिम कलमा पढ़ लो। सम्भालो वार।"

इतना कहते ही गुरु जी नें ऐसा वार किया, जो कि पैंदे खां के सिर को धड़ से जुदा कर दिया तथा पैंदे खाँ का तड़पता हुआ शरीर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

तब गुरु जी के मन में दया उमड़ आई। वह घोड़े से उतर आये और अपनी ढाल से पैंदे खाँ के घायल शरीर के ऊपर छाया कर दी तथा पैंदे खाँ की जान निकल गई।

गुरु जी को पैंदे खां के मारे जाने का (वह भी अपने हाथ से) बहुत दुख हुआ। क्यों कि उसको गुरु जी ने स्वयं अपने हाथों से पाला था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी का कीरत पुर आना और पाँचवाँ युध्द

श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब जी अब श्री कीरतपुर में परिवार को लेकर आ गये। यहाँ आकर भी आप ने दो युध्द किये। एक बार राजा तारा चन्द का कुछ इलाका रोपड़ के पठानों ने दबा लिया तो उस ने गुरु जी से कुछ सहायता माँगी तो गुरु जी ने कुछ सिक्ख योधयों को भेज कर पठानों के साथ जंग करके उनकी होश ठिकाने लगा दी। और राजा तारा चन्द का इलाका वापिस दिला दिया।

रोपड़ के पठान हार तो गये परन्तु उन के मन में गुरु जी के खिलाफ वैर भाव हो गया। वह गुरु जी के साथ एक फैसला कुन जंग लड़ने की त्यारी कर रहे थे कि एक दिन गुरु जी किसी ब्राहमन साजर के पास गुजर रहे थे कि उन पठानों ने गुरु जी पर अचानक हमला कर दिया। तब गुरु जी तथा सिक्खों ने वीर रस में आ कर ऐसी गजब की तलवार चलाई कि उन पठानों को नानी याद आ गई। बुजदिलों की तरह सब सामान रणभूमि में छोड़ कर भाग गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु गद्दी का प्रश्न

श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने जो कुछ अपनी आयु में करना था कर लिया। अब अन्त समय जान कर गुरु-गद्दी के सम्बन्ध में विचारने लगे। अन्तर्यामी गुरु जी जानते थे कि अभी युध्द की आवश्यकता समाप्त नहीं हुई। हाँ कुछ समय की चाल ढाल को देख कर रुकना पड़ेगा। परन्तु सिखों में से जंग की सपिरिट को जैसे का तैसा ही बनाये रखना हैं। इस लिये एक हजार पैदल, पांच सौ स्वार, साठ तोफें और भी जंग का सामान हरदम पास रखना और समय पड़ने पर जंग करने के लिये त्यार रहना, इस सारी जुम्मेवारी को और गुरु-गद्दी की और भी सभ कठिनाईयों, यवन राज्य की चालों को समझाया, क्योंकि यवनों के साथ पूरी प्रकार दुशमनी पड़ चुकी थी।

बाबा गुरदिता जी तो चढ़ाई कर गये थे। गुरु तेग बहादुर जी तप साधन में लगे हुए थे। बाबा अटल राये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी पहले ही छोटी आयु में प्रलोक गमन कर गये थे।†

धीर मल भी गुरु घर का दोखी बन गया था इस लिए गुरु हरि राये साहिब को गुरु गदी देकर आप चैत्र वदि ५, १६९८ बिक्रमी को प्रलोक गमन कर गये।

बोल श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी की जय ॥

***

---

†कहते हैं कि अटल राये जी केवल पांच वर्ष की आयु के थे। एक दिन गेंद खेलते हुए आप का साथी सांप के काटने से मर गया। बाबा जी ने खुण्डी गले में डाल कर कहा, "हमारे आगे मक्कर करते हो। हमारी वार दो।"

जैसे ही बाबा जी के मुंह से यह शबद निकले, तैसे ही वह मरा हुआ साथी जीवत हो गया। इस पर गुरु जी नाराज हो गये कि करामात क्यों दिखाई। इस पर बाबा जी वहीं ज्योति जोत समा गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृतांत श्री गुरु हर राये साहिब जी महाराज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंसावली श्री गुरु हरि राये साहिब जी

जन्म तिथि	माघ शुदि १३, १६८७ बिक्रमी
जन्म स्थान	श्री कीरत पुर (जिला हुशियार पुर)
पिता	बाबा गुरदिता जी
माता	निहाल कौर जी
विवाह	आषाढ़ वदी ३, १६९३ विकृमी
महल	श्री प्रेम कौर जी, श्री चन्द कौर जी श्री अनोखी जी, श्री राम कौर जी श्री लाडली जी, श्री कृष्ण कौर श्री कल्याणी जी
सन्तान	श्री राम राये, श्री हरि कृष्ण जी
गुर गदी	चेत्र वदि १३, १७०१ बिक्रमी
जोति जोत तिथि	कार्तिक वदि ९, १७१८ बिक्रमी
जोति जोत स्थान	श्री कीरत पुर साहिब
आयु	३१ वर्ष ८ मास २२ दिन
राज्य	शाह जहान तथा औरंगजेब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृताँत श्री गुरु हरि राये साहिब जी महाराज

भारत के प्रसिद्ध कवि तथा महात्मा गोसाईं तुलसी दास जी ने लिखा है :—

ऐसो को जनमियों जग माहीं।
प्रभुता पा जाकै मद नाही।

परन्तु गुरु नानक मत में यह बात मौजूद है कि प्रभुता प्राप्त करके भी मान न करना। जिसकी विचार तथा मतके आदर्श को भाई गुरदास जी ने अपनी बाणी में स्पष्ट ढंग तथा ज्ञान से कथन किया है।

किसो प्रकार की शक्ति न होने से मजूबरी के कारण तो हर कोई शान्त रह सकता हैं। परन्तु अत्यन्त शक्ति के होते हुए भी शांत रहना, यह गुरु देव जी महाराज के घर की बढ़ाई तथा महानता हैं।

गुरु जी का जन्म

श्री गुरु हरि राये साहिब जी का जन्म माघ शुदि ३,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्वत् १६८७ बि: को माता निहाल कौर जी, पिता बाबा गुरदिता जी के घर हुआ। आप का दूसरा भाई धीर मल्ल था। जिसके बारे माता निहाल कौर ने बचपन में कह दिया कि यह दूसरा पृथिया निकलेगा। सो यह बात बिलकुल सत्य निकली।

श्री गुरु हरि राये साहिब जी का सुभाव बालावस्था में दयावान था या दया का प्रतक्ष रूप था। आप का हृदय कोमलता दया और करुणा रस से भरा रहता था। आप किसी जानवर तो क्या बनासपति को भी खेद नहीं पहुंचाते थे।

कहते हैं कि एक बार आप के चोले के साथ गुलाब का फूल उलझ कर टूट गया, तो आप उस फूल के पास बैठ कर ही अफसोस करने लगे। इतने में वहां गुरु हरि गोबिंद साहिब जी [आपके दादा जी] आ गये, तो उन्हों ने कहा, "बेटा पहले ही चोले को संभाल कर चलना था।"

गुर गदी की प्राप्ति

गुरु घर में एक बात विशेष तौर पर देखी जाती थी कि गुर गदी देने के समय योग्यता का विचार बहुत अधिक किया जाता था, सो गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुर गदी के लिये सोच की तो उस समय गुरु हरि राये साहिब जी ही योग्य दिखाई दिये। इस लिये गुरु हरि गोबिंद साहिब जी ने चैत्र वदि १३, १७०१ बिक्रमी को श्री हरि राये साहिब जी को गुर गदी पर विराजमान कर दिया।

गुरु हरि राये साहिब जी का विवाह

कई इतहासों में गुरु हर राये ज़ी के चार पांच विवाह लिखे हुए हैं, परन्तु असल में आप का एक ही विवाह हुआ था जो कि अनूप शहर (यू. पी.) में भाई दया राम की पुत्री श्री कृषण कौर से हुआ था। जिस को दूसरा नाम सुलखणी था।

गुरु जी का सुधार कर्म

गुरु घर की मुगल हकूमत के साथ सम्पूर्ण तौर पर ना-मिलवर्तन हो गई थी। गुरु हरि राये जी के पास गुरु हरिगोबिंद साहिब को प्रकार जंगी सामान उसी प्रकॉर कायम रखा था। आप के पास २२०० स्वार हर समय त्यार रहते थे। परन्तु युद्ध नहीं किया था। हां यदि कभी मुगल बादशाह की ओर से युद्ध का निमन्त्रण दिया जाता, तो फिर गुरु जी ने गुरु हरिगोबिन्द साहिब की प्रकार ही युध्द करना था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

औरंगजेब के साथ बिगाड़

दिल्ली का बादशाह शाह जहान १६५७ ई० को बिमार पड़ गया उस समय उसके चारों बेटे [दारा शकोह, शुजाह, मुराद तथा औरंगजेब] भारत के चारों प्रान्तों में गवर्नर थे। अपने बाप की बिमारी पर चारों भाईयों का राज सिंघासन के लिये झगड़ा होने लगा।

औरंगजेब का दावा चल गया। उसने मुराद को साथ मिला लिया और अपने बाप को कारागार में डाल कर राज सिंघासन पर बैठ गया।†

---

†औरंगजेब इतना जालिम था कि जब उसके बाप ने कहा कि मेरे पास पीने का पानी थोड़ा होता है। देख हिन्दू लौग तो मरे हुए वालदैन को भी पानी भेजते है। तू मुझ को जीते जी पानी नहीं दे रहा।

औरंगब ने उत्तर दिया, "जिस कलम दान में पानी पानी डाला था।" वही पी लेना था।

शाहजहान ने फिर कहा, "बेटा! मेरा दिल उदास

(शेष ३१५ सफे पर देखो)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह बड़ा जालिम तथा मतसबी बादशह था। अपने बाप को इस ने कारागार में हो रुला रुला कर मार दिया और भाईयों को कतल कर दिया।

जब दारा शकोह आगरा के मैदान में औरंगजेब के साथ लड़ रहा था तो उस ने गुरु जी के पास सहायता के साथ लिये आदमी भेजा, परन्तु गुरु जी कहीं बाहर गये हुए थे। इस लिये दारा को सहायता न मिलने के कारण हार हो गई। और वह रण भूमि से भाग गया तथा भागता हुआ गुरु जी के पास खडूर साहिब में पहुंच गया और सहायता मांगी।

गुरु जी ने यकदम सहायता करते के लिये मजबूरी जाहर की, परन्तु उसका स्वागत तथा सतकार बहुत किया।

दारा के पीछे पीछे औरंगजेब का एक जरनैल कुछ सेना लेकर दारा को पकड़ने के लिये आ रहा था।

(३१४ सफे की बाकी)

रहता है, कुछ लड़के कुरान के लिये भेज दिया करो।"

औरंगजेब ने कहा, "हे बाप ! तू अभी हकूमत करने की खाहश रखता हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उधर जब गुरु जी को पता लगा तो शरण आये की लाज रखने के लिये गुरु जी ने २२०० योधयों को उस औरंगजेब के फौजी दसते को ब्यास के पार ही रोकने के लिये भेजा । उस समय तक दारा शकोह लाहौर से आगे मुलतान की ओर पहुंच चुका था । गुरु जी ने शाही फौज को ब्यास के पास रोके रखा ।

जब इस बात का पता औरंगजेब को लगा तो उस के मन में गुरु जी के विरुध्द बहुत भारी विरोधता का भाव बन गया । परन्तु अभी नया नया राज्य सिघासन पर बैंठा था, इस लिये चुप रह गया ।

गुरु जी का मालवा प्रान्त का प्रस्ताव

[नाभे पटियाले के राज की बखशश]

गुरु हरि राये साहिब मालवे देश को सिक्खी का प्रचार करने के लिये चल पड़े । एक स्थान पर डेरा लगा दिया । इलाके की सब संगत गुरु जी के दर्शनों को आने जाने लगी ।

एक भाई काले मल्ल अपने भाई के बेटों को लेकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी के दर्शनों के लिये आया उनका नाम सन्दला तथा फूल था। वह दोनों गुरु जी के साहमने पेट बजाने लग पड़े। गुरु जी ने पूछा, "भाई काला यह पेट क्यों बजा रहे हैं ?"

"महाराज यह ! यह भूखे हैं।" भाई काले मल्ल नें बड़ी निमृता से कहा।

गुरु जी ने फिर कहा, "यह सरदारी करेंगे। और रियासतों के मालिक होंगे।"

इस बात का पता जब काले मल्ल की स्त्रो को लगा तो उस ने अपने पति को कहा, "जाओ अब अपने बच्चों को वरदान दिला दो"

जब काले मल्ल अपने पुत्रों को लेकर गया, तो गुरु जी ने कहा, वह समय व्यतीत हो गया है। हाँ यह भो सरदार बहादुर होवेंगे।"

भाई गौरे ने भाई जस्से को कतल करना तथा मारना

श्री गुरु हरि राये जी का भाई जस्सा नाम का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चोबदार था। उस ने एक भाई गोरे नामक गुर सिक्ख को मसकरी की, जिस पर भाई गोरे ने क्रोध में आ उसे कतल कर दिया।

बात इस प्रकार थी कि भाई गोरा दो भाई थे, परन्तु उनकी माँ अभी जवान आयु की थी, क्योंकि उनके पिता ने बूढ़ी अवस्था में विवाह किया था, जो यह दोनों पैदा हुए कि वह मर गया। बात की बात में जस्से के मुंह से निकल गया कि तुम्हारी मां तो अभी जवान है। उस का विवाह कहीं और कर दो। जिससे गोरे ने उसको कत्ल कर दिया।

गुरु जी ने गोरे का बाईं काट कर दिया, परन्तु एक बार रोपड़ के पठानों ने गुरु जी के परिवार की लूट मार करने के लिये हमला कर दिया। उस समय गोरा वहाँ पर कुछ जवानों के साथ आ निकला और पठानों से जंग करके मार भगाया और गुरु जी के परिवार को कीरत पुर पहुचा दिया जिस पर गुरु जी ने उस को प्रसन्न हो कर बखश दिया।

गुरु के लंगर की मरयादा

गुरु हरि राये जी ने गुरु के लंगर की मरयादा पहले गुरुओं की प्रकार ऊंच नीच, राजा रंक, अमीर गरीब, एक समान करके लंगर बांटते थे। लंगर की सफाई का बहुत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्यादा विचार करते थे।

गुरु घर में विवाहरिक दृष्टि से देग और तेग दोनों की बहुत महानता दरसाई गई है। जिस का विस्थार आगे श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन में आयेगा।

गुरु घर में लंगर का नियम चौबीस घण्टे तथा आठों पहर लगातार चलने का था।

राम राय को दिल्ली भेजना

पहले कहा जा चुका है कि औरंगजेब बड़ा जालिम और नीतिबान तथा मतसबी बादशाह था। गुरु हरि राये जी के साथ दारा शकोह को पनाह देने से ही मन में वैर भाव की गांठ बांध ली थी कि किसी ढंग से गुरु जी को काबू किया जाये।

जब राज्य का प्रबन्ध अच्छी प्रकार ठीक हो गया तो गुरु जी को शाही पत्र लिखा कि आप दिल्ली आकर मुझे दर्शन देने की कृपालता करें।

वैसे तो गुरु जी पर हाथ डालना असम्भव था। इसी ढंग से दिल्ली बुलाकर कोई चाल चलकर गुरु जी को काबू

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करना चाहता था, परन्तु गुरु जी सब जानते थे इस लिए स्वयं तो न गये अपने बड़े बेटे राम राये को भेजा। और साथ ही यह भी कहा, 'बेटा, एक तो बादशाह के प्रभाव के नीचे नहीं आना। दूसरा कोई ऐसी हरकत नहीं करनी जिस से गुरु घर की हेठी हो। मैं तुझ को सब प्रकार की शक्तियां देकर भेजता हूं।"

जब राम राये दिल्ली गया तो औरंगजेब बड़ा निपुन तथा नीतिवान था। उस ने राम राये का शाही स्वागत किया और इस कदर सतकार तथा बढ़ाई की कि वह खुशामद के रेशमी जाल में फंस गया।

राम राये औरंगजेब के जाल में कदर फंसे गया कि उसकी जरा सी नाराज़गी की भी प्रवाह करने लग पड़ा। पहले तो जो औरंगजेब कहता गया, राम राये वही करामातें दिखाता रहा। अन्त औरंगज़ेब ने कहा, "जो गुरु नानक देव जी किसी धर्म के विरुध कोई बात नहीं कहते थे, परन्तु उन्हों ने इसलाम सम्बन्धी यह क्यों कहा कि :—

मिटी मुस्लमान की पेड़े पई घुमियार ॥
घड़ भांडे इटाँ कियां जलती करे पुकार ॥
जल जल रोवै बपुड़ी झड़ झड़ पवै अंगियार ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नानक जिन करते किया सो जाणै करतार ॥
(आसा दी वार म० १)

इस के अर्थ साफ थे, किसी धर्म या इसलाम की विरोधता नहीं थी। केवल असलीयत को ही प्रकट किया है। परन्तु राम राये के सिर पर खुशामद का भूत नाच रहा था। इस लिये उसने झूठ ही कह दिया कि वह पंक्ति तो इस तरह है —

"मिटी बे-इमान की पेड़े पई घुमियारु ॥"

इस तरह राम राय गुरु जी की परीक्षा में बुरी भांति फ़ेहल हो गया। माया का एक रूप नहीं, गुरु जी महाराज का यह फरमान है कि—

"माया वियापत बहु-प्रकारी ।"

सो खुशामद भी एक माया की प्रकार है, जो भी पुरुष माया के जाल में फंस जाता है, उस में सच्च बोलने का साहस नहीं रहता। यही हाल राम राय का हुआ था। रहिमन कवि ने कहा है कि—

रहिमन अब मुशकिल बनी ॥
गाढे दोऊ काम ॥
साँच कहो तो जगत नहीं ॥
झूठ न मिलता राम ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सो राम राये के झूठ कहने से औरंगजेब जैसा बादशाह तो खुश हो गया तथा जगत मिल गया, परन्तु गुरु रूप राम न मिल सका।

गुरु जी को जसे ही इस बात की सूचना मिली तो उन्हों ने एक सिख के हाथ संदेश भेजा कि तूने वह पाप किया है जो कभी बखशा नहीं जा सकता और इस की तुझ को यही सजा दी जा सकती है कि तू हमारे प्रयंत मस्तक न लगना, यदि तू यहां आयेगा तो हम शरीर त्याग देंगे। अब तू उधर ही हमारी आंखों से दूर रह कर जीवन व्यतीत करना।

बस! गुरु जी का यह हुकम सुन कर राम राये नें करतार पुर में आकर रिहायश कर ली और वहाँ ही रह गुरु घर की सखत विरोधता करने लगा। औरंगजेब को मिल कर गुरु गदी का दाहवा किया, परन्तु कुछ न हो बन सका। हां,यह तो हो गया कि उसको औरंगजेब ने देहरादून में बहुत सी जगीर दे दी और'शज़ादा नशीन की उपाधो दे दी, जो अब तक गदी के साथ साथ आ रही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु हरि राये साहिब जी का प्रलोक गमन करना

राम राय ने गुरु जो को बहुत धमकियां दिलवाईं परन्तु गुरु जी ने रंचक मात्र प्रवाह न की। उसने औरंगजेब के पास बहुत पुकार की, परन्तु सब निःफल गया। अन्त में गुरु जी ने श्री हरि कृष्ण जी को कार्तिक वदि ९, १७१८ बिक्रमो को गुर गदो देकर आप प्रलोक गमन कर गये। आपका अन्तिम संस्कार कीरत पुर में किया गया। जहाँ आज कल गुरद्वारा पाताल पुरी है।

बोल श्री गुरु हरि राये साहिब जी की जैं ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जहावर बाल सीरीज

बच्चों के लिए अच्छी अच्छी पुस्तकें

यह पुस्तकें पंजाबी भाषा में है हर एक का मूल्य ७५ पैसे है

जीवन गुरु नानक देव जी	जीवन स: हरी सिंह नलूआ
,, अन्गद देव जी	,, अकाली फूला सिंह
,, अमर दास जी	,, बाबा दीप सिंह शहीद
,, राम दास जी	,, पन्डित जवाहरलालनेहरु
,, अरजन देव जी	,, सुभाष चन्दर बोस
,, हरिगोबिंद साहिब जी	,, महात्मा गांधी
,, हरि राये साहिब जी	,, भगत सिंह शहीद
,, हरि कृष्ण साहिब जी	,, मा० तारा सिंह
,, तेग बहादुर जी	,, शाम सिंह अटारी
,, गोबिंद सिंह जी	,, बाबा बन्दा बहादुर
जीवन भक्त कबीर जी	,, मवाराजा दलीप सिंह
,, बाबा फरीद जी	,, भाई गुरदास जी
,, रविदास जी	,, भाई मनी सिंह जी
,, नाम देव जी	,, बीबी दया कौर
,, महाराज रणजीत सिंह	,, भाई तारु सिंह

मिलने का पता—

भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एण्ड को

बाजार माई सेवां, अमृतसर।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृतांत
श्री गुरु हरि कृष्ण
साहिब जी महाराज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंसावली श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी

जन्म तिथी	श्रावण वदि ८, १७१३ बिक्रमी
जन्म स्थान	श्री कीरत पुर
पिता	गुरु हरि राये जी
माता	श्री कृष्ण कौर जी
गुरु गदी	कार्तिक यदि ८, १७१८ बि०
जोति जोत स्थान	नई दिल्ली
जोति जोत तिथि	चैत्र शुदि १४, १७२१ बि०
आयु	७ वर्ष, ८ मास, १८ दिन
राज्य	औरंगजेब

***

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृताँत श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी महाराज

श्री हरिकृष्ण साहिब जी सिक्ख धर्म के आठवें गुरु थे। जिनकी आयु केवल उस समय पाँच वर्ष की थी, जिस समय आप को गुर गदी मिली थी। शक्ति ब्रह्म जोत तथा परम ज्ञान का अतुट भण्डार तो वही था जो पहले गुरुओं में था। आप बाल गुरु जी के जीवन चमत्कार देख देख कर बिसमाद भाव में आ जाओगे।

गुरु जी का जन्म

श्री हरि कृष्ण साहिब जी का जन्म तथा अवतार श्री कीरत पुर जिला हुशियार पुर पंजाब में पिता श्री गुरु हरि राये जी के घर माता कृष्ण कौर जी के गर्भ से श्रावण वदि ९, १७१३ बिक्रमी को हुआ। आप बाल आयु में ही अत्यन्त सुन्दर, नूरानी, शक्तिशाली तथा होनहार बालक थे। आप का संसार आगमन उस समय हुआ जब कि यवन राज पूरे यौवन में था। औरंगजेब जैसा बादशाह देहली के तखत पर बैंठा हुआ था। वह बहुत मतसबी तथा जालिम निरदई बादशाह था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाठक पढ़ आये हैं कि उसने राज्य की प्राप्ति के लिये अपने बूढ़े बाप को कैद कर दिया और सबके भाईयों को कत्ल करवा दिया था, तो वह और किस का लिहाज कर सकता था। वह अपने राज की पकियाई और इसलाम की बेहतरी के लिए किसी भयानक से भयानक जुल्म करने से भी संकोच नहीं करता था।

औरंगजेब ने सारे भारत में अपना प्रभाव जमा लिया था। परन्तु पंजाब में गुरु नानक देव जी की गद्दी का उसको भारी खतरा रहता था। वह किसी न किसी प्रकार पंजाब में से सिख लहर को सदा के लिये दबा देने की चिन्ता में था। अब उस को गुरु घर से ही राम राये जैसा गद्दार हाथ लगा था तथा मिल गया था।

इस बात को सब ही जानते हैं कि किसी भी संस्था, कौम तथा लहर या राज्य [हकूमत] को नष्ट करने लिये उन में फूट डालना, एक बहुत बड़ा शस्त्र है। सो यही शस्त्र औरंगजेब के हाथ में आ गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुर गदी की प्राप्ति

श्री गुरु हरि राये साहिब जी ने हर प्रकार से अपने छोटे लड़के श्री हरि कृष्ण जी को योग्य जान कर आप प्रलोक गमन करने से एक दिन पहले कीरत पुर कार्तिक वदि ८, १६१८ बिक्रमी को एक बहुत भारी दीवान करके गुरु गदी पर बैठा दिया तथा एक पाँच वर्ष के बालक के कंधो पर बहुत भारी बोझ लाद दिया।

एक ओर यवन राज जैसा जालिम राज, और फिर औरंगजेब जैसा बादशाह जो गुरु घर का जानी दुश्मन। दूसरी ओर आप का बड़ा भाई राम राये, बहुत भारी चतुर जो कि हकूमत के साथ मिलकर गुरु हरि कृष्ण साहिब जी को मारने के यतनों में लगा हुआ था।

राम राये के षडयन्त्र

जैसे ही श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी गुर गदी पर बैठे तैसे ही उस समय उनके बड़े भाई ने बाल गुरु को मार कर स्वयं गुर गदी पर बैठने के के यत्न करने शुरु कर दिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सब से पहले वह सींधा दिल्ली औरंगजेब के पास पहुचा और गुरु जी के विरुद्ध उसके कान भरने शुरु कर दिये और कहा, "आप जानते ही हैं कि गुरु नानक देव जी गदी अब एक फकीर को गदी नहीं रही, किन्तु वह ता एक राजसी गदी बन गई है। मुगल राज्य के तो वह सखत विरुध है। जो मेरा भाई गदी पर बैठा है, उस पर मेरा हक्क था।

हमारे दादा (श्री गुरु हरगोबिन्द साहिब) जी ने मुगल रॉज के साथ पांच युद्ध किये है और वही शिक्षा अब इनको दी गई है।

वह लगातार शक्ति इकठी कर रहे हैं ताकि आपके विरुध किसी समय भी ऐलान जंग कर सकते हैं। मेरे को इस लिये गदी नहीं दी कि मैं इन बातों के विरुध और आप का एक विश्वासी मित्र था।

इस लिये आप किसी प्रकार मेरे भाई को मरवा कर मुझ को गदी पर बैठा दो तो मैं आपका वफादार मित्र बन कर रहुंगाँ और सेना रखने की रीति समाप्त कर दूंगा।

बस! 'अन्धा क्या चाहे दो आखें'। औरंगजेब चाहता ही था कि उसको गुरु घर में से कोई हाथ आये, सो वह मिल गया था!

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

औरंगजेब राम राय की बात सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और कहा, महाराज आप जो भी कहो मैं वही करने को त्यार हूं। आप मुझ को बताओ कि मैं आप की क्या सहायता करूं जिस से आप गुर गदी प्राप्त कर सकें।"

राम राय को एक बात का ज्ञान था कि श्री गुरु हरि कृष्ण जी औरंगज़ेब के माथे न लगने का प्रण किया हुआ है। इस लिए क्यों न श्री गुरु हरि कृष्ण जी को औरंगजेब के माथे लगा कर प्रण भंग कर दिया जाये।

यह विचार कर राम राय ने औरंगजेब से कहा, 'हजूर! गुरु हरि कृष्ण को दिल्ली बुलाकर पूछिये कि उस ने इतनी संख्या में सिख सेना और जग का सामान क्यों इकठा कर रखा है ? इसकी क्या आवश्यकता है ?"

बस ! यह बात औरगजेब के मन को भा गई और इस बात पर अमल करने की त्यारी शुरु कर दी।

राम राय बहुत चतुर तथा चालाक पुरुष था। उस ने सोचा कि यदि उनका भाई औरगजेब को मिलने के लिए आ गया तो उसका प्रण टूट जायेगा और मैं लोगों तथा सिख संगतों में चर्चा करूंगा कि देखो इसने गुरु होकर प्रण भंग किया है और यदि न आये तो औरंगजेब को बहका दूंगा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि उस ने आप की आज्ञा का पालन नहीं किया । इस पर औरंगजेब चिड़ कर कोई और भयांनक बात करने को चेष्टा तथा उपराला करने की कोशिश करेगा।

औरंगजेब की पत्रिका

औरंगजेब ने राम राय की बात स्वीकार करके श्री गुरु कृष्ण साहिब जी को एक बड़े बनावटी प्रेम की पत्रिका लिखी कि हमारा सदा ही गुरु घर से प्रेम रहा है । हमारे बड़े भी गुरु नानक की गदी को मानते चले आये हैं । इस लिए आप यहां (दिल्ली) आओ, तथा दर्शन देकर हमें निहाल करो । हम स्वयं उपस्थित होते, परन्तु राज के बहुत से कामों में उलझे हुए हैं।

इस प्रकार इस के इलावा और भी बहुत सी चापलोसी की बातें लिख कर और यह भी लिखा कि आपके सम्बन्ध में कुछ लोगों ने बहुत से भरम डाल दिया है जो आप के दर्शन तथा आपके साथ बचन करने से दूर हो जायेंगे ।

औरंगजेब ने यह सारा काम गुरु जी को दिल्ली बुलाने का राजा जै सिंह के सपुर्द कर दिया और कहा कि जैसे भी हो गुरु जी को दिल्ली लेकर आना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बात दरअसल यह थी कि औरंगजेब के गुरु घर की शक्ति को नष्ट तथा पंजाब के खतरे को नष्ट करने का यह सुनहरी मौका हाथ आया था। इस लिये राजा जै सिंह को सभी अखतियार देकर भेजा था, और कहा था कि यदि गुरु जी इनकार करेंतो शक्ति वरतनेमे भी संकोच न किया जाये।

संसार में हर स्थान पर दो विरोधी शक्तियां काम करती दिखाई दे रही हैं। एक और प्रकाश है तो दूसरी ओर अन्धकार, दिन की विरोधी रात्रि, दुःख का विरोधी सुख आदि। सो इसी प्रकाश के एक ओर गुरमुखता है, सजनताई तथा साधूतव है और दूसरी ओर मनमुखता तथा दुष्टपन है। यही दिशा यहां थी। एक ओर तो श्री गुरु हरि कृष्ण जी पूर्ण पुरुष थे, जिनका हृदय माया मोह से रहत और निरभय तथा निरवैर पर निर्भर था। दूसरी ओर उनका भाई राम राय था जिसका हृदय माया मोह वैर भाव तथा इर्षा से भरा हुआ था। संसार के इतहास में यह सच्च ही है कि—

वैर विरोध धुरों ही किया।

बस ! जितने भी महां पुरुष तथा सन्त हुए है, वह सब के सब जनता तथा लोगों का पक्ष लेते रहते है और माया धारी पुरुष हकूमत का।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब राजा जं सिंह औरगजेब के दूत की हैसीयत से श्री कोरतपुर पहुंच गया ओर गुरु जी को औरंगजेब की पत्रका देकर तथा शेष सब बातें जबानी सुना दी।

उधर गुरु राम राय जी ने औरंगजेब से अपने छोटे भाई श्री गुरु हरि कृष्ण जी को जान से मार कर स्वयं गुर गदी प्राप्त करने को चालें बना ली।

गुरु जी ने राजा जै सिंह को कहा, "आप आज की रात यहां विश्राम कीजिये, और कल सोच विचार कर आप को इसका उत्तर दिया जायेगा।

दूसरे दिन सिख संगतों में वह औरंगजेब की पत्रका पेश की गई। बड़े २ बुद्धिमान सिखों ने औरंगजेब के भाव को समझ लिया और गुरु जी भी अन्तर्यामी थे, वह सब बातें जान गये थे।

बहुत देर तक विचार करने के पश्चात यह निर्णय हुआ कि गुरु जी दिल्ली न जायें, परन्तु अभी फैसले पर मोहर नहीं लगाई गई थी कि दो कारण साहमने आ गये।

एक यह कि राजा जै सिंह को इस बात का पता लगा कि गुरु जी ने दिल्ली न जाने का फैसला कर लिया है, तब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जै सिंह ने बहुत बार निवेदन की और औरंगजेब ज़ैसे जिदी पुरुष को बात न मानना भी एक भारी खतरे को मोल लेना था। जिसका परिणाम युद्ध ही हो सकता था।

दूसरी उसी समय दिल्ली से एक सिख दिल्ली की संगतों का फैसला लेकर आ गया। जिसमें राम राय की कुटिल नीति का विस्तार लिखा हुआ था। अन्त गुरु जी का दिल्ली जाने का फैसला हो गया और त्यारी शुरु कर दी।

गुरु जी का दिल्ली जाना

श्री गुरु हरि कृष्ण देव जी चाहे बालवस्था के केवल उस समय सात वर्ष के थे, परन्तु सर्व कला समर्थ और सर्व शक्तिमान थे। उन के साथ सिरकरदा सिख और एक गुरबख्श नामक मशहूर मसंद दिल्ली जाने के लिये त्यार हो गये।

गुरु जी के हजारों सिखों और प्रेमियों ने सजल नेत्रों से दिल्ली को विदा किया। किसी को क्या मालूम था कि गुरु जी के यह अन्तिम दर्शन हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी के अलौकिक चमत्कारे

गुरु जी अपने माता के साथ एक सुन्दर रथ पर बैठ कम रास्ते में सिख संगतों को दर्शन देते, ज्ञान उपदेश करते, जब पंजोखरे नगर (जिला अम्बाला] पहुंचे तो वहाँ आपने एक प्रकार का कैंप लगा दिया तो दूर दूर से हजारों लोग तथा सिख संगते गुरु ज के दर्शन करने को आने लगी तथा एक प्रकार का भारी मेला लग गया प्रेमी लोग कई प्रकार को भेटें ला ला कर देने लगे और मन की मुरादें पाने लगे।

गुरु जी की महिमा चारों ओर फैल गई। हर एक की जबान पर धन्य श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी! धन्य श्री गुर हरि कृष्ण साहिब जी की धुनि उच्चारण होने लगी।

वहाँ एक बहुत विद्वान तथा निपुन पण्डित रहता था। जिसका नाम राम लाल था। वह गुरु जी की महमा को न सहन कर सका और ईर्षा में जल कर गुरु जी के दीवान में बिना गुरु जी के चरणों को छूहे बैठ गया। अन्तर्यामी गुरु जी ने उस के मन की बात जान कर कहा, "पण्डित जी महाराज! आपके मन में क्या संदेह ?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पण्डित राम लाल ने कहा, 'महाराज ! मेरे मन में यह सन्देह है कि एक तो आप केवल पांच छः वर्ष के बालक हो, इतनी छोटी आयु का बालक विद्वान नहीं होता और विद्या के बगैर वह ज्ञान सत्य धर्म का उपदेश नहीं कर सकता और ज्ञान के बगैर गुरु कहलाना योग्य नहीं।"

दूसरा द्वापर युग में कृष्ण भगवान जो ईश्वर के अवतार हुए हैं। परन्तु आपका नाम उन्हों से भी बड़ा है, यानि हरि कृष्ण है। यदि आप का यह नाम योग्य है तो आप उनकी श्री भगवद् गीता के कुछ श्लोकों के अर्थ सुना दोजिए तो मेरा संदेह दूर हो जायेगा।"

गुरु जी ने कहा, पण्डित जी महाराज ! आप के पहले प्रश्न का उत्तर यह है कि ज्ञान तथा सत्य धर्म का उपदेश केवल आयु के अधोन नहीं बल्कि बख्शिश के अधीन है, जिस पर ईश्वर की कृपा हो जाए।"

"दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि यदि गीता के अर्थ आप को मैं ने सुनाये तो भी आपका संदेह दूर नहीं होगा। शायद आप यह समझें कि बड़े घरों के लोग छोटी आयु में ही धन देकर विद्या पढ़ लेते हैं। हम आप को उस पुरुष से गीता के अर्थ सुनवा देते हैं, जिस से आप चाहो।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बस, फिर क्या था, उस अहंकारी पण्डित ने गुरु जी का भाव न समझा और ग्राम में एक छज्जू नामक झीवर को ले आया, जो कानों से बहरा और मुंह से गूंगा था। उसके वस्त्र फटे पुराने तथा धूल से लिपटे हुए थे।

पण्डित राम लाल ने कहा, 'महाराज ! इस से गीता के अर्थ करवाओ।"

प्रिय पाठको ! अगाध गती है उस भगवान की जो कि—

"खल मूरख ते पण्डित करबो पण्डित ते मुगधारो।"

हाँ अब इस विचारे झीवर के किसी पूर्ण जन्म के शुभ कर्म जाग पड़े, गुरुबाणी का फुरमान है कि—

पूरब करम अंकुर अब प्रगटे।
तब भेटियो पुरख रसक बैरागी ॥

बस ! गुरु जी के हाथ में एक बेंत की बहुत सुन्दर छड़ी थी जो कि चांदी तथा हीरे जवाहरात से जड़ी हुई थी। वह झीवर के सिर पर रख दी तो गुरुबाणी के वाक्य के अनुसार कि—

खुलड़े कपाट नानक सतिगुर भेटते।

छड़ी के लगने की ही देर थी कि उसके कपाट खुल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गये और उसके दिमाग में चौदस विद्या का प्रकाश हो गया। उसकी जबान जबरदस्ती नाचने लगी।

उस झीवर ने पण्डित की ओर संबोधन हो कर कहा 'कहो पण्डित जी, एक गीता तो क्या, गुरु जी की कृपा से कई कोटि गीता के अर्थ सुनाए देता हूं !

इतना कहते ही छज्जू ने गीता के वह अर्थ सुनाए कि पण्डित जी महाराज का दिमाग असचर्य रह गया और हजारों लोग जो दीवान में बैठे थे, वह गुरु जी की महिमा के प्रताप को देख देख कर मारे मस्ती के झूमने लगे, हां, वह पण्डित बे-बस हो कर गुरु जी के चर्णों पर गिर पड़ा और माफी मांगने लगा।

तब कृपालु गुरु जी ने उस पण्डित राम लाल को कहा 'पण्डित जी हमारे गुरु नानक मत में तो आयु तथा मनुष्य के यतनों के हाथ में कुछ नहीं सभ कुछ ईश्वर के हाथ में ही है।'

इतना कह कर गुर जो ने फिर कहा, 'पण्डित जी अब आप पर गुरु नानक की मेहर हुई है कुछ वरदान माँगना है तो मांग लो।'

तब उस विद्वान पण्डित का हृदय गुर जी की कृपा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से शुद्ध हो गया था। उसने और कुछ न मांगा। केवल ब्रम्ह ज्ञान का ही वरदान मांगा, जो गुरु जी ने कृपा दृष्टि करके पण्डित जी को उस ज्ञान का प्रकाश कर दिया, जो कि बड़े बड़े तपीश्वरों को हजारों वर्ष घोर तप करने से भी प्राप्त न होता।

गुरु जी के दिल्ली में चमत्कारे

अब गुरु जी वहां से सुन्दर रथ पर माता जी के सहित बैठ कर दिल्ली पहुच गये। आगे देहली की सिख संगत ने गुरु जी का हारदिक स्वागत किया।

उधर औरंगजेब के कर्मचारी भी आ गये और उन्हों ने कहा, 'महाराज आपकी रिहायश का बहुत सुन्दर प्रबन्ध बादशाह की ओर से किया गया है क्यों कि आप बादशाह के महमान हैं।'

तब गुरु जी ने कहा, 'नहीं हम तो सिख संगतों के पास विश्राम करेंगे। बादशाह के यहां नहीं।'

गुरु जी की यह बात सुन कर राजा जै सिंह ने निवेदन की, कि महाराज, आप हमारा स्थान अपने चरण कमलों से पवित्र करो। वहां आप को हर प्रकार का आराम मिलेगा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा सिख संगतों को दर्शन करने की भी कोई मुशकिल नहीं होगी।

राजा जै सिह का कुछ तो प्रेम देख कर और कुछ देहली की सिख संगतों की सिफारिश करने पर गुरु जी ने राजा जै सिह के यहाँ रेहना प्रवान कर लिया।

राजा जै सिह का मकान तथा महल गुरु जी के ठहरने से एक बैकुन्ठ धाम बन गया। (प्रातःकाल अमृत वेले) हरि कीर्तन होने लगा और दूर दूर की संगतों का भारी इकठ हो गया। गुरु का लंगर बटने लगा।

एक बार वहां एक कौतुक हुआ कि राजा जै सिह की पटरानी बहुत बुद्धिमान तथा विद्वान थी। उस के मन में भी पण्डित राम लाल की तरह सन्देह हो गया। उस ने कहा, "मैं उनको उस समय तक गुरु नहीं मानूंगी, जब तक मैं उनको परीक्षा न ले लूंगी।

राजा साहिब ने कहा, रानी साहिबा ! "तुम इसको एक बालक समझ कर घुमण्ड न करो। हाँ, यदि तेरे मन में कोई सन्देह है तो निकाल ले।"

रानी ने क्या किया कि गोलीयों के वस्त्र पहन कर बेठ गई और गोलीयों को अपने वस्त्र पहना दिये। और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी से कहा कि इन में रानी कौन हैं ?

गुरु जी हाथ में बड़ी छड़ी लेकर जो आठ दस रानियां और गोलियां एक जैसे वस्त्र पहन कर पटरानी बैठी हुई थी, हर एक को छड़ी लगाते हुए और यह बचन करते हुए कि यह भी नहीं! यह भी नहीं !! अन्त पटरानी की गोद में जाकर बैठ गये ।

गुरु जी का यह चमत्कार देखकर सभ के सभ गुरु जी के गुण गाने लगे और पटरानी ने तो बाला गुरु को अपना धर्म पुत्र कह कर गले से लगा दिया ।

गुरु जी का और प्रभावत यश

गुरु जी के चमतकारों की चर्चा बादशाह के महलों में भी पहुंच गई जिस से औरंगजेब ने दो बहुत बुद्धिमान कर्मचारीयों को भेजा तथा शहजादे भी आये । जिन पर गुरु जी के दर्शनों का बहुंत प्रभाव पड़ा । औरंगजेब ने भी गुरु जी के पास आने का कई बार प्रोग्राम बनाया, परन्तु सफलता न हुई, क्योंकि उसको गुरु जी के प्रण का पता लग गया था कि बादशाह के माथे नहीं लगना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रूप से] अगाध
शहर के
ी को

राम राये की निराशता

राम राये को पक्का विश्वास था कि मेरा भाई देहली आएगा तो औरंगजेब जरूर हो उसको कारागार में डालकर मुझ को गुर-गदी दिला देगा। परन्तु यहाँ सब बात उस की आशा के विरुद्ध हो गई।

गुरु जी की महिमा और तेज प्रताप इतना बढ़ गया कि औरंगजेब का हौंसला हो न हुआ कि वह कोई बात कर सके। क्योंकि सियासत में सब से पहले किसी भी शखशीयत के लोगों पर पड़े प्रभाव को देखा जाता है। इस लिये औरंगजेब को साहस ही न हुआ कि वह कोई ऐसी बात कर सके, क्योंकि उसकी हकूमत अभी नई नई हकूमत थी और उसको विश्वास न था कि वह मन मानी करके अपने आप को सुरक्षित रख सकेगा, क्योंकि वह पंजाबियों की निरभैता से परिचित था।

गुरु जी का और प्रताप

उन दिनों में देहली में हैजे का भयानक रोग फैला हुआ था। हजारों लोग रोज मौत के मुंह में पड़ने लगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सारे श

...हर में हाहाकार मच गई। कुछ ही दिनों में घरों .. घर खाली हो गये। यहाँ तक कि रोजाना इतनी लाशें होने लगीं कि उनको संभालना कठिन हो गया। देहली का वातावरण तथा वायु मण्डल बदबू के साथ भर गया। जैसे कि काल भगवान ने देहली पर क्रोप दृष्टि करके एक बार ही धावा बोल दिया हो। जिन हकीमों तथा वैद्यों ने इलाज करना था वह स्वयं मरने लग पड़े।

अन्त लोगों के मन में आई कि गुरु जी की शरण में जाना चाहिये, वह जरुर कोई उपाय करेंगे।

बस फिर क्या था हजारों बल्कि लाखों की संख्या में लोग गुरु जी के दर पर जा पड़े। यह सोचकर कि दोनों हाथों में लड्डू है। यदि गुरु जी ने बचा लिया तो जीवन मिलेगा, यदि मर गये तो मुक्ति दान मिलेगा। क्यों कि गुरबाणी में लिखा हैं कि :—

कबीरा मोहि मरने का चाउ है ॥
मरहु तो हरि के द्वार ॥
मति हरि पूछै कउन है ॥
पड़ा हमारं बार ॥

तब कृपालु गुरु को लोगों की महां भयानिक दिशा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर दया आई तो उन्हों ने हुकम दिया कि एक रूप से] अगाध संग मरमर का चबच्चा बनवाओ और उसको नी शहर के भर दो ताकि मैं कोई उपाय कर सकूं। नी को

संगतों ने गुरु जी कहने के अनुसार एक चबच्चा बनवा दिया तो गुरु जी ने उस में अपने चरण डाल दिये और सब को कहा कि जो भी इस जल को पियेगा तो वह तुरंत ही निरोग हो जायेगा।

बस, गुरु जी का बचन करने की ही देर थी कि लोग आकर तथा उस चबच्चे का पानी पी कर नि:रोग हो गये। गुरु जी की कृपा से दो ही दिनों में दिल्ली का सारा शहर निरोग हो गया। चारों ओर गुरु जी की जय जयकार होने लगी। ज्यों २ गुरु जी की महिमा फैलती गई, त्यों २ राम राये का हृदय ईर्षा की आग में जलने लगा।

दरअसल बात यह थी कि राम राये गुर गदी को अपना हक्क तथा विरासत समझता था जो कि उसका विचार गलत था। गुरु घर में गुर गदी मिलने के तीन मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :—

(१) गुरु तथा ईश्वर की बखशिश।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) हर प्रकार से गुर–गदी के नियमों की पालना करने की योग्यता।

(३) प्रेम और सिदक तथा सच्चे हृदय से आज्ञा के भाव को मान कर सेवा करनी।

सो यही तीन मुख्य नियम जिस में होते थे, वह ही गुरु बन सकता था।

श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी का परलोक गमन करना

हरन भरन जा का नेत्र फोर॥
तिस का मन्त्र न जानै होर॥

गुरुमत्त में गुरु और ईश्वर की एकता मानी गई है। जैसे कि गुरबाणी का वाक्य है कि—

गुरु परमेशर एको जान।

और इस लिये कहा कि—

भुल्लन अन्दर सभ को अभुल करतार॥

अब जैसे ईश्वर की महिमा नेत को कोई नहीं जान

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सकता हैं। तैसे ही गुरु को महिमा भी[ब्रम्ह रूप से] अगाध बोध है। देखो, जिस गुरु की कृपा से सारे देहली शहर के शीतला को बीमारी दूर हो गई। वहो शीतला गुरु जी को निकल आई जो कि गुरु जी के जोति जोत समाने तथा प्रलोक गमन करने का का ण बणी।

कहते हैं कि जब गुरु जो के शरीर पर शीतला का रोग भयानक रूप धारण कर गया। जिस से गुरु जी का पंच भौतक शरीर त्यागने का प्रतक्ष खतरा मालूम होने लगा। तब कुछ सिक्खों ने कहा,"महाराज आपने सारे शहर को इस भयानक रोग से बचा लिया। आप स्वयं अपने को निरोग कर लोजिये।"

गुरु जी ने कहा,"हमारा नियम नहीं, हम लोगों के लिये तो ईश्वर से मेहर माँग सकते है, परन्तु अपने लिये नहीं। ईश्वर की आज्ञा गुरु घर में सब से उत्तम कर्म है। इस लिये हम चाहे सब कुछ कर सकते हैं। भगवान ने गुरु घर को सब अधिक।र दे रखे है, परन्तु फिर भी अपने लिये उन अधिकारों को नहीं प्रयोग करते, क्योंकि ऐसा करने से कुदरत के नियमों में विघन पड़ता है।

इधर तो गुरु जी के शरीर पर शीतला का भयानक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोग हावी हो गया था और गुरु जी ने सब सिख संगतों को सुना दिया कि हम अब प्रलोक गमन करेंगे तथा निरंकार के पास सच खंड में जा रहे है ।

इस बात का पता जब औरंगजेब को लगा तो वह गुरु जी के दर्शन करने के लिए शाही त्यारी करके आया ।

इस बात की सूचना जब संगतों को मिलो तो उन्हों ने गुरु जी के चरणों में निवेदन की, "आप का तो प्रण है कि ऐसे दुष्ट पुरुष के माथे नहीं लगना ।"

गुरु जी ने कहा, 'हे गुर–सिखों ! घबराओ नहीं, औरंगज़ेब यहाँ आ ही नहीं सकेगा ।"

इतने में एक सिख और आ गया तथा उसने कहा, "महाराज जो ! औरंगजेब पूर्ण त्यारो करके आपके दर्शन करनें के लिए आ रहा है ।"

गुरु जी ने फिर कहा, 'नहीं, वह नही आ सकेगा ।"

गुरु जी के यह वचन सुन कर सब सिख तथा और लोग भी हैरान थे कि औरंगजेब कैसे रुकेगा, वह तो चल भी पड़ा है । राजा जै सिंह भी हैरान हो रहा था कि औरंग जेब तो गुरु जी के दर्शनों को भो चल पड़ा है और गुरु जी कह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहे है । कि वह पहुंच ही न सकेगा यह बातें हो रही थी कि एक दूत आ गया और उसने कहा, "बादशाह को कोई बहुत आवश्यक काम पड़ गया है। इस लिये वह आज नहीं आ सकता तथा रास्ते से ही वापिस लौट गया है ।

बस, उसी समय सिख संगत तथा अन्य लोगों और राजा जै सिंह पर गुरु जी की महान शखशीयत का बहुत प्रभाव पड़ा। सभ के सभ गुरु जी के चर्णों पर बार बार नमस्कार करने लगे ।

इस के पश्चात गुरु जी की शरीरिक दिशा को देख कर सब सिख संगतों के नेत्रों में आंसू आ गये । हजारों के इकठ तथा सारे दीवान में वैराग और गुरु जी के भाणा वरता जाने पर शोक सा छा गया ।

तब गुरु जी ने सबको आज्ञा दी, "कोई भी मनुष्य रुदन न करे तथा सब के सब भगवान का सिमरन करो और रोगियों को गुरबाणी का कीर्तन करने का हुकम दिया ।"

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में जो 'सद' नाम की राम कली राग में बाणी है उसका पाठ करने को एक सिक्ख को कहा। इस के उपरान्त एक सिक्ख को श्री सुखमनी साहिब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को पाठ करने के लिये कहा†

जब गुरु जी अपनी ही रजा तथा अकाल पुरख की आज्ञा के अनुसार पांच भौतक शरीर त्यागने लगे तो गुरबखश आदि पतवते सिक्खों ने निवेदन को, 'महाराज ! आपके पश्चात गुरु कौन होगा, क्योंकि आप शरीर छोड़ रहे हैं गुरु-गदी पर तो किसी को शुशोभित नहीं किया गया। अब अपने ही मुखारबिंद से कह जाओ।"

इधर तो यह बात पूछी गई, उधर गुरु जी का अन्तिम स्वास रह गया था। भाव एक ही स्वास शेष रह गया था तो भी गुरुजी ने एक स्वास के समय में इतना कह दिया कि—

---

†याद रहे कि गुरमत का यह नियम तथा आज्ञा है कि कोई भी प्राणी जब शरीर त्यागने लगे तो उस समय उसके कभी भी रोना नहीं चाहिये। इससे उसकी सुरती बुरी ओर चली जाती है। मरने वाले के कान के पास बठ कर श्री सुखमनी साहिब का पाठ करना चाहिये। यदि वह प्राणी सुखमनी साहिब के पाठ के सम्पूर्ण होने से पहले प्राण त्याग दे तो पाठ बीच में नहीं छोड़ना चाहिये। इस प्रकार करने से वह प्राणी मुक्ति पद को प्राप्त न होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"बाबा बकाले"

गुरु जी का यह अन्तिमवाक्य सभ सिख संगतों ने सुन लिया और सभ ने कण्ठ कर लिया, यहां तक कि सारे पंजाब में कुल सिख संगतों में बिजली की प्रकार यह वाक्य फैल गया। इस का जो परिणाम निकला उस का विस्थार आगे जा कर श्री गुरु तेग बहादुर जी के जीवन चरित्र में किया गया है कि राम राय जैसे और भी बहुत से पाखण्डी गुरुओं ने किस प्रकार सिख सगतों को अन्धेरे में रखा और फिर एक मशहूर सिख मखन शाह लुबाने ने सभ भेद खोल दिया था।

श्री गुरु हरि कृष्ण साहिब जी केवल आठ वर्ष की आयु में चैत्र शुदि १४, १७२१ बिक्रमी को प्रलोक गमन कर गये। वहां पर आज कल प्रसिद्ध गुरद्वारा 'बंगला साहिब' नई दिल्ली बंगला साहित रोड पर है।

उस के पश्चात एक बहुत भारी जलूस की शकल में गुरु जी के पवित्र शरीर का जमना किनारे श्री बाला घाट पर अन्तिम संसकार किया गया।

इधर जब औरंगजेब को पता लगा तो उसने मनमें बहुत पश्चाताप किया कि मैं ने क्यों न पहले ही दर्शन कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंसावली श्री गुरु तग बहादुर साहिब जी

जन्म तिथि	वैशाख वदि ५, १६७८ बिक्रमी
जन्म स्थान	गुरु के महल (अमृतसर)
पिता	श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी
माता	श्री नानकी जी
महल तथा विवाह	श्री गुजरी जी
सन्तान	श्री गुरु गोबिंद सिंह जी
गुर-गदी	चैत्र शुदि १४, १७२१ बिक्रमी
जोति जोत तिथि	मघर शुदि ५, १७३२ बिक्रमी
जोति जोत स्थान	चांदनी चौंक दिल्ली

***

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृताँत श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी महाराज

धर्म हेतु साका जिन कीया ॥
सीस दिया पर सिरड़ न दीया ॥

त्याग ! त्याग यह शब्द जितना छोटा है, उतना ही छोटा इसका भाव नहीं है।

त्याग कई प्रकार का होता है और त्यागी पुरुष भी अधिक प्रकार के पाये जाते हैं। हाँ तो त्याग, त्याग में, भी भेद होता है। अपने लिए त्याग, अपनी मुक्ति के लिये, अपने धर्म के लिये त्याग, अपनी कौम अपनी कुल तथा अपनी ही गैरत या गर्व के लिये त्याग करने वाले तो संसार में बहुत मिलेंगे, परन्तु दूसरों के लिए, दूसरों के धर्म के लिए अपने जीवन का त्याग, अपने सर्व वंश का त्याग कर देना, यह तो केवल गुरु नानक मत में ही मिल सकेगा तथा इस का एक मात्र उदाहरण श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी महाराज के जीवन चरित्र में आप को मिलेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी का जन्म

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का जन्म श्री गुरु हरगोविंद साहिब जी के घर और श्री नानकी जी के गर्भ से वैशाख वदि ५, १६७८ बि० को श्री अमृतसर में हुआ था।

श्री गुरु तेग बहादुर जी बालावस्था में ही वैरागी तथा साधारण से रहते थे। आपने घर के नियमानुसार शस्त्र विद्या, घोड़े की सवारी तथा युद्ध की सारी विद्या में इस तरह निपुन हो गये थे कि गुरु हरिगोबिन्द साहिब जी ने आपका नाम तेग बहादुर रख दिया था। आपका शरीर बहुत सुन्दर तथा जवान था। आपका विवाह करतार पुरे (जिला जालन्धर) में भाई लाल चन्द क्षत्रिय की पुत्री श्री माता गुजरी के साथ हुआ।

आप चाहे गृहिस्थ जीवन व्यतीत करने लगे थे, तो भी आप का मन उपराम ही रहता था। ईश्वर के सिमरन में लगे रहते थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी का साधन

बाबा बकाले में आपने एक भोरा निकाल कर उसी में आठों पहर बैठे रहते थे, परन्तु केवल अमृत वेले [प्रातः काल) इशनान करने के लिये हो बाहिर आते थे। इशनान करने के बाद फिर भोरे में जाकर तप करने लगते।

आम लोग तो यही समझते थे कि आप किसी मुक्ति के लिये तप कर रहे हैं परन्तू वास्तव में ऐसा नहीं था। आप तो स्वैरूप का ध्यान करते हुए भारत की रक्षा के लिये भी कुछ विचार करते तथा अपनी आत्मा को सारे भारत की हिन्दू जाति, हिन्दू धर्म हर बलिदान करने के लिये त्यार कर रहें थे। आप के लिये भोजन आदि भोरे में ही पहुंचाया जाता था। आप का नाम राम तथा उसके मसंदों ने तेगा कमला प्रसिद्ध कर रखा था। कई लोग आप को तेगा मस्ताना भी कहते रहते थे, परन्तु कौन जानता था कि इसी मस्ताने तेगे ने सारे भारत के हिन्दू धर्म की रक्षा करनी है। अपना सीस तथा अपने सर्व वंश का बलिदान देना है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी का प्रकट होना

इधर गुरु गुरु तेग बहादुर जी तप साधन में लगे हुए थे। उधर जो गुरु आठवें पातशाह श्री हरि कृष्ण जी दिल्ली में जोति जोत समाते समय "बाबा बकाला" कह गये थे।

इस वाक्य से राम राये, धीर मल्ल तथा और बहुत से सोडियों ने लाभ उठाकर आप ही आप गुरु बनने का यत्न किया। यहाँ तक कि बाबे बकाले में बाईस गदीयाँ लग गईं। जन साधारण के लिये सच्चे गुरु का निर्णय करना असम्भव हो गया। यदि शरधालू सिख आता तो वह जिस को दिल चाहता भेंट दे जाता परन्तु मन की आशा पूर्ण न होती थी। इस लिये उनका विश्वास उठता गया।

धीर मल्ल तथा राम राये ने तो गुरु का अडम्बर बहुत फैला लिया था। रामराये ने अपने हाथ में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की बोड़ भी कर ली थी और धन के बल से बहुत से मसद भी अपने हाथ करके गुरु बनने में पृथिये की प्रकार बहुत हद तक सफल भी हो गया था।

बेबे नानकी जी जानते थे कि गुर-गदी उनके बेटे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री तेग बहादुर साहिब जी को ही मिली है। जिस पर उन्हों ने गुरुओं का बहुत भारी फैलाओ होता देख कर श्री गुरु अमर दास जी की अंश श्री द्वारका दास और गुरु हरिगोबिंद जी के मुखी सिख भाई गड़ीये को पत्रिका लिख कर बुलवा लिया तथा नकली गुरुओं का पाखण्ड दूर करने का यत्न किया, परन्तु सफलता न हुई। क्योंकि धीर मल्ल और राम राये का जाल बड़े मजबूत ढंग से फैल चुका था।

मक्खन शाह लुबाने की कथा तथा गुरु जी का प्रकट होना

कहते हैं कि एक मखन शाह लुबाना नामक व्योपारी था। वह भारत से कई प्रकार का माल लेकर विदेशों में बेचने के लिये जाता था।

एक बार समुन्द्र के मध्य में जहाज में माल लाद कर जा रहा था। कि समुन्द्र में बहुत भारी तूफान आ गया, जिससे जहाज के डूबने का भारी भय हो गया। यहाँ तक कि गरक होने में कोई संदेह न रहा था।

तब मखन शाह ने संसार भर के देवी देवताओं और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीरों फकीरों की अराधना की और बहुत सी भेंटायें संकल्प की, परन्तु सफलता न हुई ।

उधर जहाज समुन्द्र की खूनी लहरों की लपेट में आ रहा था। सब के सब जहाज यात्रियों तथा कर्मचारियों को निश्चय हो गया कि बस ! जहाज तो अब सागर की तह में जाना ही चाहता हैं।

एक कर्मचारी ने कहा, "शाह जी, आप ने संसार भर के पीर फकीर तथा देवी देवताओं की मनतें की, परन्तु कोई लाभ न हुआ अब आप गुरु नानक की गदी का ध्यान धर के देखो शायद कोई सफलता हो सके, नहीं तो निराशा छा ही चुकी है ।"

उस कर्मचारी को यह बात सुनकर मखन शाह लुभाने ने एकाग्र होकर गुरु नानक की गदी की अराधना की और मन ही मन में पांच सौ मौहर भेंट करने का संकल्प किया तथा मनतें मानी ।

बस ! उसी समय डूबते हुए जहाज को ऐसे प्रतीत हुआ कि जैसे किसी ने जहाज के नीचे मोढा (कधा) लगा कर उठा कर और धकेल कर भारत के टापू के पास ला कर खड़ा कर दिया तथा पहुंचा दिया हो ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मखन शाह लुबाना उसी समय पाँच सौ मोहरें लेकर गुरु नानक की गदी पर जो गुरु जी का पता पूछता २ बाबे बकाले आ निकला। वह यहां की दशा देख कर हैरान सा रह गया। जहां कि २२ गदीयां लगी हुई थी। परन्तु वह भी व्योपारी का बेटा था, उसने सोचा कि सभी को पाँच पांच मोहरें भेंट करते जाओ, यदि इन में कोई असली गुरु होगा तो वह पाँच सौ मोहरें स्वयं ही मांग लेगा, सो ऐसा ही किया। जब मक्खन शाह लुबाना पाच पांच मोहर भेंट कर करके मत्था टेकता गया, परन्तु उन बाईस गुरुओं में से किसी ने भी पांच सौ मोहरें न मांगी।

तब उसने निराश होकर उन गुरुओं से पूछा "क्या यहां और भी कोई सोढी अंश का गुरु है?"

उन लोगों ने उत्तर दिया, "हाँ एक मस्ताना तथा पागल सा तेगा नाम का गुरु है। जो हर समय इस भोरे में पड़ा रहता है।

तब मखन शाह उस भोरे में चला गया। वहां गुरु तेग बहादुर जी की समाधि लगी हुई देखी तो चर्णों पर पांच मोहरें भेंट करके सीस झुका दिया।

इतने में गुरु जी की समाधी खुल गई और गुरु जी ने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहा, 'भाई मखन शाह ! यह जरा मेरी पीठ तो देखो।"

जब मखन शाह ने गुरु जी की पीठ देखी तो वहां पर कील धसे हुए दिखाई दिये और साथ ही रक्त चलता हुआ दृष्टि पड़ा।

गुरु जी ने फिर कहा, 'भाई उस समय तो कहता था कि पांच सौ मोहरें भेंट करूंगा, परन्तु अब केवल पाँच मोहरें भेंट कर रहा है। क्या तुम्हे फिर कभी कोई हम से काम वगैरा नहीं पड़ना ?"

बस फिर क्या था ? मखन शाह ने गुरु ढूंड लिया और गुरु जी ने कहा, 'भाई बाहर जा कर किसी को यह बात नहीं बतानी, नहीं तो मूंह काला हो जायेगा।'

किन्तु मखन शाह ने कोई प्रवाह न की और परोपकार के लिये स्वयं ही मुंह काला कर लिया और एक ऊंचे स्थान पर चढ़ कर, हाथ में एक अगोछा ले लिया और जोर से लहराता रहा कि—

गुरु लाधो रे ! गुरु लाधो रे ! गुरु लाधो रे ! भाव गुरु मिल गया है।

इस प्रकार मखन शाह लुबाना ने श्री गुरु तेग बहादुर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी को प्रकट कर दिया और सभ संगतें अब श्री गुरु तेग बहादुर जी को ही गुरु मानने लगीं।

श्री गुरु तेग बहादुर जी पर कातलाना हमला

इस माया का मूल ही लड़ाई है। संसार की सभ लड़ाई झगड़ों का कारण केवल माया होती है।

राम राये ने जब देखा कि गुरु तेग बहादुर जी प्रकट हो गये हैं और सभ संगतों ने गुरु जी के चरणों पर सीस झुका दिये तथा भेंटाए अरपन की। सोने चांदी, मोहरे तथा कीमती वस्त्रों की तो कोई संख्या ही न थी।

राम राये ने कुछ मसंदों तथा गुन्डों को साथ लेकर गुरु जी पर हमला कर दिया। यहां तक कि एक मसंद ने गुरु जी के सिर का निशाना लेकर दो नाली बन्दूक की गोली चला दो। जो कि गुरु जी के दसतारे को थोड़ा सा छूह कर आगे निकल गई और दूसरे गुन्डों ने गुरु जी का सारा सामान लूट लिया। लाखों रुपये, मोहरें और बहु-मूल्य भेंटाएं जो वहां थी, सभ लूट कर ले गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस बात का पता जब मखन शाह लुबाने को लगा तो उसने अपने साथ बहुत से योधयों को लेकर राम राये के डेरे पर धावा बोल दिया। रामराये और उसके साथियों को बहुत पीटा तथा गुरु जी का लूटा हुआ सारा माल भी छीन लिया। और साथ ही साथ राम राये का माल भी छीन लिया और उसको मार पीट कर वहाँ से ब्यास दरया के पार करतार पुर तक भगा दिया। राम राय के पास जो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब ज़ी की बीड़ थी, वह भी छीन ली।

कितना अन्तर होता है एक निरवैर और वैर भाव रखने वाले पुरुष में, महान पुरुषों और साकत पुरुषों में यही एक अन्तर होता है कि महान पुरुष के हृदय में किसी के साथ जाती वैर भाव नहीं होता उनका आदर्श होता है कि—

"युगत निरमल निरवैर नह।"

भाव—महान पुरुषों की युगती निर्मल और निरवैर होती है। स्वयं गुरु तेग बहादुर जी का वाक्य है कि—

हरख सोग जा कै नहीं बैरी मीत समान।
कहु नानक सुन रे मना ज्ञानी ताहि बखान॥

सो श्री गुरु तेग बहादुर जी ने अपना गुरु घर का तो सारा माल रख लिया और शेष जो राम राये और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धीर मल्ल का लाखों रुपयों का माल था, वह वापिस दिला दिया। यहां तक कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की बीड़ भी वापिस दे दी। सन्गतों ने बहुत कहा कि गुरु जी इस बीड़ पर तो उसका कोई हक्क नहीं। परन्तु गुरु जी ने कहा 'गुरु सिक्खो इस बात की विचार न करो, यह गुरु ग्रन्थ साहिब की बीड़ें गुर-सिक्खों के घर घर में होंगी।'

गुर गद्दी की रीति

जब गुरु जी ने उस सिक्ख की तालाश करने का हुकम दिया जो कि देहली से श्री गुरु हरि कृष्ण जी से पाँच पैसे और नारियल आदि गुरु गद्दी को रीति करने की सामग्री लेकर आया था। जो राम राये के डर से प्रकट नहीं हुआ था।

अब जब उस ने गुरु जी का हुकम सुना तो सब सामग्री लेकर श्री गुरु तेग बहादुर जी के चर्णों में उपस्थित हो गया और वह सामग्री गुरु जी को दे दी।

गुरु जी ने संगतों का भारी इकठ किया, जिस में चैत्र शुदि १४, १७२१ बिक्रमी को गुर गद्दी पर बैठे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी का तीर्थ यात्रा को जाना

जैसे कि पहले भी श्री गुरु अमर दास जी के जीवन में लिखा जा चुका है कि गुरुमत में तीर्थों पर विश्वास नहीं किया गया, बल्कि गुरबाणी में तो यहाँ तक लिखा है कि–

मन मन्दिर तनु वेसु कलंधर,
घट ही तीरथ नावा ॥
एकु सबदु मेरे प्रण बसत है,
बहुड़ जनमु न आवा ॥

तीर्थों पर जाने का गुरुओं का भाव यही था कि–

तीरथ उदम सतिगुरु कीया ॥
सभ लोक उधरेन अरथा ॥

भाव–तीर्थों पर जाने का उदम गुरु जी ने सब लोगों की कल्याण नमित किया था।

श्री गुरु तेग बहादुर जी ने संसारी तीर्थों से पहले गुर तीर्थों पर जाने का विचार किया:–

गुर सामान तीर्थ नहीं कोई॥
जित नाहते दुरमत मैल हरे॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाबे बकाले से चल कर गोईन्दवाल साहिब, खडूर साहिब से होते हुए जब श्री अमृतसर जी में पहुंचे तो यहां के पुजारियों ने श्री हरिमन्दिर साहिब में दाखिल ही न होने दिया। सभ दरवाजे बंद कर लिये। तब गुरु जी एक बेरी के नीचे बैठ गये। उस समय जो बेरी के नीचे छोटा सा थड़ा था, अब उसी स्थान को "गुरद्वारा थड़ा साहिब कहते हैं।

अमृतसर से जाते समय गुरु जी ने यहा के निवासीयों को यह श्राप दिया–

'अमृतसरिये अन्दर सड़िये ।।'

जब अमृतसर निवासीयों को जब पता लगा तो उन्हों ने भूल माफ कराने के लिये गुरु जी के पीछे गये और दमदमे साहिब पहुच कर क्षमा मांगो। क्षमा मांगने जाने वालों में अधिकतर स्त्रीया थीं। जिस पर गुरु जी ने खुश होकर कहा कि—

"माईयां रब्ब रजाईयां"

वहां से आप वल्ले नामक गाओं में आ गये। वहां संगत ने आपका हार्दिक स्वागत किया। जिस पर गुरु जीने प्रसन्न हो कर यह वरदान किया कि–

"वल्ला गुरु का गल्ला ।।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वल्ले में आज कल गुरु तेग बहादुर की यादगार में एक गुरुद्वारा है, जिसको "गुरुद्वारा कोठा साहिब" कहते हैं।

इसके पश्चात आप और बहुत से इलाकों की यात्रा करते हुए वापिस बाबे बकाले आ गये।

कुछ समय के पश्चात आप वहाँ से एक महान विधि को विचार कर पर्वतों का ओर चल पड़े। रास्ते में दुआबा प्रांत की संगतों को निहाल करते गये।

श्री आनन्द पुर साहिब का निर्माण

अब आप बहुत ही दूर अदेशी को समझ कर भारत के बचाओ के लिये करतार पुर नवां शहर से होते हुए कहलूर रियासतके एकमाखो वाल ग्राम, जो कि बहुत बिखड़े पर्वतों के बीच था, जाकर निवास किया।

उस इलाके का पहाड़ी स्थान, रियासत कहलूर के राजा से मोल लेकर वहाँ एक बहुत सुन्दर नगर बसामा जिसका नाम 'अंगद पुर' रखा।

इतहासिक नगर को नींव १७७२ बिक्रमी को रखी गई थी। उस नगर को बाद में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंथ की राजधानी बनाया। जिसका पूरा हाल आगे चल कर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के जोवन चरित्रमें आएगा।

औरंगजेब के अत्याचार

प्रिय पाठको! आप पहले भी पढ़ चुके होंगे कि औरंगजेब पहले हो चुके मुगल बादशाहों से बढ़ कर अत्याचारी जालिम तथा मतसबी बादशाह था तो इस ने गुजरात के प्रसिद्ध शहर अहमदा बाद का चिन्तामणो मन्दिर गिरा कर वहां एक मसजिद बनवा दी थी और भो कई ढंगों से मुसलमानों पर रहम, रियातें और हिन्दुओं पर जुलम करता था।

अब जब कि वह राज सिंघासन पर बैठ गया, तब तो उस ने मन के साथ फैसला कर लिया कि भारत में एक भो हिन्दु न रहने दिया जाये।

इस फैसले को सखती से अमल में लाने के लिये उस ने कानून का दुरोपयोग करना प्रारंभ कर दिया। उस ने अपनी सेना, पुलिस तथा सभी हाकिमों और सभ मुसलमानों को हिन्दुओं को तंग करने की छूट दे रखी थी। जैसे कि—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किसी स्थान पर कोई मुसलमान किसी हिन्दू को लूट ले, उस की इजत तबाह कर दे, उस की कोई फरियाद फरियाद नहीं सुनी जाती थी।

इस प्रकार कमजोर हृदयों के हिन्दू सखती के मारे मुसलमान बनते जा रहे थे। उस समय की एक कहावत बन गई कि औरंगजेब हिन्दुओं का सवा मन यज्ञोपवीत [जन्जु] उतार कर भोजन पाता था।

उस समय कोई कानून, कोई अदालत नहीं थी। जो हुकम बादशाह तथा उस के हाकिम दे दें वही कानून था।

औरंगजेब १६८५ ई० को राज सिंघासन पर बैठा और राज प्रबन्ध मजबूत करते ही उसने सभ से पहले निम्नलिखित हुकम जारी किये :—

(१) हिन्दुओं के विद्यिक आश्रम सभ स्थानों पर बंद किये जायें। सभ हिन्दु छात्र तथा छात्राएं मुसलिम स्कूलों तथा मसजिदों में पढ़े. और कोई भी हिन्दू मदरसे में अध्यापक न लगने पाये।

(२) हिन्दुओं के मन्दिरों में कुल रसमो रिवाज हिन्दु धर्म के अनुसार कोई भी नियम तथा रहु रीति न की जाये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और न ही कोई नया मन्दिर बनाया जाये।

[३] हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए एक विशेष महकमा बना दिया गया। उस महकमे को मुंह मांगा खर्च तथा कई प्रकार की हिन्दुओं पर सखती करने की सुविधाएं दी गई।

(४) बड़े बड़े प्रसिद्ध फकीरों को बहुत सा धन दे कर सारे भारत में दौरे करके हिन्दुओं को मुस्लमान बनाने के लिए कहा गया।

(५) हिंदू से नये बने मुसलमान को विशेष अधिकार और सुविधाए दी गई।

[६] भारत के हर शहर में मसजिदें बनवाई जायें और उनका खर्च कुछ तो शाही खजाने से और कुछ हिंदुओं से कर (टैक्स) के रूप में लेकर लगाया जाये। यहाँ तक कि हिंदू धर्म के इतहासिक मंदिरों को गिरा कर उस का चूना तथा ईटें मसजिदों पर लगाई जायें। काँशी अयुध्या आदि इतहासिक मंदिरों के स्थान पर मसजिदें बनाई जाये।

इस प्रकार हिन्दुओं पर अन्धा धुन्ध जुलम करने प्रारंभ कर दिये। जवाला मुखी लाटों को लोहे के तवे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(ढकने) लगा कर बंद किया गया। जहां कहीं भी हिन्दू धर्म के ग्रन्थ, वेद, पुरान आदि मिले या खोज खोज कर जला दिये गये। हिंदूओं के तीर्थ में जो सभ मेले, उत्सव तथा कुंभ आदि बिलकुल बन्द कर दिये गये।

मथरा में जो राजा बीर सिंह बुन्धेले ने ३३ लाख रुपया लगा कर बहुत ही सुन्दर मन्दिर बनवाया था, उसको गिराकर वहां मस्जिद बनवा दी गई।

इतहास पढ़ने वाले जानते हैं कि औरंगजेब के जुलमों की कहानी बहुत ही लंबी और भयानक है। व्यापारिक कामों में मुसलमानों से हिन्दुओं पर दस गुणा अधिक कर (टैक्स) लगाये गये थे।

सरकारी नौकरियों पर केवल दो या तीन प्रतिशत हिन्दू नौकर रखे गये। किसी भी हिन्दू को मुसलमान के मुकाबले की कोई बात नहीं करने दी जाती थी।

एक बार कुछ सतिनामी फिरके साधूओं ने औरंगजेब के विरुध कुछ रोस प्रकट किया जो उसने सभ साधूओं को बुलाकर कतल करवा दिया। कहते हैं कि साधूओं की संख्या लग भग दो हजार थी।

भारत के बहादुर फिरके, जैसे कि राजपूत तथा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मरहटे थे। उन का भी औरंगजेब के आगे कुछ कहने की हिम्मत न पड़ती थी।

औरंगजेब का सिक्खों की ओर ध्यान

हिन्दुओं पर बे-हद जुलमों के साथ औरंगजेब ने अब सिक्खों की ओर भी ध्यान दिया। क्योंकि वह सिक्खों को भी हिन्दुओं का ही एक फिरका समझता था। वह सिखो को एक बहादुर तथा गैरत वाली कौम और हिन्दुओं की रक्षा करने वाले जानकर इनको भी खतम करने पर तुल गया। यहां तक कि वह सिखो को तथा गुरु घर को मुगल राज्य के लिये भारत में सब से बड़ा खतरा समझता था। इसलिये उसने धीरे धीरे सिख धर्म के गुरुद्वारे भी गिराने आरम्भ कर दिये। और मसंदो को गुरु घर के लिये धन इकत्र करने की मनाही की आज्ञा प्रसारत कर दी।

औरंगजेब इतना जिदी तथा जालिम था कि वह केवल सिख ही नहीं बल्कि अपने विरुध मुसलमानो में से जो साई तथा सूफी आदि फिरके थे, उनको भी नहीं सहार सकता था। कई स्थानो पर सूफी और शीया आदि फिरको पर भी जूलम किये।

एक सरमद नाम का का बहुत ही प्रसिद्ध सूफी फकीर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था। उस की दिल्लीकी शाही मस्जिद के आगे लाकर कतल कर दिया था। इस प्रकार जुलमो की धाक भारत में ही नहीं बल्कि सारे संसार में ही धाक पड़ गई, यहाँ तक कि मक्के के काजी भी औरंगजेब को अच्छा नहीं समझते थे।

इधर श्री गुरु तेग बहादुर जी भी औरंगज़ेब के अत्यंत अत्याचारो को सुन सुन कर इसको नष्ट करने के लिए समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। बहुत से हिंदू नेता गुरु जी को औरगज़ेब के जुलमो की भयानक कहानियां सुनाते और पुकार करते थे देवी देवताओ से तो हिंदू जनता पूरी तरह निराश हो गई थो। संसार में उनको सहारा देने वाला कोई भी दिखाई नहीं पड़ता था।

हां सभी की आंखें गुरु नानक के दरबार की ओर लगी हुई थी।

गुरु जी की आसाम यात्रा

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी जानते तो थे कि भारत के हिंदू राजाओ में मुगल राज के साहमने आने का हौंसला नहीं रहा। परन्तु फिर भी आप उनको जागरत में लाने का यत्न करना चाहते थे। अनंद पुर साहिब बसाने का एक तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह कारण था कि यह पर्वतों का संगठन है, जो क़ि युध के लिये हर प्रकार से अनुकूल होता है। दूसरी ओर दिल्ली का सारा राज्य है तथा पहाड़ी हिंदू राजे हैं।

गुरु जी का भाव था कि गुरु–घर के साथ युद्ध तो अवश्य ही होना है। यदि पहाड़ो राजाओ में ज़रा भी हिंदू-धर्म तथा भारतीय गैरत है तो वह गुरु–घर के साथ मिल जायेंगे। इस प्रकार दिल्ली के जालिम राज्य के साथ युध करना सम्भव हो जायेगा और यदि कभी यह गदार तथा कायर निकले और इन के मन में गैरत का कोई पाश न हुआ, यदि इन लोगों ने शाही सेना का साथ देना चाहा, तो भी इन का पहले ही पता चल जायेगा। जिस से पहले इन पहाड़ी राजाओ की खबर ली जा सकेगी।

शोक ! इन लोगो में भारतीय गैरत का निशान भी नहीं रहा था। इन लोगो ने शाही सेना की सहायता की, जिसके बाद में गुरु गोबिंद सिंह जी ने इन पहाड़ो राजाओं की खूब मुरम्मत की।

श्री अनंदपुर का स्थान बसा कर श्री गुरु तेग बहादुर जी पूर्वी भारत में आसाम आदि प्रांतो के दौरे को इस लिये चले गये ताकि उस ओर के राजाओं को औरंगजेब के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अत्याचारों से सूचित करके †हिन्दू धर्म को बचाने के लिये उन लोगो के मन में भी मुगल राज्य के साहमने आने का साहस तथा हौंसला दिलाया जाये ।

दूसरा यह भी था कि औरंगजेब के पास राम राये और धीर मल्ल ने गुरु घरके लिये कई प्रकार की तवारीये लगा लगा कर उस रुब गुरु जी के साथ युध करने का विचार बना दिया था, इधर अभी शाही सेना के साथ सीधी टक्कर लेने के लिये गुरु घर की त्यारी नहीं हुई थी, और गुरु तेग बहादुर जी पहाड़ी राजाओं का मन जाँच चुके थे ।

गुरु साहिब सारे परिवारके साथ ही यहां से चल पड़े । और साथ ही पचास साठ योधा सिक्ख भी ले लिये ताकि जब मुगल सेना के किसी दसते के साथ मुठ भेड़ हो भी जाये तो उनके दांत तोड़ें जायें। क्योंकि उन दिनो में औरंग जेब ने मुगलों को हिन्दुओं को लूटने की आज्ञा तो दे ही रखी थी । इस लिये मुसलमान डाकूओं के अनेकों दसते भारत में हिन्दुओ को लूटते मारते फिरते थे ।

---

†आपने हिंदू—धर्म के लिये अपनी शीस कुरबान किया (शेष ३७७ पर देखो]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्द पुर से चल कर पहले मालवा प्रांत को, बांगर देश को फिर भुले वाला, भिखी, खीवा मौड़, साबो की तलवंडो आदि ग्रामों से होते हुए, संगतों को उपदेश करते हुए अ गे धमधा न के रास्ते कुरुक्षेत्र में जा निकले। वहां से थानेसर, बिदरपुर के रास्ते में जमना से पार होकर यू. पी. के प्रांत में भी प्रवेश किया।

यू. पी. में एक मानिकपुर नामक कसबा है। वहां एक बहुत प्रसिद्ध वैरागी साधू रहता था। उस का नाम मलूक दास था। उसके साथ गुरु जी को ज्ञान चर्चा हुई। जिस में वह हार कर गुरु जी का सिख बन गया।

गुरु जी ने उसको सिखी प्रचार का केन्द्र बना कर आप आगे मथरा आगरा आदि शहरों से होते हुए, संगतों को सत्य का उपदेश देते प्राग राज में प्रवेश किया। यहां पर आप की याद में एक गुरुद्वारा है।

गुरु जी जहां जहाँ भी गये, वहाँ वहां ही आप की

[३७६ सफे की बाकी)

था। इस लिये आप का उप नाम हिन्दुओं में 'हिन्द की चादर" पड़ गया था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यादगारें बनती गई जो कि हमेशा के लिये कायम रहेंगी गुरु वाक्य के अनुसार कि :—

जिथै बाबा पैर धरै
पूजा आसण थापन सोहिया ॥

अथवा

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरु
सो थान सुहावा राम राजे ॥

प्राग राज में आप कुछ देर निवास करके कांशी जी चले गये। वहां से सरसावा और फिर परिवार सहित पटना नगर [श्री पटना साहिब) पहुंचे। यहां पर गुरु नानक देव जी के सिख रहते थे जो कि बड़े धनवान थे। जिनके नाम थे। सालस राय जौहरी और भदर जो की सन्तान के लोग। जिन्होंने आप का बहुत ही स्वागत किया। यहाँ ही गुरु जी ने अपने परिवार को विश्राम करा दिया, क्योंकि भारत के धर्म के मलाह श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का जन्म होने वाला था। दस पन्द्रह सिख अपने साथ और शेष योधे सिख परिवार के पास छोड़ कर आप वहाँ से आगे चले गये।

गुरु जी बिहार का दौरा करके आसाम देश में पहुच गये। उस से पहले ढाके (बंगाल) में भी गये थे। यहाँ पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी श्री गुरु नानक देव जी के सिखों की सन्तान रहती थी। उन्होंने गुरु जी का बहुत स्वागत किया।

आप जब आसाम का दौरा कर रहे थे तो आप को सूचना मिल गई कि आपके घर लड़के का जन्म हुआ है। तब आप ने समझ लिया कि ईश्वर ने भारत के धर्म की रक्षा करने वाला भेज दिया है। इसी खुशी में आपने निर्धनो को बहुत सा पुन्न दान दिया।

इसके पश्चात आपने आसाम के प्रसिद्ध २ नगरों का दौरा किया जैसे कि–

गोहाटी, धोबड़ी, रंग मती और कमखशा आदि।

आप को पता लगा कि कूच बिहार के राजा को औरंगज़ेब के साथ जंग छिड़ रही है।

तब गुरु जी ने उस राजे के पास जंग के सम्बन्ध में पता करने के लिये उचित समझा। जब पता किया तो मालूम हुआ कि कूच के राजा में ही दोश है। क्योंकि उसने औरंगजेब के कुछ इलाकों पर कब्जा किया हुआ था।

औरंगजेब ने अपने इलाके छुड़वाने के लिये १६६१ ई० को एक फौजी दस्ता भेजा। परन्तु वह हार कर चला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गया। पांच साल के पश्चात फिर औरंगजेब ने राजा राम सिंह को भारी सेना देकर भेजा। उस के साथ १५ हजार सिपाही औ तोफ खाना भेज कर और साथ ही उस इलाके के हाकिमों को सहायता के लिये लिख दिया।

बात कुछ उलट सी बन गई। गुरु जी तो कूच बिहार के राजा की हालत भापना चाहते, परन्तु राजा राम सिंह पहले ही गुरु जी से जा मिला और जंग जीतने के लिये वरदान माँगने लगा।

किन्तु गुरु जी ने बीच पड़ कर दोनों में सुलह करवा दी, क्योंकि यहां पर दोनों हिन्दू राज़ाओं में युध का बहुत बड़ा प्रश्न बन गया था।

यहा पर गुरु जी के वाक्यों के कई चमत्कार देखने में आये।

एक समय मुगल सेना के ब्रम्ह पुत्र दरया पर डेरे लगे हुये थे कि गुरु जी ने कहा, "यहां से डेरे उठा लो, क्योंकि सुबह यहां बाढ़ आ जायेगी।"

मुगल सेना ने इसकी कोई प्रवाह न की, और डेरे न उठाए, जिसका परिणाम यह निकला कि दरया में बाढ़ आ गई और मुगल सेना बह गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसाम में गुरु जी की यादगार

इस जग की खुशी में धोबड़ो नगर में बहुत बड़ा गुरुद्वारा बनाया गया। यहां ही गुरु जो ने एक नगर बसा कर वहा पर अपना एक खंजर रख कर उस नगर का नाम "खन्जर नगर रख दिया था।

अब आपने वहां से वापिस आने का प्रोगराम बनाया तथा त्यारी की।

गुरु जी का वापिस पंजाब तथा आनन्द पुर में आना।

गुरु जी ने अभी और बहुत से स्थानों के दौरे करके फिर पटने में अपने इकलौते साहिबजादे को देखना था, परन्तु पंजाब से आप के पास खबर पहुंचा कि औरगजेब के जुलम दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं। और हजारों हिन्दू मौत तथा अत्याचारों से डर डर कर मुसलमान बनते जा रहे हैं। लोगों को संसार में कोई सहारा नहीं दिखाई दे रहा था। एक गुरु नानक का दर ही खुला था, परन्तु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोग वहां से भी निराश हो गये थे, क्योंकि मुगलों ने लोगों तथा हिन्दुओं पर यह असर डाल दिया था कि जिस गुरु पर तुम लोग गर्व करते हो वह तुम्हारी सहायता क्या करेगा। वह तो औरंगजेब के डर से कभी आसाम और कभी बंगाल में अपनी जान बचाता फिरता रहता है।

जैसे ही गुरु जी ने यह बात सुनी तो उसी समय एक आज्ञा-पत्र लिख कर पटने साहिब में भेज दिया कि परिवार तथा साहिबजादे को लेकर सीधे आनन्द पुर साहिब पहुंच जाओ। और आप बड़ी बड़ी मन्जिलें तैह करते हुए परिवार से पहले ही अनन्द पुर पहुंच गये।

अब श्री गुरु तेग बहादुर जी औरंगज़ेब के अत्याचारों रोकने के लिये विचार कर रहे थे। परंतु वह समय बहुत ही भयानिक था।

महात्मा बुध्द, हजरत ईसा तथा महात्मा गान्धी के सिधान्तों आदर्शक शक्ति का कोई मूल्य न था वह तो "जो पुकारा सो मारा" वाली बात बन रही थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कशमीर के पण्डितों का गुरु जी की शरण में आना

किसी कवी ने क्या खूब लिखा है कि :–

केहर मूछ भझंग मणि,
सूरे शरण पयां ।।
कृपण के घर लच्छमी,
चारे देण मोयाँ ।।

भाव—शेर अपनी मूंछ, सांप की मणी, कृपन का धन और शूरवीर तथा योधा अपनी शरण में आये को बस्तु नहीं देते । जब तक कि यह चारों पहले आप न मर जायें ।

सो इसी प्रकार श्री गुरु तेग बहादुर जी थे । एक वद्वितीय योधा थे जो अपने शरण गति पुरुषों को कैसे दे सकते थे, स्वयं शहीद होने के बगैर ।

औरंगजेब ने फैसला कर लिया था कि जब तक भारत के सारे प्रांत मुसलमान नहीं बन जाते तब तक मुगल राज को खतरा रहेगा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस समय औरंगजेब के साहमने आसाम, बंगाल, महाराष्ट्र तथा राजस्थान के इलाके थे, परन्तु वह चाहता था कि पहले सारे कशमीर को मुसलमान बना लिया जाये। उसके पश्चात सारे पंजाब को। फिर राजस्थान, महाराष्ट्र, बंगाल और आसाम की ओर रुख किया जाये।

औरंगजेब ने विचार कि यदि पूर्वी और दक्षणी भारत के हिन्दुओं पर तलवार चलाई जाये तो इधर पंजाब और कशमीर के हिन्दुओं की बगावत का खतरा न रहेगा।

औरंगजेब की सकीम में पहले कशमीर फिर पहाड़ी बिलासपुर आदि बाई धार रियासतें। उसके पश्चात पंजाब पर खूनी तलवार चलाई जाये।

यह सोचकर उसने कशमीर पण्डितों को एक मास की मोहलत दे दी थी कि वह एक महीने के अन्दर अन्दर इस्लाम धारण कर लें तथा मुसलमान बन जायें, नहीं तो बुरी प्रकार कतल कर दिये जाएगे।

औरंगजेब का हुकम सुनते ही वह सब के सब एकत्र होकर श्री अमर नाथ पुरी में पहुंच गये। जहां हिन्दुओं का बहुत बड़ा मन्दिर है। वहां जाकर सब ने प्रार्थना की कि, "हे भगवान ! हमारी और हमारे धर्म की रक्षा करो"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब उस मन्दिर से अकाश वाणी हुई कि, "जाओ! ईश्वर का रूप तो श्री अनंद पुर में श्री गुरु नानक देव जी की गदी पर विराज़मान है। उस के चरणों में पुकार करो, वह तुम्हारे धर्म की रक्षा करेगा।"

अब कशमीर के दस बारह मुख्य पण्डितों का एक डैपुटेशन श्री अनंद पुर साहिब पहुंच गया और श्री गुरु तेग बहादुर जी के चरणों में निवेदन की, "हे गुरु नानक के सरुप जीओ! आप हमारे जन्जु तथा तिलक की रक्षा करो आपका और हमारा धर्म एक ही है।"

गुरु जी ने कहा, "नहीं! आप के और हमारे धर्म में अन्तर है. परन्तु आप गुरु नानक के दरबार में आ गये है। इस लिए हम आपके धर्म को अवश्य ही बचाएंगे तथा उसकी रक्षा करेंगे।"

इतना कह कर गुरु जी सिर नीचे करके कुछ सोच रहे थे कि बाहर से आप का साहिबजादा गोबिंद राय आ गया। पिता को कुछ चिन्तातुर हुए देखकर पूछा, "पिता जी आप आज क्या विचार रहे हैं?"

"बेटा तुम को इन विचारों से क्या. "मैं तो बहुत बड़ी बात को विचार कर रहा हूं। तुम अभी बहुत छोटे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो इस लिये तुम्हें यह बात बताने का कोई भी लाभ नहीं है।" गुरु जी ने बड़े गम्भीर लहजे में कहा।

नहीं ! नहीं !! पिता जी, अवश्य बताईये।" श्री गोबिन्द राय† ने कहा।

श्री गुरु तेग बहादुर जी ने कहा, "बेटा देख यदि तू पूछना ही चाहता है तो सुन, यह जो कशमीर के पण्डित हैं। औरंगजेब ने इनको केवल एक महीने की मोहलत दी है कि मुसलमान बन जाओ, यदि न बने तो कतल कर दिये जाओगे और यह गुरु नानक दरबार की शरण आये हैं।"

गोबिंद राये ने कहा, 'फिर पिता जी इनकी तथा हिन्दू धर्म को कैसे रक्षा हो सकती है।"

"किसी बहुत महान पुरुष के सिर की आवश्यकता हैं, जो दिल्ली में जाकर अपना सोस कुरबान करे।" श्री गुरु तेग बहादुर जी ने कहा।

---

†उस समय श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का नाम गोबिंद राये ही था। बाद में गुरु गोबिंद सिंह पड़ा था। देखो जीवन चरित्र श्री गुरु गोबिंद सिंह जी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"पिता जो ! आप से बड़ा और कौन महां पुरुष होगा। आप ही इनका धर्म बचाने के लिए आना सीस कुरबान कर दीजिये।" गोबिंद राय ने कहा।

'बेटा ! तू नहीं जानता कि औरंगजेब को खूनी तलवार गुरु-घर के ऊपर भी लटक रही है। और तुम्हारी आयु अभी केवल नौ वर्ष को है। तुम्हारो सहायता कौन करेगा।" गुरु तेग बहादुर जी ने कहा।

गोबिंद राये ने बड़े साहस के साथ उत्तर दिया, "ईश्वर ! पिता जी जिस प्रभु ने मेरी माता के गर्भ में रक्षा करी है. भला वह अव मेरी सहायता कैसे नहीं करेगा, जब कि मैं नौ वर्ष का हो गया हूं।"

श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज अपने छोटे बेटे के मुंह से यह बात सुन कर अश्चर्य रह गये और बहुत ही प्रसन्न हुए और कहने लगे, "लो बेटा ! अब आप भारत की संभाल करो और हिन्दू धर्म की रक्षा करो। मैं इन शरणागतों की लाज रखने के लिए दिल्ली जाकर सोस का बलिदान देकर इनकी रक्षा करता हूं।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज का दिल्ली जाना

[हिन्दू धर्म के लिए सीस भेंट करना]

प्रिय पाठक! पहले भी आप पढ़ चुके हैं कि अपने लिये, अपने घर, अपनी कौम तथा अपने धर्म के लिये कुरबान होने वाले तो बहुत महापुरुष तथा शहीद मिलेंगे, परन्तु दूसरों के धर्म की रक्षा करने के लिये शहीद होने वाला तो एक ही श्री गुरु तेग बहादुर मिलेगा।

श्री गुरु तेग बहादुर जी ने अपने बेटे गोबिंद राये के साथ बहुत से समझदार सिखों को दिया। सारी संभाल और बहुत सी राजनीति तथा समय के अनुकूल बातें समझा कर आप आनन्द पुर की संगतों अपने महल माता गुजरी जी को तथा अपने बेटे को अन्तिम दर्शन देकर स्वयं दिल्ली के लिए चल पड़े।

गुरु जी ने अपने साथ दस सिख ले लिये और रोपड़ से होते हुए सेफा बाद में एक पठान के यहाँ बिश्राम किया। यह पठान गुरु जी का प्रेमी था। उस के पश्चात समाणा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नगर से आगे जा रहे थे कि एक गड़ीं नजीर का पठान गुरु जी को निवेदन करके अपने किले में कुछ दिन विश्राम करने के लिए ले गया।

तब किसी जासूस ने दिल्ली औरंगजेब को इस बात की सूचना दे दी तो बादशाह ने घोड़ सवारों का दस्ता गुरु जी को गिरफ्तार करने के लिए भेज दिया।

तब उस पठान नें उनकी अच्छी झाड़ करके वापिस लौटा दिया और बड़ा क्रोधित होकर कहा कि यहाँ कहां गुरु जी है।

उसके पश्चात गुरु जी के आगे बड़ी निम्रता से निवेदन की, "महाराज आप कहें तो मैं आप को यहां अपने किले में ही सुरक्षित रख सकता हूं। यहां पर किसी को साहस नहीं हो सकता कि आप को पकड़े। यदि आप आज्ञा दें तो मैं औरंगजेब की सेना से लड़ भी सकता हूं।"

गुरु जी ने कहा, "नहीं! अभी समय नहीं। हर बात समय के अनुसार होती है। वह समय शीघ्र ही आने वाला है। तुम चिन्ता न करो।"

इस प्रकार गुरु जी वहां से आगे को चल पड़े।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रास्ते में कई स्थानों पर संगतों को उपदेश देते, हृदय शांत करते हुए करहाली नगर पहुच गये। वहां से चिहक्का खरक और खटकड़ आदि नगरों से होते हुए आगरा शहर में पहुंच गये। वहाँ भाई गलौरे मसंद के यहां ठहरे और उसको एक तीरों का बस्था बखशीश देकर आगे चले गये।

उस स्थान पर शेष सभ सिखों को तो वापिस लौटा दिया। केवल उन सिखों को ही साथ रखा जिन्होंने गुरु जी के साथ शहीद ही होना था। जिनके नाम थे–

भाई मती दास, भाई गुरदिता, भाई दयाला, भाई ऊदा और भाई चीमा जी।

गुरु जी आगरा में एक माई थान के पास ठहरे थे, जहां पर अब तक "माई थान गुरुद्वारा है गुरु जी की यादगार मौजूद है। यहां पर बहुत बड़ा प्रसिद्ध गुरुद्वारा है और संगतों का भारी इकठ होता है।

श्री गुरु तेग बहादुर जी की गिरफतारी

श्री गुरु तेग बहादुर जी की गिरफ्तारी अश्चर्य ढंग से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुई थी। आप आगरे से पांच मील दूर एक बाग में डेरा लगा कर बैठ गये। वहाँ एक अयाली बकरियाँ चरा रहा था कि गुरु जी ने उसको एक सोने की अंगूठी और एक बहु-मूल्य दुशाला दिया। वह उन वस्तुओं को बेचने के लिये बाजार ले गया। जिस दुकानदार पास अयाली ने बेचा, उस ने अयाली को तो थोड़ा मोल दिया, परन्तु स्वयं आगे ज्यादा मोल पर बेचने को गया। जो कि चोरी के शक्क से पकड़ा गया। उसने उस अयाली को पकड़ा दिया। अयाली ने गुरु जो का पता बता दिया।

तब हसन अली ने सौ स्वार लेकर बाग को घेर लिया। परन्तु गुरु जी तो इसी भाव से आये थे। सो शांत रूप गुरु जी को पाँच सिखों के हमरा आगरे के किल्ले में रखा गया। उसके बाद १२०० स्वारो के साथ दिल्ली ले आये। वहां एक हवेली में गुरु जी को नजर बंद करके एक सौ सिपाहीयों का पहरा लगा दिया गया।†

---

†कहते हैं कि गुरु जी की गिरफ्तारी और शहीदो के समय औरगजेब देहली में नहीं था। गुरु तेग बहादुर जी को औरंगजेब की गैर हाजरी में शहीद किया गया। यह बात बिलकुल निर-मूल्य है, क्योकि इतनी बड़ी शहीदी

(शेष ३९२ पृष्ठ पर देखो)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी ने हिन्दू धर्म के लिये अपना बलिदान देना

तिलक जन्जु राखा प्रभ ताका ।।
कोनो वडो कलू में साका ।।
धर्म हेत साका जिन किया ।।
सीस दिया पर सिरड़ न दिया ।।
धर्म हेत इतनी जिन करी ।।
सोस दिया पर सी न उचरी ।।

(सफं ३९१ को बाकी)

कभो भी औरंगजेब की गर हाजरी तथा उसकी आज्ञा बगैर हो ही नहीं सकती थी।

दूसरी बात यह भी निर-मूल्य है कि जो गुरु जो कुछ देख रहे थे तो पहरेदारों ने शिकायत की कि गुरु जी काजियों के सतर [पड़दे वाले घर] देख रहे थे। पूछने पर गुरु जो ने कहा नहीं मैं तो टोपी वाले सिख देख रहा था, जिन्हों ने तुम्हारे सतर तोड़ने हैं। यह बात अंग्रेजों ने बनाई थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चले थे तो उन कशमीर के पंडितों को कहा था कि जाओ औरंगजेब को कह दो कि यदि गुरु तेग बहादुर जी मुस्लमान बन जायें तो सारे भारत के हिन्दू मुसलमान बन जायेंगे।

सो उन्होंने ऐसे ही कह दिया था। जिस पर गुरु जी के पास काजियों तथा कर्मचारियों का एक डैपूटेशन आया और बड़े ढंगों के साथ गुरु जी को कहा कि यदि आप मुसलमान बन जाओ तो सारे भारत के हिन्दू भी मोमन बन जायेंगे। और सारे भारत में एक ही धर्म होने से लड़ाई झगड़ों का खातमा हो जायेगा। आप भी सारे भारत के सभ से बड़े पीर माने जाओगे। यहां तक कि औरंगजेब भी आपकी आज्ञा में चलेगा। बल्कि सारे ही इसलाम का आपको रहनुमा तथा पेगम्बर माना जायेगा।

गुरु जी ने काजियों को ऐसा उत्तार दियां कि वह सभ के सभ निरउत्तार हो गये।

गुरु जी ने कहा, "मान, इजत आदि की तो आप बात ही न करें। तुम लोगों के लिए यह बहुत बड़ी बात है, परन्तु हम इन बातों को कुछ भी नहीं समझते। हमारा हृदय इन बातों से बहुत ऊंचा है। शेष जो आप का यह विचार है कि भारत के सारे धर्मों को मिटा कर एक ही इसलाम बना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया जाये। यह भी अनयथा यत्न तथा विचार है। जैसे कि अनेकों दरया एक ही सागर में पड़ते हैं। परन्तु यदि कोई सब दरयाओं के कुदरती रास्ते बदल कर एक दरया में डाल दिये जायें तो यह कभी भी नहीं हो सकेगा।

दूसरा यह इसलाम कोई सिद्धाँतिक या निरोल सचाई पर निर्भर मजहब नहीं। जो लोग इसको खुशी से स्वीकार करेंगे। यह तो एक उपन्यास तथा कहानी है।

गुरु जी की इस प्रकार की निरभयता की बातें सुन कर अपने जैसा मूंह लेकर वापिस चले गये।

इसके पश्चात गुरु जी के पांच सिख थे उनको भी कई प्रकार के लालच दिये। यहां तक कि भाई मती दास तथा भाई दयाले को ता बड़े २ नवाबों की लड़कियों के साथ विवाह तथा भारत के प्रांतों के गवरनर बनाने को भी कहा गया। परन्तु सिखों ने कहा, 'यदि आप त्रिलोकी का राज भी दे दें तो भी हम सिखी नहीं छोड़ सकते।"

यह सारी रिपोर्ट औरंगजेब के पास पहुचाई गई। तब उसने सबसे बड़े काजी को सखत से सखत दण्ड देकर सिखों को गुरु जी के साहमने कतल करवाने का हुकम दे दिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बस ! फिर क्या था, जालिम और पत्थर दिल काजियों ने इस प्रकार सिक्खों पर फतबे लगा दिये ।

भाई मती दास की शहीदी

इस संसार के इतहास में शहीद तो बहुत हुए हैं। परन्तु जिस प्रकार को शहोदियां गुर–सिखों तथा गुरुओं ने प्राप्त की हैं उसका उदाहरण मिलना असम्भव है ।

आप संसार के शहीदों की कहानियां तो पढ़ ही चुके होगे अब सिख शहीदों की कथाएं भी पढ़ कर उनका अनुमान लगा लीजिए ।

मुगल तथा मुसलमान हकूमत का यह नियम था कि उसमें किसो को किसा प्रकार का दण्ड देना हो तो वह सब जनता के साहमने देते थे ताकि सब लोगों पर इस का प्रभाव पड़ सके।

अब भाई मती दास को सायं के समय सुना दिया गया कि आप को प्रातः काल सारे शहर के साहमने चांदनी चौंक में आरे साथ चीर कर दो फाड़ कर दिया जायेगा। रात्रि भर विचार कर लो, यदि इसलाम कबूल तथा स्वीकार कर लो तो छोड़ दिया ज़ायेगा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रात. काल हो सारे शहर में मुनादी करा दी गई, जो सारा देहली शहर इस भयानक घटना को देखने के लिए चौंक में एकत्र हो गया।

भाई मती दास के साहमने जलाद आरा लेकर खड़े दिखाई दे रहे थे। उधर काजी ने पूछा, "मती दास तेरी अन्तिम इच्छा क्या है ?"

मती दास ने कहा, "यही एक कि मेरा शरीर आरे के साथ चीरते समय मेरा मुंह मेरे गुरु जी के पिंजरे की ओर होना चाहिये।"

काजी ने कहा, "यह तो हमारा पहले ही विचार है कि सभ सिखों को गुरु के सामने ही कतल करें।"

भाई मती दास जी को एक शकंजे में जंजीरों के साथ बांध दिया गया और उसके पश्चात उसके सिर पर आरा रख कर दोनों जलादों ने चीरना शुरु किया और उधर भाई मती दास जी ने श्री जपुजी साहिब का पाठ शुरु कर दिया।

एक ओर तो जलाद भाई जी को आरे के साथ शतीर की प्रकार चीर रहे थे, दूसरी ओर भाई जी श्री जपुजी साहिब का पाठ कर रहे थे। तीसरी ओर एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारत के शहीद का खून औरंगजेब के जुलम की आग को शाँत कर रहा था। चारों ओर सभ लोग हाहाकार कर रहे थे। पांचवी ओर अकाश के देवता गंध्री फूलों की वर्षा कर रहे थे। छटो ओर श्री गुरु तेग बहादुर जो अपनो जान से प्यारे सिख को कृपा दृष्टि से देख रहे थे। सातवीं ओर ब्रम्ह पुरी से देवते भाई जो को बैकुण्ठ धाम को ले जाने के लिये एक पालको लिये खड़े थे। आठवीं ओर इस भयानिक जुलम से दुष्ट पुरुषों के हृदय बुरा भांति काँप रहे थे।†

बस ! इधर भाई जी का शरीर चोरा गया। उधर श्री जपुजी साहिब का पाठ समाप्त हो गया।

---

†कहते हैं कि जब भाई मता दास को चारने लगे तो एक काजी ने कहा, "यदि तुम्हारे गुरु में शक्ति है तो तुझको बचा लें।"

इस बात को सुन कर भाई मती दास जी ने गुरु जी से आज्ञा माँगी, कि यदि आप आज्ञा दें तो देहलो शहर को तबाह कर दूं।

तब गुरु जी ने कहा, "भाई जो ! इस अजर को तो जरना है।" तब भाई जी शांत हो गये थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह भारत का अमर शहीद कि उसकी आत्मा सच खण्ड को पधार गई ।

भाई दयाले की शहीदी

दूसरे दिन भाई दयाला जी को उसी चाँदनी चौंक में ले जाकर देग में उबाल दिया और भाई जी जितनी देर देग में उबलते रहे, उतनी देर श्री जपुजी साहिबका पाठ करते रहे ।

इस अमर शहीदी को सारा शहर देखता रहा । अन्त भाई दयाला जी की आत्मा भी शहीदी प्राप्त करके अमर देश तथा बैकुण्ठ धाम को पधार गई ।

शेष सिक्खों ने कारागार तोड़ कर भाग जाना

जो गुरु जी के साथ पाँच सिख थे, उन में से दो तो शहीद हो गये । शेष भाई गुरदित्ता तो गुरु जी के पास रहा । परन्तु इन दो शहीदों की महां भयानिक शहीदी को देख कर एक तो जालिमों के हृदय कांप उठे थे ।

दूसरे जो सिख गुरु जी के साथ कैद थे । भाई चीमा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और भाई ऊदा। उन्हों ने गुरु जी के आगे निवेदन की कि "महाराजा हम तो तलवार लेकर जालिमों के साथ लड़ कर मर सकते हैं। परन्तु इस प्रकार जुलम नहीं सहार सकते।"

तब गुरु जी ने कहा, "तो जाओ और जेल तोड़ कर भाग जाओ तथा जालिम का नाश करो।"

गुरू जी की शक्ति से पहरेदार सो गये और वह दोनों सिख जेल तोड़ कर भाग गये। और भाई गुरदिता को गुरु जी की शहीदी के पश्चात छोड़ दिया था। जो वह भी वहाँ दिल्ली में ही परलोक सुधार गये थे।

गुरु जी पर सखती करनी

जब जेल के कर्मचारियों को सिक्खों के भाग जाने का पता लगा तो उन्हों ने गुरू जी पर बहुत भयानिक सखती की कि किसी प्रकार यह इसलाम कबूल कर लें। गुरू जी को एक छोटे से पिंजरे में बन्द कर दिया गया। जहाँ पर ना तो बैठा जा सकता था और न लेटा जा सकता था। पन्द्रह दिन तक इसी प्रकार रखा गया। परंतु गुरू जी अडोल और शांत रहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरू जी की शलोकों में पत्रिका

कहते हैं कि वह दोनों सिख जो जेल तोड़ कर भाग गये थे, उन्हों ने आनन्द पुर में सारी खबर दी तो वहां से माता गुजरी जी और गुरू गोबिंद सिंह जी ने एक सिख को भेजा। उस ने गुरू तेग बहादुर जी से किसी प्रकार जेहल में मुलाकात की तो गुरू जी ने उस को अन्तिम गुरुबाणी के ४९ शलोकों में एक पत्रिका लिखी। जो हर एक सिख को पढ़ने चाहियें। वह शलोक बैराग और ज्ञान से भरे हुए हैं।

जब वह शलोकों के रूप में सिख गुरु जी की पत्रिका ले कर आनन्द पुर साहिब पहुंचा तो उस में एक शलोक इस प्रकार लिखा हुआ था :—

बल छुटकियो बन्धन परै,
कछु न होत उपाये ॥
कहु नानक एह बिपत में,
गज जियो होह सहाये ॥

इस के उत्तर में श्री गुरू गोबिंद सिंह जी ने यह शलोक लिख कर भेजा था :—

बल होआ बधन छुटै,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सभ किछ होत उपाये ॥
कहु नानक सभ किछ तुमरे हाथ में,
तुम ही होत सहाय ॥

श्री गुरू तेग बहादुर साहिब जी का सीस भेंट

श्री गुरु तेग बहादुर जी को कतल करने का फतवा औरंगजेब ने अपने कठ-पुतली काजियों से दिला ही दिया।

सारे दिल्ली शहर में गुरु जी के कतल करने से एक दिन पहले मुनादी की गई कि कल हर मोमन तथा दिल्ली निवासी चांदनी चौंक में पहुंच जायें, क्योंकि वहां पर गुरू तेग बहादुर को कतल किया जायेगा।

अन्त वह मघर शुदि ६, १७३२ विक्रमी का अभाग्य दिन भी भारत के इतहास में आ गया। जब कि भारत के हिन्दु–धर्म की रक्षा के लिये श्री गुरू तेग बहादुर जी को भारत की राजधानी देहली के चांदनी चौंक में कतल करने के लिए लकड़ी की चौकी पर बैठाया गया और एक जलाद को तलवार देकर आज्ञा दी, "बे–शक यह हिन्दुओं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का पीर है, परन्तु तुम ने डरना नहीं, क्योंकि तुम्हें भी शाही फुरमान है।"

उधर सारा शहर इस बे-मिसाल शहीदो के चमतकारे को देखने के लिये आ गया। एक काजी कानूनी पुस्तक लेकर आ पहुंचा और उस ने कहा, "ऐ हिन्दुओं के पीर! तीन बातें तुम को सुनाई जाती हैं, इन में से कोई एक बात स्वीकार कर लो। वह बातें यह है:—

(१) इसलाम कबूल कर लो?
(२) करामात [शक्ति] दिखाओ?
(३) मरने के लिये त्यार हो जाओ?

गुरू जी ने ऊत्तर दिया:—

(१) इसलाम तो कभी भी कबूल नहीं किया जा सकता।
(२) करामात कहर का नाम है।
(३) मरने के लिये तो स्वयं आनन्द पुर से चल कर यहां पर आया हूं। सो जलाद को शीघर ही आज्ञा दीजिये।

बस! फिर क्या था, गुरू जी को पिंजरे से बाहिर निकाल लिया गया! एक भारी मुगल सेना के पहरे में गुरू जी को चांदनी चौंक में ले आये। सेनिकों के पहरे में ही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक कूएं पर जा कर इशनान किया। फिर चांदनी चौंक में चौकी पर बैठ कर श्री जपुजी साहिब का पाठ किया। जब पाठ की समाप्ति हो गई तो गुरू जी ने कहा, "अब कह दो अपने जलादों को कि वह मुझ को कतल कर दें।"

उसी समय काजी ने जलाद को इशारा किया और जलाद ने गुरू जी की गरदन को ताक कर ऐसी तलवार चलाई कि ततछिन गुरू जी का सीस धड़ से जुदा हो गया।

गुरू जी के सीस तथा धड़ की कथा

श्री गुरू तेग बहादुर जी की शहीदी समय की एक महान घटना थी। जब गुरू जी का सिर धड़ से जुदा हो गया तो उसी समय वहां एक प्रकार की भयानिक रूप से गड़ बड़ मच गई। वहां जो लाखों लोग इकठे हुए हुए थे, इधर उधर भागने लगे। जिस से बहुत सी धूड़ उड़ कर अन्धकार सा छा गया। ऐसी हालत को देख कर दो सिख मैदान में आ गये। एक भाई जैता (जो बाद में श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी से अमृत पान कर के जीवन सिंह बन गया था दूसरा था लक्खी शाह वनजारा।

भाई जैता तो गुरू जी का सीस उठा कर बहुत लम्बी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मञ्जिल को तह करता हुआ श्री आनन्दपुर साहिब पहुंच गया। उस के इस बहादुरी तथा साहस को देख कर उसे अपने गले साथ लगा कर वरदान दिया कि–

रंगरेटे गुरू के बेटे ॥"

इस प्रकार गुरू तेग बहादुर जी के सीस का बड़ी सज धज के साथ गुरू गोबिंद सिंह ने ससकार कर दिया और उस स्थान पर गुरु जी की यादगार में बहुत बड़ा गुरुद्वारा बनवा दिया।

उसी दिन से श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने औरंगजेब के राजा को जड़ से उखेड़ने के लिये विधिया विचारनी शुरु कर दीं। जिस का विस्थार आप श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज के जीवन चरित्र में पढ़िये।

बोल श्री गुरू तेग बहादुर साहिब जी की जय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृतांत

श्री गुरू गोबिंद सिंह साहिब जी महाराज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बंसावली श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी

जन्म स्थान	श्री पटना साहिब जी (बिहार)
जन्म तिथि	पोष शुदि ७, १७२३ बिक्रमी
पिता	श्री गुरु तेग बहादुर जी
माता	श्री गुजरी जी
विवाह	ज्येष्ट शुदि १५, १७३० बिक्रमी
	वैशाख १७, १७४१ बिक्रमी
	आषाहु २०, १७५६ बिक्रमी
महिल	श्री जोतो जी, श्री सुन्दरी जी
	श्री साहिब देवां
सन्तान	श्री अजीत सिंह जी श्री जुझार सिंह जी, श्री जोरावर सिंह जी श्री फतह सिंह जी
गुर गद्दी	मघर शुदि ३
जोति जोत तिथि	कार्तक वदि ५, १७६५ बिक्रमी
जोति जोत स्थान	श्री हजूर साहिब (नादेड़)
आयु	४१ वर्ष ९ मास २८ दिन
राज्य	औरंगजेब तथा बहादुर शाह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जीवन वृतांँत श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज

लै कर दुधारा गावै सिखन में वार आसा ॥
पकड़ दुधारा वहै सत्रनु सिर आरा है ॥
कड़छा ले हाथ में बरताव अतुट देग,
कठिन कुडंड बाणा वेध केरे पारा है ॥
भगती, ज्ञान, प्रेम, वैराग की सुनावै कथा,
चढ़ कै तुरंग जंग देवै ललकारा है ॥
तत्व ज्ञानी दानी योधा गृही त्यागी गुरु चेला,
वाहि वाहि धन्न धन्न जनक हमारा है ॥

जब से हमारा ब्रह्याण्ड बुद्धि मण्डल में प्रवेश हुआ, तब से ही यहाँ महाँपुरुष तथा शूरबीर परोपकारीआदि भी जन्म लेते रहे और अपने अद्वितीय चमत्कारों तथा कारनामों से संसार को आश्चर्य कर के चले जाते रहे, परन्तु हर एक महां पुरुष के कारनामों तथा चमत्कारों में जो अन्तर अवश्य होता रहा, जिसका निर्णय विद्वानों तथा महां पुरुषों ने उनके इतहास लिखते समय कर दिया या कर देते रहे ।

हम जब संसार भर के महां पुरुषों के जीवन चरित्र की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपेक्षा श्री गुरु गोबिंद जी के जीवन चरित्र में देखते हैं तो उस के बराबर कोई और उदाहरण नहीं मिल सकता ।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के जीवन चरित्र में कई चमतकारे, कारनामे तथा कौतुक इस प्रकार के भी मिलते हैं जो कि संसार के किसी भी इतहास में मिलने बहुत ही असम्भव हैं ।

आप के जीवन में अनेक प्रकार के चरित्रों में से दो बात तो विशेष कर के प्रसिद्ध थी :-

१) जिस समय संसार के महां पुरुषों को यथारथ ज्ञान की प्राप्ति हुई और उन्हों ने संसार को ज्ञान देना तथा और कारनामे करने शुरु किये । उस समय या आयु में आप अपना कार्य सम्पूर्ण करके संसार से चले भी गये ये ।

२) किसी भी महान व्यक्ति में एक ही मुख्य कार्य था, या वह एक ही कार्य के लिए संसार में आये थे । जो महाँ पुरुष संसार को ज्ञान देने आया तो वह ज्ञान देता रहा और जो योधातव या तलवार के बल से धर्म के वैरियों या दुष्ट पुरुषों को मार कर संसार को रक्षा करता रहा, तों वह यह ही एक कार्य करता रहा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परन्तु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी में यह दोनों पक्ष एक ही समय में थे। जैसे कि शुरु में मैं आप के गुणों का चित्र एक कबित में कथन कर दिया गया है।

आप कवि भी थे. अद्वितीय विद्वान भी थे. महान रागी तथा कीर्तनिये भी थे और महां बली भी थे। बल्कि जहां आप पूर्ण गुरू थे, वहां आप सेवक तथा चेले भी थे। जैसे कि भाई गुरदास जी का वचन है कि :–

वाहु वाहु गोबिंद सिंह
आपे गुर चेला ॥

जब कि आपने सिखों को अमृत पान (पिला) कर फिर स्वय उन सिखों से वही अमृत पान किया था।

हे प्रिय पाठको ! आप गुरु गोबिंद सिंह जी का जीवन पढ़कर आप यह कह उठेंगे कि–

जैसा तूं तैसा तूही किया उपमा दीजै ॥
(गुरबाणी)

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने सामराज तथा जुल्म को भारतवर्ष से समाप्त करने केलिए तलवार उठाई थी महात्मा गांधी जैसे शॉंति और आदर्श वादियों ने गुरु जी के तलवार उठाने पर इतराज किया था और यहां तक कह दिया कि–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'वह भूला हुआ देश भगत था।'

कितने खेद की बात है कि महात्मा गांधी जैसे महान व्यक्तिय ने गुरू गोबिंद सिंह जी भूला हुआ देश भक्त कह कर एक हिमालय जितनी भूल कर डाली है। क्यों कि उन्हों ने यह न समझा था कि श्री गुरू गोबिंद सिंह जी का समय तलवार उठाने का ही समय था उस समय महात्मा गांधी का शाँतिवाद का उस समय के औरंगजेब जैसे अत्यन्त जालम के साहमने फूटो कौड़ी जितना भी मूल्य न था।

काश ! वह समझ लेते कि उस समय शांति के सब ढंग व्यर्थ हो चुके थे जब कि शांति के साक्षयात सरूप श्री गुरू अर्जन देव जी शांति की अन्तिम सीमा को पार कर के शहीदी प्राप्त कर चुके थे।

श्री गुरु तेग बहादर जी हिन्दू धर्म के लिये अपना सीस भेंट कर के धर्म को बचाने का यतन कर चुके थे।

सरमद जैसे सूफी फकीर आदि निर्दोंश ही मारे गए थे। उस समय शांति का क्या भाव था। उस समय में तोशांति का उपदेशकरके औरंगजेब जैसेजालिम को रास्ते पर लाने वाला तो ऐसे समझना चाहिए जैसे कोई पागल [हलकाया] सुआन (कुत्ते)को पुचकार कर काटने से रोकने का यत्न करता हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक बकरा उस कसाई को भला ज्ञान का उपदेश करके अपनी जान बचा सकेगा, कि जिस के हाथ में तेज छुरी हो और बकरे को मारने के लिये खड़ा हो ।

श्री गुरू गोबिंदसिंह जी तो स्वयं अपनी कलम से औरंगजेब को लिखते हैं कि–

चूँकार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलाल असत बुरमद व शमशीर दसत ॥

भाव–हे औरंगजेब मैं तलवार उठानी नहीं चाहता था परन्तु जब कि सभी कार्यों से काम आगे चला जाये उस समय तलवार उठानी ही योग्य है ।

गुरु जी कहते हैं कि देखो–

गुर सिनाटु चिकारे कुनंद चिटुल नर ॥
कि दहिलक बर आमद बेखबर ॥

भाव–हे ओरंगजेब मैं उस समय तलवार न उठाता तो क्या करता, जबकि कई दिनों के भूखे आदमियों पर दस लाख सेना बिना सूचना दिये ही टूट पड़ी ।

अब पूछना चाहिये महात्मा गांधी को उस समय क्या करना उचित था ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तलवार उठानी या ओ३म् शॉति । ओ३म् शांति ।

वास्तव में विचार किया जाएतो हमारे भारत देश को यवनों के अधीन (गुलाम)करने वाला यह ओ३म् शान्ति का ही उपदेश था । जिसकी सीधो जुमेवारो महात्मा बुद्ध, जैन धर्म और उस के उपरान्त और शॉति का उपदेश करने वालों पर ही है ।†

सच्च बात तो यह है कि यदि कभी गुरु गोबिंद सिंह जी

---

†कहते हैं कि जब सन् चाली के जरमन जंग में जर्मनी लोग संसार के प्रसिद्ध शहर लण्डन में हवाई जहाजों से बंब फैंक फैंक कर भयानिक तबाही मचा रहे थे तो उस समय अग्रेजों ने महात्मा गांधी से पूछा कि बताओ महात्मा जी अब क्या करें ।

महात्मा गांधी ने कहा, 'बस जरमन के आगे हथियार डाल दो । इस प्रकार आप और आपका देश तबाही से बच जाएगा ।"

यदि वह मान लेते तो आज जो जरमन हार गया था, उस की जीत हो जानी थी और अंग्रेज सदा के लिए जरमन के अधीन हो जाता ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महात्मा गांधी की शांति का उपदेश उस समय लोगों को देते और अपने भयानिक तीरों से जालिम की छाती न छेदते तो आज हिन्दु धर्म का भारत में कोई निशान भी देखने में न आता, जैसे कि एक कवि का वाक्य है—

छाये जाती एकता अनेकता बिलायें जाती,
धाये जाती कुचीलता कतेबन कुरान की ।
पाप ही प्रपक्क जाते धर्म धमक जाते,
वरन गरक जाते सहत वेदांत की ।
देवी देव देहउरे संतोख सिंह दूर होते,
रीति मिट जाती कथा वेदन पुरान का ।
श्री गुरू गोबिंद सिंह पावन परम सूर,
मूरती न होती जो पै कृपा एिधान की ।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी के पूर्व जनम की कथा

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के पूर्व जन्म की कथा विस्तार रूप से तो नहीं मिल सकती परन्तु जितनी खोज विद्वानों तथा इतहासकारों ने की है वह लिखी जाती है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काठियावाड़ प्रांत में एक अमर कोट नाम का नगर था। जिसका निर्माण महाराजा अमर सिंह राठौर ने किया था। उस समय सिकन्दर लोधी का राज्य शासन था। उसकी सेना हिन्दु जनता को मारती तथा लूटती फिरती थी। कोई सूनाई न थी। उस समय अमर सिंह राठौर ने अपने नाम पर अमर कोट नगर वसाया और वहाँ ही एक किला भी बनाया। उस के पास दो हजार सेनिक थे। वह हर समय पांच सौ सेनिकों को प्रांत में हिन्दूओं की रक्षा के लिये घुमाता रहता था।

यदि कहीं सिकन्दर लोधी की सेना हिन्दुओं को लूटती तो वहां पहूंच कर उनके साथ धर्म युद्ध करके उनको मार भगा देते थे।

अमर सिंह का एक इकलौता बेटा † था, जिसकी आयु

---

†उस का जो नाम मां बाप ने रखा था, उसका पता नहीं चल सका, परन्तु जो नाम उसकी सिफतों तथा गुणों के कारण लोगों ने नाम रखा था, वह दो नाम कहीं कहीं मिलते हैं। उन में से एक नाम तो 'दुष्ट दमन' और दूसरा नाम 'वांछला' प्रभु' था।

(शेष ४१५ पर देखो)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभी बहुत छोटी थी कि सिकन्दर लोधी ने अमर कोट की ओर दस हजार सेना की चढ़ाई कर दी।

उधर जब राजा अमर सिंह को इस बात का पता लगा तो उसने अपने उसी दुष्ट दमन बेटे को (जो कि उस समय केवल बारह वर्ष का था) राज तिलक देकर कहा कि लो बेटा मैं तो वापिस जीवत नहीं आऊंगा। तूने अब इस इलाके की हिन्दू जाति की रक्षा करनी है। जान प्यारी नहीं करनी, सेवा धर्म का विवहार तथा परोपकार करना है।

दुष्ट दमन ने कहा, पिता जी आप चिन्ता ना कीजिए। आप इन जालिमों तथा हिन्दू धर्म के दुश्मनों के साथ जंग करके रण भूमि में पुर्जा २ कटे जाओ और मैं इन लोगों की रक्षा करुंगा और ईशवर मेरी रक्षा करेगा।'

---

४१४ सफे की बाकी

उस देश में कभी तक बाहला'प्रभु' को देवता मान कर वह लोग पूजा करते हैं। यदि कभी इस बात का ज्ञान हो जाये कि यह वही वाछला प्रभु है जो कि दूसरे जन्म में श्री गुरू गोबिंद सिंह जी हुए हैं तो वह सारा इलाका ही सिख बन जायेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार महाराजा अमर सिंह तो रणभूमि में लड़कर शहीद हो गया तथा वीर गति को प्राप्त हो गया ।

इसके पश्चात धर दुष्ट दमन ने अपनी निपुणता से पांच सौ सैनिक अपने पास हर समय रखे और १०० सैनिक हर समय प्रांत में घूमते रहते थे। जहां कहीं भी सिकंदर लोधी की सेना हिन्दुओं को तंग करती,शीघर ही वहाँ अपनी सेना भेज कर उनको दण्ड दिया जाता ।

इस महांबलि दुष्ट दमन ने उस प्रांत में इस कदर दबदबा डाल दिया कि सिकंदर लोधी की फौजों ने इस प्रांत में प्रवेश करना ही छोड़ दिया तथा किसी भी जालम सेना को इस ओर मूंह करने का हौसला न होता था। लोग दुष्ट दमन की कृपा से सुख की नींद सोने लगे। लोगों ने इस के गुणों के अनुसार दो नाम प्रसिद्ध कर दिये थे । एक दुष्ट दमन । भाव दुष्टों को नष्ट करने वाला ।

दूसरा नाम था बाछला प्रभु । भाव--रक्षा करने वाला या सब का प्यारा ।

इसी प्रकार समय व्यतीत होता गया। दुष्ट दमन के घर भी एक पुत्र हुआ,जिसका नाम विजय सिंह रखा गया। जब दुष्ट दमन जी बूढ़े होगये तो राजतिलक अपने बेटे विजयसिंह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को देकर आप हिमालय पर्बत पर तप साधन करने के लिये चले गये ।

वह स्थान श्री बदरी नाथ से आठ दस मील पर है । वहाँ पर एक गुफा निकाल कर बैठ गये । वृक्षों के फल फूल खा कर पेट पूजा कर लेते । निर्मल चशमों का जल पी लेते और फिर गुफा में बैठ जाते ।

उस समय के तप साधन की कथा श्री गुरु गोबिंद सिंह जी अपने मुख से इस प्रकार कहते हैं—

अब मैं अपनी कथा बखानों ।।
तप साधन जिहि बिधि मुहि आया ।।
हेम कुन्ड पर्बत है जहाँ ।।
सपत स्रिंग सोभत है तहां ।।
तहां हम अधिक तपस्या साधी ।।
महां काल कालका†अराधी ।।
एह विध करत तपस्या भयो ।।
द्वै ते एक रुप ह्वै गयो ।।

---

†कालका का भाव यहां कालका देवी नहीं, बल्कि अकाल पुरख है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी कहते हैं कि मेरा संसार में आने का एक कारण यह भी था कि:-

तात मात सुर अलख अराधा ॥
बहु बिध योंग साधना साधा ॥
नित जो करी अलख की सेवा ॥
ताते भये प्रसन्न गुर देवा ॥
तिन प्रभ जब अयिस मोहि दीया ॥
तब हम जनम कलू महि लीया ॥

गुरु जी फिर कहते हैं कि मैं ने उस समय प्रभु चर्णों का रस माना था। इस लिये मेरा दिल नहीं चाहतां था कि उस महां ज्ञान रस को छोड़ कर आऊं।

चित्त न भयो हमरा आवन को।
चुभी रही सुरति प्रभ चरनन मो ॥
जियो तियो प्रभ हम को समझायो ॥
इस करिके एह लोक पठायो ॥

अकाल पुरखो वाच इस के प्रति:-

जब हम पहले सृष्टि उपाई ॥
दईत रचे दुष्ट दुखदाई ॥
ते भुज बल बबरे है गये ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजत धर्म पुरख रहि गये ॥ ६ ॥

इस प्रकार अकाल पुरख ने बहुत विस्थार से कहा कि मैं ने बहुत अवतार पैगम्बर आदि भेजे हैं परन्तु वह सब के सब मेरे हुकम को भूल गये हैं।

श्री गुरू गोबिन्द सिह जी महाराज का जनम

श्री गुरू गोबिद सिह जी का जन्म पौष शुदि ७, १७२३ बिक्रमी को श्री पटना साहिब (बिहार) में पिता श्री गुरू तेग बहादुर जी तथा माता गुजरी जी के घर हुआ था। जिसका वर्णन श्री गुरु गोबिंद सिह जी महाराज ने स्वयं अपनी कलम से किया है कि :—

तही प्रकाश हमारा भयो ॥
पटना शहर विखै भव लयो ॥

इस प्रकार और भी बहुत सी विचारें गुरु जी ने इस सम्बन्ध में श्री बचित्र नाटक में वर्णन की हैं।

नोट—श्री गुरु गोबिंद सिह की बाणी क्या है ?

अमृत रस है। बीर रस है। सब रस है। विस्माद रस है। ब्रह्म रस है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भीखन शाह फकीर की कथा

पटियाला के इलाके में एक बहुत करनी वाला फकीर रहता था जोकि बंदगी करके त्रिकाल दर्शी बन गया हुआ था, था उसको तीन लोक का ज्ञान प्राप्त हो चुका था।

एक दिन वह प्रातःकाल के समय समाधि में इस्थित हुआ तो उसे गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्म का ज्ञान प्राप्त हो गया तो उसने पूर्व की ओर श्री पटने शहर की ओर मुंह करके सिजदा किया। उसके इस कौतुक को देख कर उसके मुरीदों ने कारण पूछा तो उसने कहा, "इस ओर एक अल्ला का नूर प्रकट हुआ है। मैं उसको सिजदा कर रहा हूं।"

दूसरे दिन ही उस फकीर ने गुरु जी के दर्शन करने की त्यारी शुरु कर दी। अपने साथ दो मुरीद ले लिये और जाते जाते श्री पटना साहिब में पहुंच गया। वहाँ जाकर इस ने बाल गुरू के दर्शन करने चाहे, परन्तु माता गुजरी जी और गुरू गोबिंद सिंह जी की दादी श्री नानकी जी ने इनकार कर दिया क्योंकि उस समय श्री गुरू तेग बहादर जी वहाँ नहीं थे। आसाम देश को गये हुए थे और औरंगजेब का भारी खतरा था कि कहीं कोई साज़िश ही न हो, अन्त इसके बहुत जिद करने से आज्ञा मिल गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस भीखन शाह फकीर ने दो मिठाई के कूजे लेकर गुरु जी की भेंट किये। गुरु जी उस समय केवल एक महीने के थे। जब भीखन शाह ने दोनों कूजे बालक गुरु के निकट किए तो गुरु जी ने उछल कर नन्हें से हाथ उन मिठाई के कूजों से छुहा दिए। जब सभ लोगों ने भीखन शाह से इसका भेद पूछा तो उसने बताया कि मैं समझना चाहता था कि आपका अवतार किस के लिए है। हिन्दुओ के लिए है या मुसलमानों को भी सहायता करोगे। सो इस अल्ला के नूर ने दोनों कूजों पर हाथ छुहा कर सिद्ध कर दिया है कि मैं दोनों को एक ही समान समझूंगा।

गुरू जी का बाल्य लीला

पंजाबी में एक कहावत है कि :—

"जमदीयां सूलां दे मुंह तिखे हुन्दे ने"

भाव—पैदा होते ही कांटो की नोकें तीखी होती हैं।

गुरु जी जब केवल तीन वर्ष के ही थे। कि आपने एक छोटे बालकों को एक सेना त्यार कर ली और आपिस में ही लड़ाई कर कर प्रैक्टिस करने लगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक समय उस प्रॉत का ग़वर्नर शहर का दौरा करने के लिये आया। शाही हुकम था कि सब लोग गवर्नर को सलाम करें। परन्तु गुरू जी ने अपनी एक लड़कों को सेना त्यार कर ली और गवर्नर के साहमने लड़कों की पंक्त खड़ी कर के सब ने एक आवाज़ में कहा, "तुम लोग प्रजा के बैरी हो।"

जब गवर्नर ने सुना और देखा तो क्रोधित हो कर लड़कों पर सखती करने को कहा, 'पकड़ लो इनको और शाही आज्ञा का पालन न करने का दण्ड दो।' परन्तु कर्म–चारियों ने उसको दूसरी ओर डाल दिया।

इसी प्रकार और बहुत सी बाल लीला के चमत्कारे करते रहे। आपने एक धनुष बाण रखा हुआ था। यदि कोई स्त्री कूएं पर पानी भरने के लिये आती तो आप उनके मटके तीरों के साथ तोड़ देते और वह स्त्रीयां माता गुजरी जी के पास गुरु जी की शिकायत लेकर जातीं।

तब माता गुजरी जी ने उन को एक पीतल की गागर देकर कहा, 'लो यह गागरें ले जाओ, क्योंकि तुम्हारे मिट्टी के मटके टुट जाते हैं।'

तब गुरू जी ने इतने जोर से तीर मारे कि उन गागरों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में भी छेद हो गये। तब माता गुजरी जी ने उसी दिन से एक हजार मटका ला कर रख दिया और कहा कि यदि किसी का मटका मेरा लाल तोड़ दे [तीर मार कर] तो वह यहां से एक मटका उठाकर ले जाया करे।

बाला गुरू जी के अनेकों चमत्कारे देख देख कर बहुत से लोग गुरू जी के प्रेमी बन गये। एक शिव दत्त नामक राजा अपनी रानी के हमरा गुरु जी के साथ प्यार करने लग पड़ा और हर रोज गुरू जी को अपने महलों में ले जाता तथा अपने बाग की सैर कराता था।

इसी प्रकार उसी इलाके में एक फतह चन्द नामक राजा था जो कि अपनी रानी सहित गुरू जी पर गुरु-भावना रख कर वे हद्द प्रेमी करने लगे।

कहते हैं कि एक दिन बाल्य गुरु जी अपने साथियों सहित इसके महलों में चले गये और रानी की गोद में बैठ गये। रानी ने नौकरों को कहा, 'जाओ जल्दी से कुछ मिठाई ले कर जाओ।'

गुरु जी ने कहा, 'हम मिठाई नहीं खायेगे जो तुम्हारे रसोई घर में पूरियाँ तथा हलवा पड़ा है, वह खायेगे।'

रानी बाल्य गुरु का यह चमत्कारा देखकर गुरू जी को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बड़े प्रेम से गुरू भावना कर के छाती के साथ लगा लिया और अपने हाथ से गुरु जी को वह पूरी तथा हलवा खिलाया और कहा कि मेरे धन्य भाग्य हैं।

राजा फतह चन्द और उसको रारी का बाल्य गुरु जी के साथ इतना प्रेम बढ़ गया कि जब गुरु जी आनन्द पुर साहिब को आने लगे तो उन दोनों को गुरु जी के विछोड़े के कारण गश पड़ गई थी। तब गुरु जी नें उनको वचन दिया कि जब भी वह याद करेंगे तो उस समय हमारा दर्शन हो जाएगा। सो गुरु जी ने उनको कई बार याद करने पर गुप्त रुप से दर्शन दिये थे और वह भी दो तान बार गुरु जी के दर्शन करने के लिये आनन्दपुर आये थे।

सोने के कंगनों की कथा

माता गुजरी ने अपने बेटे को दो बहुत कीमती हीरे जड़त कंगन हाथों में डाल दिये।

जब गुरुजी बालकों के साथ गंगा मईया में इश्नानकरके के लिए गये तो गुरु जी ने अपना एक कंगन उतार कर गंगा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में फेंक दिया । कुछ लड़कों ने माता गुजरी जी को कह दिया तब माता गुजरी ने बड़े प्यार से पूछा, 'बेटा कंगन कहाँ गिराया है ?''

तब गुरु जी ने दूसरा कंगन भी उतार कर गंगा में फैंकते हुए, कहा, ''माता जी वहां पर ।''

श्री पटना साहिब से आनन्द पुर साहिब की ओर

यहां श्री पटनासाहिब में और भी अनेक प्रकारके कौतुक करते रहे । अन्त गुरु तेग बहादुर जी की असाम से पत्रिका आ गई कि सब परिवार श्री आनन्दपुर साहिब पहुंचो ।

जब बालय गुरु जी की त्यारी आनन्द पुर साहिब को हुई । वह भी एक विछोड़े का आश्चर्य समय था ।वहां के लोग गुरुजी के विछोड़े को बहुत खेद से अनुभव कर रहे थे । विशेष करे के फतह चन्द और उसकी रानी तो विछोड़े के खेद से बे होश हो गये । तब गुरु जी ने उनको एक तलवार, एक कटार एक जूता और एक पोशाक बखश कर उसकी जाति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर एक भैणो साहिब गुरुद्वारा बनवा कर और वहां के विशेष प्रेमियों को मिल कर; धैर्य दे कर वहां से दाना पुर न र में रात विश्राम किया ।

यहां पर एक माई जी ने गुरु जी को बड़े प्रेम से खिचड़ी खिलाई जोकि वह हांडो उस माई ने सम्भाल कर रख दी । जो अब तक उस स्थान पर रखी हुई है । वहां एक गुरुद्वारा है जिसका नाम गुरुद्वारा हाँडी साहिब है ।

वहाँ से चलकर बकसर, छपरे, आरा, छोटे मिरजा पुर आदि स्थानों पर होते हुए श्री कॉशी जी (बनारस) नगर में पहुच गये ।

यहाँ पर गुरु जी ने गरीबों को बहुत सा दान दिया, परन्तु जो बड़े २ धनवान पण्डित थे उनको बुलाया भो ना । तब उन पण्डितों के मन में रोश पैदा हो गया । वह गुरु जी के साथ ज्ञान चर्चा करने के लिये आए । उस समय गुरू जी की आयु केवल पाच वर्ष थी । परन्तु फिर भी गुरू जी ने उनको ऐसा ज्ञान सुनाया कि वह आश्चर्य रह गये ।

गुरू जी दस दिन कांशी में रह कर फिर वहां से प्राग राज आ गये । वहां की संगतों को निहाल करके श्री अयुध्या पहुच गये । वहां के राजा राज बहादुर के पोत्रा गुरू जी को बड़े सतकार से मिल कर निहाल हुए । वहाँ से नानक मत्ते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आये वहाँ से देव नगर होते हुए लखनऊ पहुच गये।

लखनऊ में एक भक्त भगवान का डेरा था, गुरु जी यहां पर ठहरे। साथ ही एक अलमस्त का डेरा था, उसका महंत बहुत अहकारी था !उसने अपने चेलों के हाथ में प्रसाद भेजा परन्तु स्वयं ना आया तो गुरु जी ने प्रसाद वापिस कर दिया उसके पश्चात वह खुद चल कर आया। गुरु जी की ज्ञान भरी बातें सुन कर निहाल हो गया।

गुरु जी लखनऊ से चलकर मथुरा पहुंच गये। यहां पर संगतों को तार कर सातल पुर, हरिद्वार, कनखल, वहां से भगवान पुर। वहां से दामले नगर में पहुंचे। दो महीने रह कर वहाँ से बुढ़िया नगर में पहुंच गये, जो ज़िला अम्बाला में है।

बुढ़िया नगर से गुरु जी लखनौर पहुच गये। वह अस्सू का महीना था। यहां पर भीखन शाह फकीर और उसके मुरीदों ने श्री गुरु गोबिंद सिह जी के चर्णों पर पांच बार सियदा (प्रणाम) किया।

भीखन शाह की इस हरकत को देख कर उसके मुरीदों और दूसरे काजियों ने इस बात पर इतराज किया।

तब भीखन शाह ने कहा, मेरा तो यही काबा तथा मक्का है।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भीखन शाह का इतना दृढ़ निश्चय देख कर उसके मुरीद और काजी आदि चुप हो गये।

इस नगर में सब के सब कुएं खारे पानी के थे। तब श्री नानको जी ने यहां पर कूआं लगाने का आज्ञा दी, जिसका पानी मीठा निकला।

गुरु जी बहुत दिन वहां ही ठहरे। गुरू जी अपने मामा कृपाल चन्द के साथ शिकार खेलते रहे। इसका कारण यह था कि गुरु जी को श्री गुरू तेग बहादुर जी ने कहा था कि जब तक हम आज्ञा न दें आनन्दपुर नहीं आना। इसका भी एक कारण था कि उस समय गुरू घर औरंगजेब की आंख में रड़कता था। गुरु तेग बहादुर जी का विचार था कि कहीं औरगजेब अपने सैनिक आनन्दपुन न भेज दे। जब गुरु तेग बहादुर जी ने फिर सदेश भजा तो आप अनंदपुर पहुंच गये।

यहाँ पर एक घोगे मसंद को भी श्राप दिया था जो कि कुकर्म नहीं छोड़ता था। यहां से ही मसदों के सम्बन्ध में गुरु जी के मन में बहुत भारी नफरत हो गई। वहां से गुरू जी फिर लखनौर पहुच गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पीर आरफ उलदीन का निस्तारा

एक बार गुरु जी कुछ बच्चों के साथ खेल रहे थे कि वहाँ पर आरफ फकीर आ निकला। गुरू जो का नूरी मुखड़ा देखते ही पालकी से नीचे उतर कर गुरू जी के पांव पर हाथ रख कर प्रणाम किया। तब गुरु जी उस फकीर को कहने लगे, 'हे साई जी! आज औरंगजेब हज़रत मुहमद साहिब के नियमों को भूल कर जुलम के रास्ते पर चल रहा है। आप जैसे फकीरों को इसे रोकने का यत्न करना चाहिये। नहीं तो यह राज्य नष्ट हो जायेगा।"

कहते हैं कि फकीर ने गुरू जी की यह बात सुन कर गुरू जी को दो तीन बार सियदा किया। जिस पर उसके मुरीदों ने कुछ बुरा माना तो फकीर ने कहा, 'देखो तुम नहीं जान सकते कि जब मैं रात को समाधी में अल्ला के दरबार में गया तो यह ही लड़का खुदा के पास सब से आगे बैठा हुआ था।" तब मुरीद शाँत हुए।

वहां से गुरू जी भूस खेल के थेह पर एक लूखी नाम का प्रसिद्ध नगर था। यहां के जगीरदार पठान ने गुरुजी को एक भत्था तीरों का, एक तलवार कुछ और बहु मूल्य वस्तुए गुरु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी को भेंट करके सियदे किये । तब गुरु जी ने उनको वरदान दिया कि तुम सदा आबाद रहोगे।

कहते हैं कि सिखों के हमलों के समय भी इन पठानोंको कुछ नहीं कहा गया। जब कोई सिक्खों को सेना आता तो गुरु जी का वरदान दिया जान कर इनको छोड़ जाते थे।

श्री आनन्दपुर साहिब में प्रवेश

यहां लखनौर पर हो गुरु जो को गुरू तेग बहदुर जी का हुकम नामा मिला कि आनन्द पुर साहिब पहुंच जाओ।

तब गुरू जी वहाँ से चल कर राणे माजरे पहुंचे। वहां से कलेहड़, रोपड़ और मुशताक नगर से होते हुए कीरतपुर पहुच गये। यहां पर गुरु जी को सूर्य मल्ल बहुत सी सिख सगतों के साथ आकर मिले तथा अपने भतीजे के नूरी मुख को देख कर बहुत प्रसन्न हुए।

कीरतपुर से जब गुरु जो आनन्द पुर साहिब पहुंचे तो आपके पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी ने अपने बेट को छातो के साथ लगा लिया क्योंकि आपने अपने बेटे को पहली बार देखा था। आप अपने साहिबजादे को देखकर समझ गये कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह भारत के हिन्दु धर्म की रक्षा करेगा और तलवार के बल से जालिम राज का नष्ट करेगा।

श्री गुरु तेग बहादुर जी ने समझ लिया कि हमारा काम सम्पूर्ण हो गया है और मैं ने पूर्व जन्म में तपस्या कर के ईश्वर से वरदान मांगा था । वह पूरा हो गया है।†

---

†कहते हैं कि श्री गुरु तेग बहादुर जी और श्री गुजरी जी ने पूर्व जन्म में ईश्वर की बहुत अराधना की थी जिस पर भगवान ने प्रसन्न होकर तथा प्रगट होकर कहा, 'तुम्हारा तप पूरा हो गया है। यदि तुम्हारे मन में कोई ईच्छा है तो वरदान माँग लो।'

तब उन दिनों में गुरु जी ने यह वरदान मांगा था कि मेरे गृह में ऐसा बेटा पैदा हो जिसके समान न कोई पहले पैदा हुआ हो और न आगे पैदा हो।

भगवान जी तो तथास्तु कह कर अलोप हो गये और यह दम्पतो वहां ही शरीर छोड़ कर श्री गुरु तेग बहादुर और उनकी धर्म-पत्नी माता गुजरी जी रुप में प्रगट हुए। जिनका इकलौता बेटा श्री गुरु गोबिंद सिंह पैदा हुआ।

(शेष ४३२ सफे पर देखो)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसी दिन आनन्दपुर साहिब में खुशी के बैंड बजाये गये। गुरु तेग बहादुर जी ने दूर दूर संगतों को हुकम नामे लिख कर बहुत भारी यज्ञ तथा इकट्ठ किया। जिसमें कुछ विशेष बातें तथा विचार किये गये।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की विद्या

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तो वास्तव में पूर्ण पुरुष थे। पहले से ही सर्व कला के ज्ञाता और सर्व विद्याओ के जानन हारे थे, परन्तु फिर भी दुनियावी विवहार के नियमानुसार तो कुछ करना ही था।

आप श्री पटना साहिब में ही बहुत सी संस्कृत विद्या पढ़ गये थे और वहां पर ही बहुत सी शस्त्र विद्या भी सीख गये

[४३१ सफे की बाकी]

उस वरदान का कथन गुरु गोबिंद सिंह जी ने भी अपनी बाणी मे किया है कि :—

तात मात सुर अलख अराधा॥
बहु बिध ... ... ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थे, परन्तु यहां पर गुरु तेग बहादुर जी ने अपने बेटे की विद्या का विशेष प्रबन्ध कर दिया।

फारसी तथा अरबी सिखने के लिये एक सु-प्रसिद्ध काजी पीर मुहम्मद को नियत कर दिया और संस्कृत पढ़ने के लिये एक पण्डित को नियत किया और गुरु घर की सिखलाई गुरु तेग बहादुर जी ने स्वयं शुरू कर दी। इसी प्रकार जंग की शिक्षा के लिये भी प्रबन्ध कर दिया गया।

श्री गुरू तेग बहादुर जी को सीस भेंट करने के लिये दिल्ली की ओर रवाना करना

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी अभी विद्या पढ़ ही रहे थे कि एक बड़ा भारी कारण पैदा हो गया।

इस संसार में कुछ ऐसी घटनाएं भी हुई हैं कि जिसका दूसरा उदाहरण मिलना असम्भव हो जाता है।

ऐसी ही घटना १७३१ बि० को श्री आनन्दपुर में हुई थी। औरंगजेब के जुलमों के सताये हुए कशमीरी पण्डित

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिन्दु-धर्म की रक्षा नमित श्री गुरू तेग बहादुर जी की शर्ण में आये तो गुरु तेग बहादुर जी सिर को नीचा करके कुछ सोच रहे थे कि केवल आठ नौ वर्ष के उनके बेटे ने विचार करने का कारन पूछा तो गुरु जी ने कहा किस महाँपुरुष के सिर की आवश्यकता है। तब यह हिन्दु-धर्म बच सकता है।

तब उन के बेटे ने कहा, 'आप से बड़ा महाँ पुरुष इस संसार में और कौन हो सकता है ? सो आप ही अपना सीस भेंट करके हिन्दु धर्म को बचाईये।

क्या इस संसार में ऐसी कोई मिसाल मिल सकेगी कि एक नौ वर्ष के बालक ने अपने पिता जी को किसी दूसरे (शर्ण आए) धर्म के लिये अपना सीस कुरबान करने के लिये भेज दिया हो ?

नहीं ! नहीं !! कहीं भी नहीं !!!

ऐ हिन्दु जाति ! आज के दिन श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने पूजय पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी को सीस कुरबान करने के लिये भेजा था। केवल हिन्दु धर्म की रक्षा के लिये। गुरु गोबिंद सिंह जी अपनी कलम से निम्नलिखित वाक्य इस प्रकार लिखते हैं :—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तिलक जन्जू राखा प्रभ ताका ॥
तिन कियो बडो कलू में साका ॥

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी को गुरु गदी की परापति

श्री गुरू तेग बहादर जी के कुरबान होने के उपरान्त गुरू गोबिंद जी गुरु-गद्दी को रीति होना आवश्यक थी। जिस पर मुख्य सिखों ने गुरु जी को गुरु-गद्दी पर विराजने की रीति के समय बहुत भारी संगतों का इकट्ठ बुलवा कर एक बहुत ही सुन्दर चन्दोआ लगाया गया। उसके नीचे बहुत कीमती चांदनी लगाई गई। उसके नीचे एक सोने की चौंकी रखी गई, इसके पश्चात श्री आसा दी वार का कीर्तन किया। फिर बहुत भारी मिकदार में कड़ाह प्रशाद करवा कर गुरू जी उस चौंकी पर बहुत ही सुन्दर राजसी पौशाक पहन कर बैठ गये।

गुरू जी राजऋषि तथा ब्रह्माऋषि भी थे। गले में कृपान एक ओर कीमती धनुष्य, एक तीरों का भत्था, जिगा कलगी लगा कर गले में हीरों की माला तथा नौ लखे हार पहर लिये। उपरंत भाई राम कोयिर जी जोकि ब्रह्मज्ञानी आप प्रमेश्वर थे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन्होंने राजसी शान से गुरु जी को तिलक लगाया।

उनके पश्चात् सब ईलाकों के मसंदों और संगतों ने जो भेंटाए की उनका तो वर्णन हो ही नहीं सकता।

गुरु जी तो उस समय अपनी शान आप ही थे।

जैसा तू तैसा तूही क्या उपमा कीजै ॥

(गुरुबाणी)

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का गुरु गद्दी पर बैठने के पश्चात पहला चमत्कार तथा कौतक

जब गुरु जी गुरु-गद्दी पर बैठे तो आपकी शोभा चांद की चांदनी की प्रकार सारी पृथ्वी पर फैल गई। चारों कूटों की संगत दर्शनों को आने लगी।

कहते हैं कि एक दुहचा मसंद पेशावर की ओर से आया जिसके हाथ एक धनवान पुरुष ने एक सौ मोहरें और बहुत कीमती एक जड़ाऊ सोने के कंगनों की जोड़ी गुरू जी के लिये भेजी तथा साथ में और भी बहुत से वस्त्र और शस्त्र भी भेजे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस मसंद ने और तो सब कुछ गुरु जी को दे दिया परन्तु वह कगनों को जोड़ी और एक सौ मोहरें अपनी पगड़ी में छुपा कर रख लीं।

गुरू जी ने दूहचे मसंद को कहा, 'भाई जी ! आप के पास गुरू की और अमानत है ?'

गुरू जी के यह वचन सुन कर मसंद क्रोध में आ कर कहने लगा, 'ठीक कहते हैं कि बालक के साथ राज करना तथा भोगना भी उचित नहीं। आप यदि बालक न होते तो मेरे जैसे बज़ुरग का इतनी भरी सभा में तौहीन (बे-इजती) न करते। क्या मैं चोर हू ?"

तब गुरु जी ने कहा, "भाई तुम चोर भी हो और साथ में चतुर भी हो ॥" इतना कह गुरु जी ने अपनी छड़ी से उस का पटका उतार दिया तो उस में से एक सौ मोहरें और एक कगनों की जोड़ी निकली !

बस ! फिर क्या था वह मसंद गुरु जी के चरणों पर गिर कर क्षमा माँगने लगा। इसी दिन से गुरु जी के मन में मसदो से नफरत हो गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के विवाह और उस पर चमत्कार

गुरु जी के दीवान (सभा) में लाहौर का एक धनवान क्षत्रिय उपस्थित हुआ। उसका नाम भीखे शाह था जिस ने श्री नानकी जी के ज़रिये गुरु जी के विवाह की बात पक्की कर ली।

जब बात तह हो गई और विवाह का दिन भी नियत हो गया तो उसने एक जिद की कि विवाह लहौर में जा कर करना है।

तब गुरु जी ने कहा, 'हम लाहौर तो जा नहीं सकते, परन्तु हां! तुझ को एक नया लाहौर बसा देंगे।'

सो ऐसा ही किया कि आनन्दपुर से पाँच मील पर पश्चिम की ओर एक स्थान बनवा कर उस का नाम गुरु का लाहौर रखा गया। परन्तु उस भीखे शाह ने कहा, मुझ को गंगा तथा जमना का जल भी चाहिये।'

तब गुरू जी ने एक पर्बत में तीन तीर मारे तथा वहाँ से गंगा, जमना और सुरस्ती का पानी निकलना शुरु हो गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो कि अभी तक उस स्थान से बह रहा है।

कहते हैं कि भीखे शाह ने कहा, "महाराज! अब यदि सागर का जल हो तो शुभ शगन हो जाये।"

तब गुरु जी ने अपने घोड़े को इशारा किया तो घोड़े ने अपना सुम्ब इतने जोर से एक पत्थर पर मारा कि वहां से सागर जैसा खारा पानी बहने लगा। जो कि आज तक उसी प्रकार घोड़े के पौड़ का निशान है। जिस से सागर जैसा खारा पानी बह रहा है। इस प्रकार बड़ी शानो शौकत से गुरु जी का विवाह हुआ।

एक भालू की कथा

एक बार एक कलंदर एक भालू (रीछ) लेकर गुरु जी के पास आया तथा गुरु जी की आज्ञा से उसने भालू को खूब नचाया जिसको देख कर सब संगतें हंसने लगीं, यहां तक कि वह सिख भी खूब जोर जोर से हंसने लगा जो कि गुरु जी पर चंवर कर रहा था।

तब गुरु जी ने उस सिख को कहा, 'भाई जी। तुम अपने पिता को देख कर हंस रहे हो, क्योंकि पूर्व जन्म में यह भालू तुम्हारा बाप था।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह बात सुन कर उस सिख ने क्रोध में आकर चवर एक ओर रख दिया और गुरु जी को कहा, "यदि आपकी सेवा का यही फल है कि भालू बनना पड़ता है तो फिर आवश्यकता ही क्या है ?"

गुरु अर्जन देव जी तो फुरमाते हैं :—

सेवा करत होय निहकामी ।
ताकउ होत प्राप्त सुआमी ।।

गुरु जी ने कहा, 'भाई गुर-सिखा ! इस में मेरा क्या दोष है । इसमें दोष तो सिख की बृती का है । जब यह तेरा पिता कड़ाह प्रशाद की देग वरता रहा था तो एक सिख बाहर से आ गया जो कि अपना छकड़ा ले जा रहा था । उस ने हाथ जोड़ करके कहा कि मेरा छकड़ा जा रहा है । मुझ को थोड़ा सा प्रसाद दे दो तो तेरे पिता ने उसको धकेल कर कहा कि भाग जा यहाँ से, वह सिख था बहुत ऊंची करनी वाला । उस के मुह से सहज सुभाव ही निकल गया कि तू तो कहीं का भालू है ।

बस ! उस सिख का वचन पूरा हुआ है और अब गुरु की सेवा का फल भी लेने के लिये यह यहां आया है । सो अब हम इसकी मुक्ति कर देते हैं ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इतना कह कर गुरु जी ने उस भालू को अपने हाथ से कड़ाह प्रसाद खिलाहा तथा वह प्रसाद खाते ही मर गया। देखते ही देखते अर्शों से एक बहुत सुन्दर पालकी आ गई और उस पर उसकी आत्मा बैठ कर भगवान के बैकुठ धाम को चली गई। सब संगतें आश्चर्य रह गई।

संगतों का इकट्ठ तथा भेंटाएं

गुरु जी ने वैशाखी के उत्सव पर बहुत भारी यज्ञ किया। दूर दूर तक आज्ञा पत्र भेजे गये। दूर दूर को संगतों तथा मसंदो ने अनेक प्रकार की भेटाएं ला लाकर गुरू जी के चरणों में भेंट की।

एक काबुल के बहुत धनवान सिख ने एक बहुत ही सुन्दर तथा बेमिसाल तम्बू भेंट किया। जिस में एक बहुत बड़ा हाल एक बैठक का कमरा, एक रसोई का कमरा आदि था उसमें सोने चांदी तथा तिल्ले आदि को बहुत सुन्दर ढंग से चित्रकारी की हुई थी। एसा तम्बू राजाओं महाराजों के पास होना भी असम्भव था।

दूसरा एक आसाम का राजा रतन राय जिसका जन्म गुरु तेग बहादुर जी के वरदान से हुआ था। वह गुरु जी के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दर्शन करने के लिये आया। उसने एक पञ्च कला शस्त्र, जो कि एक समय कला दबाने से पसतौल, बंदूक, तलवार आदि बन जाता था। फिर एक बहुत ही मोल का हाथी दिया, जिसका रंग सफैद था तथा दिखने में बहुत सुन्दर था, जोकि लाखों में से एक होता है। बहुत से सुन्दर घोड़े आदि वस्तुएं लाया और गुरु जी के हजूर बहुत देर रह कर तथा सिखी दान ले कर वापिस चला गया।

गुरू जी ने सिक्ख सेना तय्यार करनी तथा रणजीत नगारे का निर्माण

श्री गुरू गोबिंद सिह जी का तेज प्रताप बहुत बढ़ गया और आपने यह भी विचार किया कि वह समय आ गया है, जिस कार्य के लिये ईश्वर ने आप को संसार में भेजा था, जिसका कथन पहले हो चुका है।

आप ने सब से पहले योधे सिक्खों की सेना तय्यार की और दूसरा रणजीत नगारा तय्यार करवाया जो कि निम्न विषयों पर निर्भर थे :-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिक्ख सेना :—

सिक्ख सेना में वर्णन योग्य योधे तथा मुख्य सिक्ख निम्नलिखित थे :—

गुलाब राये (सूर्य मल्ल का पोतरा)। शाम दास जीत मल्ल, संगो, मोहरा (बोबी वीरो के बेटे)। दलजीत सिंह, बलजीत सिंह, बघेला, सुहेला (राजा राम प्रताप सिंह के पोतरे) † और पंजाब की बहुत सी बहादुर जातियों के लोग, जैसे कि :—गिल्ल, रधावे, बैराड़, सिद्ध आदि।

इस प्रकार १७३८ बिक्रमी को गुरु जी ने बहुत विशाल सिख सेना त्यार कर ली थो।

रणजीत नगारा :—

रणजीत नगारा एक वह नगारा था, जिस को आवाज के साथ पहाड़ गूंज उठते थे और पहाड़ी रजाओं के कान बहरे होने लगते थे। उनके मन में बहुत सी ईर्षा जाग पड़ती थी तथा दुःख होता था।

---

†यह लोग मुगलों से भाग कर गुरु गोबिन्द सिंह जी की सेना में मिल गये थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी का साहस तथा हौसला

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का मुकाबला केवल मुगल राज्य के साथ ही नहीं था बल्कि गुरु जी के साहमने और भी शक्तियाँ थीं।

१) एक ओर तो बहुत बड़ा जालिम तथा सात सौ वर्ष से भारत में जमा हुआ मुगल राज्य था। जिसके पास सेना तथा युद्ध के सामान का कोई अन्त ही न था।

२) दूसरी ओर बाई धार के पहाड़ी हिन्दु राजे भी गुरु जी के विरोधी बन रहे थे, जो कि मुगलों तथा शाही सेना के युद्ध करने से पहले वे ही गुरू जी के साथ युद्ध करने के लिये त्यार खड़े थे।

३) तीसरी ओर जात अभिमानी ब्राह्मण भी गुरू जी की सख्त विरोधता कर रहे थे। वे लोग कहते थे कि गुरू जी ने सब जातियों को एक स्थान पर मिला कर ब्राह्मणों की तौहीन तथा बे-इजती की है।

४) चौथी ओर गुरू जी की सेना तथा गुरु घर में भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बड़ी भारी फूट पड़ गई थी। जो कि मसंद लोग गुरू जी के इस शाही ठाठ और सेना त्यार करके मुगल राज्य के साथ युद्ध करने की सख्त विरोधता करते थे। वह लोग बहुत से इलाकों में सिखों पर छा रहे थे और सिखों को बुरी प्रकार लूट लूट कर खा रहें थे।

इस प्रकार यह चार तरह की विरोधी शक्तियों से एक समय ही मुकाबला करना कोई मामूली कार्य ना था। इस लिये तो केवल श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का ही साहस था कि इन्हों के साहमने ऊचा भुजा करके कहना कि :–

कहिया प्रभु सो भाख हौं ॥
कछू न कान राख हौं ॥

गुरू जी को उस समय की महान शक्तियों के साथ एक समय ही युद्ध करने के लिये किसी प्रकार का कहीं से न कोई सहायता की आशा थी और न ही कोई किसी का सहारा था। ना ही आप किसी की प्रवाह करते थे। आप का एक ही सहारा भरोसा था। और सहायक था। और वह था सब का सहायक आप का अकाल पुरख [ईश्वर]।

आपका ईश्वर पर अबल विश्वास था। जिसका प्रतक्ष सबूत आप की उच्चारण की हुई बाणी में इस प्रकार है:–

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ सवैया ॥

पांहि गहे जब ते तुमरे
तब ते कोऊ आँख तरै नहीं आनयो ॥
राम रहीम पुरान कुरान,
अनेक कहै मत एक न मानयो ॥
सिमृत सासत्र बेद सबै बहु,
भेद कहै हम एक ना जानयो ॥

बाईं धार के पहाड़ी राजाओं से गुरू जी के विरोध का कारण

जैसे कि पहले भी कहा गया है कि भारत के हिन्दु राजे अच्छी प्रकार यवनों तथा मुगल राज्यके अधीन होकर अपनी गैरत तथा गर्व को खो बैठे थे। यहां तक कि वे अपनी बेटियों के डोले दे दे कर मुगल बादशाहों को अपना गर्व समझते थे। कौमी गर्व, कौमी आन तथा योधात्व का मान तो वह भूल ही गये थे। विशेष करके यह बाईं धार के पहाड़ी राजे तो मुगल हकूमत की कठपुतली बन कर रह गये थे। वे पहाड़ी राजे तो औरन्गजेब जैसे महाँ जालिम तथा हिन्दु धर्म

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के वैरी के हथ ठोका बन रहे थे तो केवल अपनी ही जरुरत तथा अपने ही स्वार्थ के लिये।

बाई धार के राजे तो यही समझते थे कि यवनों का राज्य युगो युग कायम रहेगा। इसकी जड़ें पाताल में धंस चुकी है जिनको कभी उखेड़ा नहीं जा सकेगा, परन्तु वे मूर्ख नहीं जानते थे कि:—

रावणहुं ते अधिक छत्रपति,
खिन में गये बिलात ॥

चाहिए तो यह था कि वे गुरु जी के साथ मिलकर मुगल राज्य को नष्ट करने में सहायता करते बल्कि वह तो गुरु जी के ही मुकाबला में आ खड़े हुए जिन्हों ने हिन्दु धर्म को बचाने के लिए तलवार उठाई तथा औरंगजेब जैसे शक्ति-शाली जालिम को नष्ट करने का साहस किया।

जैसे जैसे गुरु जी का रणजीत नगारा गूंजता, तैसे तैसे ही इन बुजदिलों तथा कायरों के दिलों की धड़कने बढ़ने लग जाती थी।

कहते हैं कि सब से पहले जो इन पहाड़ी राजाओं का श्रोमणी सरदार राजा भीम सैन था वह गुरु जी के साहमने हो गया। वह बहुत ही चालाक तथा मक्कार था जोकि गुरु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी को मक्कारी के साथ ठगना चाहता था। बाहर से मित्रता और दिल से कपट करके गुरू को धोखा देना तथा धोखे से मारने का विचार करके अपने पुरोहित और केसरी चन्द मन्त्री को भेजा, कि गुरु जी का भेद लेकर आओ।

जब उन्हों ने आनन्द पुर की शान को देखा तो हैरान रह गये। प्रसादी हाथी और तम्बू को देख कर मन ललचा गया। उन्हों ने वापिस आकर सब बात भीम सैन को बता दी कि जो गुरु जी पास एक सुफेद हाथी, एक बहुत सुन्दर तम्बू और एक पंच कला शस्त्र है। ऐसी वस्तुऐं संसार में तो क्या, इन्द्र देवता के दरबार में भी नहीं होंगी।

भीमसैन के बेटे का विवाह था। उसने फिर अपने पुरोहित और बड़े चतुर मन्त्री को गुरु जी के पास भेजा और कहा कि लड़के के विवाह का बहाना कर के गुरु जी से वह वस्तुऐ ले आओ। फिर हम वापिस नहीं देंगे।

मन्त्री और पुरोहित ने बहुत सी चालें चलीं, परन्तु गुरु जो अन्तर्यामी ने उनकी एक न चलने दी और वह खाली हाथ ही वापिस चले गये।

इनके पश्चात भीम सैन स्वयं गुरु जी के पास आया। उसने भी कुछ प्यार और कुछ धमकियों की बातें कर कर के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह प्रसादी हाथी और तम्बू आदि वस्तुऐं लेनी चाही, परन्तु गुरू जी ने साफ जवाब दे दिया।

तब भीम सैन बहुत सी बातें बना २ कर गुरु जी को सुनाने लगा, 'मैं बाईधार के पहाड़ी राजाओं का सरदार हूं। आपको मेरी हतक नहीं करनी चाहिये थी।'

तब गुरु जी ने उस को सुन कर बहुत से सवैये तथा कबित सुनाए, जो कि सुधा सवैयों के नाम से प्रसिद्ध है। एक कबित जो विशेष करके गुरु जी ने भीमसैन को सुनाकर उसके अहंकार को मसला, वह इस प्रकार था—

॥ कबित ॥

बड़े राजा जिन के नौ लख नगारा बाजै,
जिन कै रथ से सातों सिंध खाटे हैं॥
अरब खरब धन जाकै कोटि लख आरजा की
एक ही धनूख संग वैरी सभ डाटे हैं॥
तूं जो कहित महिपत महिपत,
तेरे जैसे कायिर गीदो केते काल काटे हैं॥

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के इतने सखत तथा साहस के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बचन सुनकर राजा भीमसैन जल बल कर वहां से चला गया और अपने शहर में जाकर गुरु जी को एक पत्रिका लिखकर भेजी। जिसमें बहुत सी धमकियां लिखी हुई थी कि या तो आप प्रसादी हाथी, तम्बू तथा पच कला शस्त्र आदि वस्तुएं दे दो तो ठीक है, नहीं तो हम सेना लाकर तथा युद्ध करके तुम्हारा सब कुछ लूट लेंगे। तुमने हमारी प्रजा होकर हमारी तौहीन की है आदि ;

गुरु जी ने भीमसेन को पत्रिका का उत्तर, ईंट का जवाब पत्थर की तरह दिया। आप ने कहा, 'हम तेरी प्रजा नहीं है, हम तो ईश्वर की प्रजा हैं। शेष हम तुम्हारी भूमि पर नहीं रहते। यह भूमि तो हमारे पिता जी (श्री गुरु तेग बहादुर) ने रुपये देकर खरीदी हुई है और जो तूं हम को युद्ध की धमकियां दे रहा हैं वह तो तूं यदि कल को आना है सो आज हो अपनी सारी सेना और साथ में बाईधार के सभी राजाओं को लेकर आ जाओ।'

गुरु जी की इस प्रकार की पत्रिका पढ़ कर भीम सेन लोहा लाखा हो गया और उसी दिन से गुरु जी पर आक्रमण करने का विचार करने लगा, बल्कि फैसला कर लिया कि लड़के का विवाह होते ही श्री आनन्दपुर साहिब पर फौजी हमला कर दिया जाये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इधर गुरु जी ने भी युद्ध की त्यारी शुरु कर दी। सब सिक्खों को तथा प्रांतों में आज्ञा पत्र भेज दिये कि गुरु जी शस्त्रों पर बहुत प्रसन्न होते हैं। उसके उपरन्त सब सिक्ख बढ़िया से बढ़िया हथियार ले लेकर गुरु जी को भेंट करने लगे। जिसका वर्णन आगे जाकर आयेगा।

गुरु जी के महल

इतहास में गुरु गोबिन्द सिंह जी के तीन विवाह लिखे हैं। पहले विवाह का कथन तो पीछे कर आये हैं, जो कि श्री जीतो जी थे जिन के तीन बेटे थे:-

साहिब जुझार सिंह जी, साहिब जोरावर सिंह जी और साहिब फतह सिंह जी।

श्री जीतो जी का अकाल चलाना श्री आनन्दपुर में ही १७५५ बिक्रमी को हो गया था।

गुरु जी के दूसरे महल श्री सुन्दरी जी थे जोकि वैशाख १७४१ बि० को लाहौर एक कमराणा जाति के क्षत्रिय भाई राम रतन की पुत्री के साथ विवाह हुआ।

श्री सुन्दरी जी का एक ही बेटा था, उसका नाम साहिब

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जादा अजीत सिंह जी था। यह माता सुन्दरी जी के साथ देहली तक रहे। जब गुरु जी दक्षण की ओर गये थे तब माता सुन्दरी जी दिल्ली में ही रहे। वहां आपकी यादगार में एक गुरुद्वारा बना हुआ है और माता सुन्दरी रोड भी है। माता सुन्दरी जी के नाम पर आज्ञा पत्र भी मिलते हैं।

इस प्रकार माता साहिब देवाँ जी गुरु जी के तीसरे महल थे जोकि भाई रामी क्षत्रिय जिला जेहलम में एकप्रसिद्ध नगर रदुतास की पुत्री थी। माता साहिब देवां जी का कोई पुत्र न था। श्री गुरू गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ इन की गोद में डाला था। जो कि अब तक हर सिख धार्मिक पिता गुरु गोबिंद सिंह माता साहिब देवां कहता है।

श्री साहिब देवाँ अन्त समय तक गुरु जी के साथ रहे थे और साथ ही श्री हजूर साहिब (नदेड़) † गये। वहां पर श्री हरि मन्दिर साहिब से पाँच मील पूर्व की ओर बहुत बड़ा गुरुद्वारा माता साहिब देवां के नाम पर है। यहां लगातार लंगर तथा भण्डारा चलता रहता है।

---

†नादेड़ नगर का वर्णन इसी पुस्तक में आगे चल कर आयेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री पाउण्टा साहिब नगर का निर्माण

श्री पाउंटा साहिब भी सिक्ख जाति में बहुत बड़ी महानता रखता है। जिसकी कथा इस प्रकार है:—

बाई धार के राजाओं में से नहान रियासत का राजा मेदनी प्रकाश गुरू जी का प्रेमी बन गया था। उसने गुरू जी को अपनी रियासत में दर्शनों के लिये निवेदन की। इसका कारण यह था कि यह राजा सब राजाओं से निर्बल था और फतह चन्द गढ़वाल वाले ने इसका इलाका छीन लिया तथा कबजे में कर लिया था।

श्री गुरू गोबिंद सिंह जी ने इसको निवेदन मान कर १७४२ बि० को पांच सौ स्वार लेकर कीरतपुर के रास्ते नाहन पहुंच गये। राजा मेदनी प्रकाश ने गुरु जी का हार्दिक स्वागत किया और दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुआ।

जब इस बात का फतह चन्द को पता लगा तो वह डर गया। उस ने समझा कि कहीं गुरू जी मेदनी प्रकाश की सहायता करके मेरी रियासत ही न छीन लें। तब वह बहुत सी भेंटाएं लेकर गुरू जी को आ कर मिला।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब गुरू जी ने इन दोनों राजाओं की सुलाह करवा दी और मेदनी प्रकाश का इलाका वापिस दिला दिया। जिस पर मेदनी प्रकाश बहुत प्रसन्न हुआ और गुरू जी के चरणों में निवेदन की कि आप आनन्द पुर साहिब की तरह मेरी इस रियासत में भी कोई नगर बसाओ। जिस पर गुरु जी ने श्री पाऊंटा साहिब की नींव रख कर एक बहुत ही मजबूत किला बनवाया, साथ में सुन्दर नगर भी।

श्री पाऊंटा साहिब जमना के तट पर एक बहुत ही सुन्दर शहर है और इसकी सिक्ख इतहास में बहुत ही महानता तथा उपमा है।

मसन्दों को जला जला कर मारना

सिक्ख इतहास में मसंदों को जलाने की बहुत ही भयानिक तथा आश्चर्य प्रकार की घटना है। जिसका कारण था पूजा का धन।

सिक्ख-धर्म में पूजा के धान को बहुत ही बुरा माना है। भाई गुरदास जी ने तो यहां तक कहा है :–

जियो मिरयादा हिन्दुआं ॥

आप आगे जाकर पढ़ोगे कि जब आनन्द पुर में सिख

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुत दु.ख होने लगे तो माता गुजरी जी ने गुरू गोबिंद सिंह जी को कहा, "बेटा यह सिख बहुत दुखी हैं और तेरे पास धन के भण्डार भरे पड़े हैं वह अब इनको बांट दो ।"

तब गुरु जी ने कहा, 'हे पूज्य माता जी ! आप मुझ को एक तोला विष खिला दीजिये ।'

माता गुजरी जी ने कहा, "बेटा, यह कैसे हो सकता है। अपने बेटे तथा लाल को तो विष कोई डायन माँ ही खिला सकती है।

गुरू जी ने कहा, 'माता जी यह सिख भी मेरे बेटे हैं और यह पूजा का धान विष की भांति होता है। जो मैं इन को नहीं खिला सकता ।'

यह मसन्दों की मरयादा श्री गुरु रामदास जी ने चलाई थी। उस समय तो यह लोग ठीक थे तथा अलहिदा २ प्रांतों में सिखी-प्रचार करके गुरूबाणी का उपदेश करते । उन से भेंटाएं ले लेकर गुरू जी को भेंट करते और उस में से केवल निर्बाह मातर ही माया लेते थे, परन्तु यह माया, माया ही है। यह अपना प्रभाव डाल कर ही छोड़ती है।

यह बात यहां तक चली गई कि यह मसंद लोग श्रद्धालु सिखों को खुले दिल लूटते रहे यहाँ तक कि यह मसंद शराबी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा वेशया गामी हो गये। यह लोग यहां तक आगे बढ़ गये कि निर्धन सिखों की लड़कियों को भी अपने सेवकों के जरिये अपने पास बुलाने लगे। ऐसी ऐसो बातें करने लग पड़े जिस का कथन करने को हमारा सभ्यता आज्ञा नहीं देती। सारांश कि मसंदों के कुकर्न विभचार आदि से आगे जा चुके थे। किसी भी सिख की नौजवान तथा सुन्द्र स्त्री देख कर उसको..... मजबूर करते थे।

इन सब बातों की सूचना श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तक पहुंच गई। गुरु जी इन मसंदों के सम्बन्ध में सोच ही रहे थे कि भण्ड (मराशी) लोग गुरू जी के दरबार में नकलें दिखलाने के लिये आ गए। तब उनको गुरु जी ने कहा, 'तुम मसंदों की नकलें उतार कर दिखलाओ।'

तब उन्होंने जिस प्रकार मसंदों के कुकर्मों की नकलें उतार कर दिखलाई, जिसका वर्णन करना सभ्यता के विरुध है। यहां तक कि उनको भयानिक तथा मसंदों के सिक्खों के साथ किये गये कुकर्मों की नकलें देख कर गुरु जी को आखों में आंसू आ गये और गुरु जी सहार ही न सके। उन भण्डों को उसी समय नकलें उतारने से रोक दिया गया।

बस! फिर क्या था? गुरु जी ने शोघर ही आज्ञा दे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दी कि ऐ मेरे योधा सिखो ! जाओ, जहाँ जहां भी कोई मसंद मिले पकड़ कर यहां ले जाओ।

इधर गुरु जी ने बहुत सा घास लेट [मिट्टी का तेल] इकठा कर लिया और हजारों मसदों पर वह तेल डाल कर जला दिया। यहां तक कि सिख पन्थ में से मसंदों की प्रथा ही समाप्त कर दी गई।

हां, जो नेक मसंद थे उनको छोड़ दिया गया। गुरू जी ने इन मसंदों को सिख पन्थ के सुन्दर शरीर पर भारी रोग जान कर इन को दूर किया था। गुरु जी को यह भी खतरा था कि कहीं यह मसन्द लोग युद्ध के समय सिक्खों के विरुध मुगलों की सहायता करके कोई उपद्रव ही न कर डालें।

गुरू जी की सेना में और संगठन

गुरु जी ने जालिम औरंगजेब के साथ युद्ध करने के लिये सिक्ख सेना को त्यार कर लिया था। जिसकी सूचना पाकर बहुत से राजपूत गुरू जी की फौज में शामिल हो गये थे, और सढौरे (ज़िला अम्बाला) का एक बहुत प्रसिद्ध फकीर जिसका नाम सयद बुधू शाह था। उस ने अपना पांच सौ मुरीद गुरु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी की फौज में भरती करवा दिया। पांच सौ उदासीन साधू भी गुरू जी के पास आ गये।

भंगाणी का युध्द

भंगाणी का युद्ध श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के इतहास में पहला युद्ध है जिसका आरम्भ इस प्रकार हुआ कि राजा फतह चन्द जो कि गुरु जी का प्रेमी बन चुका था। उसकी लड़की का विवाह राजा भीम सैन के बेटे के साथ होना नियत हो गया।

राजा फतह चन्द ने श्री गुरु गोबिंद सिंह जी को विवाह पर आने का निमन्त्रण भेजा। परन्तु राजा भीम सैन के साथ विरोधता के कारण गुरू जी स्वयं तो न गये, एवं अपने दया राम पुरोहित को सवा लाख रुपया नयोंदरा देकर साथ में दो सौ योधे स्वार देकर भेज दिया।

उधर जब इस बात का पता भीम सैन को लगा तो उस ने इस बात को बहुत बुरा मान कर फतह चन्द को संदेश भिजवा दिया कि यदि तू गुरु का नयोंदरा लेगा तो मैं तेरी लड़की का नाता तोड़ दूगा। बल्कि यहाँ तक कह दिया कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरू का भेजा हुआ रुपया छीन लो और उसके सेनिकों को मार मार कर भगा दो।

राजा फतह चन्द ने लूटने की बात तो न मानी, परंतु रुपया वापिस लौटा दिया।

उधर भीम सैन ने अपनी सेना भेज कर सिखों से रुपया लूटना चाहा परन्तु सफलता न हुई।

गुरु जी को जब इस बात का पता लगा तो उन्होंने एक हजार सिख-सेनिक भज कर भीम सैन की बारात पर हमला करके उसकी करनी का फल देना चाहा, परन्तु बाद में फतह चन्द को निवेदन करने से अपनी सिख सेना को वापिस आनन्द पुर बुला लिया।

भीम सैन-ने विवाह का मौका तो टाल दिया, परन्तु बाद में फिर शरारत करनी शुरु कर दी। एक सिख से घोड़े छीनने चाहे, जो कि कशमोर से ला रहा था, परन्तु उस में भी कोई सफलता न हुई।

अब पहाड़ी राजाओं को भीम सैन ने गुरु जी के विरुध भड़का कर युद्ध की त्यारी करवा दी। फतह चन्द को भी भीम सैन के साथ होना पड़ा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इधर गुरु जी ने भी अपनी सिक्ख सेना को युद्ध के लिये त्यार कर लिया।

भीम सैन ने अपनी सेना को गुरू जी के स्थान से पांच मील दूर उतारा करवा कर गुरु जी की ओर एक दूत को पत्रिका देकर भेजा कि हमारी ईन मान लो नहीं तो हम आनन्दपुर को तबाह करके और तुमको पकड़ कर दिल्ली पहुंचा देंगे।

गुरू जी ने इसका उत्तर दिया कि शीघरता से आओ। हम तुम्हारा स्वागत (युद्ध के रुप में) करने के लिये हर समय त्यार रहते हैं।

पहाड़ी राजाओं की फौजों के मुख्य कर्मचारी

बाई धार के पहाड़ी राजाओं ने पूरी त्यारी से गुरू जी पर आक्रमण किया था तांकि कहीं हार का मुह न देखना पड़े। उसके मुख्य भींम सैन राजा था। शेष राजा फतह चद, राजा गोपाल चन्द गुलेर वाला; कृपाल चन्द कांगड़िया, बीर सेन मण्डी वाला, केसरी चन्द जसवालीया हरी सिंह हैडूरीया, कर्म चन्द तम्बूरीया, उमैद सिंह जसवालिया अनन्द चंद पृथी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुरीया झगड़ चन्द समान वाला, भाऊ सिंह सीबे वाला, धर्म पाल कुटलेड़ का, दया सिंह नूर पुरोया, जाग सिंह त्रिलोक पुरीया, टेक सिंह किष्ट वाड़ीया, सुधर सैन मण्डी वाला, रोडी सिंह संधरी वाला, गुरभज दौरीया, जय चन्द बेणों वाला, संसार चन्द नदोड़ीया, हरो चन्द कोटी वाला, लक्षमण चन्द कसौली वाला और भूम सिंह थयोरा आदि।

राजा मेदनो प्रकाश को बाहर से मजबूरी से पहाड़ीयों का साथ देना पड़ा, परन्तु भीतर से वह गुरू जी की ओर था तथा पक्ष में था।

उधर तो यह और उधर श्री पाऊंटे साहिब में सुना गया कि बाई धार के राजे पूरी त्यारी से आ रहे है तो वह सयद बुधू शाह के जो ५०० मुरीद थे वे सब के सब रात्रि के समय भाग गये और जो ५०० उदासीन मत के साधू थे, वह भी रात्रि को भाग गये।

गुरू जी ने कायरों के भागने को कोई चिन्ता न की। उन्होंने अपनी बहादुर सिख सेना को एकत्र करके दो तीन कोस पर सिख सेना को लेकर रणभूमि में आगये। गुरु जी के साथ उस समय कुछ वफादार पठान भी थे। जैसे काले खां के पास एक सौ स्वार थे और वह स्वय भी बहुत योधा था। वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी रणभूमि में आ गया।

गुरु जी ने रणजीत नगारा बजाने को आज्ञा दी। नगारा बजते ही पहाड़ी राजाओं के सीने धड़कने लगे। भीम सैन और उसके साथी एक दम गुरु जी की सेना पर टूट पड़े।

इधर गुरु जी की सेना में एक बहुत नातिवान योधा था, जिसका नाम संगो शाह था। उसकी कमान में दो हजार सिख सेना थी। उसने एक ओर बंदूकें भर कर छुपा रखी थी। जसे ही पहाड़ी सैना साहमने आई तैसे ही सगो शाह के इशारे से २००० बंदूकों का फैर हो गया। धड़ा धड़ सात आठ सौ पहाड़ी सेना के जवान भूमि पर गिर पड़े। जिसके कारण उनको एक दम पिछे हट कर लड़ना पड़ा।

राजा केसरी सिंह ने दो हजार सेना के साथ चार सौ पठान लेकर गुरू जी को सेना पर आक्रमण कर दिया तो गुरू जी ने उनको रोकने के लिये दया राम और नन्द लाल को ५०० योधा देकर भेजा।

इतने में सय्यद बुधूशाह अपने निमक हरामी पठानों को देख कर वह अपने ५०० मुरीदों को ले कर पहाड़ी सेना पर टूट पड़ा। जिस से पहाड़ी सेना को हाथ पाओं की पड़ गई तथा पांव उखड़ गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु जी की सेना में एक लाल चन्द नामक पहलवान था। वह युद्ध के भेंदों को नहीं जानता था, परन्तु उसमें बल बहुत था। इस लिये वह बीर रस में आकर पहाड़ीयों पर टूट पड़ा। यह हलवाई की दुकान करता था।

सिख सेना ने क्रोध में आ कर ऐसी गज़ब की तलवार चलाई कि पहाड़ी सेना को तो नानी याद आ गई। परन्तु उन निमक हरामी ५०० पठानों को भी रणभूमि से भागने की चिन्ता हो गई।

उन निमक हरामी पठानो में एक बहुत लड़ाका पठान हयात खां था। वह सिख सेना पर टूट कर पड़ गया। उसको देखते ही गुरू जी की सेना में से एक उदासी साधु जिसका नाम कृपाल चन्द था। उसके हाथ में बहुत भारी कुतका था। उसने दोनों हाथों से वह कुतका उस पठान के नंगे सिर पर इतने जोर से मारा कि उसका सिर ऐसे फूटा जैसे दहीं की मटकी फूट जाती है।

इस पठान की यह दिशा देख कर पहाड़ी सेना पठानों को साथ लेकर सिख सेना पर टूट पड़ी; परन्तु आगे से सिखों ने भी खूब मुकाबला किया और उनको पीछे धकेल दिया। भीम सैन और फतह चन्द सिखों से डरकर तथा भागकर एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पहाड़ी के पीछे छुप गये।

पहाड़ी सेना में एक बहुत योधा राजा गाजी चन्द था जो पहाड़ी सेना को लेकर सिखों पर टूट पड़ा। जिस से बड़ा भारी घमसान का जंग मच पड़ा। जिस से जीत हार का निर्णय करना असम्भव हो गया। इतने में संगो शाह ने गाजी चन्द के मथे का निशाना लेकर ऐसा तीर मारा कि वह माथा फोड़ कर पार हो गया और उसके साथ ही वह भी मर गया।

इस हालत को देख कर संगो शाह पर नजाबत खां तलवार ले कर चढ़ आया। यह पठान तलवार के कर्तव्य में बहुत चतुर था। अन्त दोनों का इकठा वार हो गया, जिस से दोनों एक ही समय शहीद हो गये।

उसी हमले में सयद बुधू शाह के दोनों बेटे भी शहीद हो गये। इस लिये श्री गुरु गोबिंद सिंह जी स्वयं धनुष बाण लेकर रणभूमि में आ गये।

गुरु जी जब जंग की हालत देख रहे थे कि राजा हरीं चंद ने गुरू जी को एक तीर मारा जो कि कान को छूह कर आगे निकल गया। फिर दूसरा तीर मारा वह भी गुरु जी की छाती में लग कर लोहे की संजोह को फाड़ कर उसका थोड़ा सा सिरा घुस गया। जिसका कथन गुरु जी निम्नलिखित इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकार गुरुबाणी में वर्णन करते हैं :-

हरी चन्द कोपं कमानं संभार ॥
पृथम बाजीयं ताणा बाणं पुहारं ॥
दुतीय ताक के तीर मो को चलायं ॥
रखियो दईव मैं कान छै कै सिधायं ॥ २९ ॥
तृतिया बाण मारियो सु पेटी मझारं ॥
बिधिअं चिलकतं दुआल पारं पधारं ॥
चुभो चिच चरम कछू धाए न आयं ॥
कलं केवलं जान दासं बचायं ॥ ३० ॥

गुरु जी ने कहा कि :—

जबै बाण लागयो ॥
तबै रोस जागयो ॥

तब गुरू जी ने उस हरी चन्द को एक ही बाण से मार कर गिरा दिया ।

गुरू जी ने ऐसे कठिन बाण चलाये कि पहाड़ियों को नानो याद आने लगी । उधर सिख सेना भी बुरी भांति पहाड़ियो पर टूट पड़ी ।

बस ! फिर तो पहाड़ियों की सेना के ऐसे पांव उखड़े कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भीम सैन आदि ने टिकने के सैकड़ों यत्न किये प्रन्तु टिक न सके। सारी सेना सिर पर पांव रख कर जिधर किसी का मुह हुआ उधर ही भाग गये। युद्ध का सारा सामान घोड़े आदि सब कुछ वहाँ ही छोड़ गये।

भीम सैन आदि राजाओं में भी :-

जान बची तो लाखों पाये ॥
लौट के बुधू घर को आये ॥

की कहावत के अनुसार मुशकिल से जानें बचा कर वापिस घरों को लौट गये।

उधर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी भी इस भंगाणी के युद्ध पर १७४४ बि० वैशाख के महीने में विजय प्राप्त करके वापिस लौट कर खुशी के बाजे बजाये। यह गुरू जी की पहली विजय थी जिस के सम्बन्ध में श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने स्वयं भी लिखा है कि :-

भई जीत मेरी कृपा काल केरी ॥

इस युद्ध में सिख सेना को युद्ध का बहुत सा सामान हाथ आया था। क्योंकि पहाड़ी सेना को तो जानें बचा कर भागना असम्भव हो गया था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाउण्टा साहिब से श्री आनन्द पुर साहिब की ओर

भगाणी का युद्ध जीतने के पश्चात् गुरु जी शीघर ही वहां से श्री आनन्द पुर साहिब आ गये । यहाँ आकर बहुत भारी खुशी मनाई गई । दीप माला की गई। उसके पश्चात बहुत से पुरस्कार बांट गये।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज का विद्या भण्डार

पहली विजय के पश्चात गुरू जी को कुछ वर्षों के लिये अवकाश मिल गया क्योंकि पहाड़ी राजे अपनी पराजय करा कर कुछ देर के लिए चुप कर के बैठ गये । परन्तु भीतर ही भीतर त्यारी करने लगे ।

इधर गुरू जी ने बहुत बड़े विद्वान् इकट्ठे कर लिये और साथ ही बड़े बड़े कवि भी थे।

कहते हैं कि गुरू जी के पास ५२ कवि हर समय मौजूद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहते थे। आप विद्वानों की बहुत कदर करते थे। आप जी ने विद्वानों तथा कवियों से इतना साहित्य लिखवाया कि उसका साढ़ आठ मन वजन हो गया। उस ग्रन्थ का नाम विद्या सागर रखा गया था।

विद्वानों कवियों तथा गुरू जी की अपनी रचनाओं का विस्थार करने से तो यह बहुत बड़ा ग्रन्थ बन जाता है। वह विद्या सागर ग्रन्थ जब युद्ध हुआ तो सरसा नदी में बह गया था और जो कुछ सैंचीयां बच गई, उनका हम दसम ग्रन्थ के रुप से दर्शन कर रहे हैं।

विद्वानों तथा कवियों को रचनाओं को छोड़ कर हम श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी की बाणी की रचनाओं के कुझ नमूने पाठकों की भेंट करते हैं।

१) पहली रचना पातशाही १० के नाम पर है। वह एक बे-मिसाल तथा अलौकिक बाणी है। "श्री जापु साहिब' जो कि सिखों के प्रात: काल के समय नित्य नेम में शामिल है। जिसका मन शांत तथा एकाग्र करके पढ़ने से गुर-सिख की सुन्न समाधी लग जाती है।

२) दूसरी रचना का नाम श्री अकाल उसतित पर रखा गया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३) बचित्र नाटक ४) ज्ञान प्रबोध

५) तेतीस सवैये ६) चण्डी चरित्र

७) चन्डी दी वार ७) चौवीस अवतार

९) शब्द हजारे १०) जफर नामा

११) त्रिया चरित्र

नोट:—कई दसम ग्रन्थों में एक दो बाणीयां और ज्यादा हैं, जैसे कि सुखमनी साहिब आदि।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की बाणी अधिक तर बीर रस और अकाल पुरख की उसतति में भरी हुई है। शेष और भी काव्य रस पाये जाते हैं। जैसे कि:—हास रस, शिंगार रस तथा करुण रस आदि।

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की बाणी के कुछ नमूने निम्न-लिखित इस प्रकार दिये जाते हैं—

भूयंग परयात छन्द

चक्र चिहिन अर बरन जाति,
अरु पाति नहिन जिहि ॥
रूप रंग अरु रेख भेख,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोऊ कहि न सकत किह ॥
अचल मूरत अनुभव प्रकाश,
अमितोज कहिजै ॥
कोटि इन्द्र इन्द्रान,
साह साहान गनिजै ॥
सुर नर असुर नेति नेति,
बन त्रिण कहित ॥
तव सरब नाम कथं कवन,
करम नाम बरनति सुमति ॥

(श्री जापु साहिब)

हे पाठक जनो ! कभी आप यह जापु साहिब की बाणी पढ़ कर तो देखो असृत रस आएगा ।

॥ कबित्त ॥

मीर मुरझाने कंज खंजन खिसाने
अलि फिरत दिवाने बन डोले जित तित ही ॥
कीर और कपोत बिंब कोकिला कुलापी बने,
लूटे फूटे फिर मन चैन हूं न कित ही ॥
दारुन दरक्क गयो देख दशनान पांत,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रूप हुं की क्रांति जग फैल रही जित्त ही ॥
ऐसो गुन सागर सुनागर उचागर है,
लीनो मन मेरो हर नैन कोर चित हो ॥

(चण्डो चरित्र)

राग सोरठ पातशाही १०

प्रभु जू तो कउ लाज हमारी ॥
नील कंठ नर हरि नारायिण
नील बसन बनबारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

परम पुरख परमेसुर सुआमी
पावन पवन आहारी ॥
माधव महा जोति मद मरदन
मान मुकंद मुरारी ॥
निर बिकार निरजुर निंद्रा निनु
निरबिख नरक निवारी ॥
कृपा सिंध काल त्रै दरसी
कुकृत प्रनासर कारी ॥ २ ॥

धनुर पानि धृत मान धरा धर
अनु विकार असि धारी ॥
हौं मति मन्द चरन सरनागति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर गहि लेहु उबारी ।।

तथा

स्त्रावग सुध समूह सिधान के,
देख फिरिओ कर जोग जती के ।।
सूर सुरारदान सुद्ध सुधादिक
संत समूह अनेक मती के ।।
सारे ही देस को देखि रहिओ,
मत कोऊ न देखीयत प्रान पति के ।।
श्री भगवान की भाइ कृपा हुं ते,
एक रती बिन एक रती के ।।

(त्वप्रसादि सवैये पा० १०)

चौपाई पातशाही १०

अनहद रूप अनाहद बानी ।।
चरन सरन जिह बसत भवानी ।।
ब्रह्मा बिसन अन्त नही पायो ।।
नेति नेति मुख चार बताओ ।।

इस प्रकार आप दसम ग्रन्थ का पाठ करके ही दशमेश पिता जी की बाणी का रस ले सकते हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री आनन्द पुर साहिब का किला तथा गढ़

विद्या के भंडार के साथ ही गुरु जी ने चार किले (गढ़) ऐसे ढंग से बनवाये कि जिस पर दुशमन कभी विजय प्राप्त न कर सके। जिसके नाम थे—

आनन्द गढ़, लोहगढ़, तारा गढ़ आदि। जो कि १७४६ बि० को त्यार हो गये थे। साथ हो साथ गुरू जी ने तोफें ढलवाने के लिये एक बहुत बड़ा फ ऊंडरो भो बनवाई। तलवार, नेजे भाले, बंदूकें, पसतौलें आदि अनेक प्रकार के युद्ध में काम आने वाले शस्त्रों के कारखाने भो बनवाये।

नादौन का युध्द

कहते हैं कि भंगाणी के युद्ध में पहाड़ी राजाओं की बहुत सी हानि हो गई थी। क्योंकि उन्होंने गुरू जी पर विजय प्राप्त करने के विचार से सब कुछ दाव पर लगा दिया था। उनको यह दृढ़ विश्वास था कि हम गुरु पर विजय प्राप्त कर के, उनका खजाना लूट कर अपनी कमी पूरी कर लेंगे, जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कि वह बात ठीक भी थी, क्योंकि गुरू जी के पास बाईं धार पहाड़ी राजाओं जितना बल्कि उन्हों से भी अधिक धन था। परन्तु उन ये चारों को लेने के देने पड़ गये। उलटो पराजय होकर उन के सब कोश खाली हो गये। जिस के कारण दिल्ली कर [टैक्स] न पहुचा सके।

तब औरंगजेब ने अलफ खां की कमान के नीचे पहाड़ी राजाओं पर एक बहुत बड़ी शाही सेना भेज दी ताकि जुर्माने के सहित कर लेकर ही वापिस आये।

तब तो पहाड़ी राजाओं के रंग कफूर होने लगे अन्त गुरु जो से सहायता मांगो। जिस पर गुरु जोने गुरबाणी के वाक्य के अनुसार कि :—

जो शरण आवै तिस कंठ लावै
एह बिरद सुआमी संदा ॥

गुरू जी ने अपने योधे सिखों की सेना को पहाड़ियों की सहायता करने के लिये तथा अलफ खां के साथ युद्ध करने के लिये भेज दिया। खूब युद्ध हुआ। अलफ खां १७४७ बि० को पराजय हो कर भाग गया।

इस युध्द का वर्णन भी श्री गुरू गोबिंद सिंह जो ने नाटक में किया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुलरां का युध्द

जब अलफ खां पराजय होकर चला गया और औरंगजेब को सारा हाल कहा कि यदि कहीं गुरु गोबिन्द सिंह पहाड़ियों का साथ न देते तो मैं कभी न हारता और पहाड़ियों से अवश्य कर लेकर आता। उसकी बात समझ कर औरंग जेब ने लाहौर के सूबे को लिखा कि शीघ्र ही एक भारी सेना भेज कर एक तो गुरू को पकड़ कर मेरे पास भेजो।

दूसरा पहाड़ी राजाओं से युध्द का तवान और कर भी लेकर दिल्ली पहुंचाओ।

लाहौर के सूबे को क्या पता था कि गुरू जी कितने बलवान थे। उसने अपने बेटे रुसतम खां को बहुत सी सेना देकर भेज दिया। उस ने सीधा आनन्दपुर साहिब पर आक्रमण करना चाहा, परन्तु आगे सिख सेना ने उसको सतलुज दरया के पार ही रोक लिया। एक तो बहुत सखत सर्दी पड़ रही थी तथा पहाड़ से ऐसा सीतल पवन चली कि उसकी सब सेना मारे सर्दी के सुन्न हो गई। दूसरे सिख सेना ने उसका नाक में दम कर दिया। जिस से वह भी वापिस लाहौर लौट गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुसैनी का युध्द

इस युध्द के थोड़ी देर के पश्चात हुसैनी ने आक्रमण कर दिया, जो कि पहले पहाड़ी राजाओं से ही हुआ। कटोच का कृपाल चन्द तो गदारी कर उसके साथ जा मिला और राजा गोपाल चन्द अकेला ही लड़ा, परन्तु उस ने भी सहायता के लिये गुरु जी को विनती करके बुलवा लिया। गुरू जी ने सिख सेना के साथ भाई संगतिये को भेजा। बहुत घमसान का युध्द हुआ, जिसमें भाई संगतीया और उसके सात साथी तो मारे गये, परन्तु हुसैन को भी बुरी तरह पराजय हुई।

इसके पश्चात १७५३ बि० को शहजादा मुअज़म को बहुत भारी सेना देकर भेजा। उसको आज्ञा थी कि वह पहले पहाड़ी राजाओं से युध्द का तवान और शेष सारा कर लेकर आये। उसे श्री आनन्द पुर पर आक्रमण करने को भी कहा गया था।

उधर गुरु जी ने सिख योधयों को भी त्यार कर रखा था परन्तु वह भाई नन्द लाल के समझाने पर इधर तो न आया। पहाड़ी राजाओं से ही कर आदि लेकर वापिस लाहौर की ओर लौट गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस शहजादे ने पहाड़ीयों की अच्छी प्रकार हार दी थी। परन्तु गुरू जी इनकी सहायता के लिये नहीं गये क्योंकि उन्हों ने गुरू जी को सद्दा-पत्र नहीं भेजा था। कुछ तो यह कारण था और कुछ और देहली की ताबेदारी तथा डर के कारण पहाड़ी राजे गुरू जी के साथ फिर से विरोधता करने लगे थे। यहाँ तक कि गुरू जी की शिकायतें देहली औरंगजेब को भी भेजने लगे। जिस से गुरू जी ने समझा कि इन लोगों के साथ निर्णयवादी युद्ध अवश्य होगा। इस लिये श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने त्यारी करनी शुरू कर दी।

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी पहाड़ियों को मनोवृती को भली प्रकार जान गये थे कि यह लोग कायर सुभाव के हैं। इनके हृदयों में न तो कोई हिन्दुस्तान का गौर्व है और ना ही इन में यवन राज्य के साथ मुकाबला करने का साहस है। मुगल राज्य की गुलामी तो इन लोगों के रक्त में प्रवेश कर चुकी है। इस लिये गुरू जी औरंगजेब के साथ युद्ध करने पर इन लोगों से सहायता की आशा नहीं रखते थे। बल्कि अपने तौर पर सीधा यवन राज्य के साथ लोहा लेने की त्यारी में लग गये थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खालसा पन्थ का जन्म

गुरू गोबिंद होये प्रगटियो
दसवें अवतारा ।।
जिह पन्थ चलायो खालसा
धर तेज करारा ।।

सात सौ वर्ष की दृढ हुई हुई हकूमत को जड़ से उखाड़ना कोई मामूली बात न थी । चाहे गुरु जी के पास जो सिख सैनिक थे, उन्हों ने तीन चार युध्दों में अद्वितीय चमत्कार तथा जग के कर्तव्यों से मुगलों तथा पहाड़ी सेना के दांत फोड़ फोड़ कर रख दिये थे परन्तु दिल्ली की शाही सेना के साथ बाकायदा जंग लड़ने के लिये किसी विशेष सेना की आवश्यकता थी और गुरू जी चाहते थे कि कोई ऐसी युक्ति निकाली जाये, जिस से एक हिरन और शेर का मुकाबला हो । एक चिड़िया बाज को मार डाले । बुज़दिल तथा कायर उनके बहुत बड़े योधे के दांत फोड़ डाले ।

अन्त श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने यह ढंग निकाल ही लिया जिस पर गर्व करके उन्हों ने यह वाक्य कह दिये, केवल कह ही नहीं दिये बल्कि अमली रूप से करके दिखला दिये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह यह गुरुबाणी के वाक्य इस प्रकार थे :-

सवा लाख सिओं एक लड़ाऊं ॥
तबै गोबिंद सिंह नाम कहाऊं ॥
चिड़ीयों से मैं बाज तुड़ाऊं ॥
तबै गोबिंद सिंह नाम कहाऊं ॥

वह क्या विधि थी ? वह था "अमृत"
पीयो पाहुल खंडें धार होवै जन्म सुहेला ॥

देवी परगट करने की कथा

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने जब बैशाखी के मौके पर एक बहुत बड़ा सिख कौम का इकट्ठ करने का विचार किया और सब मुख्य पण्डितों को भी कहा कि अब हम औरंगजेब तथा मलेच्छ राज्य के साथ सीधा युद्ध करना चाहते हैं। तब पण्डितों के हृदय काँप गये। उन्हों ने कहा, "महाराज! जेकर जंग के बगैर ही मलेच्छ राज का खातमा हो जाये तो फिर युद्ध की भयानिक आग में क्यों कूदा जाये ?"

'वह कैसे ?' गुरू जी ने कहा।

पण्डितों ने कहा "आप खर्च कीजिए, हम एक हवन यज्ञ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर के देवी प्रकट करेंगे। स्वयं ही इनका नाश तथा खातमा करेगी।"

गुरू जी तो जानते थे कि यह पाखंड है, झूठ है, परन्तु उन को सब लोगों के साहमने ही झूठा करना तथा बे-इज़त करना चाहते थे।

गुरू जी ने कहा, "जितनी चाहो सामग्री ले लो, जितना चाहो खर्च कर लो। तुम लोग देवी प्रकट करके सब लोगों को दिखाओ।"

बस ! जो जो वस्तुएं तथा सामग्री वह मांगते गये, गुरू जी देते गये।

पण्डितों ने १७५४ बि० को नैना देवी के ऊचे पहाड़ पर एक बहुत बड़े हवन कुण्ड की रचना करके उसमें लाखों रुपये की सामग्री डालनी शुरु कर दी। साराश कि जब उन के सब यतन निष्फल गये तो गुरू जी ने कहा, 'अब बताओ?'

यह बात सुन पण्डित लोग तो घबरा कर वहां से खिसक तथा भाग गये।

तब गुरु जी ने एक बार ही सब हवन सामग्री हवन कुंड में फैंक दी जिससे बहुत सी आग का भांबड़ मच कर बहुत सा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाश हुआ और गुरू जी वापिस श्री आनन्दपुर साहिब लौ आये ।

बहुत बड़े प्रकाश को देख कर पण्डितों ने समझा कि यह देवी का ही प्रकाश होगा, जो हमारे भाग आने के पश्चात देवी प्रकट हो गई हो । सब पण्डितों ने गुरू जी के पास आ कर पूछा जो देवी प्रकट हुई ।

तब श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने मयान से तलवार निकाल कर कहा:—

यही चंडिका खंडिका दुष्ट दमना ।
रहै मयान मधं समै दुष्ट धावै ।।

भाव—हे पण्डितो हमारी तो यही तलवार देवी है कि जो समय समय पर दुष्टों को नष्ट करती है । हम और किसी भी कल्पत देवी को नहीं मानते ।

सौ इस प्रकार गुरू जी ने पन्डितों और आम लोगों के देवी प्रकट करने के भरम को दूर करके खालसा पन्थ साजने की तयारी कर दी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर के देवी प्रकट करेंगे। स्वयं ही इनका नाश तथा खातमा करेगी।"

गुरू जी तो जानते थे कि यह पाखंड है, झूठ है, परन्तु उन को सब लोगों के साहमने ही झूठा करना तथा बे-इज़त करना चाहते थे।

गुरू जी ने कहा, "जितनी चाहो सामग्री ले लो, जितना चाहो खर्च कर लो। तुम लोग देवी प्रकट करके सब लोगों को दिखाओ।"

बस! जो जो वस्तुएं तथा सामग्री वह मांगते गये, गुरू जी देते गये।

पण्डितों ने १७५४ बि० को नैना देवी के ऊचे पहाड़ पर एक बहुत बड़े हवन कुण्ड की रचना करके उसमें लाखों रुपये की सामग्री डालनी शुरु कर दी। सारांश कि जब उन के सब यतन निष्फल गये तो गुरू जी ने कहा, 'अब बताओ?'

यह बात सुन पण्डित लोग तो घबरा कर वहां से खिसक तथा भाग गये।

तब गुरु जी ने एक बार ही सब हवन सामग्री हवन कुंड में फैंक दी जिससे बहुत सी आग का भांबड़ मच कर बहुत सा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाश हुआ और गुरू जी वापिस श्री आनन्दपुर साहिब लौट आये ।

बहुत बड़े प्रकाश को देख कर पण्डितों ने समझा कि यह देवी का ही प्रकाश होगा, जो हमारे भाग आने के पश्चात देवी प्रकट हो गई हो । सब पण्डितों ने गुरू जी के पास आ कर पूछा जो देवी प्रकट हुई ।

तब श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने मयान से तलवार निकाल कर कहा:—

यही चंडिका खंडिका दुष्ट दमना ।
रहै मयान मधं समै दुष्ट धावै ।।

भाव—हे पण्डितो हमारी तो यही तलवार देवी है कि जो समय समय पर दुष्टों को नष्ट करती है । हम और किसी भी कल्पित देवी को नहीं मानते ।

सो इस प्रकार गुरू जी ने पन्डितों और आम लोगों के देवी प्रकट करने के भरम को दूर करके खालसा पन्थ साजने की तैयारी कर दी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमृत को बखशिश

वैशाखी के मौके पर बहुत बड़ा इ॰ट्ठ हो गया। आनंद पुर में गुरु जी ने एक बहुत बड़ा शामयाना (तम्बू) लगा दिया जिसमें पचास हजार सिख संगतें समा सकती थीं। सब के मन में यही बात आ रही थी कि गुरू जो आज कोई नया फुरमान तथा हुकम जारी करेंगे । सब के सब यही अनुमान लगा रहे थे कि औरंगजेब तथा मुगल राज्य के साथ गुरु जी सोधा ऐलान कर देंगे।

हरन भरन जाका नेत्र फोर ॥
तिस का मन्त्र न जानै होर ॥

गुरु जो अपने सिंघासन से उठे और बड़े जोश में आ कर तथा मियात से तलवार निकाल कर सब संगतों में ऊंची तथा गर्जदार आवाज में कहने लगे, 'ऐ गुर-सिखों ! हमें एक सिर की आवश्यकता है।"

गुरु जी की यह बात सुन कर सारी संगत में भय तथा सनाटा छा गया। परन्तु तो भी पचास हजार में से एक सिक्ख हाथ जोड़ कर गुरू जी के पास आकर तथा सिर झुका कर बोला, 'हे मेरे सतिगुरु जी ! यह सिर तो आप

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की अमानत है जब चाहे ले लो ।"

तब गुरु जी उस सिख को भुजा से पकड़ कर तम्बू में ले गये जोकि पहले से लगा रखा था। तम्बू के भीतर से तलवार चलाने को ऐसी आवाज आई जैसे उस सिख की गर्दन गुरू जी ने काट दी हो। उस समय गुरु जी लहु से भरी हुई तलवार ले कर बाहर आकर फिर वैसे गर्जदार अवाज से बोले "हमें एक और सिर की जरूरत है।

बस फिर क्या था ? अब तो सब को दृढ़ विश्वास हो गया कि गुरु जी जिस प्रकार उस पहले सिख का नाहक ही गला काट कर तम्बु में फैंक आये हैं। इसी तरह जो अब आयेगा उसका भी यही हाल होगा। इसी तरह भय से भरा हुआ सनाटा छाया रहा परन्तु एक सिख और उठ कर गुरु जी के पास जाकर तथा सिर झुका कर कहने लगा, "लो महाराज ! यह सिर तो पहले से ही आपका है ।"

तब गुरु जी उसको भी तम्बू में ले गये और उसके गले पर तलवार चला कर वापिस आ गये ।

फिर एक सिर मांगा इस प्रकार पांच सिख नितर आये तथा श्री गुरु गोबिंदसिंह जी महाराज की परीक्षा में पूरे उतरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिनके नाम इस प्रकार थे :—

१. भाई दया राम क्षत्रीय लाहौर निवासी
२. भाई धर्म चन्द जाट हसतना पुर निवासो
३. भाई मोहकम चन्द छींबा द्वारका निवासो
४. भाई हिम्मत राय झोवर जगत नाथ निवासो
५. भाई साहिब चन्द नाई (हजाम) विदर पुर निवासो

गुरु जी ने सब संगतों के साहमने वह जो पांच सिख मारे थे फिर से सुरजीत करके तम्बू से बाहर ले आये।

गुरु जी ने सब संगत को ऊंची आवाज से कहा कि देखो अब पन्थ में कितनी उन्नती हो गई है कि गुरु नानक देव जी के समय एक भाई लहणा जी नितरे थे, परन्तु अब ईश्वर की दया से पांच नितरे हैं।

उसके पश्चात गुरु जी ने अमृत का छगा तयार किया, जो कि हाथ में खंडा ले कर एक लोहे के छने को पवित्र जल से भर लिया। उसे एक पत्थर के कूण्डे में रख कर उस छने के जल में दृष्टि डाल कर बीच में खंडा चलाना शुरु कर दिया। साथ ही साथ गुरु जी पाँच बाणियों का पाठ भी अपने मुखारबिंद से कर रहे थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहते हैं कि जब इस बात का माता सुन्दरी जी को पता लगा तो उन्हों ने उस जल के छने में पताशे ला कर डाल दिये। यह कह कर कि यहां पर इस अमृत को पान करने वालों में शक्ति तथा बीर रस पैदा होगा वहाँ मिठास भी आ जायेगी तथा भर जायेगी।

गुरू जी ने पहले जपुजी साहिब का पाठ किया, फिर जपु साहिब सुधा सवैये चौपाई और पूरा आनन्द साहिब पढ़ कर अमृत का छना त्यार करके उन पांच सिखों को पिला कर उनके नाम इस प्रकार रख दिये–

१. भाई दया सिंह जी। २. भाई धर्म सिंह जी
३. भाई मोहकम सिंह जी। ४. भाई हिम्मत सिंह जी।
५. भाई साहिब सिंह जी।

उन्हों को अमृत पिला कर फिर उन से स्वयं पिया। जिस पर गुरू और चेला, दोनों बने थे। जैसे कि–

वह प्रगटियो मरद अगमड़ा ॥
बरियाम अकेला ॥
वाहु वाहु गोबिन्द सिंह, आपे गुरु चेला ॥

अमृत पिलाते समय गुरु साहिब श्री दशमेश जी ने जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिक्षा दी वह इस प्रकार थी–

जिस में कि सिख धर्म के धार्मिक संस्कार तथा धार्मिक नियम आ जाते हैं और इसी में सिक्खी की रहित मरयादा आ जाती है ।

चार कुरहतें

अमृत पीने वाले सिक्ख को सब से पहले चार कुरहतों से बच कर रहना पड़ता है । यदि इन कुरहतों में से एक भी कर ली जाए तो वह सिख धर्म से गिर जाता है और दूसरी बार अमृत छकना पड़ता है । वह चार कुरहतें इस प्रकार कथन की गई हैं–

१) सारे सरीर के किसी भाग से किसी प्रकार भी रोम तथा बाल न उतारने जो उतारे वह कुरहतीया ।

२) मुस्लमानी ढंग (हलाल) से बना हुआ मास न खाये यदि खाये तो कुरहतीया ।

३) किसी भी प्रकार से तम्बाकू का प्रयोग न करे । यदि करे तो कुरहतीया ।

४) पर पुरुष तथा पर नारी का अयोग सम्बन्ध । यदि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करे तो कुरहतीया ।

इस के इलावा और कुकर्म जो इस प्रकार है—

कुड़ी (बेटी) मार तथा वढी खोर के साथ कोई भी सम्बन्ध न रखा जाये ।

आम रहिन या रहित

१. एक अकाल पुरुख परमात्मा के बगैर और किसी भी देवो देवते को न माने ।

२. मुक्ति दाता केवल दस गुरू तथा गुरु ग्रन्थ साहिब जी को ही गुरु माने ।

३. दसों गुरुओं को एक ही स्वरुप माने ।

४. गुरू ग्रन्थ साहिब जी को दसों गुरुओं का आतम सरूप माने ।

५. जात पात, जन्त्र मन्त्र, छूत छात, दिन वार तथा राशि ज्योतिष आदि व्रत श्राध आदि को न माने ।

६. हर एक काम से पहले गुरु की हजूरी में अरदास (प्रार्थना) करे ।

७. हर एक सिक्ख गुरमुखी भाषा अवश्य पढ़े ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

८. किसी प्रकार का अमल न करे। जैसे कि–भंग, अफीम शराब तम्बाकू आदि।

९. पुरुष तथा स्त्री का नाक कान आदि कभी न छेदे।

१०. गुरु का सिख धर्म की किरत करे।

११. चोरी यारी जुआ आदि न खेले।

१२. गुरु का सिख निर्धनों के मुख को गुरु की गोलक समझे।

१३. गुर-सिख हर एक काम गुरु मरयादा अनुसार करे।

१४. सिख धर्म में दृढ़ रहे।

१५. हर एक सिख सात बाणियों का पाठ नित्त-नेम अवश्य करे।

प्रातःकाल के समयः–जपुजी साहिब, जापु साहिब, सुधा सवेयै, चौपाई और सम्पूर्ण आनन्द साहिब।

सायं काल के समय–रहिरास तथा कीर्तन सोहिला।

१६. इशनाव, दातुन, वस्त्रों की सफाई आदि का हमेशा ध्यान रखे।

१७. पांच ककार की रहत अवश्य रखे। जैसे कि– केश, कड़ा, कछैहरा, कंघा, कृपान।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस के इलावा रहत नामे में सिखों को जो रहतें वर्णन की गई हैं। उस में से कुछ कु कथन की जाती हैं:—

रहतनामा भाई चौपा सिंह जी का
[बचन श्री मुखवाक पातशाही १०]

{ चौपई }

होये सिख सिर टोपी धरे ॥
सात जन्म कुष्ट होए मरे ॥
ज़ो सिख गल में धागा मेले ॥
चौपड़ बाजी गनिका खेले ॥१४॥

जन्म सुआन पावेगा कोटि ॥
बाजियो हाथ बुरा इस खोटि ॥
पाग उतार प्रसादि जो खावै ॥
सो सिख कुम्भी नरक सिधावै ॥ १५ ॥

॥ दोहरा ॥

मोणा और ससंदोया मोना कुड़ी जो मार ॥
होये सिख वरतन करै अन्त होएगा खुआर ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाहिगुरु के मन्त्र बिन जपै और कोई जाप ।।
सो साकत सिख मिल बहि वचन है श्री मुखवाक ।।

पाठकों को चाहिए कि वह सिक्ख धर्म की पूर्ण रहत मरयादा को समझने के लिए निम्नलिखित रहतनामे तथा पुस्तकें मंगवा कर अवश्य पढ़ें:—

१. रहत नामा भाई नन्द लाल जी ।
(श्री मुखवाक पातशाही १०)

२. रहत नामा भाई चौपा सिंह जी ।
३. रहत नामा भाई देसा सिंह जी ।
४. रहत नामा भाई प्रहलाद सिंह जी ।
५. रहत नामा भाई दया सिंह जी ।

इन सब रहत नामों में सिक्ख धर्म की रहत मरयादा श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज की मौजूदगी में ही लिखी गई थी ।

गुरु दशमेश जी के साथ पहाड़ी राजाओं का युध्द

जब गुरु जी ने सब जातियों के लोगों को एक छने में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अमृत पिला कर संगत पंगत में अभेद कर दिया और जात पात का अन्तर मिटा कर सब के लिये रोटी बेटी को सांझ कर दी। गुरु घर में जात पात को मानना नियम के विरुद्ध करार दे दिया गया। जिन नीच जाति के लोगों को जात अभिमानियों ने अपनी जुती के नीचे रखा हुआ था। वह अब गुरु जी के खंडे का अमृत पी कर सरदार बन गये। गीदड़ों से शेर बनते गये। कायरों से योधे बहादुर बन गये। चारों ओर से लोग आ आ कर तथा अमृत पी पी कर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की सेना में भरती होते गये।

इस प्रकार उन बेचारों को अपनी गुलामी सेऊंचा उठना उन जातभिमानियों को कब भाता था। उन्हों ने गुरु जी के विरुद्ध आवाज उठाई। सब से पहले पहाड़ी राजे इस पर बहुत रोश करने लगे। यहाँ तक कि उन्हों ने गुरु जी को चिट्ठी लिख दी कि तुम ने हमारा हिन्दु-धर्म भृष्ट कर दिया है जो सब जातियों को एक सामान कर दिया है। सो आप या तो इस नियम को छोड़ दो नहीं तो हमारे राज्य से निकल जाओ। यदि इन दोनों बातों में से एक भी नहीं मानोगे तो हम फौजी ताकत से तुम्हें यहां से निकाल देंगे।

ज़ब यह पत्रिका गुरु जी के पास पहुंची तब गुरु जी ने इस प्रकार का शीघर ही उत्तर लिखकर भेज दिया कि:-
Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हम न तो अपना नियम बदलेंगे । सब जातियों को पंगत में अभेद वर्तना हमारे धर्म का मुख नियम है ।

दूसरा यह भूमि मेरे पिता (गुरु तेग बहादुर) जी ने मोल ली हुई थी, उसी में हम ने आनन्द पुर नगर बसाया है, जो हम कभी नहीं छोड़ सकते ।

तीसरा हम स्वतन्त्र है । हम किसी की प्रजा नहीं हैं।

चौथा यदि तुम युद्ध को धमकी देते हो, वह तो हमारा खालसा हर समय युद्ध के लिये तैयार रहता है । जब तुम्हारा दिल चाहे आ जाओ।

वजीर देवी चन्द की कथा

गुरु जी का उत्तर मिलते ही पहाड़ी राजाओं ने बाई धार के राजाओं का एक स्थान पर इकठ किया । सब के सब राजे मिलकर गुरु जो पर आंक्रमण करने के लिये अपनी अपनी विधियां बताने लगे। सब ने एक आवाज से कहा कि गुरु पर तथा आनन्दपुर पर आवश्य हमला करना चाहिए ।

एक बहुत वृद्ध देवी चन्द(भीमसेन का रीटायर मन्त्री) ने कहा,'भाई मेरी भी तो सुन लो कि तुम लोग किस पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हमला करना चाहते हो ? वह तो स्वयं भगवान कृष्ण का सरूप तथा रूप है।'

बस ! उसकी यह बात सुन कर सब के सब पहाड़ी राजे उस निर्धन पर टुट पढ़े। राजाओं की भरी सभा में उस की बहुत बे-इजती की।

अन्त भीमसैन ने कहा, 'सब राजाओं की सभा से क्षमा मांग और यह शब्द जो तुमने गुरु की शोभा में कहे हैं वापिस ले लो नहीं तो तुझ को मार डाला जायेगा।'

देवो चन्द ने कहा, 'चाहे मुझे मार डालो, प्रन्तु गुरु जी के लिये मेरा वही निश्चय है कि वह श्री कृष्ण भगवान का सरूप हैं।'

भीम चन्द बहुत क्रोध में आ गया। उसी समय जलादों को आज्ञा दो, 'इस को भयानिक पहाड़ी जंगल में ले जाओ जो कि आबादी से आठ दस मील दूर हो। वहां जा कर दो सिलाईयाँ गर्म करके इस की दोनों आंखों में चुभो दो और वहीं छोड़ कर आ जाओ। समय भी रात्रि का हों।'

तब तक तो देवो चन्द मन्त्री था, परन्तु अब वह दोषी होकर जलादों के साथ बाँधा हुआ जा रहा था। वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जलाद देवी चन्द को लेकर एक भयानिक जंगल में ले गये और वहां जा कर उसकी आँखों में घुसाने के लिये दोनों ही सिलाईयां आग में रख दी गई।

उधर देवी चन्द अपने दृढ़ विश्वास के साथ श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के चर्णों में ध्यान धर कर बैठ गया।

जब लोहे की सिलाईयां आग की तरह लाल हो गई तो जलादों ने देवी चन्द की आंखों में घुसा दी तथा वे जलाद तो अपना काम पूरा करके वहां से चले गये। पीछे से जब कुछ देर के पश्चात देवी चन्द ने आंखे खोलीं। उसने समझा कि मैं नेत्रहीन हो गया हूंगा। परन्तु जैसे ही आंखे खोलीं तो पहले से भी बढ़ कर रौशन हो गई।

वह देवी चन्द इसको गुरु जी का चमत्कार समझकर वहाँ से सीधा श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के दर्शन करने के लिये आनन्दपुर साहिब की ओर चल पड़ा।

इधर गुरु जी अपने बिस्तर पर सो रहे थे कि माता गुजरी जी अपने बेटे के कमरे में किसी जंग के सम्बन्ध में सलाह आदि करने आ गई। आगे गुरु जी तो सो रहे थे, प्रन्तु जब उनके पाँव देखे तो उनमें से रक्त बह रहा था। जब निकट जाकर देखा तोदोनों ही चर्णों में जखम हुए पड़े हैं,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जैसे किसी ने सिलाईयाँ घुसा दी हो। माता गुजरी जी ने अपने बेटे को जगाकर पूछा, पुत्र जी ! यह क्या हो रहा है? यह जखम कैसे हो गये ?'

तब गुरु जी ने कहा, 'यह जखम करने वाला भी दो तीन घड़ी में यहाँ आ जायेगा । फिर उस को जो आप की इच्छा हो दण्ड दे देना।'

बस ! यह कौतक देखकर बहुत से सिख इकट्ठे हो गये सैकड़ों सिख हैरान हो रहे थे। गुरु जी के जखमों के कारण का कुछ पता नहीं चलता था कि यह गुरु जी के चर्णों में इतने गहरे घाव किसने किये। जब गुरु जी को कोई सिख पूछता तो गुरु जी कहते कि भाई अभी आ रहा है घाव करने वाला उसको पकड़ कर जो चाहे कर लेना।

इतने में देवी चन्द भी आ गया। गुरु जी ने दूर से ही कह दिया कि यही पुरुष है, जिस ने कि मेरे पाँव में घाव तथा जखम लगाये हैं।

बस ! फिर क्या था सब के साहमने सारा भेद खुल गया और सब संगत धंन गुरु, धंन गुरु कहने लगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाई जोगा सिंह की कथा

गुरु कलगी धर जी के जीवन के चमत्कारे तो बेअन्त है । कौन कथन कर सकता है । हाँ, कुछकु चमत्कारे पाठकों के सामने रखे जाते हैं ।

पेशावर नगर से संगत गुरु जी के दर्शनों को आई तो उस में एक बहुत ही सुन्दर बालक था । जब उस के माता पिता ने गुरु जी के चर्णों पर सीस झुकाया तो साथ ही बालक ने भी अपने माता पिता की तरह प्रणाम किया । तब गुरु जी ने उस सुन्दर बालक को बड़े प्यार से गोद में लेकर पूछा, 'बेटा क्या नाम है तुम्हारा ?'

'जोगा' * उस बालक ने कहा ।

'किस के जोगा है ?' गुरु जी ने कहा ।

'मैं तेले [तेरे] जोगा हूं ।' बालक ने तोतली सी जबान में कहा ।

'तब बेटा जे तूं मेरे जोगा हैं, तो मैं तेरे जोगा हूं ।' गुरु

---

*पंजाबी बोली में 'जोगा' के अर्थ 'लिये' होते हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी ने सुभावक ही कह दिया।

उसी दिन से वह बालक गुरु के दरबार में ही रह गहा। जब विद्या प्राप्त की और जवान हो गया तो उस के माता पिता गुरु जी के हजूर में निवेदन करके उसका विवाह करने के लिये पेशावर ले गये। उसका नाम अमृत छक कर जोगा से भाई जोगा सिंह हो गया था।

उस के साथ ही गुप्त तौर पर गुरु जी ने एक सिख को चिट्ठी दे कर भेज दिया। उसमें गुरु जी ने लिखा था कि तत्काल जिस समय ये पत्रिका मिले उसी समय चल पड़ो और शीघ्र ही मेरे पास पहुन्च जाओ।

उस सिक्ख को गुरु जी ने कहा था कि भाई जोगा सिंह जब तीन लावां (फेरे) ले ले और चौथी लांव लेने के लिये त्यार हो उसी समय यह पत्रिका दे देनी।

बस! सिख ने गुरु जी के हुक्म अनुसार गुरु जी का हुकमनामा उसी समय दिया जब कि भाई जोगा सिंह तीन लावां लेकर चौथी लेने के लिये उठने लगा था।

भाई जोगा सिंह ने जैसे ही गुरु जी का हुकम नामा पढ़ा तसे ही उसी क्षण चलने के लिए त्यार हो गया। माता पिता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्बन्धियों तथा सब संगत ने बहुत कहा कि एक लांव शेष रहती है, लेकर चले जाना। इसमें क्या दुविधा है ? विवाह का कार्य बीच में ही छोडकर मत जाओ प्रन्तु भाई जोगा सिंह ने एक न मानो। उस ने कहा,गुरु जी के हुक्म के सामने बातों का क्य म.य है ?'

भाई जोगा सिंह एक लॉव बीच में हो छोड़ कर पेशावर से मन्जिले तह करता हुआ होश्यार पुर नगर में पहुन्च गया और यहां पर सायं काल का समय हो गया था। घोड़े को एक सराए में बांध कर वहाँ हा विश्राम करने के लिये एक कमरा ले कर तथा उसे ताला लगा कर शहर में भोजन करने के लिये चला गया। भाई जोगा सिंह के मन में हउमै का अंकुर अहकारके काटे का उदय हो गया। उस के मन में विचार हुआ कि गुरु जी का मेरे जैसा कोई और सिदकवान सिख होना असम्भव है। देखो, मैं गुरु जो की आज्ञा का पालन करने के लिये विवाह भीतर में ही छोड आया हूं।

बस ! फिर क्या था ? गुरु जी का फुरमान है कि:–

'हउमै दीरघ रोग है ।।'

गुरुमत अनुसार यह हउमै का रोग मानसिक रोगों में से सब से बड़ा रोग है। इस एक के आने से दूसरे कामादि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोग स्वयं आ जाते हैं और इस हउमै को मारने में और दूसरे रोग इस का पीछा छोड़ जाते है।

हुआ क्या बजार में ऊपर एक चुबारे की बारी (झरोखे) में एक बहुत सुन्दर वैश्या बैठी हुई थी। उस का चांद जैसा मुखड़ा तथा मृग जैसे नैन देखते ही भाई जोगासिंह मोहत हो गया। यहां तक कि मन में फैसला कर लिया कि यहां कौन देखता है और कौन जानता है। आज रात इसके यौवन (सोंद्रय) का रस जरूर प्राप्त करुंगा।

एक पहर रात्रि व्यतीत हो जाने के पश्चात भाई जोगा सिंह उस वेशया के चौबारे को ओर चल पड़ा। यह कचन का व्योपारी आज कांचपर भूल गया। वह आज गुरु जी की इस आवाज को भी भूल गया कि:–

सूरत देख न भूल गवारा।
मिथन मुहारा झूठ पासारा।

इधर तो यह उधर श्री आनन्दपुर साहिब के वासी श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तो अपने वचन के पक्के थे। जो गुरबाणी के वाक्य थे:–

सूरबीर वचन के बली॥

गुरु जी ने एक सिख को बुला कर कहा, 'शीघ्रता से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरा वह घोड़ा त्यार करके लाओ जो कि:-

'पउन के गउन को जात निवारे ॥'

घोड़ा हाजर करके सिक्खों ने पूछा, 'इस समय आप इतनो शीघ्रता से कहां जा रहे हैं ?'

प्रन्तु बिना कुछ बताये ही गुरु जी घोड़े पर स्वार हो कर आंखों से ओझल हो गये।

इधर भाई जोगा सिंह जब वेश्या के दरवाजे के पास आया तो एक पहरेदार दृष्टि पड़ा और उसने गर्ज कर कहा, 'तुम कौन हो ? जाओ अब ऊपर एक खान साहिब गये हुए हैं ।'

भाई जोगा सिंह वापस आ गया परन्तु हउमै के रोग ने काम रोग को रोम रोम में प्रवेश कर दिया था। वह फिर गया, पहरेदार ने फिर ललकारा। जब चौथी बार गया तो पहरेदार ने गर्जदार अवाज में कहा, 'तुम गुरु के सिख मालूम होते हो ! तुझे शर्म न आयेगी जब तुझको कोई वेश्या के घर में देखेगा ? क्या तू अपनी सिखी रहत दाढ़ा केश आदि को भी नहीं देख रहा ? जाओ अमृत वेला (प्रातःकाल) है। इशनान करके श्री जपुजी साहिब का पाठ करो। तेरे हृदय में से काम अग्नि शाँत होगी।'

बस ! यह वाक्य सुनते ही भाई जोगा सिंह कोऐसे प्रतीत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुआ कि जैसे किसी ने उसको नर्क कुण्ड में से गिरते गिरते ही बचा लिया हो।

अमृत वेला हो गया था, इशनान आदि करके घोड़े पर सवार हो कर आनन्द पुर की ओर चल पड़ा।

आनन्द पुर साहिब में पहुंच कर भाई जोगा सिंह को सभी बातों का पता चल गया कि गुरु जी ही पहरेदार के रूप में थे जो रात्रि को वेशया के दर पर पहरा देकर मुझको नर्क में गिरने से बचाते रहे।

बस! फिर क्या था? गुरु जी के चर्णों पर गिर कर रुदन करने लगा। गुरू जी ने कहा भाई जोगा सिंहा, और तो कोई बात नहीं थी, परन्तु तुझे मुझ से वेशया के द्वार पर पहरा नहीं दिलाना चाहिये था।

पहाड़ी राजाओं का गुरू जी पर आकरमण

जैसे कि हम पहले भी बता आये हैं कि पहाड़ी राजाओं ने गुरू जी को पत्र लिखा था कि या तो यह नियम छोड़ दो कि तुम सब जातियों को एक पंक्ति में मिला रहे हो। औरया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हमारी भूमि तथा राज्य छोड़ कर कहीं और चले जाओ नहीं तो हम सैनिक शक्ति से निकाल देंगे।

गुरु जी ने साफ साफ उत्तर दे दिया था कि सब जातियों को एक जगह अभेद करना हमारा मूल धर्म है, जो हम कभी नहीं छोड़ सकते।

दूसरा यह आनन्द पुर की भूमि हमारे पिता गुरु तेग बहादुर ने रुपये देकर मूल्य ली है। और इस पर आपका कोई हक्क नहीं पहुंचता जो हमें निकाल सको।

तीसरा यदि तुम युद्ध की धमकी देते हो तो हम हर समय तैयार हैं जब चाओ आ जाओ।

गुरू जी का उत्तर सुन कर बाई धार के पहाड़ी राजे बीस हजार सेना लेकर अस्सू के महीने में 1758 बि: को आनन्दपुर पर धावा बोल दिया। गुरू जी के पास उस समय आठ हजार सिख योधायों की सेना थी प्रातकाल से सायंकाल तक घमसान का युद्ध होता रहा। जब अन्धेरा छा गया तो पहाड़ियों ने बहुत सा नुकसान करवा कर अपनी सेना पीछे हटा ली तथा वापिस बुला लिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाई बचित्र सिंह और हाथी की कथा

इस सारे युद्ध का जोर लोह गढ़ किले पर था। इस किले का द्वार बहुत भारी था। पहाड़ी राजाओं ने एक बहुत बड़े बलवान हाथी को मदरा पिला कर उसके माथे पर भाले तलवार और लोहे के तवे आदि बाँध कर उसे लोहगढ़ किले की तरफ सीधा कर दिया। जब गुरु जी को सिखों ने खबर दी तो गुरु जी ने कहा, 'हमारा हाथी दुनी चन्द है जो उनके हाथी के साथ लड़ेगा।'

वह दुनी चन्द बहुत कमजोर मन का आदमी था जो कि मौका पाकर अपने कुछ साथियों के साथ किले से रस्से डाल कर तथा उत्तर कर भाग गया। परन्तु उतरते समय उसकी गिर कर टाँग टूट गई और उसके साथी उसे उठाकर ले तो गये, किन्तु रात्री को जहाँ विश्राम किया वहाँ एक साँप ने काट खाया जिससे घर पहुंचने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई तथा शरीर से आत्मा निकल गई।

जब गुरू जी को इस बात का पता लगा तो आपने एक पास बैठे हुए सिख बचित्र सिंह को कहा, तो वह गुरु जी के बचन सुनते ही त्यार हो गया और कहने लगा, 'महाराज! मैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्या कर सकता हूं ? यह तो आपके वचन में ही शक्ती हैकि मैं पहाड़ियों के हाथी को मार भगाऊंगा ।

बस ! भाई बचित्र सिंह जी को गुरू जी ने एक बहुत मजबूत भाला दे दिया और थापना देकर जिधर सेहाथी आ रहा था उधर भेज दिया । बचित्र सिंह ने हाथी के माथे पर इतने जोर से भाला मारा कि उसके लोहे के तवे चीर कर माथे में जाकर थोड़ा सा धंस गया, जिससे हाथी चिलाता हुआ पीछे की तरफ भागकर पहाड़ी राजाजों की सेना में जा घुसा और उनका बहुत सा नुकसान कर दिया ।

उधर सिख सेना ने मौका पा कर हमला कर दिया । जिससे पहाड़ी सेना में ऐसी भाजड़ पड़ गई तथा पांव उखड़ गये कि वह संभल ही न सकी ।

सरहन्द के सूबे की चढ़ाई

जब पहाड़ी राजाओं को बहुत बुरी प्रकार पराजय हुई कि सारी सेना बड़ी मुशकिल से जाने बचाकर भाग उठी और राजे भी बड़ी मुशकिल से अपने स्थानों पर वापिस पहुंचे ।

अब पहाड़ी राजाओं को इस हार को बहुत भारी शर्म

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महसूस हुई। सब प्रांतों में उनकी बदनामी फैल गई। तब उन्होंने सरहन्द के सूबे को बहुत सा धन देना करके गुरु जी पर चढ़ा लाए। उसको यह भी लालच दिया कि गुरु जी के के पास बहुत सा धन हीरे जवाहरात के रूप में हैं।

इधर जासूस ने गुरू जी को भी सूचना दे दी। तब गुरु जी ने सिख योधाओं की सेना को कीरतपुर के मैदान में उस का रास्ता रोकने के लिये भेज दिथा। सिख सेना ने कीरत पुर के मैदान में सरहिन्द की सेना के साथ ऐसी गजब कीं तलवार चलाई कि उसके पांव ही न जमने दिये, जिससे वह बड़ी मुशकिल से जाने बचा कर (1744 बि० 22 मघर) को वापिस भाग गई।

इन दो युद्धों को जीतने स गुरु जी की सेना के हौंसले इतने बढ़ गये कि दिल्ली की शाही सेना के बगैर उनके साथ युद्ध करने का किसी को भी साहस न रहा।

पहाड़ी राजाओं की दिल्ली दरबार में रिपोर्ट

पहाड़ी राजाओं को दृढ़ विश्वास हो गया कि गुरु जी के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साथ युद्ध करना हमारा काम नहीं, बल्कि उनकी इस बात की भी चिन्ता हो गई है कि कहीं गुरू जी हमारी रियास्त ही न छिन लें। परन्तु गुरू जी के नियम में यह बात न थी। गुरू जी का यह नियम था कि आप किसी पर आक्रमण करते ही नहीं थे, बल्कि हमलावर को रोकते थे।

पहाड़ी राजे पत्थर की संगत करने से उसी प्रकार पत्थर की सी बुध्दि रखते थे। काश ! कि वह गुरू जी को समझ सकते कि गुरु जी ने तो केवल हिन्दू धर्म के बचाओ और जालिम तथा सामराज को नष्ट करने के लिए ही तलवार उठवाई है यदि वह लोग भी गुरू जी के साथ मिल कर औरंगजेब जैसे जालिम को नष्ट करते तो क्या बात थी ? परन्तु भरष्ट बुध्दि वाले पुरुष इस बात को कहां समझ सकते हैं।

अब उन्होंने एक दूत के हाथ औरंगजेब को गुरू जी के विरुध्द बहुत सी बातें लिखकर भेजी। जिसका विषय इस प्रकार था–

(1) गुरू गोबिन्द सिंह ने अपने पिता गुरू तेग बहादुर का बदला लेने के लिए सौगंध खा ली है और इस भाव के लिये बहुत सी सेनाएं तैयार कर ली है जंगी शस्त्र बनवाने के कारखाने बनवा रहा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(2) हम सब बाईधार के रांजे उनसे दो बार हार खा चुके हैं। और इससे उनका शक्ति का अनुमान लगाया जा सकता है।

(3) उसकी स्कीम यह है कि पहले पंजाब फिर कशमीर उसके पश्चात पहाड़ी रियासतों पर विजय प्राप्त करके दिल्ली पर आक्रमण किया जाये।

इस के इलावा और भी बहुत सी बातें लिखो। यह भी लिखा कि सरहिन्द का सूबा भी उससे पराजय होकर वापस जा चुका है। यदि आप शाही सेना भज दो तो इधर से हम बाई धार पहाड़ी राजे, सूबा सरहिन्द और लाहौर के साथ मिल कर गुरु को पकड़ कर आप के हजूर में पेश करेंगे। फिर आप जानें या आप का काम।

यदि आपने शीघ्र ही शाही सेना न भेजो तो उसकी शक्ति बढ़जाने का भय है।

उन्हों ने यह भी लिखा कि गुरु गोबिन्द सिंह हिन्दु धर्म और इसलाम के नियमों के विरुद्ध बहुत ही जहरीला प्रचार कर रहा है, जिसका प्रभाव जन साधारण पर पड़ रहा है। और पंजाब के सब लोग उसके सिख बन रहे हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शाही फौजों की चढ़ाई

औरंगजेब यह पत्रिका पढ़ते ही आग बबूला हो गया। शीघ्र ही एक बहुत बड़ा दरबार बुला कर उन में से बड़े बड़े योधाओं का चुनाओ करके निम्नलिखित सेनापतियों के अधीन बहुत बड़ी सेना भेज दी और साथ ही स॰ हिन्द, लाहौर तथा पहाड़ियों को भ लिख दिया कि शाही सेना के साथ मिल कर गुरु गोबिन्द सिंह को पकड़ कर तथा दिल्ली ला कर हमारे हजूर पेश करो।

शाही सेना के सेनापति तथा मुखियों के नाम निम्न लिखित इस प्रकार थे:—

[१] हैबत खाँ।
[२] नजमत खां।
[३] अमीर खां।
(४) सैद खां।
(५) दीना बेग।

इधर गुरु जी के जासूसों ने आनन्दपुर साहिब में गुरु जी को खबर पहुंचा दी। तब गुरु जी ने भी जंग की त्यारी प्रारम्भ कर दी। सारे पंजाब में धर्म युद्ध के लिये हुकमनामे भेज दिये गए थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बस ! फिर क्या था ? गुरु जी के सिख शस्त्र ले ले कर आनन्द पुर साहिब पहुंच गये।

गुरू जी के त्यारी करते ८ १७५८ वि० फाल्गुन की १७ को शाही सेना ने श्री आनन्दपुर पर आक्रमण कर दिया आगे से सिखों ने भी गोलियों तीरों और बन्दूकों से शाही सेना का खूब स्वागत किया।

चार दिन तक शाही सेना और सिखों में घमसान का युद्ध होता रहा। शाही सेना ने किले में घुसने का बहुत यत्न किया परन्तु सिख सेनाओं ने तीरों बन्दूकों तथा तलवार की मार से बेकार त [illegible] असफल बना दिया। अन्त पाँचवें दिन थक कर पीछे हट कर बैठ गई।

गुरू जी का सखत हमला

आधी रात का समय था शाही सेना रणभूमि में लड़ती लड़ती थक टूट कर विश्राम कर रही थी कि गुरु गोबिंद सिह जी ने दो हजार सिख योधाओं को साथ लेकर किले से बाहर निकल कर शाही सेना पर ऐसा आक्रमण किया कि उन में खलबली मचा दी। शाही सेना और पहाड़ी राजाओंकी सेना बड़ी मुशकिल से संभल कर लड़ने लगी। एक धण्टा पर गुरु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी शाही सेना के साथ जम कर लड़ते रहे। इस से शाही सेना के दो बहुत बड़े सेनापति गुरु जी ने तीरों से मार दिये (सैद खाँ और अमीर खाँ)।

गुरु जी का एक मुसलमान सैनिक था, उस ने ऐसी बहादरी की कि बहुत फुरती से जसवालिये राजे हरी चन्द को तलवार से मार भूमि पर लिटा दिया।

गुरु जी ने इस विधि से शाही सेना पर आक्रमण किया कि उनके पांव उखड़ गये और सारी सेना रोपड़ की ओर भाग गई। गुरू जी तो वापस आ गये परन्तु सिख योधाओं ने चार पांच मील तक उनका पीछा किया तथा बहुत सा युद्ध का समान छीन कर वापिस आ गये।

शाही सेना का श्री आनन्द पुर साहिब को घेरना

शाही फौज तथा पहाड़ी फौज के भागने का समाचार जब दिल्ली में औरंगजेब को पहुंचा तो उसने बहुत क्रोध में आकर कशमीर, लाहौर, सरहंद और प्रांतों के सब हाकिमों को हुक्म लिख दिये कि शाही सेना की सहायता कर गुरू

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गोबिन्द सिंह को पकड़वाओ।

इसी प्रकार शाही फौज के साथ दो लाख का मुलखया और दो लाख शाही सेना के साथ पहाड़ी राजे आदि मिल कर हो गई। कोई चार लाख सेना ने एक साथ श्री आनन्द पुर साहिब पर हमला कर दिया।

यह हमला आनन्द गढ़ किले की ओर से किया। आगे से गुरू जी ने स्वंय कुछ सिख योधाओं को साथ लेकर शाही फौज पर तीरों की बर्षा कर दी और सिख योधाओं ने तलवारें मार मार कर बृक्षों की प्रकार छील छील कर मुगल फौज को भूमि पर गिरा दिया।

जब मुगल फौज और पहाड़ियों ने देखा कि इस प्रकार सिक्खों पर विजय प्राप्त करना असम्भव है तो उन्हों ने आनन्द पुर के चारों ओर घेरा डाल दिया। लगातार एक मास तक घेरा डाले रखा। बाहर से कोई वस्तु तथा आदमियों को अन्दर न जाने देते थे।

मुगल सेना तथा पहाड़ी सेना का जबरदस्त आकरमण

शाही फौज तथा पहाड़ी फौज के सेनापतियों ने विचार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर के यकदम हमला करके तथा सीड़ियाँ लगाकर किले में घूस जाओ, चाहे कितना भी नुकसान क्यों न हो जाए किला फतह करने के बगैर पीछे न लौटो।

इस प्रकार पहले दोनों दलों से चोनवें आदमी (कोई पचास हजार) आगे पहला हमला करने के लिये छांट लिए। हजारों सीड़ियां पकड़ ली गई। एक और तोपें दागने का प्रबन्ध कर लिया। इसप्रकार आनंदगढ़ किले की ओर धावा करने की विधि बना ली।

इधर गुरु जी भी इस भात की खबर पाकर पाँच हजार योधे लेकर आनन्दगढ़ के किले में जाकर बैठ गये।

बस ! फिर क्या था। जैसे ही शाही फौज आनन्दगढ़ के किले पर टुट पड़ी वैसे ही गुरु जी ने इस कदर तीर चलाए कि शाही फौज के सथर उतार दिये।

शाहीफौज ने बहुत यत्न किया कि किसी प्रकार आनन्द गढ़ के किले पर चढ़ जायें, प्रन्तु सफलता न हो सकी। हजारां फौजी मरवा कर पीछे हट कर बैठ गये। अन्त शाही फौज और पहाड़ियों को दृढ़ विश्वास हो गया कि किले को फतह करना तथा गुरु को लड़ाई में जीत कर पकड़ना हमारे बस का रोग नहीं हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उधर दिल्ली से संदेश पर संदेश आरहे थे किजल्दी गुरू को पकड़ लाओ। एक फकीरी गद्दी पर बैठने वाले को इतनी देर, पर उनको क्या पता था कि शाही फौज दाँत खटे करा कर बैठ रही है।

अब पहाड़ी राजाओं को एक साल पर घेरा डाले को होगया था। किले के अन्दर किसी प्रकार की रसद न पहुंचने से इतनी मुश्किल बन गई कि सिखों को वृक्षों की छालें उतार २ कर खानी पड़ी।

उधर वह शाही सेना और पहाड़ी राजे भी बहुत दुःखी हो रहे थे।

पहाड़ी राजाओं की चलाकी

कहते हैं कि मकार को मकारी सूझती है और चोर को चोरी। इस तरह पहाड़ी राजाओं को एक चाल सूझी। उन्हों ने आपस में विचार करके गुरू जी को एक पत्रिका लिखी कि यदि आप आनन्द पुर का किला छोड़ कर किसी और स्थान पर कुझ देर के लिए चले जाओ तो हम आपको कुछ नहीं कहेंगे। एक वर्ष के पश्चात फिर आ जाना। इस प्रकार हमारी भी इजत रह जायेगी। हम अपने २ घरों को जायेगे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और यह शाही सेना दिल्ली जाकर औरंगजेब को तसल्ली दे सकेगी। इस तरह आपको, हमारी और शाही सेना की रह आयेगी और भी बहुत सी बातें बना कर कहीं।

जब यह पत्रिका दूत लेकर आया तो सारे दीवान [सभा] में सुनाई गई, क्योंकि सिख सेना मारे भूख के तंग पड़ रही थी। इस लिये बहुत सी आवाजें आने लगी कि यह बात मान लेनी चाहिये परन्तु गुरू जी ने कहा, 'हे गुरसिखो! सुनो कि यह राजनैतिक सिद्धाँत है कि दुश्मनों की बातों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये। यदि नहीं तो हमआपको ऐसा करके दिखला देते हैं।

गुरू जी ने कहला भेजा कि हमें कुछ घोड़े गधे तथा बैल गाड़ियां भिजवा दो हम आधी रात को निकल जायेंगे।

पहाड़ियों ने ऐसा ही किया। तब गुरु जी ने घोड़ों,गधों और बैल गाड़ियों पर टूटे हुए बर्तन, फटे पुराने बस्तर और टूट फुटे जूते लाद कर और बैलों के सींगों पर मशालें बांध कर आधी रात के समय बाहर को चला दिये और सब सिखों को कहा कि देख लो पहाड़ियों का वर्तांव।

ज्यों ही वह घोड़े आदि बाहर निकले उसी समय पहाड़ियों ने गुरु का खजाना समझकर लुटने की गरज से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हमला कर दिया। जैसे ही वह घोड़ों से बोरियां उतार कर लाये तो देख कर शर्म से पानी पानी हो गये।

दूसरी बार फिर पहाड़ियों ने दो वकील भेजे और कहा कि इसमें हमारा दोष नहीं,यह तो कुछ मूर्ख सिपाहियों की हरकत थी हम ने उनको दण्ड दे दिया है। इस लिए अब आप हमारे पर विश्वास करो। साथ ही हम आटे की गाए बना कर थाली में रख कर तथा उसी थाल में भगवान की मूर्ति रखकर सौगंध उठाते हैं कि कभी आपको धोखा नहीं देंगे। इसी प्रकार शाही सेनापति भी कुरान की कसम उठाते हैं।

उनकी इन बातों पर गुरू जी तो कभी विश्वास नहीं करते थे। परन्तु बहुत से सिखों और माता गुजरी जी के कहने पर मजबुर हो गये, परन्तु फिर चार दिन और ठहरने को कहा। इस पर माझा देश के चाली सिक्खों ने कहा कि यदि आप अभी इसी समय नहीं चलोगे तो हम आपको इसी समय छोड़ कर चले जायेंगे।

तब गुरु जी ने कहा, 'यदि तुम ने जाना है तो सिक्खी से त्याग पत्र देकर चले जाओ।"

सिक्खों ने गुरु जी की यह बात सुन कर कहा, लाओ हम लिख देते हैं।"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इतना कह कर वह चाली *सिख एक कागज के टुकड़े पर यह शब्द लिख कर चले गये कि:–

'न हम आप के सिख न तू हमारा गुरु ।'

यह समय गुरु जी के लिये कितना दुःख से भरा हुआ था, परन्तु आप सिरफ अकाल पुरख पर भरोसा रख कर अडोल रहे ।

आनन्दपुर को छोड़ना

गुरु जी तो अन्तरयामी थे। सब कुछ जानते थे परन्तु जो होनहार नें भी तो होना था। सब मतातरों का इस प्रकार कहना है कि:–

'विनाश काले विपरीत बुद्धियं ॥'

भाव–जब नाश या बिप्ता का समय आता है तो मनुष्य की समझ (विपरीत) उलट समझना शुरु करती है। यही बात उस समय आनन्दपुर वासियों के साथ हुई ।

---

*इन चाली सिखों की वार्ता आगे जा कर चाली मुक्तों के नाम पर आयेगी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह १७६१ बिक्रमी ७ पोष का दिन गुरु जी, गुरु के परिवार तथा सिक्खों के लिए कितना भयानिक और दुःख से भरा हुआ था।

सिख तो नहीं, परन्तु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तो सब कुछ जानते थे दुश्मन की चालों को। इस लिये गुरु जी ने लाखों रुपयों के बहु-मूल्य कपड़े और सामान को एक स्थान पर ढेर लगा कर आग लगा दी।

दूसरा सारा धन सोना चांदी, हीरे जवाहरात सतलुज दरया में फैंक दिये ताकि दुशमनों के हाथ न लग जाएं, क्योंकि गुरु जी तो जानते थे कि किले से बाहर निकलते ही इन दुष्ट दुशमनों ने सब कसमें तोड़ कर हमला कर देना है और उस समय तो माताओं ने बेटे भी नहीं संभालने और जो बहुत जरूरी सामान था वह बांध लिया और सदा के अनन्द पुर को छोड़ कर दशमेश पिता जी चल पड़े।

गुरू जी पर महान विपता

ज्यों ही गुरू जी अपनी सिक्ख सेना तथा परिवार केसाथ किले से बाहर निकले ज्यों ही पहले पहाड़ी राजे और फिर शाही सेना अपने अपने धर्म की कसमों को तोड़ कर गुरू जी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर टूट पड़े। गुरू जी पहले से ही इस बात को जानते थे, परन्तु सिक्खों के मजबर करने पर यह भयानिक बिप्ता सिर पर लेनी ही पड़ी थी।

इस हालत को देख कर गुरू जी ने बड़े साहिबजादे साहिब अजीत सिंह जी, जिनकी आयू केवल १५ वष की थी, २००० योधे सिखों को साथ लेकर वैरी तथा उन मक्कार दुश्मनों के साहमने डट गये और ऐसी तलवार चलाई कि उनको एक कदम भी आगे न बढ़ने दिया। इतने में शेष साथी बहुत आगे निकल गये। तब श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी ने साहिबजादे को भी बुलवा लिया।

कहते हैं कि विप्ता एक ही वार अपनी सारी शक्ति से मनुष्य पर आती है, धीरे धीरे नहीं। जब गुरू जी सेना और परिवार के साथ आगे गये तो आगे सरसा नदी में इतने जोर का बाढ़ आ रहा था कि उसको पार करना अत्यन्त मुशकिल था। इधर यह भयानिक बाढ़ और उधर दुश्मन की सेना घोर घटा की तरह बढ़ती आ रही थी। यहाँ पर इतनी भयानिक तथा घमसान का जंग हुई कि उसका उदाहरण मिलना संसार के इतहास में असम्भव है।

उधर तो शाही सेना और पहाड़ियों ने सिर धड़ की

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाजी लगा दी कि गुरू को अवश्य पकड़ना है एकदम सब की सब सेना ने हमला कर दिया। इधर सरसा में भयानिक बाढ़ आ रहा था। गुरू जो के बचन सब को याद आने लगे, परन्तु अब क्या हो सकता था।

अन्त में लगभग दो हजार सिक्ख तो शाही सेना के साहमने डट गये और उन्हों ने लड़ कर शहीदी प्राप्त करने का प्रण कर लिया। शेष गुरु जी के साथ परिवार को सरसा नदी को पार करने का यत्न करने लगे।

कहते हैं कि गुरू जी के साथ केवल चालीस सिक्ख ही बच कर पार हो सके। शेष कुछ तो लड़ कर शहीद हो गये और कुछ सरसा के बाढ़ में बह गये।

गुरू जी के छोटे साहिबजादे और माता गुजरी जी

इस महा भयानिक घमसान से गुरू जी के छोटे साहिबजादे माता गुजरी और गंगु ब्राह्याण एक धन की बोरी लेकर एक ओर बिछड़ गये, जिनकी निमक हरामी गंगु ने घर ले जाकर धन को बोरी उठा ली और उनको मुरिंडे के थानेदार को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पकड़ा दिया। उनको सूबे सरहिंद के पास पेश किया। जहाँ पर दुष्ट काजियों ने नीहों तथा दीवारों में जीवित ही गाड़ कर शहीद कर दिया। माता जी भी बुरज से छलाँग लगा कर शहीद हो गये।

चमकौर का युद्ध

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी केवल चालीस सिक्खों को साथ लेकर अम्बाला की ओर बढ़े। उधर शाही सेना भी गुरू जी के पांव के चिन्हों को देख कर पीछे आ रही थी।

कहते हैं कि रोपड़ में आकर गुरू जी अपने एक सिख के घर विश्राम करने के लिये गये तो उस ने मुगलों के भय से कहा "जाओ हम विश्राम को जगह नहीं देंगे।"

गुरू जी ने कहा, "हम अब इस समय कहां जायें।"

'भट्ठा में जाओ।' उस सिक्ख ने कहा।

तब गुरू जी ने कहा कि सिक्ख का वचन मान लो तथा उसी समय अपना घोड़ा लेकर जल रहे भट्ठा में चले गये। गुरुजी के घोड़े के पांव लगते ही भट्ठा शीतल हो गया। जहां पर आज कल एक बहुत बड़ा गुरुद्वारा है और अब तक गुरु के घोड़े के पाँव के निशान हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वहां से गुरु जी थोड़ी दूर गये होंगे कि शाही सेना निकट पहुंच गई। तब गुरु जी ने चमकौर गाओं में एक बहुत बड़े क्षत्री की गढ़ी थी, उसको कहा कि हम यहां शाही सेना को रोकेंगे, परन्तु उसने इन्कार कर दिया। गुरु जी ने उसको मार भगाया और गढ़ी पर कब्जा करके वहाँ चाली सिखों को और दो बड़े साहिबजादों को साथ लेकर तीन दिन तक दस लाख सेना का मुकाबला करके संसार में एक रीकार्ड कायम कर दिया, जो कि कभी किसी से टूट नहीं सकेगा।

इस युद्ध के सम्बन्ध में गुरू जी जफर नामे में स्वंय इस प्रकार लिखते हैं कि—

गुरसिना चि कारे कुनंद चिहल नर॥
कि दहिलक बर आमद बे खबर॥

भाव—ओ औरंगजेब! वह चाली भूखे आदमी क्या करते। जब कि उन पर दस लाख सेना ने बेखबर ही आकर हमला कर दिया।

गुरू जी यहां पर उस भयानिक युद्ध के बारे और भी लिखते हैं कि मैंने तलवार क्यों उठाई:—

चूंका अज हमह हीलते दर गुज़शत॥
हलाल असत बुरदन ब शमशीर दसत॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाव:—जब सारे तरीकों से काम आगे गुजर जाये उस समय मनुष्य को तलवार उठा लेन. चाहिये।

यहाँ ही वह चालीस सिक्ख और गुरू जी के बड़े साहिबजादे बाबा अजीतसिंह जो और बाबा जुझार सिंह जी शहीद हो गये थे। आप गुरू जी दस लाख सेना की आंखों में धूले डाल कर निकल गये और मालवा प्राँत को चले गये।

कहते हैं कि बीस कोस तक गुरु जी काँटों के जंगल में नंगे पाँव ही चलते गये। और भी बहुत से कौतक करते गये। एक जगह आप थोड़ा सा सो गये। जहां पर बहुत से काँटे थे। तब गुरु जी को आनन्द पुर के वह मखमली गदेले और रेशम के बिस्तर आदि याद आने लगे तो आपने उस समय यह शब्द उच्चारण करके अपने मन तथा आतमा की चढ़ती कला का सबूत दिया:—

मित्र प्यारे नूं हाल मुरीदाँ दा कहिणा ।।
तुध बिन रोग रजाईयां दा ओढन,
नाग निवासां दे रहिणा ।।
सूल सुराही खंजर प्याला,
बिग कसाईयां दा सहिणा ।।
यारड़े दा सानूं सथर चगेरा,
भठ खेड़ियां दा रहिणा ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक बात और याद रखनो चाहिये कि गुरु जी चमकौर के युद्ध में लड़कर शहीद होने को त्यार हो गये थे,परन्तु वह जो सिख पन्थ में पाँच सिक्खों का नियम था उसके अनुसार उनके नाम इस प्रकार थे–

(१) भाई मान सिंह जी।
(२) भाई धर्म सिंह जी।
(३) भाई दया सिंह जी।
(४) भाई संत सिंह जी।
(५) भाई बीर सिंह जी।

इन पांचों सिक्खों का कहा मानकर गुरु जी उस हवेली से बाहर गये थे।

यहाँ पर दो मुसलमान आजड़ी बकरीयाँ चरा रहे थे कि गुरु जी को देखकर चिला चिला कर शोर पाने लगे कि पकड़ो पकड़ो हिन्दुओं का पीर जा रहा है। तब गुरु जो ने उन दोनों को तलवार से यमलोक को पहुचा दिया।

गुरू जी का ऊच के पीर बनना

यहां पर गुरूजी सोये थे वहां एक छोटा सा बाग था जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह यहां ही उस समय आ गये। गुरु जी को इस हालत में देख कर बहुत आश्चर्य होकर पूछा महाराज कोई हमें भी सेवा करने का मौका दें।

तब गुरु जी ने वहां बैठ कर छोटे साहिबजादे और माता गुजरी का पता मंगवाया। जो पता लगा कि छोटे साहिबजादे और माता गुजरी जो शहीद हो गये हैं।

कहते हैं कि गुरु जी अपने चारों बेटों की शहीदी की खबर सुन कर अकाल पुरख के आगे अरदास करके कहने लगे, कि हे प्रभु जो ! आप की अमानत आप ही के पास पहुंच गई है।

वहाँ पर शाही सेना गुरु जी को तलाष करती फिर रही थी। मनी खां और नबी खां जो कि गुरु जी के प्रेमी थे, उन्हों ने गुरु जी को नीले वस्त्र पहना कर एक पालकी में बैठा कर तथा अपने कन्धों पर उठा ली। उठाने वाले वह दोनों भाई तथा धर्म सिंह और दया सिंह थे।

इतने में वहाँ पर एक फौजी दसता आ गया। उन्होंने रोका तो गनी खां ने कहा, यह तो हमारे ऊच के पीर हैं जो अभी अभी मक्के से हज्ज करके आये हैं।' तब वह सैनिक गुरु जी को प्रणाम करके चले गये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस का भाव था कि गुरू जी ने सिक्खों को समय के अनुसार नीति का प्रयोग करना सिखाया था।

जफर नामा उच्चारण करना

यहा से गुरू जी हिन्दू धर्म के लिये इतने भयानिक दुःख उठाने वाले तथा सरवश कुरबान करने वाले गुरू १७६२ बि० को कांगड़े ग्राम पर पहुंच गये। वहां पर सिख संगतों का बहुत भारी जोड़ मेल हो गया।

यहाँ पर गुरू जी ने भाई दया सिंह के हाथ औरंगजेब को फारसी भाषा में एक पत्रिका लिखी थी, जिसका नाम 'जफर नामा' था। भाव 'विजय पत्र'।

गुरु जी ने इस में लिखा कि ऐ औरंगजेब! मेरी जीत है, तेरी हार है, क्योंकि तेरी सेना के सेनापति झूठे फरेबी थे। उन्होंने कुरान की कसमें तोड़ दी थीं। उनको न तो मुहम्मद पर और ना ही खुदा पर भरोसा था और फिर भी वह मेरे साथ रणभूमि में छुप छुप कर लड़ते रहे यदि ऐसा न करते तो मैं चमकौर के युद्ध में तुम्हारा एक भी योद्धा बच कर न जाने देता।

फिर यदि तू यह समझे कि तुने मेरे चार बेटे मारडाले हैं तो यह तेरी कायरता तथा अनीति है। बच्चों को मारना भी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोई बहादुरी है, और मेरे चार बेटों को मारने से क्या हुआ जब कि तेरी जड़ें उखेड़ने के लिये खालसा पंथ मौजूद है, जिसको तू कभी नहीं मार सकता।

जफर नामे की बाणी पढ़ कर देखो कि गुरु जी इस प्रकार कथन करते हैं—

चि मरदी गर चि बचगा कुछता चयार ॥
कि बाकी बिमादा असत पेचीदा मार ॥
चि मरदी कि अखगर खमोश कुनी ॥

भाव ओ औरगजेब ! तेरी क्या मरदानगी है जो तू ने मेरे चार बेटे मार डाले हैं। मैं ने तो तुझ को तबाह करने के लिए (खालसा पंथ के रुप में) गुंझलदार सॉप को पैदा कर दिया है।

तेरी क्या बहादुरी है कि तूने मेरे चार बेटे अथवा चार चंगयाड़े बुझा दिये हैं, मैंने तेरी बादशाही जलाने के लिए खालसा पन्थ का भांबड़ जला दिया है।

मुक्तसर का युध्द टूटी गंढनी

जैसे कि पहले लिखा गया है कि जो मांझे के ४० सिख आनन्द पुर से बेदावा लिख कर दे गये थे। जब वह अपने २ घरों को गये तथा जब उनकी स्त्रियों को पता लगा तो उन्हों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ने ताहने दिये कि तुम तो गुरु जी को धोखा दे कर बेदावा लिख कर देकर अपनी जानें बचा कर आये हो। तुमको और तुम्हारे घर वालों को नर्क में भी स्थान नहीं मिलेगा। लो तुम लोग घघरे पहन कर घरों में चरखे कातो और हम पुरुषों के वस्त्र पहन कर युद्ध करने जाती हैं।

बस ! उनको यह बोल तीर की तरह लगे। उसी समय वह वापिस चल पड़े। एक बहुत बहादुर चण्डिका रूप माई भागो उनको साथ लेकर गुरु जी की तलाश करते करते मालवा प्रांत में एक खिखराने ग्राम में पहुंच गये। पता लगा कि गुरु जी यहां खिखराणों की ढाब पर डेरा लगाकर बैठे हैं।

वह चालो सिक्ख माई भागो की जथेदारी में जा रहे थे कि वहीं शाही सेना गुरु जी को तलाश करती हुई मिल गई और दोनों दलों में तलवार चलने लगीं। इतना घमसान का युद्ध हुआ कि सारे सिंघ हजारों मुगलों को मौत के घाट उतार कर स्वयं भी शहीद हो गये।

गुरु जी का वचन है कि:—

'सूरा सो पहिचानीऐ जो लरै दीन के हेत।
पुरजा पुरजा कट मरै कबहू न छाडै खेत॥

इस प्रकार वह सब के सब सिंघ वीर गती को प्राप्त हो गये और मुगल सेना जो बच गई थी वह इन सिंघों की बहादुरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से घबरा कर भाग गई।

इतने में गुरु जी ने अपने कुछ सिघों को साथ लेकर यहाँ आकर देखा तो केवल एक सिख भाई महाँ सिंह जीवित पाया जो कि सहक रहा था। तब गुरू जी उसके पास बैठ गये और उसका मुखड़ा रुमाल से पोंछ कर बड़े प्रसन्न हो कर कहा, 'भाई महां सिंह कोई वरदान मांग ले। दुनियां भर का राज, इन्द्रपुरी या ब्रह्म पुरी का राज, जो भी चाहो मांग लो।

तब भाई महां सिंह ने कहा, 'हे मेरे सतिगुरु मुझको कुछ नहीं चाहिए। आपके दर्शनों में मैं ने सब कुछ पा लिया है। हां यदि प्रसन्न हुए हैं तो वह जो हम लोग आप को आनन्दपुर में बेदावा लिख करदे आये थे, वह बेदावा फाड़ दीजिये।'

बस! गुरू जी ने उसी समय जेब से वह बेदावे का कागज निकाला और भाई महां सिंह के साहमने टुकड़े २ कर दिया, साथ ही वरदान दिया कि तुम्हारी याद में यहाँ बहुत भारी स्थान बनेगा। जिसका नाम मुक्तसर होगा। जो कोई यहां श्रद्धा से आयेगा मुक्ति पाएगा।

उसी समय भाई महां सिंह जी के प्राण निकल गये और अपने साथियों के साथ गुर पुरी को चले गये।

कहो धन्य! धन्य!! गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज, जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपना सब कुछ खो आये। यहाँ तक कि अपने चार बेटे भी शहीद करवा दिये परन्तु यह बेदावे का कागज संभाल कर रखा था कि शायद मेरे भूले हुए सिख वापिस आ जायें।

गुरू की काँशी तथा दमदमा साहिब

वहां गुरू जी मालवा के प्रसिद्ध नगर साबो की तलवंडी पहुंच गये। वह १७६२ बि० १३ चैत्र का दिन था। इस स्थान पर आपने बहुत से जरूरी काम किये। पहले तो माता सुन्दरी जी दिल्ली से आये। उन्होंने आते ही पहले हजारों सिखों में अपने बेटों को देखना चाहा। जब कहीं न दिखाई दिये तो गुरू जी ने पूछा, मेरे चार लाल कहां छोड़ आये हो ?"

उस समय गुरू जी ने सब सिक्खों की ओर इशारा करके उत्तर दिया कि—

इन पुत्रन के सीस पर वार दिये सुत चार ॥
चार मुए तो क्या भया जीवत कई हजार ॥

उसके पश्चात गुरू जी ने समय की दशा को देख लिया था कि कलयुग में घर घर में गुरू बन बैठने, परन्तु करनी से कोरे होंगे। जैसे कि आम मतों के इलावा गुरू घर में भी धीर मल्ल, राम राये, पृथिया आदि की मिशालें थीं। इस लिये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरू जी ने गुरू ग्रन्थ साहिब को गुर-गद्दी दे कर आगे के लिये देह धारी गुरु बनने की रीति समाप्त कर दी। सिखों को करतारपुर में गुरु ग्रन्थ साहिब की बीड़ लाने के लिये भेजा तो उन्होंने इन्कार कर दिया और कहा, "यदि वह समरथ गुरु है तो स्वंय उच्चारण कर ले।"

तब गुरु जी ने भाई मनी सिंह को कहा, "मैं बोलता हूं तुम लिखते जाओ।"

इस प्रकार गुरु जी, शुरु से लेकर लगातार बाणी उचारते गये और भाई मनीसिंह जी लिखते गये, जो सोलह पहरों में सम्पूर्ण गुरु ग्रन्थ साहिब जी लिख गये। इस बीड़ का वहां श्री दमदमा साहिब में ही प्रकाश कर दिया। और उसकी दूसरी कापी करके साथ ले गये।

आपने दमदमा साहिब को वरदान दिया था कि जो बैल की प्रकार कम बुध्दि वाला होगा, वहां यहां पर आकर पढ़ जायेगा।

वहां पर और भी बहुत से कौतक किये, कहते हैं कि बैराड़ सिक्खों ने गुरु जी का रास्ता रोक लिया और कहा कि हमारी वेतन देकर आगे जाओ।

तब गुरु जी ने आकाश की ओर मुख करके आवाज दी, 'ओ कुबेर ! बेटे माया की वर्षा करो।'

बस ! उस समय मोहरों की वर्षा होने लग पड़ी। यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कौतक देख कर लोग हैरान रह गये। गुरु जी ने ढालें भर भर कर मोहरें बाँटी।

इसी प्रकार 'डल्ले' को अमृत छका कर 'भाई दल सिंह' नाम रखा गया।

गुरू जी की दक्षण देश की ओर जाने की तैयारी

अब गुरु जी पंजाब को छोड़ कर दक्षण देश की ओर चल पड़े। सरसे और राजपुताने से होते हुए, कई प्रकार के चमत्कार दिखाते हुए दादू के द्वारे गये, जो उसको साधू से बीर रस के योधे बनने का उपदेश दिया। उस ने पहली भेंट से कहा था:—

'दादू दाहवां दूर कर, केती दाहवे इन कट।
केतो सौदा कर गई, एत पंसारी की हट।
पूरा किसे न तोलिया, सभ ने तोलया घट।

तब गुरु जी ने इसका उत्तर दिया:—

'दादू दाहवा रख के, सभ कुछ लूंगा लुट।
एको रहेगा खालसा, और मरु होये बुट।।
पूरा गुरु नानक तोलया, और सबने तोलिया घट।।

उसके मन में सही सिद्धांत का संचार करके आगे को चले

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहादुर शाह की सहायता करनी

इन दिनों में औरंगजेब की मृत्यु हो गई थी। जिससे राज सिहासन पर बठने पर उनके दो बेटों में झगड़ा हो गया बहादुर शाह ने गुरुजी को सहायता के लिए निवेदन की तब गुरू जी ने तारा आजिम को दो तीर इकट्ठे ही मार कर मार दिया.पर इसमें सब सेनापति कहने लगे कि मैं ने मारा है। बाद में देखने पर दोनों तीर दशमेश पिता के निकले, क्योंकि गुरु जी के तीर सोने की मुखी वाले होते थे।

अब गुरु जी कई स्थानों से होते हुए नादेड़ शहर पहुंचे। वहाँ जो बन्दा बहादुर था, जिसका पहला नाम माधो दास था, उसको अपना सिख बनाकर पंजाब की ओर भेजा। जिसका विस्तार बन्दा सिंह बहादुर के जीवन में पढ़ो।

इसके पश्चात श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को गुरगद्दी देकर आप नादेड़ (श्री हजूर साहिब) में कार्तिक शुदि ५, १७६५ बिक्रमी को जोति जोत (प्रलोक गमन) समा गये।

वाहिगुरू जी का खालसा
वाहिगुरू जी की फतह॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh